30-11-99

ये खजाने जमा करने की विधि जानते हो ? बहुत सहज हैं। सिर्फ बिन्दी लगाते जाओ। बिन्दी याद है तो जमा होता हैं। जैसे स्थूल खजाने में भी एक के साथ बिन्दी लगाते जाओ तो बढता जाता है ना। ऐसे ही आत्मा भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा जो बीत चूका वह भी फुल स्टाफ अर्थात् बिन्दी। अगर हर खजाने को बिन्दी रुप से याद करो तो जमा होता जाता। अनुभव है ना। बिन्दी लगाई और व्यर्थ से जमा होता जाता। बिन्दी लगानी आती हैं ? कई बार ऐसे होता हैं जो कोशिष करते हो बिन्दी लगाने की, लेकिन बिन्दी के बजाए लम्बी लाईन हो जाती हैं। बिन्दी के बजाए क्वेश्चन मार्क हो जाता हैं, आश्चर्य की लाईन लग जाती हैं। **तो जमा का खाता बढाने की विधि है 'बिन्दी' और गँवाने का रास्ता है लम्बी लाइन लगाना, क्वेश्चनमार्क लगाना, आश्चर्य की मात्रा लगाना।** सहज क्या हैं ? बिन्दी है ना ! तो विधि बहुत सहज है-स्वमान और बाप की याद तथा फालतू को फुलस्टेप लगाना।

तकदीर की तस्वीर देखो और सदा अपने तकदीर की तसवीर देख वाह-वाह का गीत गाओ। वाह मेरी तकदीर ! वाह मेरा बाबा ! वाह मेरा परिवार ! परिवार भी वाह-वाह है ! ऐसे नहीं यह तो बहुत वाह-वाह है, यह थोडा ऐसा है ! वाह मेरा परिवार ! वाह मेरा भाग्य ! और वाह मेरा बाबा ! ब्राह्मण जीवन अर्थात् वाह-वाह ! हाय-हाय नहीं। शारीरिक व्याधि में भी हाय-हाय नहीं, वाह ! यह भी बोझ उतरता है। अगर **10** मण से आपका **3-4** मण बोझ उतर जाए तो अच्छा है या हाय-हाय ? क्या है ? वाह बोझ उतरा ! हाय मेरा पार्ट ही ऐसा हैं ! हाय मेरे को व्याधि छोडती ही नहीं हैं ! आप छोडो या व्याधि छोडेगी ? वाह-वाह करते जाओ तो वाह-वाह करने से व्याधि भी खुश हो जायेगी। देखो, यहाँ भी ऐसे होता है ना, किसकी महिमा करते हो तो वाह-वाह करते हैं। तो व्याधि को भी वाह-वाह कहो। हाय यह मेरे पास ही क्यों आई, मेरा ही हिसाब हैं ! प्राप्ति के आगे हिसाब तो कुछ भी नहीं हैं। प्राप्तियां सामने रखो और हिसाब-किताब सामने रखो, तो वह क्या लगेगा ? बहुत छोटी सी चीज लगेगी। **मतलब तो ब्राह्मण जीवन में कुछ भी हो जाए, पोजिटिव रूप में देखो।**

समर्पणता

आध्यात्मिक विकास के लिए दो तरह की साधनाए हैं-एक पुरुषार्थ की, दूसरी समर्पण की। कुछ साधक स्वयं के पुरुषार्थ में विश्वास रखते हैं। वे पूर्ण स्वावलम्बी होते हैं। परमात्मा की करुणा पर भी ये आश्रित नहीं होना चाहते। उनकी साधना संकल्प की पूर्णता की साधना हैं। वे अपने तीव्र संकल्प द्वारा आध्यात्मिक सिद्धिको प्राप्त करते हैं। परावलम्बन को वे आध्यात्मिक मार्ग की बाधा समजते हैं। अत: उसे श्रमण संस्कृति कहा जाता हैं - वह संस्कृति जिसकी प्राप्ति श्रम द्वारा हो। चैतन्य तथा मीरा की साधना समर्पण की साधना हैं। हमें और कुछ नहीं करना हैं। केवल अपने को पूर्णतया परमात्मा के हाथों में छोड देना हैं। फिर वह सब कुछ हमारे लिए कर देता हैं।

समर्पण की साधना सहज हैं

पुरुषार्थ की, संकल्प की साधना अति श्रम - साध्य हैं। अत: सबके लिए संभव नहीं। **समर्पण की साधना सहज हैं। ईसमें हमें अपने को परमात्मा पर पूर्ण स्नेण छोड देना है तथा अपनी तरफ से कोई बाधा उपस्थित नहीं करनी हैं।** जैसे बिल्ली का बच्चा माँ के लिए कोई बाधा उपस्थित नहीं करता परमात्मा हमारे परमपिता, परम कल्याणकारी हैं। वे करुणा के सागर, प्रेम के सागर तथा ज्ञान के सागर हैं। उनके हाथों में अपने जीवन - नौका की पतवार छोड देने पर नौका कदापि पथ भ्रष्ट नहीं हो सकती। लेकिन इसके लिए यह आवश्यक हैं कि हम अपनी तरफ से चिंता छोड परमात्मा के श्रेष्ठ कामका साधन मात्र बन जाय। उसमें हमारा कल्याण ही होगा। **यह सृष्टि-नाटक एक बना बनाया खेल हैं। उसका प्रत्येक पार्ट हमारे कल्याण के लिए ही है।** उसमें संशय उठाना व्यर्थ हैं। अत: हर्षित रह हमें सृष्टि नाटक के प्रत्येक दृश्य को साक्षी हो देखते रहना चाहिए। परमात्मा पर हमें उतना ही अटूट विश्वास होना चाहिए जितना एक बच्चे का मां पर होता हैं।

परमात्मा के प्रति समर्पित होने से सदा कल्याण

एक बार एक नवविवाहित दंपति समुद्र में यात्रा कर रहे थे। अचानक जोर का तूफान उठा और जहाज डगमगाने लगा। सभी लोग घबडा गए लेकिन वह युवक हर्षित मुख बना रहा। उसकी पत्नी ने पुछा कि क्या आपको चिंता नहीं हो रही हैं। युवक ने तलवार निकाली और पत्नी की गर्दन पर टिका दी। लेकिन वह घबडाई नहीं। युवक ने पुछा तुम घबडाती क्यों नहीं जब कि तलवार की नोक तुम्हारी गर्दन पर हैं। उसने उत्तर दिया कि आप मुझसे ईतना प्रेम करते हैं कि मैं सोच भी नहीं सकती कि आप के हाथों मेरा नुकशान होगा। युवक ने कहा उसी तरह परमात्मा का मुजसे असीम प्रेम हैं और उनके द्वारा मेरा कुछ भी नुकशान नहीं हो सकता। जो भी होगा उसमें मेरा कल्याण छिपा होगा। अत: मैं निश्चिंत हुँ।

एडजेस्ट कर सको। एडजेस्ट करने की पावर सदा विजयी बना देती। ब्रह्मा बाप को देखा तो बच्चों से बच्चा बनकर एडजेस्ट हो जाता है। बडों से बडा बनकर एडजेस्ट हो जाता। चाहे बेगरी लाईफ, चाहे साधनों की लाईफ दोनो में खुशी खुशी से एडजेस्ट हुए ना। सोचकर नहीं। सोचनेवाले को एडजेस्ट होने की मजे में कुछ समय लग जाता। कंपनी में हो या अकेले हो लेकिन दोनो में, एडजेस्ट होना ये है ब्राह्मण जीवन। **ऐसे नहीं, संगठन हो और माथा भारी हो जाये। और कहो मुझे एकांत चाहीये। ये घमसाण में नहीं, मुझे अकेला चाहिये... मन अकेला अर्थात बहिर्मुखता से अंतरमुख में चला जाये तो वह अकेलापन ही हुआ न !** कई कहेते है कमरा भी अकेला चाहिये। लेकिन अकेला मिले तो भी मौज से सोओ और दस के बीच भी मौज से सोओ। दुनिया की हालते नाजुक हो रही है और और भी होगी। होनी ही है। अभी सिर्फ एक स्थान पर अलग अलग होती है, आखिर में सब तरफ इकठ्ठी होगी। तो नाजुक समय तो आना ही है। समय नाजुक हो लेकिन आपकी नेचर नाजुक नहीं हो। कईओं की ऐसी नाजुक नेचर होती जो थोडा सा आवाज वा कुछ हुवा तो डिस्टर्ब हो जायेंगे। **लेकिन जैसा समय वैसा अपने को एडजेस्ट कर सको ऐसा अभ्यास आगे चलकर आपके बहोत काम में आयेगा।** क्युंकी आपका फाईनल पेपर नाजुक समय पर ही होना है। आराम के समय पर नहीं। तो जीतना अभी से अपने को एडजेस्ट करने की शक्ति होगी तो नाजुक समय पर पास वीथ ओनर हो सकेंगे। चारो और की नाजुक परिस्थितियों के बीच में पेपर तो बहुत थोडे समय पर ही होगा। इसलिये अपनी नेचर को शक्तिशाली बनाओ। क्या करे मेरी नेचर ऐसी है, ऐसा नहीं चलेगा। स्थापना के आदी में बापदादा ने सब अनुभव करा लिया। राजकुमार और राजकुमारी से भी ज्यादा पालना का अनुभव कराया और आगे चलकर बेगरी लाईफ का भी पुरा अनुभव कराया। तो जिन्होंने दोनो अनुभव किये उनकी आदत बन गई। **आप लोगो के आगे तो ऐसा समय आया नहीं है लेकिन आना है। जहां भी रहेते हो। सभी हिलने है, सब आधार तूटने हैं। ऐसे समय पर कौन सा आधार चाहिये ? एक ही बाप का आधार। आखिर में यही आधार काम में आना है।**

का सहज स्लोगन याद रखो - जो हुआ, जो हो रहा हैं, जो होगा वह अच्छा होगा। क्युंकि क्वेश्चन तब उठता हैं जब अच्छा नहीं लगता हैं। इसलिये संगमयुग हैं ही अच्छे ते अच्छा, हर सेकन्ड अच्छा। इससे सदा सहज योगी जीवन का अनुभव करेंगे। "अच्छा" कहेने से अच्छा हो ही जाता हैं। स्वयं भी अच्छे और जो एक्ट करेंगे वह भी अच्छी। अच्छे को देखकर के दूसरे आकर्षित अवश्य होंगे। सभी अच्छा ही पसंद करते हैं।

26-3-93

मुलाकात

हम यह जानते है कि कल जो होगा वह बहोत अच्छा होगा। इसको ही त्रिकालदर्शी कहेते हैं। जो हो गया वो भी अच्छा, जो हो रहा है वह और अच्छा और जो होनेवाला है वह और बहोत अच्छा। तो यह निश्चय है कि यह अच्छे से अच्छा होना हैं। बुरा कभी हो नहीं सकता। क्युं ? क्युंकी अच्छे से अच्छा बाप मिला, अच्छे से अच्छे आप बने, अच्छे से अच्छे कर्म कर रहे हो तो सब अच्छा है न ! तो जब मालुम पड गया कि मैं श्रेष्ठ आत्मा हुं तो संकल्प, बोल, कर्म सब अच्छा ही होगा। कल्याणकारी बाप मिला तो सब कल्याण ही कल्याण हैं। बाप विश्वकल्याणकारी और आप मास्टर विश्वकल्याणकारी हो तो जो विश्व का कल्याण करनेवाला हैं उसका अकल्याण हो ही नहीं सकता। इसलिये यह निश्चय रखो कि हर समय हर कार्य, हर संकल्प कल्याणकारी हैं। इसलिये संगमयुग का नाम कल्याणकारी युग रखा हैं। इसलिये सदा याद रखो कि जो हो रहा हैं वह अच्छा और जो होनेवाला हैं वह बहोत बहोत अच्छा हैं। यह स्मृति सदा आगे बढाती रहेगी।

19-1-94

ड्रामा में जो भी बातें आती है उन बातों में बहोत अच्छा अक्कल हैं। इसलिये तो बात आती हैं और चली भी जाती है। लेकिन कभी कभी ब्राह्मण बच्चों में अक्कल थोडा कम होने के कारण बात को पकड कर बैठते है छोडते ही नहीं।

26-2-94

संगठन का मजा भी प्यारा है। आदत ऐसी होनी चाहिये जो सब में

परमात्मा के हाथो में अपने को छोड देने पर दु:खद घटनाएँ भी सुखद बन जाती हैं। श्राप वरदान बन जाता और विष अमृत। अपनी ओर से चिंतित होकर हम विपत्तियों को बढाते ही तो हैं। इसके अनेकों भौतिक दृष्टांत भी हैं। युवा या वृद्ध पुरुष जब उचाई से गिरते हैं तो उनकी हड्डियां टूट जाती हैं। लेकिन छोटा बच्चा गिरता हैं तो कुछ नहीं होता। क्यों ? युवा व्यक्ति बुद्धिमान हैं। वह अपने को बचानेका प्रयत्न करता हैं। गिरते समय अपने को बचाने के प्रयत्न में उसकी हड्डीयां कडी हो जाती हैं। बच्चे में ऐसी बुद्धि नहीं होती हैं। गिरते समय भी वह निश्चित रहता हैं तथा उसमें अपनी रक्षा का कोई भी विचार नहीं उठता। उसकी हड्डीयां मुलायम बनी रहती हैं ओर उसे कोई भी विशेष चोट नहीं आती।

समर्पित करने वाला ही विषय सागर से पार

परमात्मा की इच्छा पर अपने को समर्पित कर देनेवाला व्यक्ति सदा सफल होता हैं। आप देखते हैं कि मुर्दा पानी में तैरता रहता हैं पर जिन्दा डूब जाता हैं। क्या क्षमता है मुरदे में ? कौनसी विशेषता हैं उसमें ? सिर्फ यहीं कि वह लडता नहीं वरन् नदी में अपने को छोड देता हैं। नदी में अपने को समर्पित कर देने के कारण मुर्दा तैरता रहता हैं। नदी से बचने का संघर्ष करने के कारण जिन्दा व्यक्ति डूब जाता हैं। तैरने की भी तो यही कला हैं। प्रवीण तैराक मुर्दा बनने की कला जान जाता हैं। वह अपने को नदी में छोड देता हैं। संघर्ष नहीं करता। परिणाम स्वरुप वह तैरता रहता हैं। जल तो आपको उपर फैंकता हैं। आप स्वयं संघर्ष कर नीचे चले जाते हैं। भंवर में पडने पर यदि कोई बचने के लिए हाथ पैर पीटता हैं तो वह अवश्य डूबेगा। मनुष्य की शक्ति भँवर की शक्ति के आगे नगण्य हैं। उससे लडकर वह थकेगा और डूब जाएगा लेकिन जो अपने को भँवर में निश्चेट छोड देता हैं उसे भँवर उपर फैंक देता हैं। वह कभी डूबता नहीं। इसी तरह जो सर्व-कल्याणकारी, सर्व-शक्तिमान परमात्मा के हाथों में अपने को समर्पित कर देता हैं वह अन्तोगत्वा सदा विजयी होता हैं।

समर्पण का आधार श्रद्धा

आध्यात्मिक श्रेत्रमें श्रद्धा बहुत बडी सम्पति हैं। श्रद्धा ही तो समर्पण का आधार हैं। संशय ग्रस्त व्यक्ति कभी परमात्मा को नहीं पा सकता। बीसवीं शताब्दी संशय से भर गई हैं। अत: परमात्मा से तथा आध्यात्मिकता से बहुत दूर चली गई हैं। विज्ञान प्रत्येक वस्तु पर संशय करना सिखलाता हैं। भौतिक क्षेत्र में तो संशय की मनोवृत्ति से हमें अनेकानेक उपलब्धियां हुई। लेकिन आध्यात्मिक प्रगति के लिए संशय की मनोवृत्ति बहुत खतरनाक सिद्ध हुई। ईश्वरानुभूति के लिए श्रद्धा की मनोवृत्ति अत्यावश्यक हैं। आज के युग में श्रद्धा के पुनर्जागरण की अत्यावश्यक्ता हैं।

श्रद्धा द्वारा ही परिवर्तन संभव

तर्क चेतन मन की वस्तु हैं। उससे हम किसी के चेतन मन को ही प्रभावित कर सकते हैं, लेकिन अचेतन मन-हृदय अछूता रह जाता हैं। चेतन मन का प्रभाव क्षणिक होता हैं। अत: किसी को हम तर्क से पराजित कर बदल नहीं सकते। परिवर्तन तो तभी होगा जब उसका अचेतन मन प्रभावित हो जाय। यह कार्य तर्क से नहीं हो सकता। अत: धार्मिक वाद विवाद का कहीं अन्त नहीं होता। हृदय के प्रभावित होने पर ही मनुष्य बदलता हैं और हृदय को प्रभावित करने वाली वस्तु श्रद्धा है। जब तक तर्क बुद्धि शांत नहीं हो जाती, मनुष्य श्रद्धा नहीं कर पाता। जागृत अवस्था में तर्क और संशय के कारण हम किसी को नहीं मानते। लेकिन सम्मोहित अवस्था में, जब चेतन मन सुशुप्तावस्था में होता हैं, हम जो कहते हैं, वह मान लेता हैं क्योंकि उस समय सीधा अचेतन मन प्रभावित होता हैं। समर्पण की भावदशा में भी तर्क बुद्धि शान्त हो जाती हैं और हृदय सीधा प्रभावित होता रहता हैं। उस समय अन्तर्मनका सीधा संबंध परमात्मा से हो जाता हैं। परमात्मा से शक्ति, प्रेम तथा आनन्द की तरंगे प्रवाहित होकर हम में प्रवेश करने लगती हैं। **विना संपूर्ण समर्पण के अन्तर्मन का पूरा परिवर्तन संभव नहीं**। यह समर्पण परमपिता परमात्मा के प्रति भी हो सकता हैं अथवा किसी श्रद्धास्पद महान् व्यक्ति के प्रति भी।

13-10-92

बाप में निश्चय है कि वही कल्प पहलेवाला बाप फिर से आकर मिला है ? ऐसे ही अपने में भी निश्चय है कि हम वही कल्प पहलेवाली बाप के साथ पार्ट बजानेवाली विशेष आत्मायें है ? या बाप में निश्चय ज्यादा है, अपने में कम है ? अच्छा ड्रामा में जो भी होता है उसमें भी पक्का निश्चय है ? जो ड्रामा में होता है वह कल्याणकारी युग के कारण सब कल्याणकारी है या कुछ अकल्याणकारी हो जाता है ? कोई मरता है तो उसमें कल्याण है ? वो मर रहा है और आप कल्याण कहेंगे ? कल्याण है ? बीजनेस में नुकशान हो गया यह कल्याण हुआ ? तो नुकशान भी कल्याणकारी है? ज्ञान के पहले जो बातें कभी आपके पास नहीं आई, ज्ञान के बाद आई तो उसमें कल्याण है ? माया उपर नीचे कर रही है - कल्याण है ? इस में क्या कल्याण है ? माया आपको अनुभवी बनाती है। अच्छा तो ड्रामा में भी इतना ही अटल निश्चय हो, **चाहे देखने में अच्छी बात न भी हो लेकिन उसमें भी गुप्त अच्छाई क्या भरी हुई है वो परखना चाहिये। तो ड्रामा की बात को परखने की बुद्धि चाहिये। निश्चय की पहचान ऐसे समय पर होती है। परिस्थिति सामने आवे और परिस्थिति के समय निश्चय की स्थिति हो, तब कहेंगे निश्चय बुद्धि विजयी**। तो तीनो में पक्का निश्चय चाहिये - बाप में, अपने में और ड्रामा में। दर्द में तडप रहे हो और कहेंगे - "वाह ड्रामा वाह"। उस समय चिल्लायेंगे या "वाह-वाह" करेंगे ? "हाय बाबा बचाओ" यह नही कहेंगे ? **जब निश्चय है तो निश्चय का अर्थ ही संशय का नाम निशान न हो**। कुछ भी हो जाए लेकिन अटल-अचल निश्चय बुद्धि। कोई भी परिस्थिति हलचल में नहीं ला सकती।

18-2-93

मुलाकात

सभी पोइंट्स का सार हैं, पोइंट बनना। पोइंट लगाना सबसे सहज हैं। जब भी पोइंट रुप में स्थित नहीं होते तो क्वेश्चन मार्क की क्यु होती हैं। क्वेश्चन मार्क मुश्कील होता हैं। इसलिये किसी भी बात को समाप्त करना होता हैं तो कहेते हैं - इसको बिंदी लगा दो। बिंदी अर्थात फुल स्टोप लगाने

हैं। जीतनी वहां हलचल हैं उतनी आपके अंदर अचल अडोल स्थिति का अनुभव बढता जा रहा हैं। इसलिये कुछ भी हो जाये, सबसे सहेज युक्ति हैं - नथींग न्यु। कोई भी बात सोची नहीं हो, सुनी नहीं हो, समझी नहीं हो और अचानक होती हैं तो आश्चर्य लगता हैं। दुनिया मुंझनेवाली हैं और आप मौज में रहेनेवाले हैं। वे तो छोटी छोटी बात में मुंझेगे - क्या करे, कैसे करे... लेकिन आपके दिल में सदा स्वत: एक गीत बजता रहेता-वाह बाबा, वाह मेरा भाग्य। तो जो सामने देखो, जो सुनो, जो बोलो सब वाह वाह, बहोत अच्छा हैं। कोई बुरा भी करे लेकिन आप अपनी शक्ति से बुरे को अच्छे में बदल दो। क्युंकि ब्राह्मण जीवन में बुरा होता ही नहीं। इसलिये ब्राह्मणों की जीवन मौजो की जीवन हैं।

31-12-91

कुछ भी आवे, कुछ भी हो जाये, परिस्थिति रुपी बडे ते बडा पहाड भी आ जाये, संस्कार टक्कर खाने के बादल भी आ जाये, प्रकृति भी पेपर ले लेकिन अंगद समान मन बुद्धि रुपी पांव को हिलाना नहीं, अचल रखना। बीती में अगर कोई हलचल भी हुई हो उसको संकल्प में भी स्मृति में नहीं लाना। अर्थात फुल स्टोप लगाना। वर्तमाान को बाप समान श्रेष्ठ सहज बनाना और भविष्य को सदा सफलता के अधिकार से देखना। इस विधि से सिद्धि को अभी से प्राप्त करना। अगर ऐसे विजयी आत्मा का अनुभव करेंगे तो सदा के लिये नेचरल संस्कार बनाने की गीफ्ट प्राप्त कर सकते हो।

15-4-92

हर बात में अच्छा अच्छा कहते अच्छा बनते जाते क्युंकि हर बात में अच्छाई समाई हुई जरुर होती है। चाहे सारी बात बुरी हो लेकिन एक दो अच्छाई भी जरुर होती है। वह अच्छा ही पाठ पढाती है। पाठ पढाने की अच्छाई हर बात में समाई हुई है। धीरज का भी पाठ पढाती है। अगर दुसरा आवेश कर रहा हो तो आप क्या पाठ पढ रही हो ? जीतना आवेश उतना ही वह बात आपको धीरज और सहनशीलता सीखाती है। इसलिये कहते है जो हुआ वह अच्छा और जो होना है वो ओर अच्छा। अच्छाई उठाने की सिर्फ बुद्धि चाहिये। ऐसे अच्छाई उठाने से हीं नंबर मिलते हैं।

अहम् का विसर्जन ही समर्पण हैं

समर्पण का अर्थ अहम् का पूर्ण विसर्जन हैं। क्षुद्र अहं के कारण ही सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा से हमारा संबंध नहीं जूट पाता हैं। अहंकार के उन्मूलन के बाद परमात्मा की सर्वशक्तियां हममें प्रवाहित होने लगती हैं। गज-ग्राह युद्ध और चीर हरण ईसी का प्रतीक हैं। जब तक गज अपनी शक्ति के अहंकार से भरा रहा, ग्राह उसे जल में खींचता चला गया। अन्तोगत्वा जब उसका अहम् टूटा और पूरे हृदय से उसने परमात्मा से रक्षा की प्रार्थना की तो ईश्वरीय शक्ति उसमें प्रवाहित होने लगी और ग्राह मारा गया। द्रौपदी को भी जब तक अपने पतियों की शक्ति पर विश्वास था, परमात्मा की सहायता उसे न मिल सकी, सब तरफ से निराश होकर जब उसने परमात्मा को पुकारा तो परमात्मा तत्क्षण उपस्थित हो गए। गीता में परमात्मा का आदेश है-मामेकम् शरणं व्रज। लेकिन हम केवल एक परमात्मा की शक्ति का भरोसा न लेकर अनेकों का भरोसा करते रहते हैं। फलस्वरुप दो नाव पर पाँव रखने वालों की सी हमारी गति हो जाती हैं।

समर्पित व्यक्तित्व शून्य होता हैं। उसमें कोई आशा, आकांक्षा, कामना और वासना नहीं होती। वह परमात्मा का यंत्र, उनका वाद्य बन जाता हैं। मुरली की तरह वह भीतर से रिक्त होता हैं। परमात्मा के स्वरो के लिए वह कोई अवरोध नहीं करता वह जो चाहे, जैसा चाहे वैसा बन जावे। तभी तो मुरली का ईतना गायन हैं। धन्य हैं वे लोक जो परमात्मा की ज्ञान-मुरली, ज्ञान-वीणा बन जाते हैं। उन्हीं का जीवन सफल है, कृतकृत्य हैं, कृतार्थ हैं।

समर्पण के सर्वोत्कृष्ट आदर्श

पिता श्री और श्री मातेश्वरी समर्पण के सर्वोत्कृष्ट आदर्श थे। निराकार परमात्मा शिव के एक संकेत पर रंचमात्र भी हिचकिचाहट दिखाये बिना पिताश्रीने अपना सर्वस्व इश्वरीय सेवा में समर्पण कर दिया। 35 वर्षो की लंबी अवधि में उन्हें स्वयं में भी संशय न उठा, कठिन से कठिन परिस्थितियों में उन्होने कभी 'क्या' - 'क्यों' - 'कैसे' का प्रश्न नहीं उठाया। ईतना संपूर्ण था उनका तन-मन-धन का समर्पण। उन्होंने यश, मान, कामना का

तो क्या, अपनी बुद्धि को भी समर्पण कर दिया था, तभी तो उनका निराकार परमात्मा से पूर्ण तादात्म्य स्थापित हो गया था। उस सर्वशक्तिवान की शक्ति से वे भी शक्तिसंपन्न बन गए थे, उस प्रेमसागर की तरंगो से तरंगित होकर वे भी प्रेम स्वरुप बन गए थे। तथा उस-आनंद सागर की लहरों में सदा आनंदित रह कर वे लहराते रहेते थे। श्री मातेश्वरी जी का निराकार परमात्मा शिव तथा उनके साकार रुप पिताश्री पर समर्पण भी ऐसा ही अद्वितिय था। पिताश्री के कठिन से कठिन आदेशों पर भी उन्होने कभी नहीं सोचा कि यह कैसे होगा और सदा 'जी बाबा' कहा। तभी तो ये दोनो आज दैवी जगत के देदीप्यमान नक्षत्र बन गए हैं। जिनके दिव्य प्रकाश में पथभ्रष्ट जीवात्मायें सच्चे पथ का पथिक बन जाती हैं और संशय ग्रस्त जीवात्माए अपने संशय का निवारण पाकर लक्ष्य तक पहुँच जाती हैं।

हुवा होता है। अगर थोडा सा समय धैर्यवत अवस्था व सहनशील स्थिति से अंतरमुखी हो देखो, तो बहार के परदे के अंदर जो फायदा छीपा हुवा है वही आपको दिखाई देगा। इसलिये उपर अर्थात बाहर के रुप को देखते हुवे भी नहीं देखो। बहार के रुप को देख जल्दी गभरा जाते हो। जिस कारण अच्छा सोचा हुवा भी बदल जाता है और कर्मबंधन में फंसते हो। क्या हो गया, कैसे हो गया, ऐसा तो होना नहीं चाहीये, मेरे से ही क्युं होता है, मेरा ही भाग्य शायद ऐसा है.... ये रस्सीयां बांधते जाते हो। ऐसे व्यर्थ संकल्प ही कर्मबंधन की सुक्ष्म रस्सीयां है। कर्मातीत आत्मा तो सोचेगी कि जो होता है वह अच्छा है, मैं भी अच्छा, बाप भी अच्छा, ड्रामा भी अच्छा - ये बंधन को काटने की केंची का काम करती है। बंधन कट गये तो कर्मातीत हो गये न! कल्याणकारी बाप के बच्चे होने के कारण संगमयुग का हर सेकन्ड कल्याणकारी है। हर सेकन्ड का आपका धंधा ही कल्याण करना है। सेवा ही कल्याण करना है, ऐसे निश्चयबुद्धि आत्मा के लिये हर घडी, निश्चित कल्याणकारी हैं।

1-12-89

पता नहीं विनाश कब होगा, क्या होगा ? बच्चों का क्या होगा ? पोत्रो-धोत्रो का क्या होगा ? ये चिंता रहती हैं ? **बेपरवाह बादशाह को सदा ही यह निश्चय रहता है कि जो हो रहा हैं वह अच्छा हो रहा हैं और जो होनेवाला हैं वह और भी बहोत अच्छा होगा। क्युंकि करानेवाला अच्छे ते अच्छा है न !** इसको कहेते हैं निश्चयबुद्धि विजयी।

7-3-90

वाह बाबा, वाह मैं और वाह ड्रामा। सिर्फ यह तीन वाह बोलो तो क्या, क्युं और कैसे ये तीन शब्द भी खतम हो जायेंगे। ये तीन शब्द ही बेलेन्स को खतम कर देते हैं और बुद्धि को नचाने लगते हैं। जीस कारण बाप और परिवार की दुवाओं से वंचित हो जाते हैं।

31-12-90

<u>मुलाकात</u>

एक तरफ हैं हलचल और दुसरी तरफ आप ब्राह्मण आत्मायें सदा अचल

रहा है वह नथींग न्यु। यह रिहर्सल हो रही है। फाईनल में हाहाकार के बीच जयजयकार होनी हैं। अति के बाद अंत और नये युग का आरंभ हो जायेगा। ऐसे समय पर न चाहते भी सबके मन से प्रत्यक्षता के नगाडे बजेंगे। तो रिहर्सल से पार हो गये बेफिकर बादशाह बन पार्ट बजाया बहोत अच्छा किया। सोच से तो असोच है ही। जो हुवा वाह! वाह! इससे भी कइओ का कुछ कल्याण ही होगा। इसलिये जलने में भी कल्याण तो बचने में भी कल्याण हाय जल गया! ऐसा नहीं कहेंगे। बचने के समय जैसे वाह वाह कहेते हैं ऐसे जलने के समय भी वाह वाह। इसी को ही एकरस स्थिति कहा जाता हैं। बचाना अपना फर्ज है लेकिन जलनेवाली चीज जलनी ही हैं। इसमें भी कई हिसाब-किताब होंगे। आप तो है ही बेफिकर बादशाह। 'एक गया लाख पाया' - ये है ब्राह्मणों का स्लोगन। गया नहीं लेकिन पाया इसलिये बेफिकर। कोई अच्छा मिलना होता है इसलिये जलना भी खेल, बचना भी खेल। यही तो देखेंगे की जल रहा है लेकिन यह कितने बेफिकर बादशाह है। क्योंकि छत्रछाया के अंदर हैं। वे फिकर में पड जाते हैं कि, क्या होगा, कैसे होगा, कहाँ से खायेंगे, कहां से चलेंगे और बच्चों को ये फिकर है ही नहीं।

इस दृश्य की भेंट में अंतिम दृश्य बहोत वन्डरफुल हैं। वह सिन देखना तो बहोत आवश्यक हैं। जीसने अंत किया उसने सबकुछ किया। तो क्युं नहीं बापके साथ साथ ये वन्डरफुल सिन देखते हुए साथ साथ चलो। ये भी कोई कोई का पार्ट हैं। तो जाने का संकल्प नहीं करो।

18-12-87

छोटी बात को बडी बनाना वा बडी को छोटी बनाना, अर्थात परेशान होना वा अधिकारीपन की शान में रहना वह अपनी स्थिति उपर आधार रखता है। क्या हो गया वा जो हुवा वह अच्छा हुवा..... ये अने उपर है। ये निश्चय, बुरे को भी अच्छे में बदल सकता है। क्युंकि हिसाब-किताब चुक्तु होने के कारण वा ड्रामानुसार समय प्रति समय प्रेक्टिकल पेपर होने के कारण कोई बातें अच्छे रुप में सामने आयेगी, और कई बातों का बहार का रुप नुकशान का भी होगा लेकिन नुकसान के परदे के अंदर फायदा छीपा

सहज पुरूषार्थ के लिये बापदादा के महावाक्य

2-2-69

मैं पन आना इसको ही कहा जाता है ज्ञान का अभिमान, बुध्धि का अभिमान, सर्विस का अभिमान, इन रुपों में आगे चलकर विघ्न आयेंगे. लेकिन पहले ही इस मुख्य विघ्न को आने नहीं देना। इसके लिये सदा एक शब्द याद रखना कि "मैं निमित्त हुँ" ऐसे निमित्त बनने से ही निराकारी, निरहंकारी और नम्र चित्त, नि:संकल्प अवस्था में रह सकते हैं। अगर मैंने किया, मैं मैं आया तो मगरुरी, मुझाइश और मायुसी आ जायेगी। इसलिये इस मुख्य शिक्षा को हमेशा साथ रखना कि "मैं निमित्त हुँ" जिससे कोई भी अहंकार उत्पन्न नहीं होगा। अगर मैं पन आ गया तो मतभेद के चक्र में आ जायेंगे।

17-4-69

ये कभी नहीं सोचना की हमारी स्तुति हो। स्तुति के आधार पर स्थिति नहीं रखना। स्तुति के आधार पर स्थिति रखी तो डगमग होते रहेंगे। यहाँ ही स्तुति के फल को स्वीकार कर लिया तो भविष्य फल खतम कर लेंगे। इसलिये जीतना गुप्त पुरुषार्थ उतना गुप्त मददगार, उतना ही गुप्त पद बन जाता है। दूसरे भले कितनी भी महिमा करे लेकिन उनकी महिमा के प्रभाव में खुद को प्रभावित नहीं होना है।

19-7-69

छोटी - छोटी बातो में हिंम्मतहीन नहीं बनना है। हिंम्मत कैसे आयेगी ? हर समय, हर कदम पर, हर संकल्प में बलिहार होने से (समर्पण)। जो बलिहार होता है उस में हिंमत ज्यादा होती है। तो जीतना अपने को बलिहार बनायेंगे उतना ही गले के हार में नजदीक आयेंगे और दुसरों को भी बलिहार बनायेंगे, जिसको वारीस कहा जाता है।

13-11-69

बापदादा जब आते हैं तो किससे मिलने आते हैं ? आत्मायें कौन सी ? जो सारे विश्व में श्रेष्ठ आत्मायें है उन्हों से बापदादा मिलने आते हैं। इतना नशा रेहता है की हम ही सारे विश्व में श्रेष्ठ आत्मायें है ? श्रेष्ठ आत्माओं को ही सर्व शक्तिवान को मिलने का सौभाग्य प्राप्त होता हैं।

24-1-70

जीतना नष्टोमोहा बनेंगे उतना स्मृतिरुप बनेंगे। तो स्मृति को सदा कायम रखने के लिए साधन है नष्टोमोहा बनना। नष्टोमोहा बनना सहज है या मुश्किल हैं ? जब अपने आप को समर्पण कर देंगे तो फीर सभी सहज होगा। अगर समर्पण न करके अपने उपर रखते हो तो मुश्किल भासता हैं। **सहज बनाने का मुख्य साधन हैं समर्पण करना - बाप को जो चाहिए वो करावे।** जैसे मशीन होती है उन द्वारा सारा कारखाना चलता हैं। मशीन का काम है कारखाने को चलाना, वैसे हम निमित्त हैं। चलानेवाला जैसे चलावे हम को चलना है। एसा समजने से मुश्किलात नहीं फील होगी। यह स्थिति दिन-प्रतिदिन परिपकव करनी है। इस मुख्य बात पर एटेन्शन रखना है। जीतना

पार्ट में चलायमान नहीं होंगे लेकिन न्यारे और प्यारे रहेंगे। अच्छे में अच्छा, बुरे में बुरा, ऐसा नहीं होगा। **साक्षी अर्थात सदा हर कार्य करते हुए कल्याणकारी वृत्ति में रहेनेवाले। जो कुछ हो रहा है उस में कल्याण भरा हुआ है। अगर माया का विध्न भी आता तो उससे भी लाभ उठाकर, शिक्षा लेकर आगे बढेंगे, रुकेंगे नहीं। ऐसा साक्षीपन ही सीट है जिस पर बैठकर ड्रामा को देखो तो बहोत मझा आयेगा। वाह ड्रामा वाह ! का गीत गाते रहेंगे।** अगर कोई बिमार भी है, बिस्तर पर भी है तो भी सेवा कर सकते है। भले शरीर ठीक नहीं भी है लेकिन बुध्धि तो ठीक है न ? मन्सा सेवा बुद्धि द्वारा ही होती है। ऐसी लगन वा उमंग उत्साह रख सेवा करेंगे तो ये प्रकृति भी आपकी जनम जनम सेवा करती रहेगी। प्रकृति भी दासी बन जायेंगी।

27-3-83

परतंत्रता के बंधन अपने ही मन के व्यर्थ संकल्पों की जाल है। क्या होगा कैसे होगा, ऐसे तो नहीं होगा, ये है जाल। पहेले भी सुनाया था - संगमयुगी ब्राह्मणों का एक ही सदा समर्थ संकल्प है कि "जो होगा वह कल्याणकारी होगा - जो होगा वह श्रेष्ठ होगा, अच्छे ते अच्छा होगा।" ये संकल्प है जाल को समाप्त करना। जब की बुरे दिन, अकल्याण के दिन समाप्त हो गये। संगमयुग का हर दिन बडा दिन है तो फिर व्यर्थ संकल्पो की जाल में कहाँ तक फंसे रहेंगे। इसलिये जो समर्पण नहीं होंगे वह समान कैसे बनेंगे ? ब्रह्मा बापने क्या किया ? सबकुछ समर्पित किया न ! डर सिर्फ अपनी कमजोरी से होता है। इसलिये कमजोरीयों को देखो ही नहीं। न स्वयं कमजोर बनो न दुसरो की कमजोरीयो को देखो। सब बाप के हवाले कर दो।

26-11-84

<u>कानपुर का मकान (सेन्टर) जला - गंगे दादी से मुलाकात</u>

बापदादा बच्चों को सदा सेइफ रखते हैं। सेफ्टी का साधन सदा बापदादा द्वारा मिला हुआ हैं, इसलिये सदा ही बाप के स्नेह का हाथ और साथ हैं। नथींग न्यु के अभ्यासी हो गये हो इसलिये जो बीता नथींग न्यु, और जो हो

है और अब भी देख रहे हो। दुनिया में क्या भी हो लेकिन याद की भट्ठी में रहनेवाले सदा सेइफ और डबल लाईट रहेते है।

7-3-81

जो कुछ भी ड्रामा में होता है उस में कल्याण ही भरा हुआ है। अगर यह स्मृति सदा रहे तो कमाई जमा होती रहेंगी। समजदार बच्चे यही सोचेंगे की जो कुछ होता है वह कल्याणकारी है। क्यों ? क्या ? का कवेश्चन समजदार के अंदर उठ नहीं शकता। अगर स्मृति में रहे की यह संगमयुग कल्याणकारी युग है, बाप भी कल्याणकारी है तो श्रेष्ठ स्टेज बनती जायेंगी। चाहे बाहर की रीती से नुकशान भी दिखाई दे, लेकिन उस नुकशान में भी कल्याण समाया हुआ है-ऐसा निश्चय हो। जब बाप का साथ और हाथ है तो अकल्याण हो नहीं सकता। अभी बहुत पेपर आयेंगे उसमें क्या ? क्यों ? का कवेश्चन न उठे। **कुछ भी होता है होने दो। "बाप हमारा-हम बाप के है" तो कोई कुछ कर नहीं सकता।** इसको कहा जाता है निश्चय बुध्धि। बात बदल जाये लेकीन आप न बदलो यह है निश्चय।

17-3-81

"आप और बाबा" ये दो शब्द में ज्ञान और योग आ जाता है। इसलिये टाईटल ही है सहज राजयोगी। इसलिये सहज होते भी मुश्किल लगने का कारण अपनी ही कमजोरी है। कोई न कोई पुराना संस्कार सहज रास्ते के बीच में बंधन बन रुकावट डालता है और शक्ति न होने के कारण पत्थर को तोडने लग जाते है। और तोडते तोडते दिलशिकस्त हो जाते है। लेकिन सहज तरीका क्या है, पत्थर तोडना नहीं लेकिन पत्थर को जंप लगा के उडना है। ये क्युं हुआ ? ये होना नहीं चाहिये, आखिर ये कहाँ तक होगा ? ये तो बडा मुश्किल है, ऐसा क्युं ? - ऐसे व्यर्थ संकल्प करना ही पत्थर तोडना है, लेकिन एक शब्द 'ड्रामा' याद आ जाता तो इस शब्द के आधार से हाइ जंप दे देते है। उसमें कुछ दिन या मास लग जाते है और इसमें एक सेकन्ड लगता है। तो ये अपनी नोलेज की कमजोरी हुइ न ?

15-4-81

सदा साक्षी स्थिति में स्थित होकर हर पार्ट बजाओ तो कभी भी किसी

स्वयं को समर्पण करते हैं बाप के आगे, उतना ही बाप भी उन बच्चो के आगे समर्पण होते है अर्थात, जो बाप का खजाना है वह स्वत: ही उनका बन जाता है, समर्पण करना और कराना यही ब्राह्मणों का धंधा है।

23-10-70

महारथी बनने के लिये सिर्फ दो बातें याद रखो। "साथी और सारथी" वह है महारथी। पुरुषार्थ में कमजोरी के दो कारण है। बाप के स्नेही बने हो लेकिन बाप को साथी नहीं बनाया है। अगर बापदादा को सदैव साथी बनाओ तो माया दुर से ही मूर्छित हो जायेगी। बापदादा को अल्प समय के लिये साथी बनाते हैं इसलिये शक्ति की इतनी प्राप्ति नहीं होती। इसलिये भले हाथ पकडा है लेकिन अब सदा का निभाओ।

13-3-71

अगर सर्व से सहयोग प्राप्त करना चाहते हो तो बीज को स्नेह का पानी दो। ऐसे बीज से योग लगानेवाला, बीज को स्नेह का पानी देनेवाला सर्व आत्माओं द्वारा सहयोगरुपी फल प्राप्त कर लेता है। एक बीज से योग अर्थात कनेक्शन होने के कारण सर्व आत्मायें अर्थात पूरे वृक्ष के साथ कनेक्शन हो जाता है। कितनी भी कोई कोशिश करे परंतु बीज से योग लगाने के सिवा कोई पत्ते अर्थात किसी आत्मा से सहयोग प्राप्त हो जाये यह हो नहीं सकता। इसलिये सर्व के सहयोगी बनने वा सर्व का सहयोग लेने के लिये सहज पुरुषार्थ है-बीजरुप से कनेक्शन अर्थात योग। फिर मेहनत से छुट जायेंगे।

4-7-71

<u>याद की सहज विधि :</u>

बापदादा के संग के सिवा और कोई भी संग बुद्धि को न हो। फरिश्ता बनने के लिये बाप के साथ जो रिस्ता है वह पक्का होना चाहिये।

अगर कोई बडे के हाथ में हाथ होता है तो छोटे की स्थिति बेफिकर और निश्चिंत रहती है। तो समझना चाहिये कि हर कर्म में बापदादा मेरे साथ भी हैं और हमारे इस अलौकिक जीवन का हाथ उनके हाथ में है अर्थात जीवन उनके हवाले है। तो जिम्मेवारी उनकी हो जाती है। सभी बोज बाप के उपर रख अपने को हल्का कर देना चाहिये। बोज ही न होगा तो कुछ मुश्कील

लगेगा ? बोज उतारने का वा मुश्किल को सहज करने का साधन है - "बाप का हाथ और साथ।"

यह तो सहज है ना ? फिर चाहे बाप स्मृति में आये या चाहे दादा स्मृति में आये। बाप की स्मृति आयेगी तो, साथ में दादा की भी स्मृति रहेगी ही। दादा की स्मृति से बाप की स्मृति भी रहेगी। अलग नहीं हो सकती, अगर साकार स्नेही बन जाते हो तो भी और सभी से बुध्धि तुट जायेगी न ? साकार स्नेही बनना भी कम बात नहीं है। साकार स्नेह भी, सर्व संबंधों से बुध्धियोग तोड देता है। तो साकार स्नेह भी अनेक ओर से तोडकर एक ओर जोडने का साधन तो है ना ? साकार से भी निराकार तरफ याद जायेगी। साकार से भी स्नेह तब पैदा हुआ जब बापदादा दोनों का साथ हुआ न ? अगर बापदादा का साथ न होता तो साकार इतना प्रिय थोडे ही होता। इसलिये जैसे बापदादा साथ है वैसे आपकी याद भी साथ हो जायेगी।

8-5-73

इस समय का बडे ते बडा स्वमान यही हुवा की अभी तुम बापके भी मालिक बनते हो। विश्व के मालिक बनने से पेहले विश्व के रचयिता के भी मालिक बनते हो। इसलिए शिवबाबा मालेकम् सलाम केहते हैं। सारे कल्प में बाप को ऐसा बना नहीं सकते हैं। अभी तो जब चाहो, जीस रुप में चाहो, उस रुप से रचयिता बापको अपना सेवाधारी-गुलाम बना दीया है। ये है शुद्ध स्वमान। इसलिये इस समय एक बाप से लेने का और सभी को देना है। सर्वज्ञ बाप से ही सदा काल की प्राप्ति होगी। इसलिये अल्पज्ञ आत्माओं से अल्पकाल की प्राप्ति की इच्छा नहीं रखो। अगर आत्मा, आत्मा को कुछ देती भी है तो बाप से लिया हुवा ही तो देगी न !

18-6-73

संगमयुग के अपने श्रेष्ठ स्वमान के सिंहासन पर स्थित रेहते हो ? इस समय आप विश्व रचयिता की डायरेक्ट और पेहली रचना, सर्व श्रेष्ठ रचना और रचयिता के बालक को सो मालिक हो। इसलिये बापदादा के नूरे रतन हो, दिलतख्त नशीन हो, मस्तक की मणीयां हो, बापदादा के कर्तव्य में

आकर्षित न करे और पांच विकार भी वार न करे। ऐसे दोनों ही पेपर में पास हो ? प्रकृति के पेपर में जरा भी हलचल में आना अर्थात फेइल। ये क्या ? ये क्युं ? ये क्वेश्चन भी उठा तो रिझल्ट क्या होगी ? अगर जरा भी प्रकृति की समस्या वार करनेवाली बन गइ तो फेइल हो जायेंगे। कुछ भी हो लेकिन अंदर से सदा ये आवाज निकले, 'वाह मीठा ड्रामा -वाह !' इतना ड्रामा का ज्ञान पक्का किया है ? या जब अच्छी बात है तो ड्रामा और हलचल की बात है तो हाय हाय। "हाय क्या हुआ ?" ये संकल्प भी न आये ऐसे मजबुत हो ? क्युंकि आगे चलकर प्रकृति द्वारा भी अब ऐसी समस्या आनेवाली है। प्राकृतिक आपदायें तो दिन-प्रतिदिन बढनेवाली है न ? तो संकल्प में भी हलचल न हो ऐसी अचल अडोल स्थिति हो। अगर बहोत समय का मायाजीत और प्रकृतिजीत का अभ्यास नहीं होगा तो क्या रिझल्ट होगी ? एक सेकन्ड का पेपर आना है। उस समय अगर तैयारी में लग गए तो रिझल्ट निकल जायेगी। एक सेकन्ड में पास हो जाये इसका अभ्यास चाहिये। अगर ये भी सोचा कि योग लगाये, याद में बैठे तो भी सेकन्ड तो बीत गया। और युध्ध में ही शरीर छोड देंगे। पुरुषार्थी जीवन में युध्ध करते करते ही शरीर छुटा तो रिझल्ट क्या होगी। चंद्रवंशी बन जायेंगे। इसलिये हरेक सदैव **108** की माला में आने का लक्ष्य रखो। लक्ष श्रेष्ठ होगा तो लक्षण ओटोमेटेकली आ जायेंगे। **16,000**. का लक्ष कभी नहीं रखना। नंबरवन आने का पुरुषार्थ का लक्ष रखो।

7-12-79

ड्रामा अनुसार कलियुगी दुनिया का दु:ख और अशांति का नजारा देख बेहद के वैरागी बनते जायेंगे। कुछ भी होता है अपनी सदा चढती कला है, क्युं कि दुनिया के लिये हाहाकार है और आपके लिये जय जयकार है। आप तो जानते हो कि ये दुनिया हाहाकार होनेवाली है अर्थात जानेवाली है। इसलिये किसी भी परिस्थिति में गभराना नहीं। हमारे लिये तैयारी हो रही है। साक्षी होकर सब प्रकार के खेल देखो। कोई रोता है, चिल्लाता है। साक्षी होकर देखने में मजा आता है। "क्या होगा ?" ये क्वेश्चन भी नहीं उठता "ये होना ही है" ऐसे अटल हो न। अनेकबार ये सब हलचल देखी

5-5-77

निश्चयबुध्धि की निशानी है सदा निश्चिंत। जो निश्चिंत होंगे वही एकरस रहेगा। कुछ भी हुआ सोचो नहीं। क्यों ? क्या ? में कभी नहीं जाओ। त्रिकालदर्शी बन निश्चिंत रहो। हर कदम में कल्याण है, जिस बात में अकल्याण भी दिखाई देता उसमें भी कल्याण समाया हुआ है। सिर्फ अन्तरमुख होकर देखो। ब्राह्मणों का कभी भी अकल्याण हो नहीं सकता। क्योंकी कल्याणकारी बाप का हाथ पकडा है ना ? वह अकल्याण को भी कल्याण में चेन्ज कर देगा। इसलिए सदा निश्चिंत रहो।

22-6-77

जब किसी भी प्रकार का पेपर आता है तो गभराओ नहीं। क्वेश्चन मार्क में नहीं आओ कि यह क्युं आया ? इस सोचने में टाइम वेस्ट मत करो। क्वेश्चन मार्क खतम और फुल स्टोप लगे तब क्लास चेइन्ज होगा, अर्थात पेपर में पास हो जायेंगे। फुलस्टोप देनेवाला फुल पास होगा क्युंकी फुल स्टोप है बिंदी की स्टेज। इसलिये देखते हुए न देखो, सुनते हुए न सुनो, बाप का सुनाया हुआ ही सुनो, बापने जो दिया है वह देखो। इस प्रेक्टीस से फुल पास होंगे।

28-12-78

ड्रामा के हर सीन को देखते हुए वाह ड्रामा वाह की स्मृति से चलते हो वा गभराते हो ? जब ड्रामा का ज्ञान मिल गया तो वर्तमान समय भी कल्याणकारी युग है। जो भी दृश्य सामने आता है उसमें कल्याण भरा हुआ है। वर्तमान न भी जान सको लेकिन भविष्य में समाया हुआ कल्याण प्रत्यक्ष हो जायेगा। "वाह ड्रामा वाह" याद रहे तो सदा खुश रहेंगे। पुरुषार्थ में कभी उदासी नहीं आयेगी। स्वत: ही आप द्वारा अनेकों की सेवा हो जायेगी।

5-12-79

मुलाकात नं. 2 ड्रामा की नोलेज से क्या-क्यूं के क्वेश्चन को समाप्त करनेवाले ही प्रकृतिजीत और मायाजीत बनते है :

सभी प्रकृतिजीत या मायाजीत बने हो ? ये पांच तत्त्व भी अपनी तरफ

मददगार हो और विश्वकल्याणकारी, विश्व के आधारमूर्त, उद्धार मूर्त और उदाहरण मूर्त हो। बाप से भी विशेष पूज्य और योग्य बनते हो। इसलिये बाप भी ऐसी रचना का गुणगान करते है। और वंदना भी करते है। स्वयं बाप ऐसी आत्माओं का हररोज बार-बार सीमीरण करते हैं।

13-9-74

आगे चलकर जब प्रकृति के प्रकोप होंगे और आपदायें आयेगी तब आप सब का पेट भरने के लिये कौनसी चीज काममें आयेगी ? तब तो शांति की और सुख की ही भूख होगी, क्योंकि प्राकृतिक आपदाओं के कारण धन होते हुए भी धन काम में नहीं आयेगा। साधन होते हुए भी साधनों द्वारा प्राप्ति नहीं हो सकेगी। उस समय सब का संकल्प होगा कि कोई शक्ति देवे, जिससे कि इन आपदाओं से पार हो सके और कोई हमें शाति देवे। तो ऐसे ऐसे लंगर बहोत लगनेवाले हैं। उस समय पानी की एक बुंद भी कहीं दिखाई नहीं देगी। अनाज भी प्राकृतिक आपदाओं के कारण खाने योग्य नहीं होगा तो फिर उस समय आप लोग क्या करेंगे ? जब ऐसी परीक्षाएं आपके सामने आये तो उस समय आप क्या करेंगे ? सहन करने की ईतनी हिंम्मत है ? क्या उस समय योग लगेगा ? या प्यास लगेगी ? अगर कुए भी सुक जायेंगे फिर क्या करेंगे ? जब आप विशेष आत्माओं का ग्रुप है तो आपका पुरुषार्थ भी विशेष होना चाहिये न ? ये क्यों नहीं समजते --- जैसा कि गायन है कि चारों और आग लगी हुई थी लेकिन भठ्ठी में पडे हुए पुंगरे ऐसे ही सेईफ रहे जो की उनको सेक तक नहीं आया। आप ईस निश्चय से क्युं नहीं कहते ? अगर योगयुक्त है तो भले नजदीक वाले स्थान पर नुकशान भी होगा, पानी आ जायेगा लेकिन बाप द्वारा बने हुए जो निमित्त स्थान है वह सेईफ रह जायेंगे। ऐसे महारथी विशाल बुद्धि वाले और सर्व शक्तिवान के वरदान प्राप्त करनेवाले बच्चे किसी भी स्थान में रहते हैं तो वहां शुली से कांटा बन जाता है अर्थात वे सेईफ रह जाते है।

24-12-74

कोई भी बात में अगर एक बार समय पर, बिना कोई संकल्प के, आज्ञा समझकर जो सहयोगी बन जाते है ऐसे समय के सहयोगीयों को बापदादा

भी अंत तक सहयोग देने के लिये बंधा हुवा है। एकबार सहयोग देने का, अंत तक सहयोग लेने का अधिकारी बनाता है। एक का सौगुना मिलने से मेहनत कम, प्राप्ति ज्यादा होती है। चाहे मन से, चाहे तन से अथवा धन से। लेकिन समय पर सहयोग दिया तो बापदादा अंत तक सहयोग देने के लिये बंधा हुवा है। ऐसा अगर कोईने एकबार भी जीवन में बापदादा के कार्य में सहयोग दिया है तो अंत तक बापदादा सहयोगी रहेगा। ये भी एक हिसाब-किताब है। समझा।

23-1-75

जैसे बाप महान है वैसे ही बाप के साथ जिन आत्माओं का हर कदम वा हर चरित्र के साथ संबंध वा पार्ट है वे भी महान है। इस महानता को अच्छी रीति समझकर कदम उठाने से हर कदम में पदमों की कमाई स्वत: हो जाती है। क्युं की सारा आधार स्मृति पर है।

अपनी ऐसी महानता को भूलते क्युं हो ? क्युंकी बापदादाने संगमयुग पर स्वमान की जो सीट विघ्नविनाशक, सर्व परिस्थितियों को मिटानेवाले, स्वस्थिति के पोझीशन के श्रेष्ठ स्थान पर बीठाया है उस पर सेट नहीं होते हो। अपनी सीट को छोडकर बार-बार नीचे आ जाते हो। निश्चयात्मक स्मृति के आधार पर अपने ऐसे स्वमान की सीट पर सेट रहो। सीट पर रेहने से स्वमान भी स्वत: सीट में रेहता है और स्वत: ही महानता का वरदान प्राप्त हो जाता है। तो वरदानी सीट को छोडकर मेहनत क्युं करते हो ?

22-9-75

संगमयुग में बाप द्वारा मिले हुवे स्वमान प्रेक्टिकल जीवन में धारण करने से सहज ही संपूर्णता को पा सकते है। स्वमान में स्थित होना ही पेहला पाठ है। जैसे बाप का उंचे से उंचे भगवान के रुप में गायन है वह भगवान बाप क्या गायन करता है - उंचे ते उंचे बच्चे वह उंचा स्वमान कौन सा है ?

(1) उंचे बाप के भी बालक सो मालिक हो।

(2) स्वयं बाप हम श्रेष्ठ आत्माओं की माला सिमरण करते है।

(3) बाप की महिमा विश्व की आत्मायें करती है लेकिन आप श्रेष्ठ आत्माओं की महिमा स्वयं बाप करते हैं।

वाह ड्रामा वाह..!

22-1-69

बच्चे यह खेल बापने प्रेक्टिकल में रचा हैं। जिन बच्चों की जीवनरुपी नैया बाप के हाथ में होंगी वह हीलेगी नहीं। अभी तुम परीक्षाओ रुपी सागर के बीच में चल रहे हो, तो जीनका कनेक्शन अर्थात जीनका हाथ बापदादा के हाथ में होगा उनकी यह जीवनरुपी नैया न हिलेगी न डूबेगी।

25-1-69

मनमना भव का बहोत गुह्य अर्थ है। मन बिल्कुल जैसे ड्रामा सेकन्ड बाय सेकन्ड जिस रीति से और जैसे चलता है वैसे ही उसी के साथ-साथ मन की स्थिति ऐसे ही ड्रामा की पटरी पर सीधी चलती रहे, जरा भी हिले नहीं - चाहे संकल्प से वा चाहे वाणी से - ऐसी अवस्था हो। ऐसे देह के संबंध और मन के संकल्पो से भी तुम देही हो। इसको ही केहते है देह का अभिमान बिल्कुल तुंट गया वा सर्व समर्पणमय जीवन।

(4) आप सर्वश्रेष्ठ आत्माओं के बिना तो बाप भी कुछ नहीं कर सकता है।

(5) बाप को सर्व संबंधो से प्रख्यात कर बाप का परिचय देनेवाली आप श्रेष्ठ आत्मायें हो।

(6) हर कल्प में उंचे ते उंचे बाप के साथ उंचे ते उंचा पार्ट बजानेवाली आत्मायें हो।

(7) सबसे बडे बाप को भी अपने स्नेह और संबंध की डोर में बांधनेवाले हो।

ऐसे मैं जो हुँ, जैसा हुँ वैसा ही अपने को जानने से सदा स्वमान में रहेंगे और देह अभिमान से स्वतः ही परे रहेंगे।

23-1-76

अपने को सदा बापदादा के साथ अनुभव करते हो या अकेला अनुभव करते हो ? जैसे बाप को हजार भुजाओंवाला दिखाते है सर्वशक्तिवान होते हुए भी बच्चों के साथ यादगार भुजाओं के रुप में दिखाते है, ऐसे तुम ही बच्चे अपने को सर्वशक्तक्तिवान बाप के साथ अनुभव करते हो या कभी कभी अनुभव करते हो ? जो सदा साथ का अनुभव करेंगे वे कभी किसी देहधारी के साथ की आवश्यक्ता अनुभव नहीं करेंगे। कभी भी किसी सेवा में देहधारी का आधार नहीं लेंगे। मर्यादा प्रमाण संगठन प्रमाण सहयोग लेना अलग बात है, बाकी किसी परिस्थिति में देहधारी याद आये कि यह मुझे परिस्थिति से पार करेंगे, राय देंगे वा सहारा देंगे - इससे सिध्ध है कि सर्वशक्तिवान का सहारा सदा साथ नहीं रहता। सदा साथ रहनेवाले का बाप से समीप संबंध होने के कारण संकल्प में, रुह रीहान में भी बाबा याद आयेगा कि यह बाबा से पुछे। कोइ निमित्त टीचर याद आयें, कोई साथी याद आये या हमशरीफ याद आये, यह भी होता है, यह भी कार्य के प्रति, लेकिन मन में, बुध्धि में, सदा 'बाबा बाबा' याद आये। जब डायरेक्ट साथ निभाने का वायदा है तो वायदे का फायदा उठाओ। इस समय ही बाप के साथ व्यक्तिगत अनुभव हो सकता है, फिर सारे कल्प में नहीं होगा। जो सिर्फ अभी कि ही प्राप्ति है फिर होगी ही नहीं तो उसका पुरा पुरा लाभ

उठाओ। कोई भी बात हो, सदा बाबा ही याद रहे। इसको कहा जाता है निरंतर योगी। हर कदम बाप की याद है तो यह भी योग हुआ। ऐसे निरंतर योगी हो अथवा बनना है ? जब बाप स्वयं साथ देने की ओफर कर रहे है उस ओफर को स्वीकार करना चाहिए ना ? जब आधाकल्प भक्ति में बाप को मनाया साथ देने के लिए, अभी तो बाप खुद ओफर कर रहे है। तो ओफर को स्वीकार करना चाहिए ना ? जैसे स्थुल में कोई किसी को कोई चीज ऑफर करे, वह स्वीकार न करे तो इसको सभ्यता नहीं समजेंगे। यह ईज्जत कहेंगे ? यह तो गोड की ऑफर है। सदा बाप के साथ अर्थात निरंतर योगी। वह तो सदा लाईटरुप है तो ऐसे संग से तो सदा लाईट रुप भी और हल्के भी हो जायेंगे। तो डबल लाईट हुई ना! जब 'लाईट' बोझ उठाने के लिए ऑफर कर रहे है तो फिर तुम बोझ क्यों उठा रहे हो ? बोझवाला फुल स्पीड में चल नहीं सकता। तो अब इन अनेक प्रकार के बोझो से हल्के हो जाओ। अपना कोना कोना साफ करो, किचडे को अंदर ही अंदर संभाल के नहीं रखो। ऐसे नहीं चान्स मिलेगा तो देंगे। है तो किचडा ही ना, किचडे से तो किडे पैदा होते है। उनको रखने का अर्थ है उनकी वृद्धि करना। तो जब किचडे से खाली रहेंगे तब बाप द्वारा मिला हुआ खजाना अपने में भर सकेंगे।

7-1-77

"एक बाप दुसरा न कोई" इसी स्थिति में सदा रहते हो ? बस एक ही लगन 'बाप और सेवा', बाकी जो भी कर्म करना पडता है वो निमित्त मात्र। लेकिन लगन बाप और सेवा। कोई एसी व्यक्ति वा वस्तु नजर आती है जो बाप के सिवाय उस तरफ लगन हो ? संसार में ऐसा कोई सार है, जहां थोडा द्रष्टि जावे, नजर जावे ? ऐसा है ?" असार संसार महसुस होता है ? कोई रस है संसार में ? तो जब कोई रस नहीं तो बुद्धि जायेंगी कहाँ ? फिर तो एक ही लगन में मगन रहेंगे। तो सदैव बाप की याद में लवलीन रहो। भटकती हुई आत्माओं को ठिकाना दो। उनके आशीर्वाद की 'लिफ्ट' आपको मिल जायेगी। ऐसी खुशी में रहो जो सब पुछे तुम्हें क्या मिला है - इससे भी सेवा होंगी।

मीठे मीठे बच्चे अपनी अवस्था को एकरस बनाने के लिये कभी भी सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास नहीं करो। तुम एक बाप से सुनो। फालतु बातों से किनारा कर लो। तुम्हें कभी किसी की निंदा नहीं करनी है क्योंकि इस अनादि ड्रामा में हर आत्मा अपना एक्युरेट पार्ट बजा रही है। इस ड्रामा की हर सीन तुम बच्चों को बहुत ही पसन्द आनी चाहिए क्योंकि यह ड्रामा स्वयं रचयिता बाप को बहुत पसन्द है। यह दु:ख-सुख, हार-जीत का बहुत सुन्दर नाटक बना हुआ है। इस में हर एक्टर अपना विशेष पार्ट बजा रहे हैं। इसलिए ड्रामा की हर सीन देख कर सदा हर्षित रहो। तुम इस कल्याणकारी ड्रामा में किसी को भी दोषी नहीं बना सकते। क्योंकि जो कुछ पास्ट हो चुका है वही होना है। "बनी बनाई बन रही, अब कुछ बननी नाही, चिंता ताकि किजीये जो अनहोनी हो।" इसलिए किसी को भी दोष नहीं दे सकते। यह ड्रामा की बहुत सुन्दर भावी बनी हुई है। जो बच्चे साक्षी-द्रष्टा बनकर ड्रामा में हर एक का पार्ट देखते हैं, उनकी स्थिति मधु समान बन जाती है। वे सदा एकरस, अचल-अडोल रहते हैं। (18-1-95)

18-1-77

अब सुना ! बापदादा साथ है, कोई कुछ कर नहीं सकता, कह नहीं सकता, जलती हुई भट्ठी में भी पुंगरे सलामत रहे। यह तो कुछ भी नहीं है। बाल भी बांका नहीं कर सकता। साधारण साथ नहीं है। सर्वशक्तिवान का साथ है इसलिये निश्चयबुद्धि विजयंती बनो। डेट (विनाशकी) बताने की जरुरत नहीं, कभी भी फाईनल विनाश की डेट फिक्स नहीं हो सकती। अगर डेट फिक्स हो जाये फिर तो पास वीथ ओनर्स की लंबी लाईन हो जाये। इसलिये डेट (विनाश की) से निश्चिंत रहो। जब सब निश्चिंत होंगे तो डेट आ ही जायेगी। जब सभी इन एक संकल्प से निर्संकल्प होंगे वही डेट विनाश की होगी।

8-2-77

सब बातों का रेस्पोन्सीबल बापदादा है। बच्चे सदा हर बात में फ्री है। स्वतंत्र है। कोई भी बात में जिम्मेदारी समजते तो हलचल होती। जिम्मेदार बापदादा है तो अचल रहेंगे। बोज बाप के उपर है। बच्चे सहयोगी है। सहयोगी बनो लेकिन रिस्पोन्सिबीलीटी का बोज नहीं उठाओ। बोजवाले की स्पीड ढीली होती है। बोज होगा तो पुरुषार्थ की स्पीड तेज नहीं हो सकती। कहनेवाले कुछ भी कहे लेकिन आप कहो "बाप जिम्मेदार है" तो सदा सेफ रहेंगे, हल्के रहेंगे, एकरस रहेंगे, उमंग उत्साह में रहेंगे, डबल लाईट रहेंगे...।

30-4-77

निरंतर स्मृति में रहने का साधन है मेरापन भूल जाना। सबकुछ बाप का है। यह तन भी आपका नहीं। बाप का है। बाप ने सेवा अर्थ दिया है तो मेरापन नीकल गया न। **मेरापन खत्म तो देहीअभिमानी स्वत: बन गये।** अगर बाप की स्मृति थोडा भी किनारे हो जाती है तो माया आती। **सदा कम्बाईन्ड रहो तो माया की हिंमत नहीं देहभान में लाने की। सदा बाप के सिवाय कुछ सुझे ही नहीं।**

जब बाप के साथ से किनारा करते तब कमजोर होते हो, जिस समय सोचते हो क्या करे ? कैसे करे ? माया पर जीत पाना मुश्किल है – यह

सोचना अर्थात किनारा करना। सर्वशक्तिवान बाप साथ है तो क्या यह संकल्प आ सकता है ? माया बाप से अलग कराने लिए भिन्न भिन्न रुप से आती है। मैं नहीं कर सकता, मैं कमजोर हुं, कैसे करुं – यह कमजोरी के संकल्प माया रावण की सेना के अकासुर-बकासुर है। उनसे डरना नहीं है। सदैव सोचो मैं हुं ही विजयी। पहले भी रहा हुँ। अब भी हुँ। इस ड्रामा के अंदर विशेष पार्ट बजानेवाली विशेष आत्मायें आप बच्चे हो। क्योंकि सबसे विशेष ते विशेष है बाप। तो बाप के साथ पार्ट बजानेवाली आत्मायें ओटोमेटिकली विशेष होंगी। दुनिया में भी अगर कोई विशेष आत्माओ के साथ थोडा सा भी समय रहता है तो उससे नशा रहता है। अगर पी.एम. के साथ थोडा भी समय रहे तो कितना नशा रहता है ? वह तो आज है कल नहीं। लेकिन यह कितना उंचा है। वह भी अविनाशी है तो इतना नशा रहता है ? सदा एकरस नशा – 'मैं बाप का, बाप मैरा।' बाप सदा सागर और दाता तो बच्चे भी सागर और दाता हो। बाबा मदद करो यह भी नहीं, बापने अपने पास कुछ रखा है क्या ? अगर दे ही दिया है फिर मांगेंगे क्या ? जन्मते ही बाप ताज, तख्त, तिलक सब दे देता है। फिर मांगे क्यों ? सदैव यह सोचो कि हमारे जैसा खुशनसीब और नहीं, न हुआ है, न होगा तो सदा झुमते रहेंगे।

मन के खुश रहने से शरीर की व्याधी भी सुली से कांटा हो जाती है। ज्यादा सोचना नहीं। ज्यादा सोचने से निर्णयशक्ति कम हो जाती है। भुख, प्यास, शर्दी, गर्मी सबकुछ होते हुए भी संस्कार प्रगट न हो।

3-5-77

याद रखो, 'सच्चे बाप को अपनी जीवन की नैया दे दी , तो सत्य के साथ की नाँव हिलेगी, लेकिन डुब नहीं सकती। बाप को जिम्मेवारी देकर वापस नहीं ले लो। मैं चल सकुंगा ? यह मैं कहां से आया ? मैं पन मिटाना अर्थात बापका बनना। यही गलती करते हो और ईसी गलती में स्वयं उलझते परेशान होते। मैं करता हुं या मैं कर नहीं सकता हुं। इस देहअभिमान के 'मैं पन' का अभाव हो। इस भाषा को बदली करो। **जब मैं बाप की हो गई या हो गया तो जिम्मेदार कौन ? अपनी जिम्मेवारी सिर्फ एक समजो**

वाह ड्रामा वाह...!

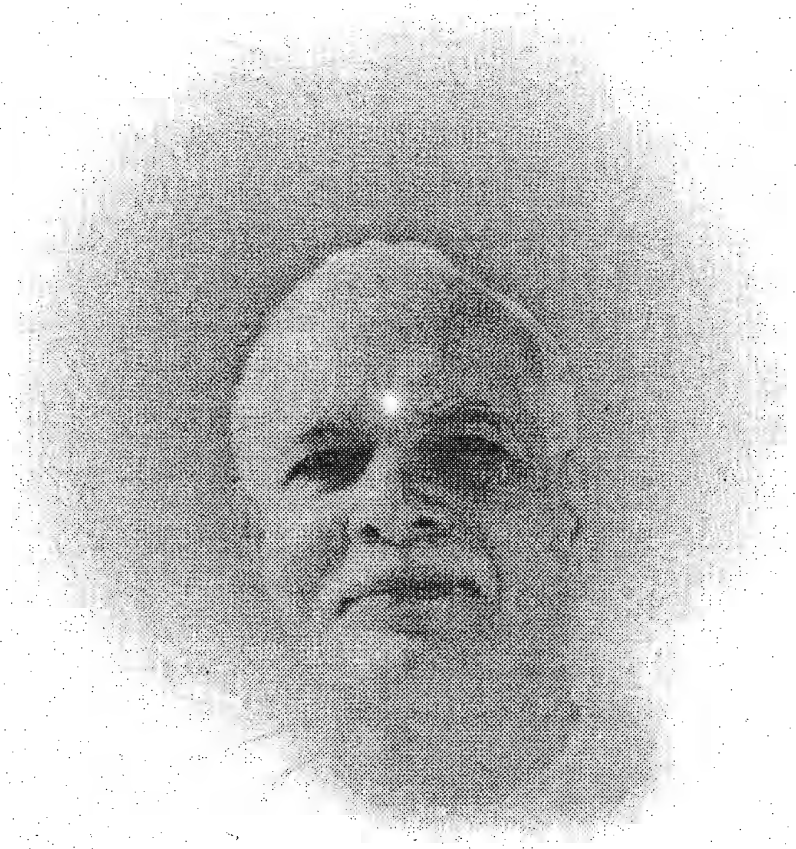

'जैसे बाप चलावे वैसे चलेंगे। जो बाप कहें वह करेंगे। जिस स्थिती या स्थान पर बाप बिठायें वहां बैठेंगे। श्रीमतमें मैं पन की मनमत मिक्स नहीं करेंगे तो सदा पश्चाताप से परे प्राप्ति स्वस्थ और पुरुषार्थ की सहजगति प्राप्त करेंगे अर्थात सदा सदबुध्धि प्राप्त करेंगे।

छोटीसी गलती मुश्किल बना देती है। वह कौनसी गल्ती ? सुनाया ना मैं कैसे करुं, मैं कर नहीं सकती, मैं चल नहीं सकती, किसने कहा आप चलो ? बापने तो कहा नहीं कि अपने आप चलो। साथी का हाथ पकडकर चलो। साथ छोड अपने उपर क्यों बोझ उठाकर चलते, जो कहना पडे मैं चल नहीं सकती, मैं कर नहीं सकती। गलती अपनी और फिर उल्हनें देंगे बाप को। अंगुली खुद छोडते, बोझ खुद उठाते फिर कहते बोझ उठाया नहीं जाता। किसने कहा तुम उठाओ ? आदत है ना बोझ उठाने की ?

5-5-77

कमजोरीयों को दूर करने का सहज साधन कौनसा है ? जो भी कुछ संकल्प में आता है वह बाप को अर्पण कर दो। जो भी आवे वह बाप के सामने रखते हुए, जीम्मेवारी बाप को दे दो तो स्वयं स्वतंत्र हो जायेंगे। सिर्फ एक द्रढ संकल्प रखो की 'में बाप का और बाप मेरा। जब मेरा बाप है तो मेरे के उपर अधिकार होता है ना। अधिकारी स्वरुप में स्थित होंगे तो कमजोरीयों की अधिनता ओटोमेटीकली निकल जायेगी। इसलिये हर सेकन्ड यह चेक करो की मैं अधिकारी की स्टेज पर हुं। विश्व के मालिक का मैं बालक हुँ यह पक्का है ? अगर है तो बालक सो मालिक हो।

जब स्वयं सर्वशक्तिवान साथी बन गया तो उसका परिणाम क्या दिखाई देगा ? सदा विजयी। तो जो बाप के सदा साथी है वह सदा निर्विघ्न। कभी भी कोई विघ्नो के वश नहीं हो सकते और जो निर्विघ्न होगा वह सदा खुश रहेगा।

सब से सहज बात कौन सी है जिसको समजने से सदा के लिए सहज मार्ग अनुभव होगा ? यह सहज बात है 'सदा अपनी जीम्मेवारी बाप को दे दो' जीम्मेवारी देना सहज है ना ? स्वयं को हलका करने से कभी भी मार्ग मुश्किल नहीं लगेगा। मुश्किल तब लगता है जब थक जाते हो और उलझते

हो। **जब सब जीम्मेवारी बाप को दे दी तो फरिश्ते हो गए।** गलती से छोटी छोटी जीम्मेवारीयों का बोजा अपने उपर ले लेते हो इसलिए मुश्किल हो जाता है। भक्ति में कहते थे सब कर दो राम हवाले। अब जंब करने का समय आया तब अपने हवाले क्यों करते ? "मेरा स्वभाव - मेरा संस्कार" यह मेरा कहां से आया ? अगर मेरा खतम तो नष्टोमोहा हो गए। जब मोह नष्ट हो गया तो सदा स्मृति स्वरुप हो जायेंगे। सब कुछ बाप के हवाले करने से सदा खुश और हलके रहेंगे तो देने में फिराक दील बनो। अगर पुरानी किचडपट्टी रख लेंगे तो बिमारी हो जायेगी।

14-5-77

सारे कल्प के अंदर सर्वश्रेष्ठ भाग्य इस संगमयुग में ही प्राप्त करते हो। इस समय ही सदा भाग्यशाली स्थिति का अनुभव कर सकते हो। तो जीतना बाप बच्चों को श्रेष्ठ भाग्यशाली समझते हैं उतना ही हरेक स्वयं को समझते हुए चलते हो ? ये समझना ही स्वमान में स्थित होना है। सदा स्वमान में स्थित होने से सदा विघ्न विनाशक की स्थिति में रहेंगे। जो बापकी महिमा है वही आपका स्वमान है। ऐसे स्वमान में स्थित होने से किसी भी प्रकार का अभिमान चाहे देह का वा बुद्धि का अभिमान, नाम का अभिमान, सेवा का अभिमान वा विशेष गुणों का अभिमान स्वत: समाप्त हो जाता है। और ऐसी आत्मा सदा निर्माण रेहती है। मान लेने की इच्छा से परे होने के कारण सर्व द्वारा श्रेष्ठ मान मिलने के पात्र बन जाता है। सम्मान देने से और स्वमान में स्थित होने से प्रकृति दासी के समान, स्वपान के अधिकार के रुप में मान प्राप्त होता है। स्वमान मेंस्थित रेहनेवाले का सिर्फ इस एक जनम में मान नहीं होता लेकिन सारे कल्प में, आधा कल्प अपने रोयल राजाई फेमीली द्वारा और प्रजा द्वारा मान प्राप्त होता है। और आधा कल्प भक्तों द्वारा मान प्राप्त होता है। इतने तक की जो, लास्ट जनम में चैतन्य रुप में अपने प्राप्त हुए मान की प्रारब्ध को स्वयं ही देखते हो।

19-5-77

ऐसे थोडे ही समजा था, या पहले मालुम होता तो त्याग नहीं करते, ब्राह्मण नहीं बनते। कितना सामना करना पडेगा, सहन करना पडेगा, हर

सेवा में लगाना। मेरी यह विशेषता है, नहीं, परमात्म-देन हैं। परमात्म-देन समझने से विशेषता में परमात्म शक्तियाँ भर जाती हैं। मेरी कहने से अभिमान और अपमान दोनों का सामना करना पडता है। किसी भी प्रकार का अभिमान, चाहे ज्ञान का, चाहे योग का, चाहे सेवा का, चाहे बुद्धि का, चाहे कोई गुण का, जिसमें भी अभिमान होगा उसकी निशानी हैं - उसको अपमान बहुत जल्दी फिल होगा। तो विशेष आत्मायें हो अर्थात परमात्म-देन के अधिकारी हो।

बापदादा की वरदान भूमि है, वह वायुमण्डल परिवर्तन कर देता है। अनुभव है ना ! तो वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल बनाना, यह है तीव्र गति का दिल का छाप । वायुमण्डल दिल में छप जाता है । सुनी हुई बातें भूल सकती हैं लेकिन वायुमण्डल का दिल पर छाप लग जाता है, वह भूल नहीं सकता।

11-3-02

आज आदि से, स्थापना के समय से अब विनाश के समीप समय तक कौन-से, कौन-से बच्चे अमर भव के वरदानी रहे हैं ! उन्हों की माला बना रहे थे। यह भी ड्रामा अनुसार उन आत्माओं को ऊँचे-ते-ऊँचे भगवान के साथ सर्व चरित्र देखने, सुनने का श्रेष्ठ पार्ट है लेकिन वह कितने थोडे हैं ! आप सबका भी पार्ट है, क्यों ? बापदादा ब्राह्मण वंशावली बना रहे हैं । इसलिए विश्व के हिसाब से जो भी ब्राह्मण आत्मायें हैं वह बहुत-बहुत-बहुत भाग्यवान हैं, क्यों ? कोटों में कोई की लाइन में और कोई में भी कोई, एक तरफ विश्व की कोटों आत्मायें, दूसरे तरफ आप हर एक ब्राह्मण एक हो । तो जन्म दिन पर बापदादा हर एक बच्चे को, कोई-कोई को नहीं सभी बच्चों की जन्मपत्री देख हर एक के विशेषताओं की मालायें गले में डाल रहे थे। आप सभी चाहे नये हैं, चाहे आदि के हैं, चाहे मध्य के हैं लेकिन विशेष हैं और विशेष रहेंगे ही । सारा कल्प विशेष रहेंगे । सारा कल्प विश्व की सर्व आत्माओं की आप श्रेष्ठ आत्मायों के ऊपर महानता की नजर रहती हैं।

यह विशेषतायें परमात्मदेन हैं । परमात्म देन सदा विश्व सेवा में अर्पण करनी है। विशेषतायें अगर निगेटिव रुप में यूज किया तो अभिमान का रुप बन जाता है क्योंकि ज्ञान में आने के बाद, ब्राह्मण जीवन में आने के बाद बाप द्वारा विशेषतायें बहुत प्राप्त होती हैं क्योंकि बाप का बनने से विशेषताओं के खजाने के अधिकारी बन जाते हो । एक दो विशेषतायें नहीं हैं, बहुत विशेषतायें हैं। जो यादगार में भी आपकी विशेषताओं का वर्णन हैं - **16** कला सम्पन्न, तो सिर्फ **16** नहीं हैं, **16** माना सम्पूर्ण । सर्व गुण सम्पन्न। सम्पूर्ण निर्विकारिता का डिटेल है । कहने में आता है सम्पूर्ण निर्विकारी लेकिन सम्पूर्ण में कई डिटेल हैं। तो विशेषतायें तो बाप द्वारा हर ब्राह्मण को वर्से में प्राप्त होती ही हैं। लेकिन उन विशेषतायों को धारण करना और फिर

बात में अपने को बदलना पडेगा, मीटना पडेगा, मरना पडेगा, लेकिन ये सब क्युं होता है ? क्योंकि बाप के सदा साथ का अनुभव नहीं। सदा बाप के साथ के अनुभवी ऐसे कमजोरी के संकल्प नहीं कर सकते । बाप के साथ के नशे का कल्प पहलेवाला यादगार भी अभी तक भी गाया जा रहा है वह कौनसा ? अक्षोणी सेना सामने होते, बडे - बडे महावीर सामने होते भी पांडवो को किसका नशा था ? बापके साथ का। अक्षणी सेना अर्थात माया के अनेक भिन्न भिन्न स्वरुप भी बाप के साथ के कारण अक्षोणी नहीं, लेकिन एक क्षण में भस्मीभूत हुए पडे हैं -- ऐसा नशा यादगार में (शास्त्र) भी गाया हुआ है। महावीर को महावीर नहीं समझा लेकिन मरे हुए मुर्दे समझा, यह किसका यादगार है ? बाप के साथ रहनेवाले अनुभवी आत्माओं का यादगार है। इसलिये अंतर्मुखी बन कर हर बात के अनुभव में स्वयं को संपन्न बनाओ। पहला पाठ बाप और बच्चे का है - किसका बच्चा हुं ? क्या प्राप्ति है ? इस पहले पाठ के अनुभवीमूर्त बनो तो सहज ही मायाजीत हो जायेंगे । अल्प समय अनुभव में रहते हो और ज्यादा समय सुनने और समझनेमें रहते हो।

मुलाकात

मुख्य बात है बाप को अपना साथी बनाना। अगर सदा का साथी बनायेंगे तो माया स्वत: ही अपना साथ छोड देगी । इसलिये सदा बाप के साथी बनो । **सेकन्ड भी किनारा नहीं करो ।** जब साथी साथ निभाने के लिये तैयार है फिर किनारा क्युं करते हो ? फायदेवाली बात कभी छोडी जाती है क्या ? अकेले करते है इसलीये मेहनत लगती है। बाप के साथ अर्थात हुआ ही पडा है । किनारा करते तो छोटी बात भी मुश्कील लगती है । इसलिये अंतर्मुखी हो इन अनुभवों के अंदर जाओ फिर शक्तिशाली अनुभव करेंगे।

21-5-77

सदैव एक मंत्र याद रखो। बाप को दिल का सच्चा साथी बनाकर रखेंगे तो सदा अनुभव करेंगे की खुशीयों की खान मेरे साथ है। सदा इसी संग का रुहानी रंग लगा रहेगा । क्योंकि बडे से बडा संग सर्वशक्तिवान का है ।

सत्संग की महिमा है तो सदा बुध्धि द्वारा सत् बाप, सत् शिक्षक, सत्गुरु का संग करना - यही सत्संग है। इस सत्संग में रहने से सदा हर्षित और हल्के रहेंगे। किसी भी प्रकार का बोज अनुभव नहीं होगा। **निश्चय बुध्धि हो यह तो ठीक है। लेकिन निश्चय का रिटर्न है बाप को सदा साथी बनाकर रखना। पल पल बाप का साथ हो। सदा साथ के अनुभव से संपन्नता का अनुभव करेंगे। ऐसे लगेगा जैसे भरपुर है। जब बाप को अपना बनाया तो बाप का जो भी है सब अपना हो गया। जिसको बाप मिल गया उसको नशा कितना होगा ? बाप से उपर और कुछ नहीं है। बाप मिला सबकुछ मिला। सदा याद में रहने से जो भी प्राप्ति है उनका अनुभव कर सकते हो। याद नहीं तो प्राप्ति का अनुभव नहीं** ! सदा प्राप्ति के नशे में रहो कि 'मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हुँ। शक्तियाँ बाप की प्रोपर्टी है तो बच्चे का उस पर अधिकार है। अधिकारी बच्चों के मन से सदैव यही गीत निकलेगा 'पाना था सो पा लिया।' किसी प्रकार का विध्न रास्ते चलते आवे तो निर्विध्न रहने का तरीका आ गया है ? विध्न को हटाना सहज है या मुश्किल लगता ? अगर बाप सदा साथ रहे तो कोई मुश्किल नहीं। बाप का साथ छोडने से कमजोर हो जाते है। कमजोर को छोटी बात भी बडी लगती है। बहादुर को बडी बात भी छोटी लगती है, जब बाप साथ देने लिये तैयार और लेनेवाले न ले तो बाप क्या करे ? किनारा नहीं करो तो सहज लगेगा।

पांडव अर्थात बाप के साथ की स्मृति में रहनेवाले। कल्प पहले भी पांडवो की स्मृति की विशेषता क्या गाई हुइ है ? पांडवो को नशा था बाप हमारे साथ है। बाप के साथ का नशा होने कारण चेलेन्ज करनेवाले बने। चेलेन्ज कि ना, हम विजयी बनेंगे ? चेलेन्ज का आधार था बाप का साथ। तो जब पांडवो के साथ की यह विशेषता गाई हुइ है तो प्रेक्टिकल में कीतना नशा होगा। माया के बडे बडे महावीरो की भी पांडवो के आगे क्या रीझल्ट हुइ ? विनाश को प्राप्त हुए। ऐसे माया के विध्नो को पार करनेवाले अनुभव करते हो या गभराते हो ? माया आ गई। क्या करे ? ऐसे गभरानेवाले नहीं। पांडवो का चित्र ग्वालों के रुप में दिखाते है। सदा ग्वालबाल साथ रहते थे।

ना। आप सब एक दो के जज बन गये हो। बाप भी तो देख रहा है, यह ऐसे हैं, यह ऐसे हैं, यह ऐसे हैं...। ब्रह्मा बाप को प्रत्यक्ष में देखा कैसी भी बार-बार गलती करनेवाली आत्मा रही लेकिन बापदादा (विशेष साकार रुप में ब्रह्मा बाप) ने सर्व बच्चों प्रति याद-प्यार देते, सर्व बच्चों को मीठे-मीठे कहा। दो चार कडुवे और बाकी मीठे... क्या ऐसे कहा ? फिर भी ऐसी आत्माओं के प्रति भी सदा रहमदिल बने। क्षमा के सागर बने। लेकिन अच्छा आपने अपनी वृत्ति में किसी के प्रति भी अगर निगेटिव भाव रखा, तो इससे आपको क्या फायदा है ? अगर आपको इसमें फायदा है, फिर तो भले रखो, छुट्टी है। अगर फायदा नहीं है, परेशानी होती हैं...., वह बात सामने आयेगी। बापदादा देखते हैं, उस समय उसको आइना दिखाना चाहिए। तो जिस बात में अपना कोई फायदा नहीं है, नोलेजफुल बनना अलग चीज है, नोलेज है - यह रांग है, यह राइट है। नोलेजफुल बनना रांग नहीं है, लेकिन वृत्ति में धारण करना यह रांग है क्योंकि अपने में ही मूड आफ, व्यर्थ संकल्प, याद की पावर कम, नुकसान होता है। जब प्रकृति को भी आप पावन बनाने वाले हो तो यह तो आत्मायें हैं। वृत्ति वायब्रेशन और वायुमण्डल तीनों का सम्बन्ध है। वृत्ति से वायब्रेशन होते हैं, वायब्रेशन से वायुमण्डल बनता हैं। लेकिन मूल है वृत्ति। **अगर आप समझते हो कि जल्दी-जल्दी बाप की प्रत्यक्षता हो तो तीव्र गति का प्रयत्न है सब अपनी वृत्ति को अपने लिए, दूसरों के लिए पोजिटिव धारण करो। नोलेजफुल भले बनो लेकिन अपने मन में निगेटिव धारण नहीं करो**। निगेटिव का अर्थ है किचडा। अभी-अभी वृत्ति पावरफुल करो, वायब्रेशन पावरफुल बनाओ, वायुमण्डल पावरफुल बनाओ क्योंकि सभी ने अनुभव कर लिया है, वाणी से परिवर्तन, शिक्षा से परिवर्तन बहुत धीमी गति से होता है, होता है लेकिन बहुत धीमी गति से। अगर आप फास्ट गति चाहते हो तो नोलेजफुल बन, क्षमा स्वरुप बन, रहमदिल बन, शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन करो। देखो, प्रत्यक्ष देखा है आप सबने, मधुबन में जो भी आते हैं, सबसे ज्यादा प्रभाव किस बात का पडता है ? वायुमण्डल का। यहाँ भी चाहे सभी नम्बरवार हैं लेकिन ब्रह्मा बाप की कर्मभूमि है,

की, सम्बन्ध-सम्पर्क में आये वह भी डबल लाइट फील करेगा। अनुभव करेगा कि यह सम्बन्ध में सदा हल्का अर्थात् इजी है, भारी नहीं रहेगा। सम्बन्ध में आऊं, नहीं आऊं... लेकिन दुआयें मिलने के कारण दोनों तरफ नियम प्रमाण, ऐसा इजी भी नहीं - जैसे कहावत है, ज्यादा मीठे पर चींटियाँ बहुत आती हैं। तो इतना इजी भी नहीं, लेकिन डबल लाइट रहेगा। तो बापदादा कहते हैं - अपने खजाने चेक करो। समय दे रहे हैं। अभी समाप्ति का बोर्ड नहीं लग हैं। इसलिए चेक करो और बढते चलो।

24-2-02

अभी अपने अन्दर चेक करो-मेरी वृत्ति किसी आत्मा के प्रति भी कोई निगेटिव वायब्रेशन हैं ? अगर विश्व का वायुमण्डल परिवर्तन करना है, लेकिन अपने मन में किसी एक आत्मा के प्रति भी अगर व्यर्थ वायब्रेशन वा सच्चा वायब्रेशन भी निगेटीव है तो वह विश्व परिवर्तन कर नहीं सकेगा। बाधा पडता रहेगा, समय लग जायेगा। वायुमण्डल में पावर नहीं आयेगी। कई बच्चे कहते हैं वह है ही ऐसा ना ! है ही ना ! तो वायब्रेशन तो होगा ना ! बाप को भी ज्ञान देते हैं, बाबा आपको पता नहीं है, वह आत्मा है ही ऐसी। लेकिन बाप पूछते हैं कि वह खराब है, रांग हैं, होना नहीं चाहिए लेकिन खराब को अपने वृत्ति में रखो, क्या यह बाप की छुट्टी हैं ?

जब तक हर ब्राह्मण आत्मा के स्वयं की वृत्ति में कैसी भी आत्मा के प्रति वायब्रेशन निगेटिव है तो विश्व कल्याण प्रति वृत्ति से वायुमण्डल में वायब्रेशन फैला नहीं सकेंगे। यह पक्का समझ लो। कितनी भी सेवा कर लो, रोज आठ-आठ भाषण कर लो, योग शिविर करा लो, कई प्रकार के कोर्स करा लो लेकिन किसी के प्रति भी अपनी वृत्ति में कोई पुराना निगेटिव वायब्रेशन नहीं रखो। अच्छा वह खराब है, बहुत गलतियां करता है, बहुतों को दु:ख देता है, तो क्या आप उसके दु:ख देने में जिम्मेवार बनने के बजाए, उसको परिवर्तन करने में आप मददगार बनो। अगर कोई ऐसी भी आत्मा है जो आप समझते हैं, बदलना नहीं हैं। चलो, आपकी जजमेंट में वह बदलने वाली नहीं है, लेकिन नम्बरवार तो हैं ना ! तो आप क्यों सोचते हो यह तो बदलनेवाली है ही नहीं। आप क्यों जजमेंट देते हो, वह तो बाप जज है

चैतन्य में अपना जड यादगार देख रहे है। यह वंडरफुल बात है ना !

24-5-77

सारे विश्व के अंदर कोटो में कोई गाई हुई थोडी सी आत्मायें जिन्हों ने बाप को पाया है - न सिर्फ जाना है, लेकिन जानने के साथ साथ जिसको पाना था वह पा लिया। ऐसे बाप के अति स्नेही सहयोगी बच्चों के भाग्य को बापदादा देख रहे थे। वैसे सर्व आत्मायें बच्चे हैं लेकिन आप आत्माये डायरेक्ट बच्चे हो - आप शिववंशी ब्रह्माकुमार-कुमारीयां हो सारे विश्व में जो भी अन्य आत्मायें, धर्म के क्षेत्र में वा राज्य के क्षेत्र में महान वा नामीग्रामी बने हैं, धर्मपिताएं बने हैं,जगतगुरु कहलानेवाले बने हैं, लेकिन मात-पिता के संबंध से अलौकिक जन्म और अलौकिक पालना उसमें से किसीको भी प्राप्त नहीं होता है। अलौकिक मात-पिता का अनुभव स्वप्न में भी वह नहीं करते हैं और आप श्रेष्ठ अत्मायें वा पद्मा पद्मपति आत्मायें हररोज माता-पिता की वा सर्व संबंधो की याद-प्यार लेने के पात्र हो। न सिर्फ याद-प्यार, लेकिन स्वयं सर्वशक्तिवान बाप आप बच्चों का सेवक बनकर हर कदम में साथ भी निभाता है। इतना ही नहीं, अति स्नेह से सिर का ताज बनाकर नैनो का सितारा बनाकर साथ ले जाते है। ऐसा भाग्य धर्मपिता वा जगतगुरुओं का नहीं है क्युंकी आप श्रेष्ठ आत्मायें प्रेरणा द्वारा वा टचींग द्वारा नहीं लेकिन मुख वंशावली होने के कारण डायरेक्ट मुख द्वारा सन्मुख सुनते हो। ऐसा भाग्य किन आत्माओं का है ? मेजोरीटी भारतवासी गरीब भोली आत्माओ का हैं। जो न उम्मीदवार थे कि हमें कब बाप मिल सकता हैं ? ऐसी नाउम्मीदवार आत्मायें को ही इतना श्रेष्ठ भाग्य मिला है।

ऐसे डायरेक्ट बच्चे होने के कारण संगमयुग में सर्व संबंधो के सुख के अनुभव के साथ साथ विश्व के राज्य का वर्सा भी सहज प्राप्त हो जाता है। आप आत्माओं को धर्म और राज्य दोनों प्राप्ति है। लेकिन अन्य आत्माओं को धर्म है तो राज्य नहीं, राज्य है तो धर्म नहीं। इस डबल प्राप्ति की निशानी सारे ड्रामा के अंदर डबल ताजधारी सिर्फ आप हो। और भी आपकी विशेषतायें है। संपुर्ण प्राप्ति अर्थात तन-मन-धन-संबंध और प्रकृति के सर्व सुख जिस में अप्राप्त कोई वस्तु नहीं ऐसी श्रेष्ठ प्राप्ति जो अन्य कोई

आत्मा को नहीं होती वह आपको प्राप्त होती है। उंचे ते उंच बाप की डायरेक्ट संतान, परमपूज्य पिता की संतान होने के कारण आप आत्मायें भी डबल रुप में पुजी जाती हो। एक शालीग्राम के रुप में, दुसरी देवी देवता के रुप में तो ईतने भाग्यशाली हो जो स्वयं भगवान आपका भाग्य बाला करते है। इसलिये कमजोरी के गीत नहीं गाओ। लेकिन अपने ऐसे भाग्य को स्मृति में रखो।

2-6-77

ये स्मृति रेहती है कि हम ही सर्व धर्म स्थापक वा सर्व धर्म की आत्माओं के पूर्वज है ? आदी सनातन धर्म की आप आत्मायें बीज अर्थात बाप द्वारा डायरेक्ट तनाके रुप में हो। सृष्टि वृक्ष के चित्र में आपका मूल स्थान तना है। जीस द्वारा ही सर्व धर्म रुपी शाखायें उत्पन्न हुई है। तो आप मूल आधार अर्थात सर्व के पूर्वज ब्राह्मण सो देवता हो अर्थात आदि देव की आदी रचना हो। तो सर्व आत्माओं के आधार मूरत और उद्धार मूरत आप पूर्वज हो। ऐसे अपने श्रेष्ठ स्वमान में रेह ये महामंत्र याद रखो कि जो इस समय अपना जो संकल्प अर्थात मन्सा-वाचा-कर्मणा जैसे चलती है वह सर्व आत्माओं तक पहोंचती है ? तना द्वारा ही सर्व शाखाओं को अर्थात् सर्व आत्माओं को श्रेष्ठ संकल्पो की शक्ति वा सर्व शक्तियों की प्राप्ति ओटोमेटीकली होती रेहती है। पूर्वजों को ही सब फोलो करते हैं। आप पूर्वज आत्माओं के आधार से सृष्टि का समय और स्थिति का आधार है। आप सतोप्रधान है तो संसार गोल्डन एज अर्थात सतयुग है। तो समय और स्टेज का आधार, प्रकृति का आधार आप पूर्वजों के उपर है। ऐसे आप पूर्वज आत्माओं के कर्मो की, प्रारब्ध स्वयं के साथ-साथ सर्व आत्माओं के और सृष्टि चक्र के साथ संबंधित है। ऐसी महान आत्मायें आप हो। ऐसी श्रेष्ठ पोझीशन के आगे पांच विकार और पांच तत्त्व दास रुप बन जायेंगे। और आप पांच विकारों को ओर्डर करें की आधा कल्प के लिये विदाय ले जाओ। प्रकृति सतोप्रधान, सुखदायी बन जाओ। अगर पूर्वज की पोझीशन में रेहकर संकल्प द्वारा ओर्डर करेंगे, तो वह न माने ये हो नहीं सकता।

साथी बन गये हैं। अच्छे-अच्छे सेवा के साथी हैं। बस आपको देखकर खुश होते हैं, यही बहुत है। ठीक हैं।

ड्रामानुसार जो सेवा के प्लैन बनतें हैं, वह अच्छे बन रहे हैं और हर एक सदा संगठन में स्नेह वा दुआयें लेने के लिए बालक सो मालिक का पाठ पक्का कर एक दो को आगे बढाते हुए, एक दो के विचारों को भी सम्मान देते हुए आगे बढते हैं तो सफलता ही सफलता है। सफलता तो होनी ही हैं। लेकिन अभी जो निमित्त आत्मायें हैं उन्हों को विशेष स्नेह के सम्बन्ध में लाना, यह सबके पुरुषार्थ को तीव्र बनाना है। स्नेह, नि:स्वार्थ स्नेह, जहाँ नि:स्वार्थ स्नेह है वह सम्मान देंगे भी और लेंगे भी। वर्तमान समय स्नेह की माला में सबको पिरोना, यही विशेष आत्माओं का कार्य है और इससे ही, स्नेह संस्कारो को परिवर्तन भी करा सकता है। ज्ञान हर एक के पास है लेकिन स्नेह कैसे भी संस्कार वाले को समीप ला सकता है। सिर्फ स्नेह के दो शब्द सदा के लिए उनके जीवन का सहारा बन सकता है। नि:स्वार्थ स्नेह जल्द माला तैयार कर देगा। ब्रह्मा बाप ने क्या किया ? स्नेह से अपना बनाया। तो आज इसकी आवश्यक्ता है। है ना ऐसे !

3-2-02

कई बच्चे समझते हैं बापदादा से तो सम्बन्ध है ही। परिवार में हुआ नहीं हुआ, क्या बात है, (क्या हर्जा है) बीज से तो है ही। लेकिन आपको विश्व का राज्य करना है ना ! तो राज्य में सम्बन्ध में आना ही होगा। इसलिए सम्बन्ध-सम्पर्क में आना ही है लेकिन सम्बन्ध-सम्पर्क में यथार्थ खजाना मिलता है दुआयें। बिना सम्बन्ध-सम्पर्क के आपके पास दुआओं का खजाना जमा नहीं होगा। माँ बाप की दुआयें तो हैं, लेकिन सम्बन्ध-सम्पर्क में भी दुआयें लेनी हैं। अगर दुआयें नहीं मिलती, फीलिंग नहीं आती तो समझो सम्बन्ध-सम्पर्क में कोई कमी है। यथार्थ रीति अगर सम्बन्ध-सम्पर्क है तो दुआओं की अनुभूति होनी चाहिए। और दुआओं की अनुभूति क्या होगी ? अनुभवी तो हो ना ! अगर सेवा से दुआयें मिलती हैं तो दुआयें मिलने का अनुभव यही होगा जो स्वयं भी सम्बन्ध में आते, कार्य करते डबल लाइट (हल्का) होगा, बोझ नहीं महसूस करेगा और जिनकी सेवा

18-1-02

आज विशेष ब्रह्मा बाप को याद ज्यादा किया ना ! ब्रह्मा बाप ने भी सभी बच्चों को स्मृति और समर्थी स्वरुप से याद किया। कई बच्चों ने ब्रह्मा बाप से रुहरुहान करते मीठा-मीठा उलहना भी दिया कि आप इतना जल्दी क्यों चले गये ? और दूसरा उलहना दिया कि हम सब बच्चों से छुट्टी लेकर क्यों नहीं गये ? तो ब्रह्मा बाप ने बोला कि मैने भी शिव बाप से पूछा कि हमें अचानक क्यों बुला लिया ? तो बाप ने बोला - अगर आपको कहते कि छुट्टी लेके आओ तो क्या आप बच्चों को छोड सकते थे, या बच्चे आपको छोड सकते थे ? आप अर्जुन का तो यही यादगार है कि अन्त में नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप ही रहे हैं। तो ब्रह्मा बाप मुस्कराये और बोले कि यह तो कमाल थी जो बच्चों ने भी नहीं समझा कि जा रहे हैं और ब्रह्मा ने भी नहीं समझा जा रहा हुँ। सामने होते भी दोनों तरफ चुप रहे क्योंकि समय प्रमाण सन शोज फादर का पार्ट ड्रामा की नूंध थी, इसको कहते हैं वाह ड्रामा वाह ! सेवा का परिवर्तन नूंधा हुआ था। ब्रह्मा बाप को बच्चों का बैकबोन बनना था। तो अव्यक्त रुप में फास्ट सेवा का पार्ट बजाना ही था।

अच्छा - बापदादा आज एक बात गुल्जार बच्ची को कह रहे थे, विशेष मुबारक दे रहे थे कि ब्रह्मा तन की सेवा जैसी सेवा इस रथ ने भी **33** वर्ष पूरे किये। यह भी ड्रामा में पार्ट है। बाप की मदद और बच्ची की हिम्मत, दोनों मिलकर पार्ट बजाते हैं।

दादीजी से -

आज के दिन बाप ने बच्चों को विशेष विश्व के सामने प्रत्यक्ष किया। बाप करावनहार बने और बच्चों को करनहार बनाया। अच्छा है, यह स्नेह की लहर सभी को समा देती है। अच्छा - शरीर को चलाने की विधि आ गई है ना ! चलाते-चलाते बाप समान अव्यक्त बन जायेंगी। सहज पुरुषार्थ है - दुआयें। सारे दिन में कोई भी नाराज नहीं हो, दुआयें मिलें - यह फर्स्ट क्लास पुरुषार्थ। सहज भी है, फर्स्ट भी है। ठीक है ना ! शरीर कैसा भी हो लेकिन आत्मा तो शक्तिशाली है ना ! तो जो आप सभी बच्चों ने **14** वर्ष तपस्या की, वह तपस्या का बल सेवा करा रहा है। अभी तो आपके बहुत

7-6-77

चढती कला का आधार आप विशेष आत्माओं के उपर है। आप की चढती कला से ही सर्व आत्माओं का भला अर्थात कल्याण होता है। सर्व आत्माओं की बहोत समय की मुक्ति प्राप्त करने की आशा आपकी चढती कला के आधार से पूर्ण होती है - ऐसे आधारमूर्त आत्मायें हो। देनेवाला दाता बाप है - लेकिन निमित्त आपको बनाया है। वरसा बाप द्वारा प्राप्त होता है लेकिन बापने निमित् आप बच्चों को बनाया है। तो ऐसी स्मृति रखने से अलबेलापन वा आलस्य समाप्त हो जायेगी।

पार्टीयों से -

सदा निश्चय बुद्धि विजय रतन है - ये स्मृति रहती है ? निश्चय का फल है विजय। कोई भी कार्य करते हुए स्वयं में, बाप में, ड्रामा में निश्चय है, सब प्रकार के निश्चय है तो कभी भी विजय न हो ऐसा हो ही नहीं सकता। अगर होती तो उसका कारण - निश्चय में कमी। अगर स्वयं में भी संशय है, यह होगा - नहीं होगा - सफलता होगी या नहीं होगी तो भी संपूर्ण निश्चय नहीं कहेंगे। निश्चय बुध्धि का संकल्प दृढ होगा, कमजोरी का नहीं। "जो होगा वह देख लेंगे" - यह भी संशय का संकल्प है "जो होगा", नहीं "हुआ ही पडा है"-ऐसा निश्चय। कर्म करने के पहले भी निश्चय हो कि हुआ ही पडा है। ऐसी स्टेज है ? कैसी भी माया आवे लेकिन डगमग न हो। निश्चयबुध्धि हर तुफान वा माया के विघ्न को ऐसे पार करेंगा जैसे कुछ है ही नहीं। जैसे सायन्स के साधन है तो गर्मी होते भी उसके लिये गर्मी नहीं है। ऐसे जो निश्चयबुध्धि होगा उनके आगे माया के तुफान आयेंगे लेकिन उसके लिये बडी बात नहीं होगी। सेइफ रहने के साधन उसके पास है तो मायाजीत बन जायेंगे।

10-6-77

मदद मिलने का रास्ता पकडना चाहिये या मांगना चाहिये ? मदद मिलने का रास्ता है - हिंमत। हिंमते बच्चे मददे बाप। हिंमत रखो तो मदद लाख गुना मिलेगी। तो ये हिसाब को जान हिंमत कभी नहीं छोडनी चाहिये। हिंमत को छोडा अर्थात प्रोपर्टी को छोडा। अर्थात बाप को छोंडा। क्या भी

हो जाये, कैसी भी परिस्थिति आ जाये, हिंमत नहीं छोडनी चाहिये। हिंमत छोडी तो श्वास छोडा। हिंमत ही इस मरजीवा जन्म का श्वास है। हिंमत है तो मुर्छित से सुरजीत हो जायेंगे। हिंमत रखकर चलने वाले को सहज वरदान प्राप्त हो जाता है। मुश्कील भी सहज हो जाती है। असंभव बात भी संभव हो जाती है।

16-6-77

पांडवो की जो विशेषता गाई हुई है यह जानते हो ? पांडवो के विजय का मुख्य आधार 'एक बाप दुसरा ना कोई' था। पांडवो का संसार ही बाप था। यह किस का यादगार है ? आपका यादगार हरकल्प गाया जाता है। तो ऐसे अनुभव होता है कि संसार ही बाप है ? जहाँ देखो वहां बाप ही नजर आता है ? संसार में संबंध और संपत्ति होती है तो संबंध भी बाप में है और संपत्ति भी बाप में है। और बाकी कुछ रह गया है ? पांडव अर्थात जिसका संसार ही बाप है। ऐसे पांडव हर कार्य में विजयी होंगे ही। होंगे या नहीं यह सवाल नहीं उठ सकता। कर्म करने के पहले संकल्प उठता है होगा या नहीं होगा। कि हुआ ही पडा है - यह निश्चय है ? पांडवो को पहले ही निश्चय होता की हमारी जीत है। क्योंकि सर्वशक्तिवान साथ है। पांडव अर्थात सदा विजयी रतन, विजयी रतन ही बाप को प्रिय लगते है।

20-6-77

ब्राह्मण आत्माओं के लिये सर्व संबंध और सर्व प्राप्ति का आधार एक बाप के सिवाय और कोई नहीं है। तो जहां सर्व संबंध और सर्व प्राप्ति हैं वहां बुध्धि न चाहते हुए भी स्वत: और सहज हो जाती है। अगर नहीं जाती तो अवश्य बाप से सर्व संबंधों का अनुभव नहीं है। इसलिये सर्व संबंधो से बाप को अपना बनाओ। और सर्व प्राप्ति का आधार भी एक बाप को अनुभव करो।

सहजयोगी बनने का दुसरा आधार है सदा अपने को संकल्प, वाणी और कर्म द्वारा विश्व की सर्व आत्माओं प्रति सेवाधारी समज सेवा में ही सबकुछ लगाओ, अर्थात सहयोगी बनो। जो बाप द्वारा सर्व शक्तियां गुण, ज्ञान समय, संकल्प आदि जो खजाने मिले है वह सेवा में लगाओ। अपनी

बहुत मिलेंगी। डबल खाता जमा हो जायेगा - पुरुषार्थ का भी और दुआओं का भी। तो संकल्प द्वारा, बोल द्वारा, वाणी द्वारा, कर्म द्वारा, सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा दुआयें दो और दुआयें लो। एक ही बात करो बस दुआयें देनी हैं। चाहे कोई बद्दुआ दे तो भी आप दुआ दो क्योंकि आप दुआओं के सागर के बच्चे हो। कोई नाराज हो आप नाराज नहीं हो। आप राजी रहो। ऐसे हो सकता ? **100** जने आपको नाराज करें और आप राजी रहो, हो सकता हैं ? हो सकता हैं ? दूसरी लाइन वाले बताओ हो सकता हैं ? अभी और भी नाराज करेंगे, देखना ! पेपर तो आयेगा ना। माया भी सुन रही है ना ! बस यह व्रत लो, दृढ संकल्प लो - 'मुझे दुआयें देनी हैं और लेनी हैं, बस'। हो सकता है ? माया भले नाराज करे ना ! आप तो राजी करनेवाले हो ना ? तो एक ही काम करो बस। नाराज न होना है, न करना है। करे तो वह करे, हम नहीं होवें। हम न करें न होवें। हर एक अपनी जिम्मेवारी ले। दूसरे को नहीं देखें, यह करती है, यह करता है, हम साक्षी होके खेल देखनेवाले हैं, सिर्फ राजी का खेल देखेंगे क्या, नाराजगी का भी तो बीच-बीच में देखना चाहिए ना। लेकिन हर एक अपने आपको राजी रखे।

31-12-01

अविनाशी गिफ्ट जो बापदादा द्वारा मिली है, उसकी अविनाशी मुबारक मनाओ। सदा ही एक-दो को शुभ भावना की मुबारक दो। यही सच्ची मुबारक है। मुबारक जब देते हो तो स्वयं भी खुश होते हो और दूसरे भी खुश होते हैं। तो सच्चे दिल की मुबारक है - एक-दो के प्रति दिल से शुभ भावना, शुभ कामना की मुबारक। शुभ भावना ऐसी श्रेष्ठ मुबारक है जो कोई भी आत्मा की कैसी भी भावना हो, अच्छी भावना वा अच्छा भाव न भी हो, लेकिन आपकी शुभ भावना उनका भाव भी बदल सकती है, स्वभाव भी बदल सकती है। वैसे स्वभाव शब्द का अर्थ ही है - स्व (सु) अर्थात् शुभ भाव। हर समय हर आत्मा को यही अविनाशी मुबारक देते चलो। कोई आपको कुछ भी दे लेकिन आप सबको शुभ भावना दो। अविनाशी आत्मा के अविनाशी आत्मिक स्थिति में स्थित होने से आत्मा परिवर्तित हो ही जायेगी।

(अभी सोनीपत का भी कार्य शुरु करना है) सब हो जायेगा। सबमें सफलता है ही (हैदराबाद की जमीन का भी फाइनल हो गया है) थोडा-बहुत तो जमीनों के ऊपर खिटखिट होती है, यह तो वरदान है ब्राह्मणों को, खिटखिट का भी लेकिन सफलता साथ है। खिटखिट के साथ, सफलता का भी वरदान साथ है, इसलिए थोडा टाइम लग जाता है। होना तो है ही। हुआ ही पडा है। जो हैदराबाद के निमित्त बने हैं चीफ मिनिस्टर्स या जो भी आफिसर्स उन सबको याद भेजना, टेली भेजना। हिम्मत अच्छी रखी है। अभी तो सबमें हिम्मत आ गई है। चाहे छोटे हैं, चाहे बडे हैं लेकिन हिम्मत अच्छी रखी है। अभी तो सबमें हिम्मत आ गई है। चाहे छोटे हैं, चाहे बडे हैं लेकिन हिम्मत से कर रहे हैं। अच्छा कर रहे हैं। जहाँ भी बन रहा हैं, बापदादा, ड्रामा, सर्व परिवार की दुआयें हैं ही हैं। इसलिए सफलता है ही। (सारनाथ, आगरा, लण्डन आदि में भवन बन रहे हैं) जहाँ भी बन रहा है, सेवा पहले ही तैयार है। आप सबके, सर्व के अंगुली देने से चारों ओर कार्य चल रहा है, सफलता हो रही है। और आगे बढके और सफलता होनी ही है। तो आप सब बना रहे हो या वहाँ बनानेवाले बना रहे हैं। आप सब भी साथी हो ना! जहाँ भी जो भी बनता है, हमारा बन रहा है। ऐसे नहीं दिल्ली में बन रहा है, हैदराबाद में बन रहा है। हमारे बाबा का है, हमारा है। हमारा पन सब तरफ होना चाहिए। इसको कहा जाता है बेहद परिवार, बेहद की भावना और इसी भावना का फल मिलता है।

15-12-01

समय के अनुसार विश्व की आत्मायें आप आत्माओं को रुहानियत का सैम्पुल देखने चाहती हैं। इसका सहज साधन हैं - सिर्फ एक शब्द अटेन्शन में रखो, बार-बार उस एक शब्द को अपने आप अण्डरलाइन करो, वह एक शब्द है - एकव्रता भव। जहाँ एक हैं वहाँ एकाग्रता स्वत: ही आ जाती हैं। अचल, अडोल स्वत: ही बन जाते हैं। एकव्रता बनने से एकमत पर चलना बहुत सहज हो जाता हैं। जब है ही एकव्रता तो एक की मत से एकमती सद्गति सहज हो जाती है। एकरस स्थिति स्वत: ही बन जाती है।

अभी वाणी और मनसा सेवा के बैलेन्स में बिजी हो जायेंगे तो ब्लैसिंग

वृत्ति द्वारा वायुमंडल को श्रेष्ठ बनाओ, स्मृति द्वारा सर्व को मास्टर सर्वशक्तिवान की स्मृति दिलाओ ऐसे सर्व खजानों से सहयोगी अर्थात सहजयोगी बनो।

22-6-77

मुलाकात

ट्रस्टी अर्थात मैं पन समाप्त और बाबा बाबा ही मुखसे निकले। जीन साधनों को कार्य में लगाते हो उसमें अगर मेरा पन है तो देह-अभिमान आता है अगर तन के भी ट्रस्टी है तो देह का भान हो नहीं सकता। जबसे जनम हुआ तो आपने पहला वायदा किया की जो मेरा सो बाप का, तो फिर मेरापन कहाँ से आया ? तो सदा देही-अभिमानी अर्थात नष्टो मोहा बनने का सहज साधन हुआ - "मैं ट्रस्टी हुं" कल्प पहेले के यादगार में भी अर्जुन को मुश्कील तब लगा जब मेरापन आया। 'मेरा' खतम तो नष्टोमोहा अर्थात स्मृति स्वरुप हो गये। मेरा पति, मेरी पत्नी, मेरा घर, मेरे बच्चे, मेरी दुकान, मेरा दफ्तर, ये मेरा-मेरी सहज को मुश्कील कर देता है। तो मेरा खतम कर बाबा बाबा की स्मृति से स्वयं और सर्व को सहजयोगी बनाओ।

ट्रस्टी अर्थात मैं पन समाप्त और बाबा ही बाबा मुखसे निकले, ऐसी स्थिती है ? या जिन साधनों को कार्य में लगाते हो उसमें मेरा पन का भान है ? मेरा पन है तो देहभान आता है। अगर तन के भी ट्रस्टी है तो देह का भान हो नहीं सकता। जब ऐसे मरजीवा जन्म हुआ तो पहला वायदा क्या किया ? जो मेरा सो बाप का। तो मरजीवा हो गये ना ? फिर मेरापन कहाँ से आया ? दि हुई चीज कभी वापिस नहीं ली जाती। **तो सदा देही अभिमानी बनने का अर्थात नष्टोमोहा बनने का सहज साधन क्या हुआ ? ट्रस्टी हुँ। मैं ट्रस्टी हुँ। कल्प पहले के यादगार में भी अर्जुन का यादगार दिखाया है, उसमें अर्जुन को मुश्किल कब लगा ? जब मेरा पन आया। मेरा खत्म तो नष्टोमोहा अर्थात स्मृति स्वरुप हो गये।** मेरा पति, मेरी पत्नि, मेरा घर, मेरे बच्चे, मेरी दुकान, मेरा दफतर यह मेरा मेरा सहज को मुश्किल कर देता है। सहज मार्ग का साधन है नष्टोमोहा अर्थात ट्रस्टी। इस स्मृति से स्वयं और सर्व को सहजयोगी बनाओ, समजा ?

देखते हुए न देखो, सुनते हुए न सुनो। बाप का सुनाया हुआ सुनो, बापने

जो दिया है वह देखो। इसी प्रेक्टीस से फुल पास होंगे।

31-7-77

ओलमाईटी ओथोरीटी के बच्चे बनने से अर्थात अलौकिक जनम होते ही ताज, तख्त और तिलक जनमसिद्ध अधिकार के रुप में प्राप्त होता है। ऐसे अपने भाग्य के चमकते हुए सितारे और भाग्य विधाता के गुण गाते रहो तो सदा गुण संपन्न बन ही जायेंगे। अपनी कमजोरीयों के गुण नहीं गाओ। भाग्यके गुण गाते रहो। प्रश्न से पार प्रसन्नचित्त रहो।

1978

कभी कोई बात आये तो सोचो बापदादा हमारे साथ है। ऑलमाईटी ओथोरीटी हमारे साथ है। ऑलमाईटी के आगे कोई भी परिस्थिति चीटी के समान है। कैसी भी परिस्थिति हो लेकिन जो बाप के बने है उनका बाप जीम्मेवार है। सोचो नहीं कहाँ रहेंगे, कैसे रहेंगे, क्या खायेंगे। सच्चे दिल का साथी बाप है। जब तक बाप है तब तक भूखे नहीं रह सकते। जब भक्तों को अनेक प्रकार के अनुभव होते है, वह तो भिखारी है, उनका भी पेट भर जाता है तो आप तो अधिकारी है, आप भूखे कैसे रह सकते ? इसलिये जरा भी गभराओ नहीं कि क्या होगा ? जो होगा वो अच्छा होगा। सिर्फ छोटा सा पेपर होगा कि कहाँ तक निश्चय है। पेपर सारे जीवन का नहीं होता। एक या दो घंटे का पेपर होता है। अगर बापदादा सदा साथ है, पेपर देने के टाईम पर 'एक बल एक भरोसा' है तो बिलकुल ऐसे पार हो जायेंगे जैसे कुछ था ही नहीं। जैसे स्वप्न होता है ना ! स्वप्न की जो बातें होती है वह उठने के बाद समाप्त होती है। तो दिखाई बडा रुप देता लेकिन है कुछ नहीं। तो ऐसे निश्चयबुद्धि हो ? हरेक के मस्तक पर वीक्टरी का तिलक लगा हुआ है। तो ऐसी आत्मायें जो है ही विजय के तिलकवाले उनकी हार हो नहीं सकती।

जान्यु - 78

मुलाकात

हर कदम में पदमों की कमाई जमा हो रही है ? ऐसे अनगिनत पद्मो के मालिक अर्थात पदमापदम् भाग्यशाली अपने को अनुभव करते हो ? कोटों मे कोई और कोई में भी कोई ये हम आत्माओं का गायन है। क्युं की

आप अपना कर्तव्य याद रखो कि मेरा कर्तव्य है - किसी भी प्रकार की आग बुझाने का, दुआ देने का। शुभ भावना की भावना का सहयोग देने का। बस एक अक्षर याद रखो, माताओं को सहज एक शब्द याद रखना है - दुआ देना, दुआ लेना'

अभी विश्व की आत्मायें मुक्ति चाहती हैं तो बाप द्वारा मुक्ति का वर्सा दिलानेवाले निमित्त आप हो। तो निमित्त आत्मायें पहले स्वयं को भिन्न-भिन्न समस्याओं के कारण को निवारण कर मुक्त बनायेंगे तब विश्व को मुक्ति का वर्सा दिला सकेंगे। तो मुक्त हैं ? किसी भी प्रकार की समस्या का कारण आगे नहीं आये, यह कारण है, यह कारण है, यह कारण है... जब कोई कारण सामने बनता है तो कारण का सेकण्ड में निवारण सोचो, यह सोचो कि जब विश्व का निवारण करनेवाली हुँ तो क्या स्वयं की छोटी-छोटी समस्याओं का स्वयं निवारण नहीं कर सकती ! नहीं कर सकता ! अभी तो आत्माओं की क्यू आपके सामने आयेगी 'हे मुक्तिदाता मुक्ति दो' क्योंकि मुक्ति दाता के डायरेक्ट बच्चे हो, अधिकारी बच्चे हो। मास्टर मुक्तिदाता तो हो ना। लेकिन क्यू के आगे आप मास्टर मुक्ति दाताओं के तरफ से एक रुकावट का दरवाजा बन्द है। क्यू तैयार है लेकिन कौन-सा दरवाजा बन्द हैं ? पुरुषार्थ में कमजोर पुरुषार्थ का, एक शब्द का दरवाजा है, वह है 'क्यों'। क्वेश्चन मार्क, (?) क्यों, यह क्यों शब्द अभी क्यू को सामने नहीं लाता। तो बापदादा अभी देश-विदेश के सभी बच्चों को यह स्मृति दिला रहे हैं कि आप समस्याओं का दरवाजा 'क्यों', इसको समाप्त करो। अभी कोई भी सेवाकेन्द्र पर समस्या का नाम-निशान न हो।

अगर दिल से दृढ संकल्प करेंगे कि कारण को समाप्त कर निवारण स्वरुप बनना ही है, कुछ भी हो, सहन करना पडे, माया का सामना करना पडे, एक-दो के सम्बन्ध-सम्पर्क में सहन भी करना पडे, मुझे समस्या नहीं बनना है। जैसे अभी एक दो को देख करके हाथ उठाने में उमंग आता है ना ! ऐसे ही जब भी कोई समस्या आवे तो सामने बापदादा को देखना, दिल से कहना बाबा और बाबा हाजिर हो जायेगा, समस्या खत्म हो जायेगी। समस्या सामने से हट जायेगी और बापदादा सामने हाजिर हो जायेगा।

25-11-01

आज प्यार के सागर बापदादा अपने प्यार स्वरुप बच्चों के प्यार की डोरी में खींचकर मिलन मनाने आये हैं। बच्चों ने बुलाया और हजूर हाजिर हो गये। अव्यक्ति मिलन तो सदा मनाते रहते है, फिर भी साकार में बुलाया तो बापदादा बच्चों के विशाल मेले में पहुँच गये हैं। बापदादा को बच्चों का स्नेह, बच्चों का प्यार देख खुशी होती है और दिल ही दिल में चारों ओर के बच्चों के लिए गीत गाते हैं - 'वाह! श्रेष्ठ भाग्यवान बच्चे वाह! भगवान के प्यार के पात्र आत्मायें वाह!' इतना बडा भाग्य और इतना साधारण रुप में सहज प्राप्त होना है, यह स्वप्न में भी नहीं सोचा था। लेकिन आज साकार रुप में भाग्य को देख रहे हो।

बापदादा सभी बच्चों को बहुत सहज पुरुषार्थ की विधि सुना रहे हैं। माताओं को सहज चाहिए ना! तो बापदादा सब माताओं, बच्चों को कहते हैं, सबसे सहज पुरुषार्थ का साधन हैं - 'सिर्फ चलते-फिरते सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हर एक आत्मा को दिल से शुभ भावना की दुआयें दो और दूसरों से भी दुआयें लो।' चाहे आपको कोई कुछ भी दे, बददुआ भी दे लेकिन आप उस बददुआ को भी अपने शुभ भावना की शक्ति से दुआ में परिवर्तन कर दो। आप द्वारा हर आत्मा को दुआ अनुभव हो। उस समय अनु करो जो बददुआ दे रहा है वह इस समय कोई-न-कोई विकार के वशीभूत है। वशीभूत आत्मा के प्रति वा परवश आत्मा के प्रति कभी भी बददुआ नहीं निकलेगी। उसके प्रति सदा सहयोग देने की दुआ निकलेगी। सिर्फ एक ही बात याद रखो कि हमें निरन्तर एक ही कार्य करना है - 'संकल्प द्वारा, बोल द्वारा, कर्मणा द्वारा, सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा दुआ देना और दुआ लेना। अगर किसी आत्मा के प्रति कोई भी व्यर्थ संकल्प वा निगेटिव संकल्प आवे भी तो यह याद रखो मेरा कर्तव्य क्या है! जैसे कहाँ आग लग रही हो और आग बुझाने वाले होते हैं तो वह आग को देख जल डालने का अपना कार्य भूलते नहीं, उन्हों को याद रहता है कि हम जल डालनेवाले हैं, आग बुझानेवाले हैं, ऐसे अगर कोई किसी भी विकार की आग वश कोई भी ऐसा कार्य करता है जो आपको अच्छा नहीं लगता है तो

साधारण रुप में आये हुए बाप को और बाप के कर्तव्य को जानना ये कोटों में कोई का पार्ट है। जान लिया, मान लिया और पा भी लिया। जब विश्व का मालिक अपना हो गया तो विश्व अपनी हो गइ न! जैसे बीज अपने हाथ में है तो वृक्ष तो है ही न! जिसको ढुंढते थे उसको पा लिया। घर बैठे भगवान मिला तो कितनी खुशी होनी चाहिये? भगवानने मुझे अपना बनाया ये खुशी में रहो तो कहीं भी आंख नहीं डूबेगी। सामने देखते भी नजर नहीं जायेगी। बाप मिला, सब कुछ मिला - यही सबसे बडी खुशी है। इसी खुशी में मन से नाचते रहो।

सारे विश्व के अंदर सबसे श्रेष्ठ नसीब हमारा है ऐसे निश्चय रखो। हमारे जैसा खुशनसीब और कोई हो ही नहीं सकता। क्युंकी बाप ने स्वयं आकर अपना बनाया है।

मुलाकात

बाप द्वारा खुश रहने का साधन मिला है जो कैसी भी परिस्थिति में खुश रह सकते है। वह साधन है "बाबा"। 'बाबा' कहना और खुशी प्राप्त होना। 'बाबा' शब्द याद करना अर्थात स्वीच ओन करना, जीससे अंधकार या दु:ख, अशांति, उल्झन, उदासी, टेन्शन आदि सब की सेकन्ड में समाप्ती हो जाती है . ऐसा एक शब्द 'एक बाबा' - मंत्र बाप ने दिया है। कैसा भी समय हो, ये मंत्र एक सेकन्ड में पार कर लेने वाला है। सिर्फ इस मंत्र को विधि पूर्वक समय पर कार्य में लगाओ। ये एक शब्द का मंत्र वन्डरफुल जादु करनेवाला है। इस एक शब्द के मंत्र द्वारा जो चाहो - चाहे सुख शांति, चाहे शक्ति, आनंद आदि ले सकते हो। इसलिये जादु मंत्र कहते है।

मुलाकात

अगर दिल से,संबंध से, स्नेह से, 'बाबा' कहा और माया भागी। जैसे कितना भी बडा डाकु हो, लेकिन जब पकडा जाता है तो बकरी बन जाता है। ऐसे माया डाकु भी एक सेकन्ड के पहले जो शेर के रुपवाली होती है वह 'बाबा' शब्द निकलने से सेकेन्ड के बाद बकरी बन जाती है। तो इस साधन को सदा साथ रखो। 'बाबा' भूला माना सबकुछ भूला। साधन सहज है, सिर्फ बार बार युझ करने का तरीका आना चाहिये। सदा ये याद

रखो 'मेरा बाबा' तो जब 'मेरा बाबा' याद आया तो माया भाग जायेगी।

मुलाकात

एक एक रतन वेल्युएबल है। क्युंकी अगर वेल्युएबल रतन नहीं होते तो 'कोटो में कोई' में आप कैसे आते ? जिसको दुनिया अपनाने के लिये तडप रही है उसने मुझे अपना लिया। एक सेकन्ड के दर्शन के लिये दुनिया तडप रही है और आप तो उनके बच्चे बन गये। तो कितना नशा, कितनी खुशी होनी चाहिये ? सदा मन खुशी में नाचता रहे। वर्तमान समय की खुशी में नाचना भविष्य चित्र में भी दिखाते है। कृष्ण को सदैव डान्स के पोझ में दिखाते है न जैसे, बाप जैसा कोई नहीं है, वैसे आपके भाग्य जैसा और कोई भाग्यशाली नहीं। बाप को जान लिया, पा लिया, इस से बडा भाग्य तो कोई होता नहीं। घर बैठे बाप मिल गया। बापने ही आकर जगाया कि बच्चे उठो। देश कोई भी हो लेकिन स्थिति सदा बाप के साथ रहने की हो। चाहे देश से दुर है लेकिन बाप के साथ रहनेवाले नजदीक से नजदीक है। बाप मिला, सबकुछ मिला, इसी स्मृति से अतिन्द्रिय सुख के झुले में झुलने की अनुभूति ओटोमेटीकली हो जायेगी।

18-1-78

सदा अपने को गोडली स्टुडन्ट समजते हो ? गोडली स्टुडन्ट लाईफ सबसे बेस्ट गाई जाती है। ऐसे सदा बेस्ट अर्थात श्रेष्ठ जीवन का अनुभव करते हो ? जैसे स्टुडन्ट सदा हँसते, खेलते और पढते रहते और कोई बात बुद्धि में विघ्न रुप नहीं बनती, ऐसे ही पढना, पढाना निर्विघ्न रहना। **बाप के साथ उठना, बैंठना, खाना, पीना यह है गोडली स्टुडन्ट लाईफ।** घर में रहेते भी बाप का साथ है ना ? चाहे कहाँ भी शरीर रहे लेकिन मन बाप और सेवा में लगा रहे। खाना, पीना, चलना सब बाप के साथ। इसकी ही महिमा है। जो प्रिय वस्तु होती है, उसका साथ छोडना मुश्किल होता है। साथ रहना, योग लगाना मुश्किल नहीं। योग तुटना मुश्किल। ऐसे अनुभवी को कहा जाता है 'गोडॅली स्टुडन्ट लाईफ' जिसको छोडना मुश्किल है, तोडना मुश्किल है लेकिन साथ रहना मुश्किल नहीं। यही बेस्ट लाईफ है। सदा हँसते रहो, और गाते रहो। और बाप के साथ चलते रहो। ऐसा साथ

अपने संस्कार-स्वभाव को जाननेवाला राजयुक्त है। तो बाप को राजी करने की विधि है - राजयुक्त चलना और राजयुक्त अर्थात न अपने अन्दर नाराजगी आये, न औरों को नाराज करें।

अभी सभी हद की बातों से ऊँचे हो जाओ। हद की बातों में, हद के संस्कारों में समय नहीं गँवाओ। बापदादा आज भी सभी बच्चों को, चाहे यहाँ बैठे हैं, चाहे सेन्टर्स पर बैठे हैं, चाहे देश में हैं, चाहे विदेश में हैं लेकिन रहमदिल भावना से इशारा दे रहे हैं - बापदादा हर बच्चे की हद की बातें, हद के स्वभाव-संस्कार, नटखट वा चतुराई के संस्कार, अलबेलेपन के संस्कार बहुत समय से देख रहे हैं, कई बच्चे समझते हैं सब चल रहा है, कौन देखता है, कौन जानता है लेकिन अभी तक बापदादा रहमदिल हैं, इसलिए देखते हुए भी, सुनते हुए भी रहम कर रहा है। लेकिन बापदादा पूछते हैं आखिर भी रहमदिल कब तक ? कब तक ? क्या और टाइम चाहिए ? बाप से समय भी पूछता है, आखिर कब तक ? प्रकृति भी पूछती है। जवाब दो आप। जवाब दो। अभी तो सिर्फ बाप का रूप चल रहा है, शिक्षक और सतगुरु तो है ही। लेकिन बाप का रूप चल रहा हैं। क्षमा के सागर का पार्ट चल रहा है। लेकिन धर्मराज का पार्ट चला तो ? क्या करेंगे ? बापदादा यही चाहते हैं कि धर्मराज के पार्ट में भी वाह ! बच्चे वाह ! का आवाज कानों में गूंजे। फिर बाप को उलहना नहीं देना। बाबा, आपने सुनाया नहीं, हम तैयार हो जाते थे ना ! इसलिए अभी हद की छोटी-छोटी बातों में, स्वभाव में, संस्कारों में समय नहीं गँवाओ। चल रहे हैं, चलता है, नहीं, जमा होता जाता हैं। दुगुना, तीगुना, सौगुना जमा होता जाता है, चलता है नहीं। इसलिए इस द्रढ संकल्प का दिल में दीप जगाओ। हद से बेहद में वृत्ति, दृष्टि, कृति बनानी ही है। इसीलिए बापदादा कहते हैं बनानी पडेगी। आज यह कह रहे हैं बनानी पडेगी फिर क्या कहेंगे ? टू लेट। समय को देखो, सेवा को देखो, सेवा बढ रही हैं, समय आगे दौड रहा है। लेकिन स्वयं हद में हैं या बेहद में हैं ? हद की बातों के पीछे आप नहीं दौडो। तो बेहद की वृत्ति स्वमान की स्थिति आपके पीछे दौडेगी।

आये, अभी तो गुजरात को देखकर अनुभवी हो गये हो ना। कहाँ भी आये। देखो प्रकृति को कोई मना नहीं कर सकता है, गुजरात में आओ, आबू में नहीं आओ, बोम्बे में नहीं आओ, नहीं। वह स्वतंत्र है। लेकिन सभी को अपने स्व-स्थिति को अचल-अडोल और अपने बुद्धि को, मन के लाइन को क्लीयर रखना है। लाइन क्लीयर होगी तो टचिंग होगी। बापदादा ने पहले भी कहा था उन्हों की वायरलेस है, आपकी वाइसलेस बुद्धि है। क्या करना है, क्या होना है, यह निर्णय स्पष्ट और शीघ्र होगा। ऐसे नहीं सोचते रहो बाहर निकलें, अन्दर बैठें, दरवाजे पर बैठें, छत पर बैठें। नहीं। आपके पाँव वहाँ ही चलेंगे जहाँ सेफ्टी होगी। और अगर बहुत घबरा जाओ, घबराना तो नहीं चाहिए, लेकिन बहुत घबरा जाओ, बहुत डर लगे तो मधुबन एशलम घर आपका है। डरना नहीं। अभी तो कुछ नहीं है, अभी तोसब कुछ होना है, डरना नहीं, खेल है। परिवर्तन होना है ना। विनाश नहीं, परिवर्तन होना है। सब में वैराग्य वृत्ति उत्पन्न होनी है। रहमदिल बन सर्व शक्तियों द्वारा सकाश दे रहम करो।

4-11-01

अगर नयनों में निरन्तर बाप बिन्दी समाया हुआ है तो और किसी तरफ भी नयन आकर्षित नहीं होंगे। मेहनत से छूट जायेंगे। और तरफ नजर जायेगी ही नहीं। बिल्कुल सेफ हो जायेंगे। कुछ भी हो जाए लेकिन नयनों में सदा बिन्दी बाप समाया हुआ हो। सदा नयनों में समाया हुआ होगा तो दिल में भी वही समाया हुआ होगा। तो दिल में और नयनों में समाने की विधी है - बापदादा, साहेब को राजी करना।

बापदादा को राजी करना बहुत सहज है। बापदादा को राजी करने का सहज साधन है 'सच्ची दिल'। सच्ची दिल पर साहेब राजी है। हर कर्म में सत्यवादी। सत्यता महानता है। जो सच्ची दिल वाला है, वह सदा संकल्प, वाणी और कर्म में, सम्बन्ध-सम्पर्क में राजयुक्त हैं-उसको परखने की निशानी है-अगर राज जानता है तो वह कभी भी अपने स्व-स्थिति से नाराज नहीं होगा अर्थात दिलशिकस्त नहीं होगा और संकल्प में भी, वृत्ति से भी, स्मृति से भी, दृष्टि से भी किसी को नाराज नहीं करेगा, क्योंकि वो सबके वा

सारे कल्प में नहीं मिल सकता। संगम पर भी और किसी को ढुंढो तो मिलेगा ? नहीं ना ! बाप ने आपको ढुंढा या आपने बाप को ? ढुंढते तो आप भी थे। रास्ता रोंग लीया था। ढुंढना तो था बाप को, ढुंढा भाईओ को। इसलिये ढुंढ नहीं सके।

1-4-78

अभी के हर सेकन्ड का साथीपन का अनुभव जन्मजन्मांतर भी नामरुप संबंध से साथ रहने के अनुभव के निमित्त बनेंगे। विकर्माजीत बनने में भी साथी और राजा विक्रम बनने के समय भी साथी। हर पार्ट में, हर वर्ण में भी साथ साथ होंगे। इसका ही गायन है साथ जीयेंगे, साथ मरेंगे, अर्थात साथ चढेंगे और साथ गीरेंगे। चढती कला, उतरती कला, दिन और रात दोनो में निरंतर योगी - निरंतर साथी जितना अभी संगम पर साथ निभाने में संपूर्ण है उतना ही समीप के संबंधी बनने में भी समीप होते है। विश्व की नंबरवन श्रेष्ठ आत्मा (ब्रह्मा बाबा) का भी ड्रामा के अंदर महत्व है। ऐसे नंबरवन आत्मा के सदा संबंध में रहनेवाली आत्माओं का भी महत्व हो जाता है। जैसे आजकल भी अल्पकाल का स्टेट्स पानेवाली अर्थात जैसे कि कोई प्रेसिडेन्ट या प्राईम मिनिस्टर बनती है। तो उनके साथ उनकी फेमीली का भी महत्व हो जाता है। तो जो सदाकाल की श्रेष्ठ आत्मा है उनके संबंध में आनेवाली आत्माओं का महत्व कितना उंचा होगा ? अभी थोडी सी हलचल होने दो, फिर देखना, आदि पुरानी आत्मायें जो सदा साथ का संबंध निभाती आइ है उन्हों का कितना महत्व होता है ! जैसे पुरानी चीज की वेल्यु समझते है वैसे आप आत्माओं की वेल्यु का वर्णन करते - करते, गुणगान करते - करते स्वयं को भी धन्य अनुभव करेंगे। जितना आप बाप के गुण गाते हो उतना ही रीटर्न में ऐसी आत्माओं के गुणगान करेंगे। लेकिन अभी गुणगान क्युं नहीं करते ? सेवा अभी करते हो, अभी कम फल मिलता है लेकिन संपूर्ण फल अंत में क्युं मिलता है ? क्युंकि बाप के गुण गाते गाते अपने आपके भी गुण गाने शुरु कर देते हो। भाषा बडी मीठी बोलते हो। लेकिन मैं पन का भाव होने के कारण आत्माओं की भावना समाप्त हो जाती है। ये मैं पन का भाव न रखना ही सबसे बडे ते

बडा अती सुक्ष्म त्याग है। इसी त्याग के आधार पर नंबरवन आत्माने नंबरवन भाग्य बनाया है। और अष्ट रतन नंबर का आधार भी यही त्याग है। हर सेकन्ड, हर संकल्प में बाबा बाबा याद रहे और मैं पन समाप्त हो जाये - जब मैं नहीं तो मेरा भी नहीं। मेरा स्वभाव, मेरा संस्कार है, मेरी नेचर है, मेरा काम है, मेरी ड्युटी है, मेरा नाम, मेरी शान... मैं पन में यह मेरा मेरा भी समाप्त हो जाता है। मैं पन और मेरापन समाप्त हुआ यही समानता और संपूर्णता है। स्वप्न में भी मैं पन न हो इसको कहा जाता है अश्वमेघ यज्ञ में मैं पन के अश्व को श्वाहा करना। यही अंतिम आहुति है और इसी के आधार पर अंतिम विजय के नगाडे बजेंगे। संगठन रुप में इस अंतिम आहुति का दिल से आवाज फैलाओ फिर ये पांच तत्त्व सदा सब प्रकार के सफलताओं की माला पहनायेंगे। अब तक तो तत्त्व भी सेवा में कहीं कहीं विध्नरुप बनते है। लेकिन स्वाहा की आहुति देने से आरती उतारेंगे, खुशी के बाजे बजायेंगे और सब आत्मायें अपनी बहोत काल की इच्छाओं की प्राप्ति करते हुए महिमा के घुंघरु पहन नाचेंगे। ऐसे नाचेगी तब तो अंतिम भक्ति के संस्कार मर्ज होंगे। ऐसी भक्त आत्माओं का भक्तपन का वरदान भी अभी ही आप इष्टदेव आत्माओं द्वारा मिलेगा।

1-12-78

सर्व खजानो की चाबी 'बाबा'

बाप के सर्व खजानों के अधिकारी बनने की वा बाप को स्वयं पर समर्पण कराने की चाबी बाप ने बच्चों को दे दी है। जिस द्वारा जो चाहो एक सेकन्ड में प्राप्त कर सकते हो। ऐसी जादु की चाबी जिससे जिस शक्ति का आह्वान करो वह शक्तिस्वरुप बन सकते हो। एक सेकन्ड में जिस लोक में जाना चाहो वहाँ जा सकते हो। जिस काल को जानना चाहो उस काल को जाननेवाले ज्योतिषी बन सकते हो। संकल्प की शक्ति को भी जिस रफ्तार से जिस मार्ग पर ले जाना चाहो उसी रीति से संकल्प शक्ति के अधिकारी बन सकते हो। तो ऐसी चाबी काममें क्यों नहीं लगाते हो ? उसके महत्व को नहीं जाना है क्या ? महत्व को जानकर हर समय कार्य में लाओ। चाबी लगाओ और खजाना लो। एकनामी बनना ही चाबी को

अभी बापदादा की यही दिल की आश है कि - "दाता का बच्चा हर एक दाता बन जाओ।" माँगो नहीं यह मिलना चाहिए, यह होना चाहिए, यह करना चाहिए। दाता बनो, एक दो को आगे बढाने में फ्राकदिल बनो। बापदादा को छोटे कहते हैं कि हमको बडों का प्यार चाहिए और बाप छोटों को कहते हैं कि बडों का रिगार्ड करो तो प्यार मिलेगा। रिगार्ड देना ही रिगार्ड लेना है। रिगार्ड ऐसे नहीं मिलता है। देना ही लेना है। जब आपके जड चित्र देते हैं। देवता का अर्थ ही है देनेवाला। देवी का अर्थ ही है देनेवाली। तो आप चैतन्य देवी देवतायें दाता बनो, दो। अगर सभी देनेवाले दाता बन जायेंगे, तो लेनेवाले तो खत्म हो जायेंगे ना !फिर चारों ओर सन्तुष्टता की, रुहानी गुलाब की खुशबू फैलेगी। सुना !

जगदीशभाई से

जगतअम्बा माँ का स्लोगन याद है ना - हुक्मी हुक्म चलाए रहा। तो आपका भी अभी यही अनुभव है ना। करावनहार कराए रहा हैं। चलानेवाला चला रहा है, बाकी अच्छा है यह सभी आदि रत्नों में, आप हो सेवा के आदि रत्न, यह (दादियाँ) हैं स्थापना के आदि रत्न। यह पाण्डव भी सेवा के आदि रत्न है। (आज बाबा के कमरे में गया तो वह यादें आ गई, यहाँ होते भी नहीं था, आँसू भर आये) इस याद से और ही प्रत्यक्ष रुप में एक तो प्यार बढता है, दिल का प्यार बाहर निकलता है और दूसरा याद में बाप के समानता की हिम्मत भी आती है। अच्छा हुआ। लेकिन बापदादा कह रहे थे कि जो भी सेवा में आदि रत्न हैं वा स्थापना के आदि रत्न हैं दोनों ने सेवा बहुत अच्छी की है, निमित्त बने हैं। सहन भी किया और प्यार भी मिला। अच्छा किया क्योंकि उस समय हिम्मत रखनेवाले थोडे थे लेकिन हिम्मत रखते सहयोगी बनें, वह सहयोग की जो मार्क्स है वह जमा हैं। जमा खाता अच्छा है। एक का पद्मगुणा जमा होता है ना। तो जिन्होंने भी जो कुछ दिल से और शक्तिशाली होके किया हैं, उन्हों का एक का लाख गुणा नहीं लेकिन पदमगुणा जमा हैं।

20-2-01

तो गुजरात मजबूत है ना ! हजार भूजाओं की छत्रछाया में हो। कहाँ भी

अच्छा हुआ, नहीं। दिल माने स्व की भी और सर्व की भी। और दूसरी बात है कि सेवा की और उसकी रिजल्ट अपनी मेहनत या मैने किया... मैने किया यह स्वीकार किया अर्थात् सेवा का फल खा लिया। जमा नहीं हुआ। बापदादा ने कराया, बापदादा के तरफ अटेन्शन दिलाया, अपने आत्मा की तरफ नहीं। यह बहन बहुत अच्छी, यह भाई बहुत अच्छा, नहीं। बापदादा इन्हों का बहुत अच्छा, यह अनुभव कराना - यह है जमा खाता बढाना। इसलिए देखा गया टोटल रिजल्ट में मेहनत ज्यादा, समय एनर्जी ज्यादा और थोडा-थोडा शो ज्यादा। इसलिए जमा का खाता कम हो जाता है। जमा के खाते की चाबी बहुत सहज है, वह डायमण्ड चाबी है, गोल्डन चाबी लगाते हो लेकिन जमा की डायमण्ड चाबी है "निमित्त भाव और निर्मान भाव"। अगर हर एक आत्मा के प्रति, चाहे साथी, चाहे सेवा जिस आत्मा की करते हो, दोनों में सेवा के समय, आगे पीछे नहीं सेवा करने के समय निमित्त भाव, निर्मान भाव, नि:स्वार्थ शुभ भावना और शुभ स्नेह इमर्ज हो तो जमा का खाता बढता जायेगा।

आजकल अलबेलापन बहुत प्रकार का आ गया है। कोई के अन्दर किस प्रकार का अलबेलापन है, कोई के अन्दर किस प्रकार का अलबेलापन है। हो जायेगा, कर लेंगे... और भी तो कर रहे हैं, हम भी कर लेंगे.... यह तो होता ही है, चलता ही है... यह भाषा अलबेलेपन की संकल्प में तो है ही लेकिन बोल में भी है। तो बापदादा ने कहा कि इसके लिए नये वर्ष में आप कोई युक्ति बच्चों को सुनाओ। **तो आप सबको पता है जगत अम्बा माँ का एक सदा धारणा का स्लोगन रहा है, याद है ? किसको याद है, हुक्मी हुक्म चलाए रहो.. तो जगत अम्बा बोली अगर यह धारणा सब कर लें कि हमें बापदादा चला रहा है, उसके हुक्म से हर कदम चला रहे हैं। अगर यह स्मृति रहे तो हमारे को चलानेवाला डायरेक्ट बाप है। तो कहाँ नजर जायेगी ? चलने वाले की चलानेवाले के तरफ ही नजर जायेगी, दूसरे तरफ नहीं। तो यह करावनहार निमित्त बनाए करा रहे हैं, चला रहे हैं। जिम्मेवार करावनहार है। फिर सेवा में जो माथा भारी हो जाता है ना, वह सदा हल्का रहेगा, जैसे स्हे गुलाब।**

लगाने का तरीका है।

3-12-78

आपका पहला वचन क्या है ? 'एक बाप दुसरा न कोई' अर्थात मरना। नाम मरना है लेकिन सबकुछ पाना है। निभाना मुश्किल लगता है क्या? है सहज, सिर्फ परिवर्तन करना नहीं आता। भाव और भावना का परिवर्तन करना नहीं आता। 'वाह ड्रामा वाह' जब कहते हो तो सब क्या हुआ ? हर बात 'वाह वाह' हो गई ना ! हाय हाय खतम कर दो, वाह वाह आ जाती है। **वाह बाप, वाह ड्रामा और वाह मेरा पार्ट**। इसी स्मृति में रहो तो विश्व वाह वाह करेगा। मुश्किल तब लगता है जब बाप के साथ को भूल जाते हो बाप को साथी बनाकर मुश्किल को सहज कर सकते हो। अकेले होने से बोझ अनुभव करते हो तो ऐसे साथी बनाकर मुश्किल को सहज बनाओ।

14-12-78

अपने निश्चय के फाउन्डेशन से अनेक प्रकार की प्राप्तियों के आधार में स्वयं ही हील जाते है। न मालुम विनाश होगा या नहीं होगा। भगवानुवाच ठीक है या नहीं है, दुनिया के आगे निश्चय से कहे या नहीं कहे, गुप्त रहे या प्रत्यक्ष होवे, जमा करे या सेवा में लगावे, प्रवृत्ति को संभाले या सेवा में लगे। आखिर भी क्या होना है ? बाप तो निराकार और आकारी हो गये, साकार में सामना करनेवाले तो हम है। ऐसे व्यर्थ संकल्पो का तूफान रच स्वयं को ही डगमग करते है। अपने निश्चय के फाउन्डेशन को हिला देते है। जैसे तूफान कहां पहुचा देता है वैसे यह व्यर्थ संकल्पो का तूफान तीव्र पुरुषार्थ से पुरुषार्थ तरफ ले आता है! ऐसे तूफानो में मत आओ। बापदादा ऐसे बच्चो से पूछते है कि क्यों अब तक भी ट्रस्टी हो या गृहस्थी हो ? जब ट्रस्टी हो तो जीम्मेवार कौन ? आप या बाप ? जब जीम्मेवार बाप है तो होगा या नहीं होगा, क्या होगा ? यह बाप की जीम्मेवारी है या आपकी है ? निश्चय बुध्धि की पहली निशानी क्या है ? निश्चयबुध्धि अर्थात सदा निश्चिंत। जब बापने आपकी सब चिंताये अपने उपर ले ली तो आप क्यों चिंता करते ? विनाश हो न हो, वा कब होगा ? यह चिंता ब्राह्मण जीवन में क्यों ? जब की ब्राह्मण जीवन हीरेतुल्य जीवन, बाप से मिलन मनाने की

जीवन, चढती कलाकी जीवन, सर्व खजानो से संपन्न होनेवाली जीवन, सर्व अनुभूति संपन्न जीवन अच्छी नहीं लगती है ? जल्दी समाप्त करना चाहते हो ? कोई कष्ट या तकलीफ है क्या ? भक्तिमार्ग में यही पुकारा कि यह अतिन्द्रिय सुख के जीवन के दिन एक से चौगुने हो जाय और अब थक गये हो ? ऐसा संकल्प करनेवालो के उपर बापदादा को हंसी आती है। अप्राप्ति क्या है जो ऐसे संकल्प उठाते हो। जब कल्याणकारी बाप कहते हो-कल्याणकारी जीवन कहते हो तो जो भी भगवानुवाच है उसमें अनेक प्रकार के कल्याण समाये हुए है। क्यों और कैसे के संकल्प से निश्चय बुध्धि का फाउन्डेशन हिलाते क्यों हो ? अगर ऐसे छोटे छोटे तुफानो में फाउन्डेशन हिल जाता है तो महाविनाश के महान तूफानो में कैसे ठहर सकेंगे ? महाविनाश में अनेक प्रकार के चारो ओर के तूफान होंगे फिर क्या करेंगे ? इसलिए जो समय मिला है, जो साथ मिला है अनेक प्रकार के खजाने मिल रहे है, इन सब प्राप्ति होते हुए समाप्ति की उत्कन्ठा क्यों करते हो ? इसलिए व्यर्थ संकल्पो का तूफान समाप्त करो।

28-12-78

तीव्र पुरुषार्थ की सहज विधि जिससे सहज सिद्धी प्राप्त हो जाये अर्थात सदा सिध्धी स्वरुप हो जाये, संकल्प, बोल और कर्म सिध्ध हो जाये, जिससे विश्व के आगे प्रसिध्ध होंगे, वह एक शब्द की सहज विधी है "एकाग्रता"। एकाग्रता कम होने के कारण ही हलचल होती है। एकाग्रता से संकल्प, बोल और कर्म का व्यर्थपन समाप्त हो जाता है। एकाग्रता अर्थात एक ही श्रेष्ठ संकल्प जिस एक बीजरुपी संकल्प में सारा वृक्षरुपी विस्तार समाया हुआ हो उसमें सदा स्थित रहेना।

एकाग्रता की शक्ति से किसी भी आत्मा का मेसेज उस आत्मा तक पहुँचा सकते हो। किसी भी आत्मा का आहवान कर सकते हो, किसी भी आत्मा को दुर बैठे सहयोग दे सकते हो। वह एकाग्रता जानते हो ना ? 'सिवाय एक बाप के' और कोई भी संकल्प में न हो। एक बाप में सारे संसार की सर्व प्राप्तियों की अनुभूति हो। एक ही एक हो।

पुरुषार्थ द्वारा एकाग्र बनना वह अलग स्टेज है लेकिन एकाग्रता में स्थित

अर्थात फरिश्ता रुप से प्यार। चलो बिन्दी बनना मुश्किल लगता है, फरिश्ता बनना तो उससे सहज है ना ! सुनाओ, बिन्दी रुप से फरिश्ता तो बन सकते हो ना ! बिन्दी रुप में कर्म करते हुए कभी-कभी व्यक्त शरीर में आ जाना पडता है लेकिन बापदादा ने देखा कि साइंस वालों ने एक लाइट के आधार से रोबर्ट बनाया है। वह सब काम करता है। और फास्ट गति से करता है, लाइट के आधार से। और साइंस का प्रत्यक्ष प्रमाण है। तो बापदादा कहते है क्या साइलेन्स की शक्ति से, साइलेन्स की लाइट से आप कर्म नहीं कर सकते ? नहीं कर सकते ? इन्जीनियर और साइंस वाले बैठे हैं ना ! तो आप भी एक रुहानी रोबर्ट की स्थिति तैयार करो। जिसको कहेंगे रुहानी कर्मयोगी, फरिश्ता कर्मयोगी। बापदादा ऐसे रुहानी चलते फिरते कर्मयोगी फरिश्ते देखने चाहते हैं। **अमृतवेले उठो, बापदादा से मिलन मनाओ, स्नान करो, वरदान लो। जो करना है वह करो। लेकिन बापदादा से रोज अमृतवेले 'कर्मयोगी फरिश्ता भव' का वरदान लेके फिर कामकाज में आओ।**

तो ब्रह्मा बाप के प्यार का रिटर्न है - ब्रह्मा बाप समान कर्मयोगी फरिश्ता भव।

इस स्थिति की धरनी तैयार करो तो बापदादा-साक्षात बाप, बच्चों द्वारा साक्षात्कार अवश्य करायेगा।

31-12-2000

सेवा का बल भी मिलता हैं, फल भी मिलता है। बल है स्वयं के दिल की सन्तुष्टता और फल है सर्व की सन्तुष्टता। अगर सेवा की, मेहनत और समय लगाया तो दिल की सन्तुष्टता और सर्व की सन्तुष्टता, चाहे साथी, चाहे जिन्हों की सेवा की, दिल में सन्तुष्टता अनुभव करें, बहुत अच्छा, बहुत अच्छा कहते चले जायें, नहीं। दिल में सन्तुष्टता की लहर अनुभव हो। कुछ मिला, बहुत अच्छा सुना, वह अलग बात है। कुछ मिला, कुछ पाया, जिसको बापदादा ने पहेले भी सुनाया - एक है दिमाग तक तीर लगना और दूसरा है दिल पर तीर लगना। अगर सेवा की और स्व की सन्तुष्टता, अपने को खुश करने की सन्तुष्टता नहीं, बहुत अच्छा हुआ, बहुत

हैं। आज की इस सभा में देखो, कौन बैठे हैं ? कोई अरब-खरबपति बैठे हैं ? साधारण आत्माओं का ही गायन हैं। बाप गरीब-निवाज गाया हुआ हैं। अरब-खरबपति निवाज नहीं गाया हुआ हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि क्या किसी अरब-खरबपति की बुद्धि को नहीं पलटा सकता ? क्या बडी बात हैं ! लेकिन ड्रामा का बहुत अच्छा कल्याणकारी नियम बना हुआ हैं, परमात्म कार्य में फुरी-फुरी (बूंद-बूंद) तलाव होना है। अनेक आत्माओं का भविष्य बनना है। **10-20** का नहीं, अनेक आत्माओं का सफल होना है। इसीलिए गायन है - 'बूंद-बूंद से तलाब'। आप सभी जितना तन-मन-धन सफल करते रहते हो उतना ही सफलता के सितारे बन गये हो।

बापदादा सहज पुरुषार्थ सुना रहे थे - अभी समय तो अचानक होना है, एक घण्टा पहले भी बापदादा अनाउन्स नहीं करेगा, नहीं करेगा, नहीं करेगा ! नम्बर कैसे बनेंगे अगर अचानक नहीं होगा तो, पेपर कैसे हुआ। पास विद आनर का सर्टीफिकेट, फाइनल सर्टिफिकेट तो अचानक में ही होना है। इसलिए दादियों का एक संकल्प बापदादा के पास पहुँचा है। दादियाँ चाहती है कि अभी बापदादा साक्षात्कार की चाबी खोले, यह इन्हों का संकल्प हैं। आप सब भी चाहते हो बापदादा चाबी खोलेंगे या आप निमित्त बनेंगे, अच्छा, बापदादा चाबी खोले, ठीक है। बापदादा हाँ जी करते हैं, (ताली बजा दी) पहले पूरा सुनो। बापदादा को चाबी खोलने में क्या देरी है, लेकिन करायेगा किस द्वारा ? प्रत्यक्ष किसको करना है ? बच्चों को या बाप को ? बाप को भी बच्चों द्वारा करना है क्योंकि अगर ज्योतिबिन्दु का साक्षात्कार भी हो जाए तो कई तो बिचारे..., बिचारे हैं ना ! तो समझेंगे ही नहीं कि यह क्या है। अन्त में शक्तियां और पाण्डव बच्चों द्वारा बाप को प्रत्यक्ष होना हैं।

तो बापदादा यह कह रहे हैं कि ब्रह्मा बाप से सबका प्यार तो है, इसीलिए तो अपने को क्या कहलाते हो ? ब्रह्माकुमारी या शिवकुमारी ? ब्रह्माकुमारी कहलाते हो ना, तो ब्रह्मा बाप से प्यार तो है ही ना। तो चलो अशरीरी बनने में थोडी मेहनत करनी भी पडती है लेकिन ब्रह्मा बाप अभी किस रुप में है ? किस रुप में है ? बोलो। (फरिश्ता रुप में है) तो ब्रह्मा से प्यार

हो जाना वह स्थिती इतनी शक्तिशाली है जो ऐसी श्रेष्ठ स्थिती का एक संकल्प भी बाप समान का बहुत अनुभव कराता है। अभी इस रुहानी शक्ति का प्रयोग करके देखो, इसमे एकान्त का साधन आवश्यक है। अभ्यास होने से लास्ट में चारो ओर हंगामा होते हुए भी आप सभी एक के अन्त में खो गए तो हंगामे के बीच भी एकान्त का अनुभव करेंगे, **लेकीन ऐसा अभ्यास बहुत समय से चाहिए।**

14-11-79

यथार्थ पुरुषार्थी कभी भी थकावट महेसुस नहीं करते, कारण ? दोनों के पुरुषार्थ में सिंफ एक बात समजने का अन्तर है, जिससे वे महेनत में रहते और दूसरे महोब्बत में मस्त रहते है। कौन से संकल्प का अन्तर है वह जानते हो ? छोटा सा ही अन्तर है। एक समजते है की हम स्वयं चल रहे है, चलना पडता है, सामना करना पडता है और **दूसरे है जो संकल्प से भी सरेन्डर है।** इसलीए वह सदैव यह अनुभव करते है कि हमें बापदादा चला रहे है। महेनत के पांव से नहीं लेकिन स्नेह की गोदी में चलते रहते है। इसलीए वे स्नेह के पांव से चलते जिसमें थकावट नहीं होती। स्नेह की गोदी वा झोली में सर्व प्राप्तियों की अनुभूति होने के कारण वह चलते नहीं लेकिन उडते रहते है। सदा खुशी में आन्तरिक सुख में, सर्व शक्तियों से उडते रहते है।

कई बच्चे समजते है की संगमयुग पुरुषार्थी जीवन का है और भविष्य जन्म प्रारब्ध का जन्म है। वे समजते है की जो बापदादा का वायदा है - "एक दो और लाख लो" यह वायदा भविष्य के लिए है। लेकिन नहीं। यह वायदा संगमयुग का ही है। जैसे सर्वश्रेष्ठ टाईटल इस समय के है वैसे सर्व प्राप्तियों का अनुभव, सब वायदों की प्राप्ति इस समय होती है। भविष्य तो है ही लेकीन भविष्य से भी वर्तमान श्रेष्ठ है। इस समय ही एक कदम अर्थात एक संकल्प बच्चे करते है की "बाबा हम आपके है" और रीटर्न में बाप हर संकल्प बोल और कर्म में अनुभव कराते है की "मैं" आपका हुँ अर्थात बाप आपका है। एक संकल्प का रीटर्न सारे संगमयुग की जीवन में बाप आप का ही हो जाता है। एक का सिर्फ लाखगुणा नहीं मिलता लेकिन

जब चाहो, जैसे चाहो, जो चाहो बाप सर्वन्टरुप में बांधा हुआ है। तो एक का लाखगुणा तो क्या लेकीन अनगिनतबार का रीटर्न मिलता है। वर्तमान समय का महत्व चलते चलते भूल जाते हो। इस संगमयुग को वरदान है, कौन सा? **"स्वयं वरदाता ही आपका है।"** जब वरदाता ही आपका है तो बाकी क्या रहा? बीज आपके हाथ में है। जिस बीज द्वारा सेकन्ड में जो चाहे वह ले सकते हो। सिर्फ संकल्प करने की बात है। शक्ति चाहिए, सुख चाहिए, आनंद चाहिए... सब आपके लिए जी हजुर है क्योंकि हजूर ही आपका है।

महेनत से निकल स्नेह की - महोब्बत की गोदी में आ जाओ, चल रहे है नहीं लेकीन चला रहे है।

सदा हजूर को बुद्धि में हाजीर रखो तो सर्व प्राप्तियां भी सदा जी हजूर करेगी। अगर हजूर हाजीर है तो सर्व प्राप्तियाँ भी चूम्बक के समान आपे ही सदा आकर्षित होती जायेगी समजा? बापदादा बच्चों की महेनत देख सहन नहीं कर सकते।

जो वायदे करते हो की जहां बीठायेंगे वहाँ बैठेंगे, जो कहेंगे वह करेंगे, तो बाप की बन्धनी आत्मा हो या कर्मबन्धनी आत्मा हो? यह भी बापने डायरेक्शन दीया है की कर्म करो। आप स्वतंत्र हो, "चलानेवाला चला रहा है आप चल रहे हो।" आपकी सरस्वती माँ की यह विशेष धारणा थी "हुकमी हुकम चला रहा है" तब नंबरवन आगे ले लीया ऐसे फोलो फादर-मधर।

23-11-79

एकरस स्थिति बनाने का साधन है एक बल एक भरोसा। सदा एक बल एक भरोसा इसी लगन में रहते है? ओर कोई भी रस ऐसी आत्माओं को आकर्षित नहीं कर सकता। ऐसी आत्माए सदा स्वयं भी लाईट हाउस बन निर्विघ्न हो कर चलते है और अनेको को निमित्त रास्ता दिखानेवाले बनते हैं। तो रोज कितनी आत्माओ को लाईट हाउस बनकर रास्ता दिखाते हो? यही ब्राह्मणो का कर्तव्य है, यही धंधा अथवा व्यवहार है।

आप दिलाराम के दिल में समाये हुए रहेंगे। दिल में बाप समाया हुआ हैं। किसी भी रुप की माया, चाहे सूक्ष्म रुप हो, चाहे रोयल रुप हो, चाहे मोटा रुप हो, किसी भी रुप से माया आ नहीं सकती। स्वप्न मात्र, संकल्प मात्र भी माया आ नहीं सकती। तो मेहनत मुक्त हो जायेंगे ना! बापदादा मन्सा में भी मेहनत मुक्त देखने चाहते हैं। मेहनत मुक्त ही जीवनमुक्त का अनुभव कर सकते हैं।

25-11-2000

आज बापदादा अपने प्यारे ते प्यारे, मीठे ते मीठे छोटे से ब्राह्मण परिवार कहो, ब्राह्मण संसार कहो, उसको ही देख रहे हैं। यह छोटा सा संसार कितना न्यारा भी है तो प्यारा भी है। क्यों प्यारा हैं? क्योंकि इस ब्राह्मण संसार की हर आत्मा विशेष आत्मा है। देखने में तो अति साधारण आत्मायें आती है लेकिन सबसे बडे से बडी विशेषता हर एक ब्राह्मण-आत्मा की यही है जो परम-आत्मा को अपने दिव्य बुद्धि द्वारा पहचान लिया हैं। चाहे **90** वर्ष के बुजुर्ग हैं, बिमार है लेकिन परमात्मा को पहचानने की दिव्य बुद्धि, दिव्य नेत्र सिवाए ब्राह्मण आत्माओं के नामीग्रामी वी.वी.आई.पी. में भी नहीं हैं। यह सभी मातायें क्यों यहाँ पहुँची हैं? टाँगे चलें, नहीं चलें लेकिन पहुँच तो गई हैं। तो पहचाना है तब तो पहुँची हैं ना! यह पहचानने का नेत्र, पहचानने की बुद्धि सिवाए आपके किसी को भी प्राप्त नहीं हो सकती। सभी मातायें यह गीत गाती हो ना - हमने देखा, हमने जाना...।

16-12-2000

आज ब्राह्मण संसार के रचता बापदादा अपने ब्राह्मण संसार को देख देख हर्षित हो रहे हैं। कितना छोटा सा प्यारा संसार है। हर एक ब्राह्मण के मस्तक पर भाग्य का सितारा चमक रहा हैं। नम्बरवार होते हुए भी हर एक के सितारे में भगवान को पहचानने और बनने के श्रेष्ठ भाग्य की चमक है। जिस बाप को ऋषि, मुनि, तपस्वी नेती-नेती कहके चले गये, उस बाप को ब्राह्मण संसार की भोली-भाली आत्माओं ने जान लिया, पा लिया। यह भाग्य किन आत्माओं को प्राप्त होता है? जो साधारण आत्मायें हैं। बाप भी साधारण तन में आते हैं, तो बच्चे भी साधारण आत्मायें ही पहचानती

सभी को कम से कम मालूम तो पड जाए कि हमारा सदा का बाप आया है।

आप स्वयं ही कहते हो – पाना था वो पा लिया। यह ब्रह्मा बाप के आदि अनुभव के बोल हैं, तो जो ब्रह्मा बाप के बोल वही सर्व ब्राह्मणों के बोल। तो बापदादा सभी बच्चों को यही रिवाइज करा रहे हैं कि सदा बाप के कम्पनी में रहो। बाप ने सर्व सम्बन्धों का अनुभव कराया हैं। कहते भी हो कि बाप ही सर्व सम्बन्धी है। जब सर्व सम्बन्धी है तो जैसा समय वैसे सम्बन्ध को कार्य में क्यों नहीं लगाते ! और यही सर्व सम्बन्ध का समय प्रति समय अनुभव करते रहो तो कम्पैनियन भी होगा, कम्पनी भी होगी। और कोई साथियों के तरफ मन और बुद्धि जा नहीं सकती। बापदादा आफर कर रहे हैं – जब सर्व सम्बन्ध आफर कर रहे हैं तो सर्व सम्बन्धों का सुख लो। सम्बन्धो को कार्य में लगाओ

बापदादा जब देखते है – कोई कोई बच्चे कोई कोई समय अपने को अकेला वा थोडा–सा नीरस अनुभव करते हैं तो बापदादा को रहम आता है कि ऐसी श्रेष्ठ कम्पनी होते, कम्पनी को कार्य में क्यों नहीं लगाते ? फिर क्या कहते ? व्हाई–व्हाई **(Why-Why)** बापदादा ने कहा 'व्हाई' नहीं कहो, जब यह शब्द आता है, व्हाई निगेटिव है और पोजिटिव है 'फ्लाई' **(Fly)**, तो व्हाई–व्हाई कभी नहीं करना, फ्लाई याद रखो। बाप को साथी बनाए फ्लाई करो तो बडा मजा आयेगा। वह कम्पनी और कम्पैनियन दोनों रुप से सारा दिन कार्य में लाओ। ऐसा कम्पैनियन फिर मिलेगा ? बापदादा इतने तक कहते हैं – अगर आप दिमाग से वा शरीर से दोनों प्रकार से थक भी जाओ तो कम्पैनियन आपकी दोनों प्रकार से मालिश करने के लिए भी तैयार हैं। मनोरंजन कराने लिए भी एवररेडी हैं। फिर हद के मनोरंजन की आवश्यक्ता ही नहीं पडेगी। ऐसा यूज करना आता है वा समजते हो बडे–से–बडा बाबा है, टीचर है, सतगुरु है...? लेकिन सर्व सम्बन्ध हैं। समझा।

19-3-2000

बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि बापदादा का बच्चों से प्यार होने के कारण एक बात अच्छी नहीं लगती। वह है – मेहनत बहुत करते हैं। अगर दिल साफ हो जाए तो मेहनत नहीं, दिलाराम दिल में समाया रहेगा और

26-11-79

कई बच्चो का एक संकल्प पहुंचता है कि बाप तो निर्बंधन है और हमें तो देह का बंधन है। कर्म का बंधन है, लेकिन बापदादा यह क्वेश्चन पुछते है अब तक क्या देह सहित त्याग नहीं किया है ? पहला पहला वायदा है सब बच्चों का कि तन, मन, धन तेरा न कि मेरा। जब तेरा है, मेरा है ही नहीं, तो फिर बंधन काहे का ? यह तो लोन पर बापदादा ने दिया है। आप ट्रस्टी हो, न कि मालिक। **जब मरजीवा बन गये तो 83 जन्मों का हिसाब–किताब समाप्त हो गया। अब नया ये 84 वा जन्म है। इस जन्म की तुलना और जन्मों से कर ही नहीं सकते। इस दिव्य जन्म का बंधन नहीं, संबंध है। इस दिव्य अलौकिक जन्म में ब्राह्मण आत्मा स्वतंत्र है न कि परतंत्र। तेरे को मेरे में लाते हो–तब परतंत्र होते हो।** मेरा पहलेवाला हिसाब, मेरा पहलेवाला संस्कार, आया कहाँ से ? अगर ऐसे स्वतंत्र होकर रहो कि यह लोन मिली हुई देह है तो सेकेन्ड में उड सकते हो।

आप निर्बंधन आत्मा हो या बंधनी हो ? पहेले ही शरीर छोड चुके हो। मरजीवा बन चुके हो। यह तो सिर्फ विश्व सेवा के लिए शरीर रहा हुआ है। पुराने शरीरो में बाप शक्ति भरकर चला रहे है। **जिम्मेदारी बाप की है फिर आप क्यों ले लेते हो ? जिम्मेदारी छोड दो अर्थात मेरापन छोड दो। मेरा पुरुषार्थ, मेरी ईन्वेन्शन, मेरी सर्विस, मेरी टचींग, मेरे गुण बहुत अच्छे है, मेरी हैंडलींग पावर बहुत अच्छी है, मेरी निर्णयशक्ति बहुत अच्छी है, मेरी समज ही यथार्थ है, बाकी सब मीसअंडरस्टेन्डींग में है। यह मेरा मेरा आया कहाँ से ? यही रोयल माया है। इससे मायाजीत बन जाओ तो सेकेन्ड में प्रकृतिजीत बन जायेंगे।** प्रकृति का आधार लेंगे, लेकिन अधिन नहीं बनेंगे। प्रकृतिजीत ही विश्वजीत व जगतजीत है। फिर सेकेन्ड का डायरेक्शन अशरीरी भव का सहज और स्वतः हो सकता।

30-11-79

बाप के सभी बच्चे पदमापदम् भाग्यशाली है। चाहे नम्बरवार पुरुषार्थी है फिर भी लास्ट बच्चा भी दुनिया के आगे गायन योग्य और पूजन योगय है। अबतक भी भक्त लोग आप नंबरवार देवता के दर्शन के लिये प्यासी

है। चैतन्य में ऐसे भाग्यशाली और योग्य बने है तभी तो अब तक भी उनके दर्शन के प्यासे है। इसलिये बापदादा को **16000** की माला के लास्ट दाने पर भी नाझ है। चाहे कैसे भी हो। अलबेले पुरुषार्थी हो। मध्यम पुरुषार्थी हो वा तीव्र पुरुषार्थी हो लेकिन बाप के बने इसलियेपूजनीय और गायन योग्य बने। क्युंकि पारसनाथ बाप के संग में लोहे से पारस तो बन ही गये। पारस की वेल्यु जरुर होती है। इसलिये कभी भी स्वमान में अपनेको कम नहीं समझना। कम नहीं समझेंगे अर्थात स्वमान में रहेंगे तो कभी भी देह अभिमान आ नहीं सकता।

5-12-79

सदा सर्व खजानो से संपन्न अपने को मालामाल समजते हो ? जैसे बाप सदा संपन्न है, ऐसे बाप समान सर्व खजानो से संपन्न है ? कोई भी खजाने की कमी नहीं। ऐसे मन से खुशी का आवाज निकलता है कि 'पाना था सो पा लिया' मुख का आवाज निरंतरका नहीं हो सकता लेकिन मन का आवाज निरंतर अविनाशी है तो यह मन से आवाज निकलता है कि पा लिया ? अंदर से आता है या अभी समजते हो कि पायेंगे, पा तो रहे है। अटल निश्चय-बुद्धि बच्चे बन गये हो ? **बच्चा बनना अर्थात अधिकारी बनना। कभी भी अपने में भी संशय न हो कि संपूर्ण बनेंगे या नहीं ! सूर्यवंशी बनेंगे या चंद्रवंशी ? सदा निश्चयबुद्धि। जैसे बाप में निश्चय है ऐसे स्वयं में भी निश्चय। स्वयं में अगर कमजोरी का संकल्प उत्पन्न होता है तो कमजोरी के संस्कार बन जायेंगे।** जैसे कोई एकबार भी शरीर से कमजोर हो जाता है, और थोडे समय में तंदुरस्त नहीं बन सका तो कमजोरी के जर्म्स पक्के हो जाते है, **ऐसे व्यर्थ संकल्परूपी कमजोरी के जर्म्स अपने अंदर प्रवेश नहीं होने देना, नही तो उनको खतम करना मुश्किल हो जायेगा।**

भिन्न भिन्न भाषा के होते हुए भी एकमत, एक बाप, एक ही निश्चय और एक ही मंजील। सिर्फ सेवार्थ भिन्न भिन्न स्थानो पर रहे हुए हो। अगर सभी एक स्थान पर बैठ जाओ तो चारो और कि सेवा कैसे होगी ? जब सेवा समाप्त हो जायेगी तब सभी मधुबन आ जायेंगे। लेकिन वह भी कौन आयेंगे ? जो नष्टोमोहा होंगे, जिनकी बुद्धि की लाईन क्लीयर होंगी। उस

असम्भव समझती है, वह सम्भव करके दिखा रहे हैं।

अगर माताओं को बाप निमित्त नहीं बनाता तो नया ज्ञान, नई सिस्टम होने कारण पाण्डवों को देखकर बहुत हंगामा होता। मातायें ढाल हैं क्योंकि नया ज्ञान है ना। नई बातें हैं। लेकिन बहनों के साथ भाई सदा ही साथ हैं। पाण्डव अपने कार्य में आगे हैं और बहने अपने कार्य में आगे हैं। दोनो की राय से हर कार्य निर्विघ्न बन चल रहा हैं।

मन का मौन है ही - ज्ञान सागर के तले में जाना और नये-नये अनुभवो के रत्न लाना। जो बापदादा ने पहले भी इशारा दिया है - सबसे बडा खजाना है जो वर्तमान और भविष्य बनाता है, वह है जो आप बच्चों के पास है - श्रेष्ठ संकल्प का खजाना। संकल्प शक्ति बहुत बडी शक्ति है जो आप बच्चों के पास है - श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति। संकल्प तो सबके पास है लेकिन श्रेष्ठ शक्ति, शुभ-भावना, शुभ-कामना की संकल्प शक्ति, मन-बुध्धि एकाग्र करने की शक्ति - यह आपके पास ही है। और जितना आगे बढते जायेंगे इस संकल्प शक्ति को जमा करते जायेंगे, व्यर्थ गंवाने का मुख्य कारण है - व्यर्थ संकल्प।

श्रेष्ठ शुद्ध संकल्प में इतनी ताकत है जो आपके कैचिंग पावर, वायब्रेशन कैच करने की पावर, बहुत बढ सकती है।

3-3-2000

बापदादा कहते हैं - मैं तुम बच्चों का सहारा हुँ ।

ऐसा कम्पैनियन जो कभी भी किनारा नहीं करता, कितना भी नटखट हो जाओ लेकिन वह फिर भी सहारा ही बनता है। और जो आपके दिल की प्राप्तियां है, वह सर्व प्राप्तियां पूर्ण करता है। कोई अप्राप्ति है ? सबकी दिल कहती है या मर्यादा-पूर्वक "हां" कहते हो ? गाते तो हो - जो पाना था वह पा लिया, या पाना है? पा लिया ? अभी पाने का कुछ नहीं है या थोडी-थोडी आशायें रह गई है ? सब आशायें पूरी हो गई है या रह गई है ? बापदादा कहता है रह गई है। (बाप को प्रत्यक्ष करने की आशा रह गई है) यह तो बाप की आशा है कि सभी बच्चो को मालूम पड जाए कि बाप आया है और कोई रह न जाये !... तो यह बापदादा की विशेष आशा है कि

क्वेश्चनमार्क लगाना, आश्चर्य की मात्रा लगाना। सहज क्या हैं ? बिन्दी है ना ! तो विधि बहुत सहज है - स्वमान और बाप की याद तथा फालतू को फुलस्टोप लगाना।

ब्राह्मण अर्थात् अलौकिक। ब्राह्मण जीवन का महत्त्व बहुत बडा है। प्राप्तियां बहुत बडी हैं। स्वमान बहुत बडा है और संगम के समय पर बाप का बनना, यह बडे-से-बडा पद्मगुणा भाग्य है। इसलिए बापदादा कहते हैं कि हर खजाने का महत्त्व रखो।

सिर्फ है क्या कि मर्ज हो जाता है। इमर्ज रुप में स्मृति रहे - वह कभी कम हो जाता है, कभी ज्यादा। तो अपना ईश्वरीय नशा इमर्ज रखो। हाँ मैं तो हो गई, हो गया... नहीं। प्रैक्टिकल में हुँ.... यह इमर्ज रुप में हो। निश्चय है लेकिन निश्चय की निशानी हैं - 'रुहानी नशा'। तो सारा समय नशा रहे। रुहानी नशा - 'मैं कौन ! यह नशा इमर्ज रुप में होगा तो हर सेकण्ड जमा होता जायेगा।

ब्राह्मण जीवन है मजे की। संगमयुग है मजे का युग। बोझ उठाने का युग नहीं है। बोझ उतारने का युग हैं।

15-12-99

इस विश्व विद्यालय की जो बात सबको अच्छी लगती है, विशेषता दिखाी देती है वह यही कि मातायें रुहानी गुलाब समान सदा खिला हुआ पूष्प हैं और मातायें ही जिम्मेवारी उठाए, मातायें इतना बडा कार्य कर रही हैं। चाहे महामण्डलेश्वर भी हैं लेकिन वह भी समझते है कि मातायें निमित्त बनी हैं और ऐसे श्रेष्ठ कार्य सहज चला रही हैं। माताओं के लिए कहावत है - सच है नहीं, लेकिन कहावत हैं - दो मातायें भी इकठ्ठा कोई कार्य करें, बडा मुश्किल है। लेकिन यहाँ कौन निमित्त हैं ? मातायें ही हैं ना ! जब भी मिलने आते हैं तो क्या पूछते हैं ? मातायें चलाती हैं, आपस में लडती नहीं हैं ? खिटखिट नहीं करती हैं ? लेकिन उन्हों को क्या पता कि यह साधारण मातायें नहीं हैं, यह परमात्मा द्वारा बनी हुई आत्मायें, मातायें हैं। परमात्म वरदान इन्हों को चला रहा हैं।

माताओं को बहुत गिरा दिया था ना, इसलिए बाप माताओं को जो दुनिया

समय टेलीफोन या टेलीग्राम से बुलावा नहीं होगा। लेकिन बुद्धि की लाईन क्लीयर होने से बुलावा पहुंच जायेगा। ऐसी हालत बनेंगी जो जिस ट्रेन से आपको पहुंचाना होगा वही चलेगी उसके बाद नहीं। अगर लाईन क्लीयर होगी तो साधन भी मिल जायेंगे नहीं तो कही न कही अटक जायेंगे। इसलीये बहुत काल का निरंतर योग चाहिए। ऐसा कवच है ? कवचवाला सदा सेफ रहता है। सेंफ्टी का ड्रेस है ही - 'याद का कवच'।

7-12-79

सदा अपने फरिश्तेपन की सीट पर सेट रहो तो, सदा अतिन्द्रीय सुख के झुले में झुलते रहेंगे। बाप द्वारा इतना सहज वर्सा प्राप्त है तो और क्या चाहिये ? सिर्फ एक सहज बात को याद करनी है "हम बाप के और बाप हमारा"। इसी एक बात में सब समाया हुआ है। ये है बीज। बीज को पकडना तो सहज होता है ना ! इस पुरानी देह में रहते, देह के भान से न्यारे इस को कहते है फरिश्ता जीवन। ये फरिश्ता जीवन सदा हलका होने के कारण सदा उंची स्थिति पर ही रहेंगे।

10-12-79

संकल्प शक्ति का मीस युझ नहीं करो लेकिन युझ करो।

राजाओंने राजाई गंवाई, नेताओने अपनी कुर्सी गंवाई, डिरेक्टर्स अपनी सत्ता खो बैठे ! इसका कारण अपने निजी कार्य को छोड एस आराम में व्यस्त हो जाते हैं। कोई न कोई बात की तरफ स्वयं आधीन होते हैं। इसलिये अधिकार छुट जाता हैं। या मीसयुझ कर लेते हैं। ऐसे बाप द्वारा आप पुण्य आत्माओं को जो हर सेकन्ड और हर संकल्प में सत्ता - ओथोरीटी मिली हुई हैं। सर्व अधिकार मिले हुए हैं। उसको यथार्थ रीति से सत्ता की वेल्यु को जानकर उसी प्रमाण युझ नहीं करते हैं। अपने अलबेलेपन के एश आराम में या व्यर्थ सोचने और बोलने में या ऐसी छोटी छोटी बातों में मीसयुझ करने से प्राप्त हुइ ईश्वरीय सत्ता को जैसे युझ करना चाहिये वैसे नहीं कर पाते हो। नहीं तो आपका एक संकल्प भी बहुत शक्तिशाली हैं। श्रेष्ठ ब्राह्मणों का संकल्प आत्मा की तकदीर की लकीर खींचनेवाला साधन है। आप के संकल्प की स्वीच को ओन करने से सेकन्ड में अंधकार को

मिटा सकते हो।

15-12-79

'बाबा' कहा और साथ का अनुभव किया। कोई भी बात आये सेकेन्ड में बाबा कहा और साथ का अनुभव कर लिया, 'बाबा' शब्द ही जादु का शब्द है। जैसे जादु की रींग या जादु की कोई चीज अपने साथ रखते वैसे 'बाबा' शब्द अपने साथ रखो। तो कभी भी किसी भी कार्य में कोई भी मुश्किलात नहीं आयेगी। अगर कोई बात हो भी जाय तो बाबा शब्द याद करने और कराने से निर्विघ्न हो जायेंगे। 'बाबा बाबा' का महामंत्र सदा स्मृति में रखो तो सदा ऐसे अनुभव करेंगे कि छत्रछाया के नीचे चल रहे है।

जहाँ बाप साथ है वहाँ कोई कुछ भी नहीं कर सकता। अगर कोई थोडा शोर करते हैं तो भी धीरे धीरे ठंडे हो जायेंगे। जैसे दिपावली के मच्छर निकलते हैं और समाप्त हो जाते हैं न? आप सागर के बच्चे सागर हो। सारे विश्व को सच्चा आर्य बनानेवाले हो। तो कोई कर ही क्या सकता है? तालाब सागर में समाकर समाप्त हो जायेंगे। जीतना आप लोग बाप को याद करते हो, बाप आपको पदमगुना याद करते हैं: इसलिये रोज याद का रीटर्न देने के लिये बाप चक्कर लगाते हैं। बच्चे भले सोये भी पडे हो, बाप सर्व बच्चों की देखरेख का अपना कार्य सदा ही करते हैं। कोई केच करते हैं, कोइ नहीं करते हैं। वह हुआ बच्चों का पुरुषार्थ। उसी समय केच करो तो बहोत कुछ अनुभव कर सकते हो। सारे दिन के लिये एक खुराक मिल जायेगी।

17-12-79

अमृतवेले की सहज प्राप्ति की वेला को जानते हुए उसका लाभ उठाओ। खुले भंडारो से प्रारब्ध की झोली भर लो। **वरदाता और भाग्यविधाता से अमृतवेले के समय जो तकदीर की रेखा खिंचवाना चाहो वह खिचने के लिए तैयार है।** तकदीर की रेखा वरदाता से सहज और श्रेष्ठ खिंचवा लो। उस समय वह भोले भगवान के रुप में है - लवफुल है तो लव के आधार से श्रेष्ठ लकीर खिंचवा लो। जो चाहे, जितने जन्मों के लिए चाहे, चाहे अष्ट रत्नो में, चाहे **108** की माला में बापदादा की खुल्ली ऑफ र है और

खजानों से सम्पन्न हो। आप सभी जानते हो कि हम इस समय के पुरुषार्थ से एक दिन में भी बहुत कमाई करने वाले हैं।

अनुभव है - 'एक कदम में पदम्'।

विश्व में चक्कर लगाकर आओ, सिवाए आपके इतना जमा कोई कर नहीं सकता। इसलिए बाप कहते हैं - इस श्रेष्ठ स्मृति में रहो कि हम आत्माओं का भाग्य परम आत्मा द्वारा ऐसा श्रेष्ठ बना है।

अपने खजाने तो जानते हो ना! समय के खजाने को भी जानते हो कि इस संगमयुग का समय कितना श्रेष्ठ है, जो प्राप्ति चाहिए वह अधिकारी बाप से ले रहे हो। सर्व अधिकार प्राप्त कर लिया है ना? एक-एक श्रेष्ठ संकल्प कितना बडा खजाना है, समय भी बडा खजाना है, संकल्प भी बडा खजाना है। सर्व शक्तियां बडे से बडा खजाना है। एक-एक ज्ञान-रत्न कितना बडा खजाना है। हर एक गुण कितना बडा खजाना है। दुनियावाले भी मानते है कि श्वासों श्वास याद से ही श्वास सफल होते हैं। तो आपे सबके श्वांस सफलता स्वरुप है व्यर्थ नहीं। हर श्वास में सफलता का अधिकार समया हुआ है। बापदादाने सभी बच्चों को सर्व खजाने एक जैसे ही दिये हैं। सर्व भी दिये है और समान भी दिये हैं। कोई को एक गुना, कोई को दस गुना, कोई को सो गुना....। ऐसे नहीं दिया हैं। देनेवाले दाताने एक एक बच्चों को सर्व खजाने ब्राह्मण बनते ही समान रुप में दिये हैं।

ये खजाने जमा करने की विधि जानते हो? बहुत सहज हैं। सिर्फ बिन्दी लगाते जाओ। बिन्दी याद है तो जमा होता हैं। जैसे स्थूल खजाने में भी एक के साथ बिन्दी लगाते जाओ तो बढता जाता है ना। ऐसे ही आत्मा भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा जो बीत चूका वह भी फुल स्टाफ अर्थात् बिन्दी। अगर हर खजाने को बिन्दी रुप से याद करो तो जमा होता जाता। अनुभव है ना। बिन्दी लगाई और व्यर्थ से जमा होता जाता। बिन्दी लगानी आती हैं? कई बार ऐसे होता हैं जो कोशिष करते हो बिन्दी लगाने की, लेकिन बिन्दी के बजाए लम्बी लाईन हो जाती हैं। बिन्दी के बजाए क्वेश्चन मार्क हो जाता हैं, आश्चर्य की लाईन लग जाती हैं। **तो जमा का खाता बढाने की विधि है 'बिन्दी' और गँवाने का रास्ता है लम्बी लाइन लगाना,**

या सिर्फ कहना है, करना नहीं ? कहना बाप का और मानना मेरा ! सिर्फ पहला वायदा याद करो कि न बोडी-कान्सेस की - 'मैं हे, न मेरा' । तो जो बाप की आज्ञा है, तन को भी अमानत समझो । **मन को भी अमानत समझो ।** फिर मेहनत की जरुरत है क्या ? कोई भी कमजोरी आती है तो इन दो शब्दों से आती हैं - "मैं और मेरा" । तो न आपका तन है, न बोडी-कान्सेस का "मैं" । **मन में जो भी संकल्प चलते हैं अगर आज्ञाकारी हो तो बाप की आज्ञा क्या है ? पोजिटिव सोचो, शुभ भावना के संकल्प करो । तो जब आपका मन नहीं है फिर भी व्यर्थ संकल्प करते हो तो बाप की आज्ञा को प्रैक्टिकल में नहीं लाया ना !** सिर्फ एक शब्द याद करो कि - "मैं परमात्म-आज्ञाकारी बच्चा हुँ ।" बाप की यह आज्ञा है या नहीं है, वह सोचो । जो आज्ञाकारी बच्चा होता है वह सदा बाप को स्वत: ही याद होता हैं । स्वत: ही प्यारा होता हैं । स्वत: ही बाप के समीप होता हैं ।

बापदादा सदा कहते हैं कि किसी भी रूप में अगर एक बाबा का सम्बन्ध मुआफिक नहीं कहो "बाबा-बाबा", वह राम-राम कहते हैं आप बाबा-बाबा कहते, लेकिन दिल से निकले - 'बाबा' ! बापदादा का हर एक बच्चे से बहुत-बहुत-बहुत प्यार है । ऐसे नहीं समझे कि हमारे से बापदादा का प्यार कम हैं । आप चाहे भूल भी जाओ लेकिन बाप निरन्तर हर बच्चे की माला जपते रहते हैं क्योकि बापदादा को हर बच्चे की विशेषता सदा सामने रहती हैं । कोई भी बच्चा विशेष न हो, यह नहीं हैं । हर बच्चा विशेष हैं । बाप कभी एक बच्चे को भी भूलता नहीं है, तो सभी अपने को, विशेष आत्मा हैं और विशेष कार्य के लिए निमित्त हैं, ऐसे समझ के आगे बढते चलो ।

30-11-99

हर एक बच्चा हाइएस्ट और अविनाशी खजानों से रिचेस्ट है । दुनिया वाले कितने भी रिचेस्ट हो लेकिन एक जन्म के लिए रिचेस्ट हैं । एक जन्म भी रिचेस्ट रहेगा या नहीं, यह भी निश्चित नहीं है । चाहे कितना भी रिचेस्ट इन वर्ल्ड हो परन्तु एक जन्म के लिए, और आप हो जो निश्चय और नशे से कहते हो कि हम अनेक जन्म रिचेस्ट हैं क्योंकि आप सभी अविनाशी

क्या चाहिए ? मालिक बनो और अधिकार लो । महेनत की चाबी नहीं है ।

19-12-79

"पत्ते पत्ते को भगवान हिलाता है" इस गायन का रहस्य ! भक्तिमार्ग में बिना समज के भी कहावत है और उनकी मान्यता भी है कि अगर पत्ता भी हिल रहा है, उस पत्ते को हिलाने वाला भी बाप है । लेकिन इस रहस्य को आप जानते हो कि उन पत्तो को बाप नहीं हिलाता । लेकिन ड्रामानुसार यह सब चल रहा है । **यह गायन कोई स्थुल पत्तो से नहीं लगता लेकिन कल्पवृक्ष के आप सब पहले पत्ते हो । संगमयुगी आप सब 'गोल्डन एज्ड' पत्ते जो बाप द्वारा लोहे से पारस बन गये हो । ईन चैतन्य पत्तों को इस समय डायरेक्ट बाप चला रहे है ।** तो यह जो कहावत है वह भक्ति के समय की नहीं लेकिन संगम समय का गायन है । तो आप सभी पत्ते बाप की श्रीमत पर ही हील रहे हो अर्थात चल रहे हो ना ? ऐसे ही चल रहे हो ना ? चलाने का काम भी बाप का, फिर भी ईतना मुश्किल क्युं ? बोज सारा बापने ले लिया फिर भी सदा उडते क्यों नहीं हो ? हल्की चीज तो सदा उपर उडती है । **ईतने हल्के जो संकल्प भी बाप चलावे ।** तो चलना है ना ? जैसे चलायेंगे वैसे चलेंगे यह सभी का वायदा है और बाप की गेरेंटी है कि चलायेंगे । तो बुद्धि को ओर्डर क्या दिया हुआ है ? बुद्धि को बाप ने क्या कार्य दिया है, उसको जानते हो ना ? बुद्धि के बैठने का स्थान बाप के पास है, कर्तव्य विश्व सेवा का है । तो जो वायदा किया हुआ है कि जहाँ बिठायेंगे, जैसे चलायेंगे, वैसे चलेंगे । शरीर से या बुद्धि से ? तन के साथ मन भी दिया है या सिर्फ तन दिया है ? तन और बुद्धि से जहाँ बिठाए, जैसे चलाये, जो कराये, जो खिलाये, वही करेंगे-यह वायदा किया हुआ है ना ! **तो बुद्धि का भोजन है शुद्ध संकल्प ।** जो खिलायेंगे, वह खायेंगे, यह वायदा है ना ! तो मन बुद्धि के लिए यह भी वायदा याद रखो तो सहयोगी बन जायेंगे । अपना बोज अपने उपर न रखो, कैसे करुं ? कैसे चलुं ? इस बोज से हल्के हो जाओ ।

मन को चलाने की आदत बहुत है ना ! एकाग्र करते हो फिर भी चल पडता फिर महेनत करते हो । चलाने से बचने का साधन है जैसे आजकल

अगर कोई कंट्रोल में नही आता, बहुत तंग करता है, बहुत उछलता है, या पागल हो जाता है तो उनको ऐसा ईंजेक्शन लगा देते है जो वह शांत हो जाता है। तो ऐसे संकल्पशक्ति से बाप के पास बैठ जाओ। तो संकल्पशक्ति व्यर्थ नहीं उछलेगी। बैठना भी नहीं आता है क्या ? सिर्फ बैठने का ही काम दिया है और कुछ नहीं। अभी तो समज रहे हो ना ? बहुत सहज है। व्यर्थ महेनत से छुट जाओ। बाप को बच्चो की महेनत देख तरस तो पडता है ना !

24-12-79

चारों और की हलचल की परिस्थितियां हो फिर भी सेकन्ड में हलचल होते हुए भी अचल बन जाओ। अर्थात फुल स्टोप लगाओ। वर्तमान समय हलचल बढने का समय है। अब तो प्रकृति भी छोटे-छोटे पेपर ले रही है। लेकिन फाईनल पेपर में पांचो तत्त्वो का विकराल रुप होगा। एक तरफ प्रकृति का विकराल रुप, दूसरी तरफ पांचो ही विकारों का अंत होने कारण अति विकराल रुप होगा, अपना लास्ट वार आजमाने वाले होंगे। तीसरी तरफ सर्व आत्माओं के भिन्न-भिन्न रुप होंगे। जिसमें तमोगुणी आत्माओं का वार, और भक्त आत्माओं की भिन्न-भिन्न पुकार होंगी। चौथी तरफ पुराने संस्कार भी अपना चान्स लेंगे। संस्कार एकबार आकर फिर विदाय लेंगे। लेकिन किसी के पास कर्मभोग के रुप में, किसी के पास कर्म संबंध के बंधन के रुप में, किसी के पास व्यर्थ संकल्पो के रुप में तो किसी के पास विशेष अलबेलेपन और आलस्य के रुप में आयेंगे। ऐसे चारों और हलचल का वातावरण होगा। राज्यसत्ता, धर्मसत्ता, विज्ञानसत्ता और अनेक प्रकार के बाहुबल सब अपनी सत्ताओं की हलचल में होंगे। ऐसे समयपर सहज फुलस्टोप लगा सको इतनी समजने की शक्ति अनुभव करो। अपने फुल स्टोप की स्टेज से प्रकृति की हलचल को स्टोप करो। इसके लिये विशेष अभ्यास चाहीये। अभी-अभी साकारी, अभी अभी आकारी, अभी-अभी निराकारी इन तीनों स्टेजीस में स्थित रेहना इतना सहज होगा। ऐसा अभ्यास बहोत समय से चाहिये। तब ऐसे समय पर पास हो जायेंगे। तो ऐसे समय के लिये एवररेडी हो न ? या डेट बताये तब तैयार होंगे ? डेट बताई नहीं जायेगी लेकिन डेट स्वयं ही आपको टच होंगी। ऐसे इन एडवान्स

तरफ भस्म करेगी दूसरे तरफ शीतल भी करेगी। बेहद के वैराग्य की लहर फैलायेगी। बच्चे कहते हैं - मेरा योग तो है, सिवाए बाबा के और कोई नहीं, यह बहुत अच्छा है। परन्तु समय अनुसार अभी ज्वाला रुप बनो। जो यादगार में शक्तियों का शक्ति रुप, महाशक्ति रुप, सर्व शस्त्रधारी दिखाया है, अभी वह महा शक्ति रुप प्रत्यक्ष करो। चाहे पाण्डव है, चाहे शक्तियां हैं, सभी सागर से निकली हुई ज्ञान नदियाँ हो, सागर नहीं हो, नदी हो। ज्ञान गंगाये हो। तो ज्ञान गंगायें अब आत्माओं को अपने ज्ञान की शीतलता द्वारा पापों की आग से मुक्त करो। यह है वर्तमान समय का ब्राह्मणों का कार्य।

बापदादाने कहा ना कि सबसे ज्यादा बापदादा को रहम तब पडता है जब देखते है कि मास्टर सर्वशक्तिवान बच्चे और छोटी-छोटी बातों के लिए मेहनत करते हैं। मोहब्बत ज्वालामुखी रुप की कम है तब मेहनत लगती है। तो अभी मेहनत से मुक्त बनो, अलबेले नहीं बनना लेकिन मेहनत से मुक्त होना। ऐसे नहीं सोचना मेहनत तो करनी नहीं है तो आराम से सो जाओ। लेकिन मोहब्बत से मेहनत खत्म करो। अलबेलेन से नहीं। समझा - क्या करना हैं ?

15-11-99

तन भी, मन भी, धन भी और सम्बन्ध भी सब आपसे - यह भी वायदा पक्का किया हैं ? जब तन-मन-धन, सम्बन्ध भी सब आपका है तो मेरा क्या रहा ! फिर कुछ मेरा-पन हैं ? होता ही क्या हैं ? तन, मन, धन, जन... सब बाप के हवाले कर लिया। प्रवृत्ति वालों ने किया है ? मधुबन वालों ने किया हैं ? पक्का है ना ! जब मन भी बाप का हुआ, मेरा मन तो नहीं है ना ! या मन मेरा है ? मेरा समझकर यूज करना हैं ? जब मन बाप को दे दिया तो यह भी आपके पास 'अमानत' है। फिर युद्ध किसमें करते हो ? मेरा मन परेशान है, मेरे मन में व्यर्थ संकल्प आते हैं, मेरा मन विचलित होता है..., जब मेरा है नहीं, अमानत है फिर अमानत को मेरा समझकर यूज करना, क्या यह अमानत में ख्यानत नहीं हैं ? माया के दरवाजे हैं - "मैं और मेरा"। तो तन भी आपका नहीं, फिर देह-अभिमान का मैं कहाँ से आया ! मन भी आपका नहीं, तो मेरा-मेरा कहाँ से आया ? तेरा है या मेरा है ? बाप का है

का चांस नहीं है इसलिए बापदादा नयनों में समा लेता हैं।

बापदादा मुस्कराते रहते हैं, दो बजता है और लाइन शुरु हो जाती हैं। बापदादा समझते है कि बच्चे खडे-खडे थक भी जाते हैं लेकिन बापदादा सभी बच्चों को प्यार का मसाज कर देते हैं। टांगो में मसाज हो जाता हैं। बापदादा का मसाज देखा है ना - बहुत न्यारा और प्यारा है। तो आज सभी इस सीजन का लास्ट चांस लेने के लिए चारों ओर से भाग-भागकर पहुँच गये हैं। अच्छा हैं। बाप से मिलन का उमंग-उत्साह सदा आगे बढाता हैं। लेकिन बापदादा तो बच्चों को एक सेकण्ड भी नहीं भुलता है। बाप एक है और बच्चे अनेक परन्तु अनेक बच्चों को भी एक सेकण्ड भी नहीं भूलते क्योंकि सिकीलधे हो। देखो कहाँ-कहाँ देश-विदेश के कोने-कोने से बाप ने ही आपको ढूंढा। आप बाप को ढूंढ सके ? भटकते रहे लेकिन मिल नहीं सके और बापने भिन्न-भिन्न देश, गाँव, कस्बे जहाँ-जहाँ भी बाप के बच्चे हैं, वहाँ से ढूंढ लिया। अपना बना लिया। गीत गाते हो ना - मैं बाबा का और बाबा मेरा। न जाति देखी, न देश देखा, न रंग देखा, सबके मस्तक पर एक ही रुहानी रंग देखा - ज्योति बिन्दु।

बाप ने जाति देखी ? काला है, गोरा है, श्याम हैं, सुन्दर हैं ? कुछ नहीं देखा। मेरा है - यह देखा। तो बताओ बाप का प्यार है या आपका प्यार है ? किसका है ? (दोनों का है) बच्चे भी उत्तर देने में होंशियार है, कहते है बाबा आप ही कहते हो कि प्यार से प्यार खींचता है, तो आपका प्यार है तो हमारा है तब तो खींचता है। बच्चे भी होंशियार है और बाप को खुशी है कि इतना हिम्मत, उमंग-उत्साह रखने वाले बच्चे हैं।

विश्व में एक तरफ भ्रष्टाचार, अत्याचार की अग्नि होगी, दूसरे तरफ आप बच्चों का पावरफुल योग अर्थात् लगन की अग्नि ज्वाला रुप में आवश्यक हैं। यह ज्वाला रुप इस भ्रष्टाचार, अत्याचार के अग्नि को समाप्त करेगी और सर्व आत्माओं को सहयोग देगी। आपकी लगन ज्वाला रुप की हो अर्थात् पावरफुल योग हो, तो यह याद की अग्नि, उस अग्नि को समाप्त करेगी और दूसरे तरफ आत्माओं को परमात्म सन्देश की, शीतल स्वरुप की अनुभूति करायेगी। बेहद की वैराग्य वृत्ति प्रज्वलित करायेगी। एक

भविष्य स्पष्ट रुप में अनुभव करेंगे। लेकिन इसके लिये जहांन के नूरों की आंख सदा खुली रहे। अगर माया की धूल होंगी तो स्पष्ट नहीं देख सकेंगे। तो इसके लिये ड्रेस बदली करने का अभ्यास करो।

1-1-79

ऐसा रुहानी सोश्यल वर्कस का ग्रुप बनाओ जिनके मुखसे सत्यता की ओथोरीटी स्वत: ही बाप की प्रत्यक्षता करेगी। इसलिये अभी परमात्म बोंब द्वारा धरनी का परिवर्तन करो। इस का सहज साधन है सदा मुख पर वा संकल्प में 'बापदादा-बापदादा' की निरंतर माला के समान स्मृति हो। सब की एक ही धून हो 'बापदादा'। संकल्प, कर्म और वाणी में यही अखंड धून हो - ये ही अजपा जाप हो। जब ये अजपा जाप हो जायेगा तो और सब बातें स्वत: समाप्त हो जायेगी।

2-1-80

एकरस स्थिति बनाने का सहज साधन एक बाप से सर्व संबंधो का अनुभव करो। सदा एक बाप की याद में रहनेवाले एक बाप के साथ सर्वसंबंध निभानेवाले, एकरस स्थिती में रहते हो ? एक बाप द्वारा सर्व रस अर्थात सर्व प्राप्ति का अनुभव करनेवाले, इसको कहा जाता है - 'एकरस स्थिति में रहनेवाले।' ऐसे रहते हो ? दुसरा कोई भी दिखाई न दे। है कुछ जो दिखाई दे ? सिवाय बाप के और कोई देखने की वस्तु है, जो देखो ? बाप के सिवाय कोई सुनानेवाला है जिससे सुनो ? बहुतो को देख भी लीया, सुन भी लीया, और उसका परिणाम भी देख लिया। अभी एक की याद में एकरस। बहुतो को छोड एक की याद, एक को देखो, एक को सुनो, एक से बैठो, अनेको को निभाना मुश्किल होता है, एक से सहज होता है। अनेक जन्म अनेको से निभाया, बाप से अलग, टीचर से अलग, गुरु से अलग। अब सहज तरीका बापने बताया कि एक से निभाओ। जहां देखो वहां एक ही देखो। इसी को ही भावना के कारण भक्ति में सर्वव्यापी कह दिया है। वह कह देते तु ही तु। आप सदा बाप के साथ का अनुभव करते हो। जहां जाओ वहां बाप ही बाप अनुभव हो।

21-1-80

संगमयुग की विशेषता है एक कदम उठाओ और हजार कदम प्रालब्ध में पाओ ओर कोई भी युग में एक का पदमगुणा होकर मिलने का भाग्य है ही नहीं। यह भाग्य की लकीर स्वयं भाग्य विधाता बाप अभी ही खींचते है ब्रह्मा बाप द्वारा। इसलिए ब्रह्मा को भाग्य विधाता कहते है। गायन भी है ब्रह्माने जब भाग्य बांटा तो सोये हुए थे क्या ? संगमयुग की विशेषता पुरुषार्थ और प्रारब्ध साथ साथ की है। **सतयुगी प्रारब्ध से भी विशेष बाप की प्राप्ति की प्रारब्ध अभी है। अब की प्रारब्ध है - "परमात्मा के साथ डायरेक्ट सर्व संबंध"**। तो पुरुषार्थी नहीं श्रेष्ठ प्रारब्धी है ऐसा समजकर हर कदम उठाते हो ?

मुश्किल की माला क्यों सिमरण करते है ? कारण क्या ? सिर्फ पुरुषार्थी समजते है, प्रारब्ध को भूल जाते है। छोडना क्या है उसको सामने रखते है और लेना क्या है उसको पीछे रखते है। जब की छोडने वाली चीज को पीछे किया जाता है, लेनेवाली चीज को आगे। कभी भी लेने समय पीछे हटना नहीं होता - आगे बढना होता है। लेना स्मृति में रखना अर्थात बाप के सन्मुख होना। छोडने के गुण ज्यादा गाते हो - यह भी कीया, यह भी करना है, वा करना पडेगा इसको ज्यादा सोचते हो, क्या मिल रहा है वा प्रारब्ध क्या बन रही है, उसको कम सोचते हो। इसलीए व्यर्थ का वजन भारी हो जाता है। शुद्ध संकल्पो का वजन हलका हो जाता है, तो चढती कला के बजाय बोज स्वत: ही नीचे ले आता है अर्थात गीरती कला की ओर चले जाते हो।

"पाना था सो पा लिया" यह गीत गाना भूल जाते हो। यह एक गीत भूलने से अनेक प्रकार के जुटके खाते हो। गीत गाओ तो घुटके भी खतम तो झुटके भी खतम हो जाये जैसे स्थुल गीत भी आप को जगाता है ना ? **ऐसे यह अविनाशी गीत भी गाते रहो - "पाना था सो पा लीया" और प्राप्ति की खुशी में नाचते रहो तो घुटके और झुटके खतम हो जायेंगे।** ऐसे डबलप्रुफ प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करेंगे। यह है प्रत्यक्ष करने की विधी जो चलते फीरते प्रत्यक्ष प्रमाणरुपी चैतन्य संग्रहालय बन

जाती हैं क्या ?

बापदादा ने कमाई का साधन सिर्फ यही सिखाया है कि बिन्दी लगाते जाओ, तो सभी को बिन्दी लगाने आती हैं ? अगर आती है तो एक हाथ की ताली बजाओ। पक्की है ना ! या कभी खिसक जाती हैं, कभी लग जाती हैं ? सबसे सहज बिन्दी लगाना है। कोई इस आंखो से ब्लाईन्ड भी हो, वह भी अगर कागज पर पेन्सिल रखेगा। तो बिन्दी लग जाती है और आप तो त्रिनेत्री हो, इसलिए इन तीन बिन्दियों को सदा यूज करो। क्वेश्चन मार्क कितना टेढा है, लिखकर देखो, टेढा है ना ? और बिन्दी कितनी सहज है। इसलिए बापदादा भिन्न-भिन्न रुप से बच्चों को समान बनाने की विधि सुनाते रहते हैं। विधि है ही बिन्दी। और कोई विधि नहीं हैं। अगर विदेही बनते हो तो भी विधि है - बिन्दी बनना। अशरीरी बनते हो, कर्मातीत बनते हो, सबकी विधि बिन्दि है। इसलिए बापदादा ने पहले भी कहा - अमृतवेले बापदादा से मिलन मनाते, रुहरिहान करते जब कार्य में आते हो तो पहले तीन बिन्दियों का तिलक मस्तक पर लगाओ, वह लाल बिन्दियों का तिलक लगाने नहीं शुरु करना लेकिन स्मृति का तिलक लगाओ। और चेक करो - किसी भी कारण से यह स्मृति का तिलक मिटे नहीं। अविनाशी, अमिट तिलक हैं ?

जैसे साकार में मिलने के लिए दौड-दौड कर आते हो ऐसे ही बाप समान बनने के लिए भी तीव्र पुरुषार्थ करो, इसमें सोचते हो ना कि सबसे आगे ते आगे नम्बर मिले। सबको तो मिलता नहीं है, यहाँ साकारी दुनिया है ना ! तो साकारी दुनिया के नियम रखने ही पडते हैं। बापदादा उस समय सोचते है कि सब आगे-आगे बैठ जाएं लेकिन यह हो सकता है ? हो भी रहा है, कैसे ? पीछे वालों को बापदादा सदा नयनों में समाया हुआ देखते हैं। तो सबसे समीप हैं नयन। तो पीछे नहीं बैठे हो लेकिन बापदादा के नयनों में बैठे हो। नूरे रत्न हो। पीछे वालों ने सुना ? दूर नहीं हो, समीप हो। शरीर से पीछे बैठे हैं लेकिन आत्मा सबसे समीप हैं। और बापदादा तो सबसे ज्यादा पीछे वालों को ही देखते हैं। देखो नजदीक वालों को इन स्थूल नयनों से देखने का चांस है और पीछे वालों को इन नयनों से नजदीक देखने

गया ! हिम्मत रखो, बाप के साथ को स्मृति में रखो। चेक करो कि बाप का साथ हैं ? साथ का अनुभव मर्ज रुप में तो नहीं हैं ? नोलेज है कि बाप साथ है, नोलेज के साथ-साथ बाप की पावर क्या हैं ? औलमाइटी अथौरिटी है तो सर्व शक्तियों की पावर इमर्ज रुप में अनुभव करो। इसको कहा जाता हैं बाप के साथ का अनुभव होना।

30-3-99

हर एक परमात्म बच्चा कितना रुहानी नशे वाली आत्मायें है ! सारे विश्व में और सारे कल्प में सबसे हाइएस्ट भी हैं, महान भी हैं और होलीएस्ट भी हैं। आप जैसी पवित्र आत्मायें तन से भी, मन से भी देव रुप में सर्व गुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी और कोई बनता नहीं हैं। और फिर हाइएस्ट भी हो, होलीएस्ट भी हो साथ-साथ रिचेस्ट भी हो। बापदादा स्थापना में भी बच्चों को स्मृति दिलाते थे और फलक से अखबारों में भी डलवाया कि "ओम मण्डली रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड"। यह स्थापना के समय की आप सबकी महिमा हैं। एक दिन में कितना भी बडे ते बडा मल्टी-मल्टी मिल्युनर हो लेकिन आप जैसा रिचेस्ट हो नहीं सकता। **इतना रिचेस्ट बनने का साधन क्या हैं ? बहुत छोटा सा साधन हैं। लोग रिचेस्ट बनने के लिए कितनी मेहनत करते हैं और आप कितना सहज मालामाल बनते जाते हो। जानते हो ना साधन ! सिर्फ छोटी सी बिन्दी लगानी है बस।** बिन्दी लगाई, कमाई हुई। आत्मा भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा फुलस्टाप लगाना, वह भी बिन्दी हैं। तो बिन्दी आत्मा को याद किया, कमाई बढ गई। वैसे लौकिक में भी देखो, बिन्दी से ही संख्या बढती हैं। एक के आगे बिन्दी लगाओ तो क्या हो जाता ? **10**, दो बिन्दी लगाओ, तीन बिन्दी लगाओ, चार ब्न्दी लगाओ, बढता जाता हैं। तो आपका साधन कितना सहज हैं ! "मैं आत्मा हुँ" - यह स्मृति की बिन्दी लगाना अर्थात् खजाना जमा होना। फिर "बाप" बिन्दी लगाओ और खजाना जमा। कर्म में, सम्बन्ध-सम्पर्क में ड्रामा का फुलस्टाप लगाओ, बीती को फुलस्टाप लगाया और खजाना बढ जाता। तो बताओ सारे दिन में कितने बार बिन्दी लगाते हो ? और बिन्दी लगाना कितना सहज हैं ! मुश्किल हैं क्या ? बिन्दी खिसक

जाओ, चलता फीरता प्रोजेक्टर बन जाओ, चरित्र निर्माण प्रदर्शनी बन जाओ तो जगह जगह पर प्रदर्शनीयाँ म्युझीयम हो जायेंगे। खर्च कम और सेवा ज्यादा हो जायेगी। खुद ही प्रदर्शनी बनो खुद ही गाईड बनो।

23-1-80

मन्सा सेवा

मन्सा सेवा का अभ्यास बढाओ। आपका कार्य है वायुमंडल को पावरफुल बनाना। अपने स्थान का, शहेर का, भारत का वा विश्व का वायुमंडल पावरफुल बनाओ। चेक करो, मन्सा सेवा में सफलता मिलती है ? अगर मन्सा सेवा में सफलता होगी तो सदा स्वयं और सेवाकेन्द्र निर्विघ्न और चढती कला में होगा। चढती कला ये नहीं की संख्या वृध्धि को पाये। चढतीकला संख्या में भी, क्वॉलीटी में भी, वायुमंडल भी तथा स्वयं साथीओमें भी चढतीकला। इसको कहेते चढतीकला या मन्सा सेवा की सफलता। लास्ट में वाचा सेवा का चान्स भी नहीं होगा। मन्सा सेवा पर सर्टीफीकेट मिलेगा। क्युंकि इतनी लंबी क्यु होगी जो बोल नहीं सकेंगे। नजर से निहाल करना पडेगा। अपनी वृत्ति से उनकी वृत्ति बदलनी होगी। अपनी स्मृति से उनको समर्थ बनाना पडेगा।

4-2-80

बाप के जो भी ईशारे मिलते है उन ईशारो को समजकर चलते रहो। अभी यह पुछने का समय गया कि कैसे पुरुषार्थ करे ? अगर आप ही पुछेंगे तो और आनेवाले क्या करेंगे ? **इसलिये जो भिन्न भिन्न पुरुषार्थ कि युक्तियां सुनाई है, उनमें से एक भी युक्ति अपनाओ तो स्वयं भी सफल हो जायेंगे और औरो को भी सफल बना सकेंगे...।**

6-2-80

प्रीत, मीत, गीत, रीत ईन चारों ही बातों के आप सब अनुभवी हो ना? प्रीत के भी अनुभवी हो। बाप और आप तीसरा न कोई। बाप मिला माना सबकुछ मिला बाकी काम ही क्या रहा। प्रभु प्रीत के आज भी भक्त किर्तन करते रहते है। सिर्फ प्रीत के गीत में ही खो जाते है तो सोचों प्रीत निभानेवाले कितने खोये हुए होंगे ? प्रीत के तो अनुभवी हो ना ? विपरीत बुद्धि से प्रीत

बुद्धि हो गये हो ना ? तो जहां प्रभुप्रीत है वहां अशरीरी बनना क्या लगता है ? प्रीत के आगे अशरीरी बनना एक सेकेन्ड के खेल समान है। **"बाबा बोला और शरीर भूला", बाबा शब्द ही पुरानी दुनिया को भुलने का आत्मिक बोम्ब है।** (बिजली बंध हो गई) जैसे यह स्वीच बदली होने का खेल देखा ऐसे वह स्मृति का स्वीच है। **बाप का स्वीच ओन और देह और देह की दुनिया का स्वीच ओफ। यह है एक सेकेन्ड का खेल।** मुख से बाबा बोलने में भी टाईम लगता है लेकिन स्मृति में लाने में कितना समय लगता है ? तो प्रीत में रहना अर्थात अशरीरी सहज बनना।

ऐसे सच्चा मीत वह जो स्मशान के आगे भी साथ जाए। शरीरधारी मीत तो स्मशान तक ही जायेंगे तो वें दुःखहर्ता सुखकर्ता नहीं बन सकेंगे। थोडा बहुत दुःख के समय सहयोगी बन सकते है सहयोग दे सकते है लेकिन दुःख हर नहीं सकते। तो सच्चा मीत मिल गया है ना ? सदा इसी अविनाशी मीत के साथ रहो तो मुहोब्बत में महेनत खतम हो जायेगी। जब मुहोब्बत करना है तो महेनत क्यों करते हो ? बापदादा को कभी कभी हँसी आती है। जैसे किसी को बोज उठाने का अभ्यास होता है उसको आराम से बिठाओ तो वह बैठ नहीं सकता। बार बार बोज की तरफ भागता है और फिर सांस भी फुलता है तो पुकारते है - 'छुडाओ'। तो सदा प्रीत और मीत में रहो तो महेनत समाप्त हो जायेंगी। मीत से किनारा नहीं करो। सदा के साथी बन करके चलो।

18-1-81

मुलाकात

ऐसा कोई भी ब्राह्मण नहीं हो सकता जीस में कोई विशेषता न हो। विशेषता है तब तो विशेष आत्मा बनकर ब्राह्मण परिवार में आये हैं। इसलिये हरेक की विशेषता द्वारा उनसे कार्य कराकर लाभ ले सकते हो। जैसे बाप होपलेस को भी होपवाला बना देता है, कोई भी हो, कैसा भी हो उनसे कार्य निकालना ये है संगमयुगी ब्राह्मणो की विशेषता।

संगमयुग हीरे तुल्य युग है, तो आपका पार्ट भी हीरो है। इसलिये सबको हीरा ही देखो। अपनी शुभ भावना की किरणें सबकी ओर फैलाते रहो।

और पावरफुल बनाओ। मिस भी नहीं करना चाहिए। आप समझो हमारे में तो ताकत है, हमने तो सबकुछ कर लिया हैं, नहीं। सहयोग देना भी सेवा हैं। बैठने की जरूरत नहीं हो, लेकिन बैठना-यह बहुत सेवा हैं। बापदादा ने समाचार सुना हैं, अच्छा हैं। इसको और बढाओ। मुरली तो सुनते हो लेकिन मुरली सुनने के बाद कर्मणा में चले जाते हो तो बीच-बीच में कर्म कान्सेस भी हो जाते हो। कुछ योग लगाते हो, कुछ कर्म कान्सेस हो जाते हो। लेकिन आपस में ऐसी स्हरिहान करना - यह एक दो को रिफ्रेश करना हैं। वायुमण्डल को पावरफुल बनाना हैं। तो इस खुशखबरी पर बाबा बहुत खुश हैं।

कई बच्चे कहते हैं कि समय समीप आ रहा हैं लेकिन जो संस्कार शुरु में इमर्ज नहीं थे, वह अभी कहाँ-कहाँ इमर्ज हो रहे हैं। वायुमण्डल में संस्कार और इमर्ज हो रहे हैं, इसका कारण क्या ? यह माया के वार का एक साधन हैं। माया इससे अपना बनाकर परमात्म मार्ग से दिलशिकस्त बना देती हैं। सोचते है कि अभी तक ऐसे ही है तो पता नहीं समानता की सफलता मिलेगी या नही मिलेगी ! कोई-न-कोई बात में जहाँ कमजोरी होगी, उसी कमजोरी के रुप में माया दिलशिकस्त बनाने की कोशिश करती हैं। बहुत अच्छा चलते-चलते कोई न कोई बात में माया संस्कार पर अटैक कर, पुराने संस्कार इमर्ज करने का रुप रखकर दिलशिकस्त करने की कोशिश करती हैं। लास्ट में सब संस्कार समाप्त होने हैं इसलिए कभी-कभी रहे हुए संस्कार इमर्ज हो जाते हैं। लेकिन बापदादा आप सभी भाग्यवान बच्चों को इशारा दे रहे हैं - घबराओ नहीं, माया की चाल को समझ जाओ। आलस्य और व्यर्थ-इसमें निगेटिव भी आ जाता हैं - इन दोनों बातों पर विशेष अटेन्शन रखो। समझ जाओ कि यह माया का वर्तमान समय वार करने का साधन हैं।

बाप के साथ का अनुभव, कम्बाइन्ड-पन का अनुभव इमर्ज करो। ऐसे नहीं कि बाप तो है ही मेरा, साथ है ही हैं। साथ का प्रैक्टिकल अनुभव इमर्ज हो। तो यह माया का वार, वार नहीं होगा, माया हार खा लेगी। यह माया की हार है, वार नहीं हैं। सिर्फ घबराओ नहीं, क्या हो गया, क्यों हो

हैं ना ? अच्छी मेहनत नहीं लेकिन मुहब्बत अच्छी करते हैं। बापदादा भी निमित्त बननेवालों को और जो करनेवाले उन्हों को देखकर खुश होते हैं। आप भी कम नहीं हो। और यह भी कम नहीं हैं। अच्छा।

कुछ भी हो, बाप साथ हैं, मूंझने की क्या बात हैं। कनफ्युज होने की क्या बात हैं। बाप के साथ का सहयोग लो, अकेले समझते हो तो मौज के बजाए मूंझ जाते हो। तो मूझना नहीं।

कुछ भी हो जाए लेकिन मौज नहीं जाए। ठीक है ना। सिर्फ सेवा नहीं करो लेकिन सेवा का बल जो बाप से मिलता हैं, उसको काम में लगाओ। सिर्फ सेवा कर रहे हैं, सेवा कर रहे हैं तो थक जाते हो, मूझ भी जाते हो लेकिन बाप के साथ का अनुभव, जहां बाप हैं वहाँ मौज ही मौज हैं। तो साथ को इमर्ज करो, सुनाया ना – याद करते हो लेकिन साथ को यूज नहीं करते, इसीलिए मूंझ जाते हो। संगमयुग मौजों का युग हैं।

परमात्मा के बच्चे और मौज में नहीं रहे तो और कौन रहेगा और कोई है क्या ? तो सदा मौज ही मौज है।

समस्या आ गई यह नहीं सोचो। पेपर आया पास हुआ, मौज मनाओ। जब बच्चे पेपर पास करके आते हैं तो कितने मौज में होते हैं, मूंझते हैं क्या ! यह पेपर तो आयेंगे। पेपर ही अनुभव में आगे बढाते हैं, इसलिए सदा मौज में रहने वाले।

जहाँ बाप होगा वहाँ माया नहीं आयेगी। माया भाग जायेगी, हिम्मत ही नहीं होगी बाप के नजदीक आने की। कोई भी परिस्थिति आवे तो दिल से बाबा कहा, परिस्थिति भागी। अनुभव है ना !

सिर्फ अपना काम किया, ड्युटी पूरी की यह जिम्मेवारी नहीं। मधुबन का वायुमण्डल चारों ओर वायुमण्डल बनाता हैं। **बापदादा को खुशी हैं कि आपस में संगठन बनाकर उन्नति के प्लैन वा स्हरिहान करते हैं। यह बहुत अच्छा हैं, इसको छोडना नहीं। संगठन में लाभ होता हैं। सारा दिन समझो कर्मणा किया, थोडा समय भी आपस में उन्नति की स्हरिहान करने से चेंज हो जाते हैं। उमंग-उत्साह भी बढता हैं। तो बापदादा को यह अच्छा लगता हैं, जो ग्रुप बनाकर बैठते हो उसको हल्का नहीं करो**

ऐसे पुरुषार्थी को ही तीव्र पुरुषार्थी कहा जाता है। और उसको मेहनत नहीं करनी पडती है। सबकुछ सहज हो जाता है।

जहाँ कोई भी मुश्किल अनुभव होता है, वहां 'बाबा' को रख दो। बोज अपने उपर रखते हो तो मेहनत लगती है। जैसे सागर में कीचडा डालते है तो वह किनारे कर देता है ऐसे बाप पर बोज रख दो तो बाप उसको खतम कर देगा। जब बाप – पंडे को भूल जाते हो तब मेहनत का रास्ता अनुभव होता है, मेहनत मजदुर करते, आप तो अधिकारी हो।

20-1-81

दिव्य जन्म मिलते ही सभी को पहेला वरदान कौनसा मिला ? वरदान अर्थात जिसमें मेहनत नहीं, लेकीन सहज प्राप्ति हो। **सभी को एक ही वरदान मिला है जो बीना महेनत से बीना सोचे समजे हुए बापने कैसी भी कमजोर आत्मा को, हिम्मतहीन आत्मा को अपना स्वीकार कर लिया।**

''जो है जैसा है मेरा है'' यह सेकन्ड में वर्से के अधिकारी बनाने की लोटरी कहो, भाग्य कहो, वरदान कहो जो बाप ने स्वयं दीया। स्मृति की स्वीच को ओन कर दिया की ''तु मेरा है। सोचा नहीं था की ऐसा भाग्य भी मिल सकता है लेकिन भाग्यविधाता बापने भाग्य का वरदान दे दिया। इसी सेकन्ड के वरदानने जन्म जन्मांतर के वर्से के अधिकारी बनाया। इसी वरदान को स्मृति स्वरुप में लाना अर्थात वरदानी बनना। बापने तो सब को एक ही सेकन्ड में एक जैसा वरदान दिया। चाहे छोटा बच्चा हो, वृध्ध हो, बडे ओक्युपेशनवाला हो या साधारण हो, तंदुरस्त हो या बिमार हो, किसी भी धर्म का या देश का हो, पढे हुए या अनपढ हो, सभी को एक ही वरदान दिया। इसी वरदान को जीवन में लाना, स्मृति स्वरुप बनना, इसी में नंबर पड गए है। कोई ने निरंतर बनाया कोई ने कभी कभी बनाया। इसी अंतर के कारण दो मालाए बन गई, जो सदा वरदान के स्मृति स्वरुप रहे उनकी माला भी सदा सिमरी जाती है। और जिन्होने वरदान को कभी-कभी जीवन तक लाया विस्मृति स्वरुप में लाया उन्हों की माला भी कभी-कभी सीमरी जाती है। वह वरदानी स्वरुप अर्थात इस पहले वरदान में सदा स्मृति स्वरुप रहे, जो स्वयं बाप का सदा बना हुआ

होगा वही औरों को भी बाप का सदा बना सकेगा। यह वरदान लेने में कोई महेनत नहीं की। यह तो बापने स्वयं अपनाया। **इस एक वरदान को ही सदा याद रखो तो मेहनत से छूट जायेंगे।** वरदान को भूलते हो तो मेहनत करते हो। अब वरदानीमूर्त द्वारा संकल्प शक्ति की सेवा करो।

7-3-81

कोई भी समस्या सामने आये तो उस समय अपने को कम्बाइन्ड अनुभव करेंगे तो कब रोयेंगे नहीं। कम्बाईन्डरुप की स्मृति से कोइ भी मुश्किल कार्य सहज हो जायेगा। इसलिए "कभी भी कोई ऐसी बात सामने आए तो बापदादा की स्मृति रखते अपना बोज बाप के उपर रख दो तो हलके हो जायेंगे। क्योंकी बाप बडा है और आप छोटे बच्चे हो। बडों पर ही बोज रखते है। बोज बाप पर रख दिया तो सदा अपने को खुश अनुभव करेंगे। फरिश्ते के समान नाचते रहेंगे। दिन-रात चोंबीस ही घंटे मनसे डान्स करते रहेंगे"

9-3-81

मेहनत समाप्त कर निरंतर योगी बनो

जैसे आजकल की दुनिया में एक है जो पूर्वजन्म की भक्ति के हिसाब से किये हुए श्रेष्ठ कर्म के आधार से हद की राजाई का वर्सा बीना मेहनत के पाते हैं। वरसे के अधिकार से प्राप्ति है इस कारण राजाई का नशा स्वत: रहता है। याद नहीं करना पडता है कि मैं राजकुमार हुँ या राजा हुँ। नेचरल स्मृति रहती और संपत्ति की प्राप्ति होती है। ऐसे नंबरवन योगी बच्चे स्वत: योगी जीवन में रहेते है। वर्से के आधार से उनकी प्राप्ति के भंडार सदा भरपूर रहते है। मेहनत नहीं करनी पडती - आज सुख दो, आज शांति दो। संकल्प का बटन दबाया और खाण खुल जाती है। सदा संपन्न रहते हैं। अर्थात योगयुक्त - योग लगा हुआ ही रहता है।

बाप कहते हैं - सबको वर्से में सर्व प्राप्तिओं का खजाना मिला है - अधिकारी हो - नेचरल योगी हो - नेचरल स्वराज्यधारी हो। बाप के खजाने के बालक सो मालिक हो। तो इतनी मेहनत क्युं करते हो? मास्टर रचयिता और नौकर के समान मेहनत करे ये क्युं? जैसे यह **200** कमाते हैं और **200** खाते है, **2000** कमाते हैं और **2000** खाते हैं वैसे दो घंटा योग

रफ्तार बहुत तीव्र है, इसलिए ब्रह्मा बापने भी अपना वतन चेंज कर दिया। तो शिव बाप और ब्रह्मा बाप दोनों हर समय आप सबको सहयोग देने के लिए सदा हाजिर हैं। आपने सोचा बाबा और सहयोग अनुभव करेंगे। अगर सेवा, सेवा, सेवा सिर्फ वही याद है, बाप को किनारे बैठ देखने के लिए अलग कर देते हो, तो बाप भी साक्षी होकर देखते हैं, देखें कहा तक अकेले करते हैं। फिर भी आने तो यहाँ ही हैं। तो साथ नहीं छोडो। अपने अधिकार और प्रेम की सूक्ष्म रस्सी से बाँधकर रखो। ढीला छोड देते हो। स्नेह को ढीला कर देते हो, अधिकार को थोडा सा स्मृति से किनारा कर देते हो। तो ऐसे नहीं करना। जब सर्वशक्तिवान साथ का ओफर कर रहा है तो ऐसी आफर सारे कल्प में मिलेगी? नहीं मिलेगी ना? तो बापदादा भी साक्षी होकर देखते हैं, अच्छा देखें कहाँ तक अकेले करते हैं! तो संगमयुग के सुख और सुहेजों को इमर्ज रखो।

दादीजी से

बापदादा आपको सदा मुबारकें बहुत देते हैं। तन की दुआयें भी दते हैं, मन का साथ भी देते हैं और सेवा के साथी भी बनते हैं। ऐसे अनुभव होता हैं? तन की दुआयें भी बहुत मिलती हैं। यह दवाई बहुत अच्छी मिल रही हैं। बाकी हिसाब-किताब तो ब्रह्मा बाप ने भी चूक्तु किया तो सबको करना है। सब सूली से कांटा हो जाता है, बाकी दुआयें बहुत मिलती हैं। परिवार द्वारा भी तो बापदादा द्वारा भी। अमृतवेले से लेकर रात तक बापदादा दुआओं से मालिश करते रहते हैं। ऐसे अनुभव होता है ना? **आप नहीं चल रही है, चलानेवाला चला रहा हैं, इसीलिए अथक हैं। अच्छा।**

स्पेशल दुआयें हैं। (दादी जानकी से) स्पेशल दुआयें हैं ना? सब निमित्त बननेवालों को स्पेशल दुआयें मिलती हैं। आप फोरेनर्स से क्या चाहती हो? (सभी बापदादा के गले में पिरो जायें) यह तो बहुत कुछ चाहती हैं, आप भी बहुत कुछ करते हो ना! यह प्यार की पालना दे रही हैं, इतना अटेन्शन रखना - यही दिल का प्यार है। जिससे प्यार होता है ना उसकी कमी देख नहीं सकते। (बापदादाने दादी, दादी जानकी को साथ में बिठाया)

यह दादियाँ जो हैं ना - यह बाप के बडे भाई हैं। तो भाई तो साथ बैठते

के प्रति व्यर्थ संकल्प आना - यह स्वच्छ मन नहीं है। तो स्वच्छ मन और क्लीन और क्लीयर बुद्धि। जज करो, अपने आपको अेटेन्शन से देखो, उपर-उपर से नहीं, ठीक है, ठीक है। नहीं, सोच के देखो- मन और बुद्धि स्पष्ट है, श्रेष्ठ है ? तब डबल लाइट स्थिति बन सकती है। बाप समान स्थिति बनाने का यही सहज साधन है। और यह अभ्यास अन्त में नहीं, बहुतकाल का आवश्यक है।

1-3-99

राज्य के समय से भी संगम का समय प्यारा लगता हैं ना ? प्यारा है या जल्दी जाने चाहते हो ? फिर पूछते क्यों हो कि बाबा विनाश कब होगा ? सोचते हो ना - पता नहीं विनाश कब होगा ? क्या होगा ? हम कहाँ होंगे ? बापदादा कहते हैं जहाँ होंगे - याद में होंगे, बाप के साथ होंगे। साकार में या आकार में साथ होंगे तो कुछ नहीं होगा। साकार में कहानी सुनाई है ना बिल्ली के पूंगरे भट्ठी में होते हुए भी सेफ रहे ना ! या जल गये ? सब सेफ रहे। तो आप परमात्म बच्चे जो साथ होंगे वह सेफ रहेंगे। अगर और कहाँ बुद्धि होगी तो कुछ-न-कुछ सेक लगेगा, कुछ-न-कुछ प्रभाव होगा। साथ में कम्बाइण्ड होंगे, एक सेकण्ड भी अकेले नहीं होंगे तो सेफ रहेंगे। **कभी-कभी कामकाज या सेवा में अकेले अनुभव करते हो ? क्या करें अकेले हैं, बहुत काम हैं ! फिर थक भी जाते हैं। तो बाप को क्यों नहीं साथी बनाते ! दो भुजा वालों को साथी बना देते, हजार भुजावाले को क्यों नहीं साथी बनाते। कौन ज्यादा सहयोग देगा ? हजार भुजा वाला या दो भुजा वाला ?**

संगमयुग पर ब्रह्माकुमार वा ब्रह्माकुमारी अकेले नहीं हो सकते। **सिर्फ जब सेवा में, कर्मयोग में बहुत बिजी हो जाते हो ना तो साथ भी भूल जाते हो और फिर थक जाते हो। फिर कहते हो थक गये, अभी क्या करें ! थको नहीं, जब बापदादा आपको सदा साथ देने के लिए आये हैं, परमधाम छोडकर क्यों आये हैं ? सोते, जागते, कर्म करते, सेवा करते, साथ देने के लिए ही तो आये हैं। ब्रह्मा बाप भी आप सबको सहयोग देने के लिए अव्यक्त बनें। व्यक्तस्म से अव्यक्त स्म में सहयोग देने की**

लगाते हो तो दो घंटा उसका फल लेते हो। आज छे घंटा योग लगा, आज चार घंटा योग लगा ये क्युं ? वारीस कभी भी ये नहीं कहेता कि दो दिन की राजाइ है, चार दिन की राजाई है। सदा बापके बच्चे हैं और सदा खजाने के मालिक है। कहेना बाबा और करना याद की महेनत - दोनों बातें एक दोनों के विपरीत है। तो सदा ये स्लोगन याद रखो कि "मैं श्रेष्ठ आत्मा बालक सो मालिक हुँ।" और इसलिये सर्व खजानो का अधिकारी हुँ। खोया-पाया, खोया-पाया, ये खेल नहीं करो। जो पाना था वह पा लिया। फिर खोना और पाना क्युं ? नहीं तो गीत को बदली को। पा रहा हुं - पा रहा हुं - ये अधिकारी के बोल नहीं है। संपन्न बापके बालक हो, सागर के बच्चे हो इसलिये निरंतर योगी बनो। बापदादा को बच्चों की महेनत देख तरस पडता है। राजा के बच्चे नोकरी करे यह शोभता है ? इसलिये सब मालिक बनो।

9-3-81

<u>मुलाकात</u>

बाप का दिल तख्त सारे कल्प में सिवाय इस संगमयुग के कहां भी प्राप्त नहीं हो सकता। जिस की दिल सदा एक दिलाराम बाप के साथ है अर्थात एक बाप दुसरा न कोई ऐसी स्थिति में रहेनेवालो के लिये स्थान है बाप का दिल तख्त। सभी अपने को इस विश्व के अंदर सर्व आत्माओं में से चुनी हुई श्रेष्ठ आत्मा समजते हो ? ये समजते हो कि स्वयं बापने हमें अपना बनाया है ? बापने विश्व के अंदर से कितनी थोडी सी आत्माओं को चुना और उनमें से हम श्रेष्ठ आत्माएं हैं। ऐसा संकल्प करते ही अतिन्द्रिय सुख की अनुभुति होगी।

11-3-81

बाप के सिवाय और कुछ दिखाई न दे। संकल्प में, बोल में, कर्म में 'बाबा' और बाप का साथ। ऐसी लवलीन आत्मा एक शब्द भी बोलती है तो उसके स्नेह के बोल दुसरी आत्मा को भी स्नेह में बांध देती है। ऐसी लवलीन आत्मा का "एक बाबा" शब्द ही जादु की वस्तु का काम करता है और वो आत्मा रुहानी जादुगर बनती है।

17-3-81

मुलाकात

मायाजीत - जगतजीत बनने के लिये अगर हिंमत रखेंगे तो बापदादा भी हजार कदम की मदद अवश्य ही करेंगे। तो सहजयोगी का एक कदम तो उठायेंगे न ? कोई भी बात सामने आये, सिर्फ बाप के उपर छोड दो। जीगर से कहो - 'बाबा', तो बात खतम हो जायेगी। ये 'बाबा' शब्द दिल से केहना ही जादु है। इतना श्रेष्ठ जादु का शब्द मिला हुआ है। लेकिन सिर्फ जिस समय माया आती है उस समय भूला देती है। माया पहेला काम ही यह करती है कि बाप को भूला देती है। तो ये एटेन्शन रखना पडे। जब ये एटेन्शन रखेंगे तो सदा कमल के फुल के समान अपने को अनुभव करेंगे। चाहे माया की समस्याओं की किचड कितनी भी हो, लेकिन याद के आधार पर किचड से सदा परे रहेंगे। इसलिये आपका ही यादगार चित्र कमलपूष्प है। जो कादव से न्यारा है।

मुलाकात

एक एक रतन अतिप्रिय और अमूल्य है क्युंकि हरेक रतन की अपनी अपनी विशेषता है। सर्व की विशेषताओं द्वारा ही विश्व का कार्य संपन्न होना है। जैसे कोई स्थुल चीज बनाते हैं उसमें साधारण मीठा या नमक भी नहीं डालो तो चाहे कितनी भी बढिया चीज बनाओ लेकिन वह खाने योग्य नहीं बन सकती है। इस रीति विश्व के इतने श्रेष्ठ कार्य के लिये हरेक रतन की आवश्यक्ता है। इस में सब की अंगुली चाहिये। इसलिये यादगार गोवर्धन पर्वत के चित्र में भी सब की अंगुली दिखाते है न ? सिर्फ महारथीयों की नहीं, लेकिन सबकी अंगुली से ही विश्व परिवर्तन का कार्य संपन्न होना है। सब अपनी अपनी रीति से महारथी है। बापदादा भी अकेले कुछ कर नहीं सकते। इसलिये बापदादा और निमित्त आत्मायें भी आप सबको आगे रखती है। तो सभी बहोत बहोत आवश्यक और श्रेष्ठ रतन हो। बापदादा के स्वीकार किये हुए रतन हो। यादगार में तो दिखाते हैं भगवान की पत्थर पर भी नजर पड जाये तो पत्थर भी पारस बन जाता है। आप तो उनके स्वीकार किये हुए रतन हो। तो अपने कार्य की श्रेष्ठता के मूल्य को जानो। तो आप

हिम्मत, उमंग-उत्साह की पालना करते रहते हैं। शिव बाप तो साथ में है ही लेकिन विशेष ब्रह्मा का पालना का पार्ट हैं।

आज के दिन भाग्य विधाता ब्रह्मा हर बच्चे को विशेष स्नेह के रिटर्न में वरदान का भण्डार भण्डारी बन बाँटते हैं। जो बच्चा जितना अव्यक्त स्थिति में स्थित हो मिलन मनाते हैं उस एक बच्चे को जो वरदान चाहिए वह सहज प्राप्त होता हैं। वरदानों का खुला भण्डार हैं, जो चाहिए, जितना चाहिए उतना प्राप्त होने का श्रेष्ठ दिवस हैं। स्नेह का रिटर्न होता हैं - सहज वरदान की गिफ्ट। तो गिफ्ट में मेहनत नहीं करनी पडती हैं, सहज प्राप्ति होती है। गिफ्ट मांगी नहीं जाती है, स्वत: ही प्राप्त होती हैं। पुरुषार्थ से वरदान के अनुभूति की प्राप्ति अलग चीज है लेकिन आज के दिन ब्रह्मा माँ स्नेह के रिटर्न में वरदान देते हैं।

अभी भी सच्चे दिल के स्नेह का रिटर्न वरदान प्राप्त करने का साधन है - दिल का स्नेह। जहाँ दिल का स्नेह है, वह स्नेह ऐसा खजाना है जिस खजाने द्वारा, बापदादा द्वारा जो चाहे अविनाशी वरदान प्राप्त कर सकते हो।

15-2-99

जब साथ चलना ही है तो फोलो ब्रह्मा बाप। कर्म में फालो ब्रह्मा बाप और स्थिति में निराकारी शिव बाप को फालो करना है।

जब फालो ही करना है तो क्यों, क्या, कैसे... यह समाप्त हो जाता है। और सबको अनुभव है कि व्यर्थ संकल्प के निमित्त यह क्यों, क्या, कैसे... ही आधार बनाते हैं। फालो फादर में यह शब्द समाप्त हो जाता है। कैसे नहीं- ऐसे बुद्धि फौरन जज करती है ऐसे करो। तो बापदादा आज विशेष सभी बच्चों को चाहे पहले बारी आये है, चाहे पुराने हैं, यही इशारा देते है की अपने मन को स्वच्छ रखो। **बहुतो के मन में अभी भी व्यर्थ और निगेटिव के दाग छोटे-बडे हैं। इसके कारण पुरुषार्थ की श्रेष्ठ स्पीड, तीव्रगति में रुकावट आती है। बापदादा सदा श्रीमत देते है की मन में सदा हर आत्मा के प्रति शुभ-भावना और शुभ-कामना रखो - यह है स्वच्छ मन। उपकार की वृत्ति रखना- यह है स्वच्छ मन। अपकारी पर भी उपकार की वृत्ति रखना- यह है स्वच्छ मन। स्वयं के प्रति वा अन्य**

पुरुषार्थ में वा सेवा में सफलता हुई पडी है। होना ही है। असम्भव, सम्भव होना ही है क्योंकि यह युग सफलता का युग है। असम्भव, सम्भव होने का युग हैं। इसलिए होगा या नहीं होगा, कैसे होगा, इसका क्वेश्चन इस युग में आप ब्राह्मण आत्माओं के लिए है ही नहीं। ब्राह्मणों की जन्म पत्री में है – 'सफलता उसका जन्म सिद्ध अधिकार हैं।' अधिकारी आत्माओं को यह सोचने की आवश्यक्ता नहीं है, वर्सा मिलना ही हैं।

बापदादा को खुशी है, नाज है कि मेरा एक एक बच्चा अनेकबार का विजयी हैं। एक बार नहीं, अनेक बार की विजयी आत्मायें हो। तो कभी यह नहीं सोचना, पता नहीं क्या होगा ? 'होगा' शब्द नहीं लाना। विजय हैं और सदा रहेगी। सब पक्के हैं ? बहुत अच्छा। अभी फिर वहाँ जाकर ऐसा कमजोर समाचार नहीं लिखना कि दादियां, बाबा माया आ गई, ऐसे नहीं लिखना। मायाजीत हैं। हम नहीं होंगे तो और कौन होगा, यह रुहानी नशा इमर्ज करो। और-और कार्य में मन बुद्धि बिजी हो जाती हैं ना तो नशा मर्ज हो जाता हैं। लेकिन बीच बीच में चेक करो कि कर्म करते हुए भी यह विजय-पन का रुहानी नशा हैं ? निश्चय होगा तो नशा जरुर होगा। निश्चय की निशानी नशा है और नशा है तो अवश्य निश्चय हैं।

18-1-99

आज के दिन को बापदादा यज्ञ की स्थापना में विशेष परिवर्तन का दिन कहते हैं। आज के दिन ब्रह्मा बाप गुप्त रुप में बैकबोन बन अपने बच्चों को साकार रुप में विश्व के मंच पर प्रत्यक्ष किया। इसलिए इस दिवस को बच्चों के प्रत्यक्षता का दिन कहा जाता हैं, समर्थ दिवस कहा जाता हैं, विल पावर देने का दिवस कहा जाता हैं। ब्रह्मा बाप गुप्त रुप में कार्य करा रहा हैं। अलग नहीं है, साथ ही है सिर्फ गुप्त रुप में करा रहा हैं। यह अव्यक्ति दिवस बच्चों के कार्य को तीव्र गति में लाने का दिवस हैं। अभी भी हर एक बच्चे की छत्रछाया बन पालना का कर्तव्य कर रहे हैं। जैसे माँ बच्चों के लिए छत्रछाया होती हैं ऐसे ही अमृतवेले से लेकर ब्रह्मा माँ चारों तरफ के बच्चों की रेख-देख करते रहते हैं। साकार में निमित्त बच्चे है लेकिन भाग्य विधाता ब्रह्मा माँ हर बच्चे के भाग्य को देख बच्चों को विशेष शक्ति,

सब महान आत्मायें हो। जितना महान उतने निर्माण। इसलिये महान आत्मायें सदा अपने को ओबीडियन्ट सर्वन्ट अनुभव करती है।

19-3-81

संगठन का महत्व

सब सदा एकमत और एकरस है। ये भी एक बहोत अच्छा एकझाम्पल है। एक ने कहा और दुसरे ने माना ये है सच्चे स्नेह का रिस्पोन्ड। ऐसे एकझाम्पल को देख और भी सपर्क में आने की हिंमत रखते है। संगठन भी सेवा का साधन बन जाता है। ऐसे एक बाप और एकमत – यही संस्कार सतयुग में एक राज्य की स्थापना करते है। जहां माया देखती है कि इनकी युनिटी अच्छी है, घेराव डाला है, तो वहां आने की हिंमत ही नहीं करती। क्युं कि एक एक अपने को सेवा के निमित्त समझकर चलते है। हम सब निमित्त है। बापने हमें निमित्त बनाया है-ये स्मृति रहे तो सफलता होती रहेगी।

सब समस्याओं का मुल कारण है कनेक्शन लुझ होना। मेरा ड्रामा में पार्ट नहीं है, मेरे को सहयोग नहीं मिला, मेरे को स्थान नहीं मिला – ये सब फालतु बाते है। सब मिल जायेगा। सिर्फ कनेक्शन को ठीक करो। सर्व शक्तियां आगे घुमेगी। बापदादा के सामने जाकर बैठ जाओ तो कनेक्शन जोडने के लिये बाप आपके सहयोगी बन जायेंगे। अगर एक दो सेकेन्ड अनुभव न भी हो तो कन्फ्युझ न हो जाओ। थोडा सा जो तुट हुवा कनेक्शन है उसको जोडने में एक सेकेन्ड या मिनिट लग भी जाता है तो हिंमत नहीं हारो। निश्चय के फाउन्डेशन को हिलाओ नहीं लेकिन और ही परिपक्व करो। "बाबा मेरा है, मैं बाबा का हुँ" ईसी आधार से निश्चय के फाउन्डेशन को पक्का करो। बापको भी अपने निश्चय के बंधन में बांध सकते हो। बाप भी जा नहीं सकते। इतनी ओथोरीटी इस समय बच्चों को मिली हुई है, तो ओथोरीटी को और नोलेज को युझ करो। परिवार के सहयोग को युझ करो। कम्प्लेइन लेकर नहीं जाओ।

सहयोग की भी मांग नहीं करो। कमजोर होकर नहीं जाओ। क्या करुं, कैसे करुं, ऐसे गभरा के नहीं जाओ। लेकिन संबंध और सहयोग के आधार से जाओ।

बाप का हाथ छोडते हो तो बाप को अच्छा नहीं लगता कि "ये कहां जा रहे है ?" बाप के हाथ में हाथ हो फिर तो गभराने की बात हो नहीं सकती। माया का हाथ पकडते हो तब वह डान्स होती है। बाकी बाप का तो आप लोगों से इतना प्रेम है दुसरे के साथजाना देख भी नहीं सकते। बाप जानते हैं कि कितना भटक कर, परेशान हो फिर बाप के पास पहुंचे है। तो बाप कनफ्युझ करने कैसे देंगे ? साकार रुप में भी देखा, बच्चे स्थुल में कहाँ जाते थे तो बच्चों को कहते थे - आओ बच्चे - आओ बच्चे।

जो सदा कम्बाइन्ड रुप में रहते हैं , इनके आगे बापदादा साकार की तरह सब संबंधो से सामने होते है। जितनी लगन होगी उतना बाप जल्दी सामने होगा। ये नहीं की निराकार है, आकार है तो बात कैसे करे ? जो आपस में भी बात करने में टाईम लगता है, ढुंढते है, लेकिन यहां तो ढुंढने की या टाईम लगने की जरुरत नहीं। जहां बुलाओ वहां हाजीर। इसलिये कहेते है हाजरा हजुर। दिन-प्रतिदिन ऐसे देखेंगे कि जैसे प्रेक्टिकल में अनुभव किया कि आज बापदादा आये सामनेआकर हाथ पकडा। यह बुध्धि से नहीं आंखो से देखेंगे ऐसे अनुभव होगा। लेकिन इसमें सिर्फ "एक बाप दुसरा न कोई" ये पाठ पक्का हो, फिर तो जैसे परछाई घूमती है ऐसे बापदादा आंखो से हट नहीं सकते।

27-3-81

कहते हो पा लीया तो क्या पा लीया ? सिर्फ उतरना चढना पा लिया? प्रारब्ध को पा लिया, बाप समान जीवन को पा लीया। महेनत कब तक करेंगे ? आधाकल्प अनेक प्रकार की महेनत की। संगमयुग तो है महोबत का युग, महेनत का नहीं। मिलन का युग है। शमा और परवाने का समा जानेका युग है। नाम मेहनत कहते हो लेकिन महेनत है नहीं। बच्चा बनना मेहनत होती है क्या ? वर्से में मिला है की महेनत में मिला है ? बच्चा तो सिर का ताज होता है, घर का श्रृंगार होता है बाप का बालक सो मालिक होता है तो मालिक फिर नीचे क्यों आते ? सदा बाप के साथ श्रेष्ठ स्टेज पर रहो। अपना असली स्थान तो वही है उसे क्यों छोडते हो ? असली स्थानको छोडने से मिलने से भटकते हो। इसलिए आराम से बैठो, नशे से बैठो,

सोल कान्सेस के बदले बोडी कान्सेस में आ जाते हैं तो बापदादा को अच्छा नहीं लगता हैं। कारण क्या ? अपने भाग्य की प्राप्तियां इमर्ज नहीं रहती, मर्ज रहती हैं। फिर जब कोई याद दिलाता हैं तो सोचने लगते हैं हो ना तो ऐसा चाहिए...! इसलिए बहुत सहज पुरुषार्थ हैं - प्राप्तियों को इमर्ज रखो। जब से ब्राह्मण बने तब से अपने भाग्य को स्मृति में रखो। हलचल में नहीं आओ, अचल बनो।

बापदादा को इस ग्रुप के लिए बहुत-बहुत-बहुत दिल से सम्मान है क्यों ? यही पाण्डव है, यही मातायें है जिन्होंने सेवा की स्थापना में, सेन्टर्स स्थापन करने में जब बेगरी लाइफ थी, बेगरी लाइफ में सेन्टर खुले हैं, ऐसे आईवेल के समय इस सेना ने अपने तन-मन-धन से निमित्त बन के सेवास्थान स्थापन किये हैं। आईवेल के समय जो सहयोगी बनता हैं उनका आठ आना, आठ करोड बन जाते हैं। बापदादा को याद है - खुद बांधेली होते हुए भी एक कटोरी में आटा, एक कटोरी में घी, ऐसे कटोरी-कटोरी करके लाती थी। तो सोचो कितने सच्ची दिल वाले रहे। अपने घर खर्चे से बापदादा के सेन्टर चलाये है, अपने पर्सनल जमा खाते से, अपने खर्चे से बचत करके सेन्टर स्थान किये हैं, तो कितना भाग्य है इन्हों का ! ऐसे समय पर सहयोगी आत्माओं को बापदादा भी नमस्ते कहते है। इन्हों के अनुभव बहुत अच्छे हैं, सारा भागवत इन्हों का हैं। इसलिए बापदादा खुश हैं।

31-12-98

चाहे स्व के परिवर्तन में, चाहे सेवा की सफलता में, चाहे हर आत्मा को शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा परिवर्तित करने में उमंग भी अच्छा है, उत्साह भी बहुत अच्छा है। साथ साथ हिम्मत भी यथाशक्ति हैं। बापदादा ऐसे हिम्मतवाले बच्चों को एक संकल्प के पीछे पद्मगुणा मदद अवश्य देते हैं। इसलिए हिम्मत से सदा आगे बढते चलो। कभी भी स्व प्रति वा अन्य आत्माओं के प्रति हिम्मत को कम नहीं करना क्योंकि यह नवयुग है ही हिंम्मत रखने से उडने का युग, वरदानी युग, पुरुषोत्तम युग, डायरेक्ट विधाता द्वारा सर्व शक्तियां वर्से में सहज प्राप्त होने का युग, इसलिए इस युग के महत्त्व को सदा स्मृति में रखो। कोई भी कार्य आरम्भ करते हो चाहे स्व-

30-3-98

हर बच्चे के भाग्य की महिमा स्वयं भगवान गा रहे हैं। बाप की महिमा तो आत्मायें गाती हैं लेकिन आप बच्चों की महिमा स्वयं बाप करते हैं। ऐसे कभी स्वप्न में भी सोचा कि हमारा इतना श्रेष्ठ भाग्य बना हुआ है लेकिन बना हुआ था, बन गया। दुनिया के लोग कहते हैं भगवान ने हमको रचा लेकिन न भगवान का पता है, न रचना का पता हैं। आप हर एक भाग्यवान बच्चा अनुभव और फखुर से कहते हो कि हम शिव वंशी ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारीयां हैं। हमको मालूम है कि हमें बापदादा ने कैसे रचा ! चाहे छोटा बच्चा हैं, चाहे बुजुर्ग पाण्डव है, शक्तियां है किसी से भी पूछेंगे आपका बाप कौन है, तो क्या कहेगे ? फलक से कहेंगे ना कि हमको शिव बाप ने ब्रह्मा बाप द्वारा रचा इसलिए हम भगवान के बच्चे हैं। भगवान से डायरेक्ट मिलते हैं, न सिर्फ परम आत्मा वा भगवान हमारा बाप है लेकिन वह बाप भी है, शिक्षक भी है और सतगुरु भी हैं।

यह परमात्म पालना सारे कल्प में सिर्फ इस ब्राह्मण जन्म में आप बच्चों को प्राप्त होती हैं, जिस परमात्म पालना में आत्मा को सर्व प्राप्ति स्वरुप का अनुभव होता हैं। परमात्म प्यार सर्व संबंधो का अनुभव कराता हैं। परमात्म प्यार अपने देह भान को भी भुला देता, साथ साथ अनेक स्वार्थ के प्यार को भी भुला देता हैं। ऐसे परमात्म प्यार, परमात्म पालना के अन्दर पलनेवाली भाग्यवान आत्मायें हो। कितना आप आत्माओं का भाग्य है जो स्वयं बाप अपने वतन को छोड आप गोडली स्टूडेन्टस को पढाने आते हैं। ऐसा कोई टीचर देखा जो रोज सवेरे-सवेरे दूरदेश से पढाने के लिए आवे ? ऐसा टीचर कभी देखा ? लेकिन आप बच्चों केलिए रोज बाप शिक्षक बन आपके पास पढाने आते हैं और कितना सहज पढाते हैं। दो शब्दों की पढाई हैं - आप और बाप, इन्हीं दो शब्दों में चक्कर कहो, ड्रामा कहो, कल्प वृक्ष कहो सारी नोलेज समाई हुई हैं। और पढाई में तो कितना दिमाग पर बोझ पडता हैं और बाप की पढाई से दिमाग हल्का बन जाता हैं।

बापदादा जब सुनते है कि आज किसी भी कारण से कोई कोई बच्चे मेहनत करते हैं, युद्ध करते हैं, योग लगाने चाहते लेकिन लगता नहीं हैं,

अधिकार से बैठो। नीचे आकर फिर कहते हो क्या करे ? नीचे आते ही क्यों हो ? जो फिर बोज अनुभव हो। तो वह अपने सिर पर नहीं रखो। जब मैं पन आता है तो बोज सिर पर अनुभव करते। मैं क्या करुं ? कैसे करुं ? मुजे करना पडता है। क्या आप करते हो वा सिर्फ नाम आपका है और काम बाप का रहेता है? उस दिन खिलौना देखा जो खुद चल रहा था या कोई चला रहा था? सायन्स चला सकता है तो क्या बाप नहीं चला सकता ? यह तो बाप बच्चो का नाम बाला करने के लिए निमित्त बना देते है। क्योंकी बाप इस नामरुप से न्यारा है। जब बाप आप सब को ओफर कर रहे है की बोज को दे दो। आप सिर्फ नाचो, उडो। फिर आप बोज क्युं उठाते हो ? कैसे सर्विस होंगी ? कैसे भाषण करेंगे ? यह तो कवेश्चन ही नहीं। सिर्फ निमित्त समज कनेकशन पावरहाउस से जोडकर बैठ जाओ। फिर देखो भाषण होता है वा नहीं। वह खिलौना चल सकता है तो क्या आप का मुख नहीं चल सकता ? आप की बुध्धि में प्लान नहीं चल सकते ? कैसे कहने से जैसे तार के उपर रबर आ जाता है। रबर आ जाने के कारण कनेक्शन जूटता नहीं और प्रत्यक्ष फल नहीं दिखाई देता। इसलिए थक जाते हो और फिर कहते हो पता नहीं क्या होगा ? बापने निमित्त बनाया है तो अवश्य होगा।

इश्वरीय परिवार पसंद बनने के लिये सिर्फ छोटी सी एक बात है - "रिगार्ड दो और रिगार्ड लो" कोई कैसा भी हो आप निष्काम बनके रिगार्ड देते जाओ तो परिवार स्वत: ही संतुष्ट होगा।

बाप पसंद बनने के लिये - "सच्चे दिल पर साहेब राजी" जो भी हो लेकिन सच्चाई या सत्यता बापको जीत लेती है और मनपसंद बनने के लिये बहोत सहज साधन है। श्रीमत की लकीर के अंदर रहो अर्थात बाप जैसे चलाये वैसे चलो।

1-4-81

मैं रुह हुँ। सदा सुप्रीम रुह की छत्रछाया में चल रही हुँ। मैं रुह हुँ मेरा हर संकल्प भी सुप्रीम रुह की श्रीमत के बीना नहीं चल सकता। मुज रुह का करावनहार सुप्रीम रुह है। करावनहार के आधार पर मैं निमित्त करनेवाला

हुँ, मैं करनहार, वह करावनहार है। वह चला रहा है, मैं चल रहा हुँ। हर डायरेक्शन मुज रुह के लिए संकल्प बोल और कर्म में सदा हजूर हाजीर है। इसलिए हजुर के आगे सदा मुज रुह भी जी हजूर है। सदा मैं रुह और सुप्रीम रुह कम्बाईन्ड हुं। सुप्रीम रुह मुज रुह के बिना अलग नहीं हो सकता। ऐसे हर सेकन्ड हजुर को हाजीर अनुभव करनेवाले सदा रुहानी खुश्बु में अविनाशी और एक रस रहते है। यह है नंबरवन रुहे गुलाब की विशेषता।

7-4-81

जो बापके गले का हार बन गये उनकी कभी भी हार नहीं हो सकती। तो सदा ये स्मृति में रखो कि मैं बाप के गले का हार हुँ। ईससे माया से हार खाना समाप्त हो जायेगा। ये रावण की लंका को जलानेवाले हनुमान महावीर हो गये न! हनुमान खुद नहीं जला। पुछ से लंका जलाई। क्युंकी अपने को सदा सेवक समझता था। तो यहां भी जो सदा सेवाधारी है वही माया के अधिकार को खतम कर सकते है। हनुमान के दिल में सदा राम बसता था न! तो बाप के सिवाय और कोई भी दिल में न हो। अपने देह की स्मृति भी दिल में नहीं। क्युंकी देह भी पर है। तो जब आत्मिक स्वरुप है तो ट्रस्टी अथवा डबल लाईट और देह की स्मृति है तो गृहस्थी। ट्रस्टी अर्थात माया का जाल खतम।

11-4-81

ऐसे तो नहीं समझते है हम थोडे है? थोडे है लेकिन ओलमाइटी आपका साथी है। आप सत्यता की शक्तिवाले हो। पांच नहीं हो लेकिन विश्व का रचयिता आपका साथी है ईसी फलक से बोलो। मानेंगे या नहीं मानेंगे, कहे, कैसे - ये संकल्प तो नहीं आते? जहां सत्यता है, सत्य बाप है वहां सदा विजय है। इस निश्चय के आधार पर अनुभवी मूरत बन बोलो तो सदा सफलता आपके साथ है।

12-10-81

<u>सर्व खजानों की चाबी एक शब्द "बाबा"</u>

भाग्य विधाता बाप के सभी बच्चे भाग्यशाली तो है, विधाता द्वारा

राई भी नहीं, रुई। जो रुई सेकण्ड में उड जाए। सिर्फ तेरा कहना नहीं मानना, सिर्फ मानना भी नहीं चलना। एक शब्द का परिवर्तन सहज ही है ना! और फायदा ही है, नुकसान तो है नहीं। तेरा कहने से सारा बोझ बाप को दे दिया। तेरा तुम ही जानों। आप सिर्फ निमित्त-मात्र हो। इसमें फायदा है ना? न्यारे और परमात्मा के प्यारे बन गये। जो परमात्मा के प्यारे बनते हैं वह विश्व के प्यारे बनते हैं। सिर्फ भविष्य प्राप्ति नहीं है, वर्तमान भी हैं। एक सेकण्ड में अनुभव किया भी है और करके देखो। कोई भी बात आ जाए तेरा कह दो, मान जाओ और तेरा समझकर करो तो देखो बोझ हल्का होता है या नहीं होता हैं। अनुभव है ना? सभी अनुभवी बैठे हो ना! सिर्फ क्या होता है, मेरा मेरा कहने की बहुत आदत है ना, **63** जन्मों की आदत है तो तेरा तेरा कहकर फिर मेरा कह देते हो और मेरा माना गये, फिर वह बात तो एक घण्टे में, दो घण्टे में, एक दिन में खत्म हो जाती है लेकिन जोतेरे से मेरा किया उसका फल लम्बा चलता हैं। बात आधे घण्टे की होगी लेकिन चाहे पश्चाताप के रुप में, चाहे परिवर्तन करने के लक्ष्य से, वह बात बार बार स्मृति में आती रहती हैं। इसलिए बाप सभी बच्चों को कहते हैं अगर "मेरा शब्द" से प्यार है, आदत है, संस्कार है, कहना ही है तो मेरा बाबा कहो। आदत से मजबूर होते है ना। तो जब भी मेरा मेरा आवे तो मेरा बाबा कहकर खत्म कर दो। अनेक मेरे को एक मेरा बाबा में समा दो।

अशरीरी बनने का अभ्यास तो पक्का है ही, इसलिए शरीर का हिसाब सहज चुक्तु हो जाता हैं। शक्तियां बहुत जमा हैं। बापदादा मस्तक मे चमकते हुए शब्दों में देख रहे है - बेफिक्र बादशाह। फिक्र बाप को है, आप बेफिक्र बादशाह है। आदि से साथी रहे हैं तो साथी का जो भी कुछ होता है वह बाप ले लेता है। सभी की दुआयें आपके साथ हैं। दुआओ का खाता कितना है? बहुत जमा है ना? जितनों को दुआयें सारे दिन में देते हैं तो बहुत गुणा होकर मिलती हैं। इसलिए देनेवाले को देना नहीं हैं, जमा होना हैं। आपका स्टोक तो सब जमा है ही। एक्जैम्पुल हो इसलिए एक्जाम में भी एक्स्ट्रा मार्क्स मिलने के अधिकारी हो। यह है बाप और परिवार का स्नेह। आपके हर कदम में दुआयें बिखरी हुई हैं।

जाते हो। चाहे आजकल की हाइएस्ट आत्मायें, सकामी राजे थे, अब तो नहीं हैं। चाहे प्रेजीडेंट हो, चाहे प्राइममिनिस्टर हो लेकिन वह पूज्य नहीं बनते हैं। आप पूज्य बनने वाली आत्माओं के आगे पुजारी बन नमन और पूजन करते हैं। अभी भी स्व-राज्य अधिकारी बनते हो और भविष्य में भी राजाओं के राजे बनते हो। तो ऐसा हाइएस्ट पद प्राप्त करते हो। साथ में रिचेस्ट ईन दी वर्ल्ड हो। आपका टाइटल ही है पदमा-पदम-पति। और ऐसा खजाना है जो अरबपति, खरबपति, अरब-खरब से भी ऐसा खजाना प्राप्त नहीं कर सकते। आप श्रेष्ठ आत्माओं का बाप द्वारा ऐसा भाग्य बना रहे हैं जो अनुभव करते हो और वर्णन भी करते हो कि हमारे कदम में पदम हैं। कदम में पदम हैं या सौ हैं, हजार हैं ? ऐसा कोई बडे से बडा मिल्यूनर भी इतनी कमाई नहीं कर सकता। कदम में कितना टाइम लगेगा ? कदम उठाओ कितना समय लगता हैं ? सेकण्ड। चलो दो सेकण्ड कह दो। अगर दो सकण्ड भी कहो तो दो सेकण्ड में पदम, तो सारे दिन में कितने पदम हुए ? हिसाब करो। ऐसा कोई मिल्यूनर हैं जो एक दिन में इतनी कमाई करे ? ऐसा कोई होगा ? तो रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड हो ना ! और आपका ऐसा खजाना है जो आग भी नहीं जला सकती, पानी डुबो नहीं सकता, चोर लूट नहीं सकता, राजा भी खा नहीं सकते। ऐसा खजाना इस पुरुषोत्तम संगमयुग में ही प्राप्त करते हो।

आप बेगर टू प्रिन्स हो। बेगर भी हो और प्रिन्स भी हो। सर्व त्याग माना बेगर। सर्व प्राप्तियां अर्थात प्रिन्स। बिना त्याग के इतना बडा भाग्य नहीं मिलता हैं। त्याग का ही भाग्य मिला हैं। तन-मन-धन, सम्बन्ध सभी त्याग किया अर्थात् परिवर्तन किया। तन मेरा के बजाए तेरा किया। मन, धन, सम्बन्ध एक शब्द परिवर्तन होने से मेरे के बजाए तेरा किया, है एक शब्द का परिवर्तन लेकिन इसी त्याग से भाग्य के अधिकारी बन गये। तो भाग्य के आगे यह त्याग क्या हैं ? छोटी बात है या थोडी बडी भी हैं ? कभी कभी बडी हो जाती हैं। तेरा कहना माना बडी बात को छोटा करना और मेरा कहना माना छोटी बात को बडी करना। क्या भी हो जाए, **100** हिमालय से भी बडी समस्या आ जाए लेकिन तेरा कहना और पहाड को रुई बनाना,

अविनाशी तकदीर की लकीर जितनी खींचवाना चाहो खींचवा सकते हो। क्युंकी भाग्यविधाता दोनों बाप इस समय बच्चों के लिये हाजीर - नाजीर है। इस समय को ड्रामानुसार वरदान है। भाग्य के भंडारे भरपूर खुले हुए है। तन का भंडार, मन का, धन का, राज्य का, प्रकृति को दासी बनाने का भक्त बनाने का, सब भाग्य के भंडारे खुले है। सब को एक जैसा चान्स है। पीछे आने का कारण, प्रवृत्ति में रहेने का कारण, तन के रोग का कारण, आयु का कारण, स्थुल डीग्री या पढाई का कारण, किसी भी प्रकार के कारण का ताला भंडारे में नहीं लगा हुआ है। दिन-रात भंडारे भरपूर और खुले हुए है। भाग्य लेने के लिये क्यु में नहीं खडा करते है। देश विदेश के सभी एक ही समय पर भाग्य विधाता से मिलन मनाने आते है तो बडे ते बडे बाप से मिलना अर्थात भाग्य की प्राप्ति होना। एक है बाप और बच्चों का मिलना, दूसरा है कोई चीज मिलना, तो मिलन भी हो जाता, और भाग्य भी मिल जाता। क्युंकि बडे आदमी कभी भी किसी को खाली नहीं भेज सकते बाप तो है ही विधाता, वरदाता। तो खाली कैसे भेज सकते ? फिर भी कोई बच्चे भाग्यशाली, कोई सौभाग्यशाली, कोई पद्मापदम भाग्यशाली - ऐसे नंबरवार क्यु बनते है ? कोई मेहनत भी नहीं बतलाते, धक्के नहीं खीलाते, खर्च नहीं कराते। विधि भी एक शब्द की है। एक ही शब्द सर्व खजानों की वा श्रेष्ठ भाग्य की चाबी है, और वही विधि है, वह शब्द है "बाबा"।

बापने तो बच्चों को भाग्य का मालिक बना दिया लेकिन बच्चे मैं पन के उल्टे नशे में बाप से संबंध भूल स्वयं को ही सबकुछ समझने लगते है। इसलिये बिना बाप के सहयोग वा साथ के खजाने नहीं मिल सकते। कंइ बच्चे बापदादा अर्थात दोनो बाप के बजाय एक ही बाप द्वारा खजाने के मालिक बनने की विधि को अपनाते है। इससे भी प्राप्ति से वंचित हो जाते है। कहेते हैं हमारा निराकार से डायरेक्ट कनेक्शन है। साकार ने भी निराकार से पाया इसलिये हम भी निराकार द्वारा ही सब पा लेंगे, साकार की क्या आवश्यक्ता है। लेकिन ऐसी चाबी खंडित चाबी बन जाने से सफलता नहीं मिल पाती है। बच्चे ये भूल जाते है कि शिवबाप ने भी ब्रह्मा द्वारा ही स्वयं

को प्रत्यक्ष किया और राज्य भाग्य की प्रालब्ध में भी ब्रह्मा के साथ आना है। निराकार तो निराकारी दुनिया के वासी बन जायेगे। फिर साकार के बिना सर्व भाग्य, भाग्य के भंडारे के मालिक कैसे हो सकते है ? भाग्य विधाताने भाग्य बांटा ही है ब्रह्मा द्वारा। ब्रह्माकुमार / कुमारी बनने के सिवाये भाग्य बन नहीं सकता।

3-11-81

डायरेक्ट बाप के बच्चे बन संगमयुग का सदा काल का वर्सा न पाया तो पाया ही क्या ? सर्व खजानों की खानों के मालिक, उसके बालक बन खजाना संपन्न नहीं बने तो मालिक के बालक बनकर क्या किया ? "सफलता हमारा जन्म सिंध्ध अधिकार है" ये कहेते सदा सफलता का अनुभव नहीं किया तो जन्म सिध्ध अधिकारी बनकर क्या किया ? श्रेष्ठ कर्मो की, वा श्रेष्ठ चरित्र बनाने की अति सहज विधि वरदाता बापने दी, फिर भी सिध्धि स्वरुप नहीं बने तो क्या किया ? क्या युध्ध करना, मेहनत करना, धीरे धीरे आराम से चलना यही पसंद है क्या ? बाप का दिल तख्त पसंद नहीं है क्या ? दिल तख्त नशीन के आगे माया आ नहीं सकती है। तख्त से उतर युध्ध के मैदान में चले जाते हो तब मेहनत लगती है जैसे कई बच्चे लडने झगडने के बिना रह नहीं सकते। ऐसे यहाँ के युध्ध के संस्कार राज्य तख्त छुडा के युध्ध के मैंदान में ले जाते है, इसलिये अब प्रालब्धी बनो तब बहोत काल के भविष्य प्रालब्धी भी बनेंगे। अंत तक योध्धेपन की जीवन होगी तो चंद्रवंशी बनना पडेगा। इसलिये सुर्यवंशी बनो। अर्थात सदा अतिन्द्रिय सुख के झुले में झुलते रहो। इसको ही कहेते है संगमयुग की प्रारब्ध स्वरुप।

21-1-82

<u>प्रीत की रीत निभाने का सहज तरीका</u>

प्रीत की रीत निभाना अर्थात सबकुछ पाना। सिर्फ दो बातों की रीति है। जो इतनी सरल है जो सब कर भी सकते है। प्रीति है गीत गाना और नाचना। बाप के वा अपने श्रेष्ठ जीवन की महिमा के गीत गाओ, ज्ञान के गीत गाओ, सर्व प्राप्तियों के गीत गाओ। और खुशी में नाचो। बापदादा को वही परवाने पसंद है, जो गाना और नाचना जानते है। जब गाने और नाचने

अनुभव करते हो ? सतगुरु के रुप में हर कार्य के लिए श्रीमत भी देते और साथ भी देते हैं। सिर्फ मत नहीं देते हैं, साथ भी देते हैं। आप क्या गीत गाते हो ? मेरे साथ साथ हो कि दूर हो ? साथ है ना ? अगर सुनते हो तो परमात्म टीचर से, अगर खाते भी हो तो बापदादा के साथ खाते हो। अकेले खाते हो तो आपकी गलती हैं। बाप तो कहते हैं मेरे साथ खाओ। आप बच्चों का भी वायदा हैं - साथ रहेंगे, साथ खायेंगे, साथ पियेंगे, साथ सोयेंगे और साथ चलेंगे... सोना भी अकेले नहीं हैं। अकेले सोते हैं तो बुरे स्वप्न वा बुरे ख्यालात स्वप्न में भी आते हैं। लेकिन बाप का इतना प्यार हैं जो सदा कहते हैं मेरे साथ सोओ, अकेले नहीं सोओ। तो उठते हो तो भी साथ, सोते हो तो भी साथ, खाते हो तो भी साथ, चलते हो तो भी साथ, अगर दफ्तर में जाते हो, बिजनेस करते हो तो भी बिजनेस के आप ट्रस्टी हो लेकिन मालिक बाप है। दफ्तर में जाते हो तो आप जानते हो कि हमारा डायरेक्टर, बोस बापदादा है, यह निमित्त मात्र है, उनके डायरेक्शन से काम करते हैं। कभी उदास हो जाते हो तो बाप फ्रैन्ड बनकर बहलाते हैं। फ्रैन्ड भी बन जाता है। कभी प्रेम में रोते हो, आंसू आते हैं तो बाप पोछने के लिए भी आते हैं और आपके आंसू दिल के डिब्बी में मोती समान समा देते हैं। अगर कभी कभी नटखट होके रुठ भी जाते हो, रुसते भी हो बहुत मीठा मीठा। लेकिन बाप रुठे हुएको भी मनाने आते हैं। बच्चे कोई बात नहीं, आगे बढो। **जो कुछ हुआ बीत गया, भूल जाओ, बीती सो बीती करो, ऐसे मनाते भी हैं।** तो हर दिनचर्या किसके साथ हैं ? बापदादा के साथ।

बापदादा सभी बच्चों से यही श्रेष्ठ आशा रखते है कि सभी बच्चे सहज पुरुषार्थी सदा रहो। **63** जन्म भक्ति में, उलझनों में भटकने की मेहनत की हैं, अब यह एक ही जन्म है मेहनत से छूटने का। अगर बहुतकाल से मेहनत करते रहेंगे तो यह संगमयुग का वरदान मुहब्बत से सहज पुरुषार्थी का कब लेंगे ? युग समाप्त, वरदान भी समाप्त। तो सदा इस वरदान को जल्दी से जल्दी ले लो।

13-3-98

ऊंचे ते ऊंचे बाप के बच्चे ऊंचे ते ऊंचे हैं। हाइएस्ट बनते हो तब पूजे

लगन सेवा, सेवा और सेवा... और सभी बातों से उपराम । इसको कहा जाता हैं बेहद का वैराग्य ।

सभी को सुख देते हो । तो सुख देने की दुआयें बहुत मिलती हैं । पुरुषार्थ मे यह दुआयें एड हो जाती हैं । निर्विघ्न सेवा, यह बहुत पदमगुणा फल देती हैं । जितनी निर्विघ्न सेवा होती हैं उतना ऑटोमेटिक मार्क्स बढती जाती हैं । सबको सुख देना, किसी भी बात से, चाहे कर्म से, चाहे वाणी से, चाहे मन्सा से - कोई भी सुख देता हैं तो उसकी मार्क्स ऑटोमेटिक मार्क्स बढती हैं । तो सुख स्वरुप बनकर सुख दो । सुख दो और सुख लो ।

मधुबन निवासियों को दुआयें बहुत मिलती हैं । चाहे सफाई करनेवाला भी हो, झाडु लगाने वाला हो लेकिन सफाई भी अच्छी देखकर सबकी दुआयें मिलती हैं । सबसे सहज पुरुषार्थ है दुआयें लो, दुआयें दो । इसमें कोई मेहनत नहीं हैं । बहुत जल्दी मायाजीत बन जायेंगे । किसको मर्यादापूर्वक दु:ख नहीं देना हैं । ऐसे भी नहीं है कि मर्यादा तोड करके इसको सुख दो, नहीं वह सुख के खाते में जमा नहीं होता है, वह ऑटोमेटिक मशीनरी दु:ख के खाते में जमा हो जाती हैं । इसलिए दिल से सुख दो, मर्यादापूर्वक दिल से । दिखावा-मात्र नहीं, दिल से । सुख कर्ता के बच्चे एक सेकण्ड में अपनी मन्सा द्वारा, वाणी द्वारा, संबंध-सम्पर्क द्वारा सुख दे सकते हैं ।

31-1-98

अमृतवेले से लेकर जब उठते हो तो परमात्म प्यार में लवलीन होके उठते हो । परमात्म प्यार उठाता हैं । दिनचर्या की आदि परमात्म प्यार होता हैं । प्यार नहीं होता तो उठ नहीं सकते । प्यार ही आपके समय की घण्टी हैं । प्यार की घण्टी आपको उठाती हैं । सारे दिन में परमात्म साथ हर कार्य कराता है । कितना बडा भाग्य है जो स्वयं बाप अपना परमधाम छोडकर आपको शिक्षा देने के लिए आते हैं । ऐसे कभी सुना कि भगवान रोज अपने धाम को छोड पढाने के लिए आते हैं । आत्मायें चाहे कितना भी दूर दूर से आयें, परमधाम से दूर और कोई देश नहीं हैं । है कोई देश ? अमेरिका, अफ्रीका दूर हैं ? परमधाम ऊंचे ते ऊंचा धाम हैं । ऊंचे ते ऊंचे धाम से ऊंचे ते ऊंचे भगवान, ऊंचे ते ऊंचे बच्चों को पढाने आते हैं । ऐसा भाग्य अपना

से थक जाओ तो फिर सो जाओ । अर्थात अशरीरी बन जाओ । जब थक जाओ तो अशरीरी बन अशरीरी बाप की याद में खो जाओ अर्थात सो जाओ ।

25-12-82

बच्चे कहते है ऐसा बापदादा सारे कल्प में नहीं मिलेगा । तो बापदादा भी कहेते ऐसे बच्चे सारे कल्प में नहीं मिलेंगे । बाप और बच्चों का कम्बाईन्ड रुप अर्थात साथ रहेनेवाले । इसी स्वरुप को ही सहजयोगी कहा जाता है । जीतना बाप बच्चों के भाग्य को जानते है उतना बच्चे अपने भाग्य को नहीं जानते है । डबल अधिकारी हो वर्सा भी मिलता है तो वरदान भी । जहां कोई मुश्किल अनुभव हो तो वरदाता के रुप से स्मृति में लाओ जीससे वरदान की प्राप्ति होने से मुश्किल सहज हो जायेगी और प्रत्यक्ष प्राप्ति की अनुभूति होंगी ।

बापदादा करावनहार बन कराते है लेकिन निमित्त बच्चों को बनाते है जिससे हाथ बच्चों का और काम बाप का हो जाता है । हाथ बढाने का गोल्डन चांस बच्चों को ही मिला है । बडे से बडा कार्य भी हो लेकिन अनुभव होता है कि करानेवाला निमित्त बनाकर करा रहा है । बापदादा भी बच्चों के हर कर्म में सदा करावनहार के रुप में साथी है ।

<u>मुलाकात (सावित्रीबेन के साथ)</u>

सभी की सर्विस एक जैसी नहीं होती । वेराईटी आत्माए हैं, वेराइटी सेवा का तरीका है । ज्यादा सोचने से नहीं होगा, स्वत: होगा । अपने को सदा बाप के समीप समजो । जन्म से अधिकारी हो । साकार में समीप रहेने का वरदान जन्म ते ही मिला । ऐसे वरदानी ढुंढते भी मुश्किल मिलेंगे इसलिये बाप के समीप समझते हुए आगे बढते रहो । जितना होता, जैसे होता कल्याणकारी । सोचो नहीं, निर्संकल्प रहो । बाप का वायदा है । बाप सदा साथ निभाते ही रहेंगे । अपना संकल्प भी बापके उपर छोड दो । सर्विस बढेगी या नहीं बढेगी वो बाप जाने । नहीं बढेगी तो बाप जिम्मेवार है, आप नहीं - इतने निश्चिंत रहो । आपने तो बाप के आगे अपना संकल्प रख दिया फिर जिम्मेवार बाप है । सिकीलधे हो, कितने शोकसे बापने ढुंढा है पहला

पहला सेवा का रतन सारे विश्व से चुना है।

मुलाकात

जब भी संकल्प किया और बाप हाजीर। बाप के उपर सारा कार्य छोड दिया तो बाप जाने, कार्य जाने, स्वयं सदा डबल लाईट फरिश्ता, ट्रस्टी बनकर रहो तो सदैव हल्के रहेंगे। साफदिल मुराद हांसील। श्रेष्ठ संकल्पों की सफलता जरुर होती है। एक श्रेष्ठ संकल्प बच्चे का और **1000** श्रेष्ठ संकल्प का फल बाप द्वारा प्राप्त हो जाता है। अभी जो खजाने बाप से मिले है उन्हें बांटते रहो कोई भी आये तो खाली न जाये।

28-12-82

मुलाकात (स्वीडन पार्टी से)

सदा निश्चय बुध्धि विजयी रतन है, इसी नशे में रहो। निश्चय का फाउन्डेशन सदा पक्का करो। अपने आपमें, बाप में और ड्रामा के हर सिन में निश्चय। सदा इसी निश्चय के आधार पर आगे बढते चलो। अपनी जो भी विशेषतायें है उसको सामने रखो, कमजोरीयों को नहीं, तो अपने आप में फेइथ रहेगा। कमजोरी की बात को ज्यादा नहीं सोचना, तो फिर खुशी में आगे बढते जायेंगे। ये निश्चय रखो कि जब की बाप का हाथ पकडा है तो पकडनेवाले सदा आगे बढते है। जब बाप सर्वशक्तिवान है तो उसका हाथ पकडनेवाले पार पहुंचे कि चाहे खुद भले कमजोर भी हो फिर भी साथी तो मजबुत है न ? इसलिये पार हो ही जायेंगे। सिर्फ सदा निश्चय बुध्धि विजयी रतन की स्मृति में रहो। बीती सो बीती, बिंदी लगाकर आगे बढो।

बापदादाने सब बच्चों को सबसे बढिया सौगात डायमंड 'की' (चाबी) है। जिससे जो खजाना चाहो वह हाजीर हो जायेगा। वह है एक ही बोल "बाबा" इससे बढिया चाबी कोई मिलेगी क्या ? सतयुग में भी ऐसी चाबी नहीं मिलेगी। चाबी को खोया तो सब खजाना खोया। इसलिये चाबी सदा साथ रखो। बापने बच्चों को ढुंढा और बच्चोने बाप को पहेचान लिया। इसी विशेषता को देख बापदादा सदा मायाजीत रहने की बधाई देते है।

मुलाकात :

हरेक बच्चा अपना भाग्य ले रहा है। संगम पर हरेक आत्मा का भाग्य

नहीं हो सकती है। एक ही युग परम आत्मा और आत्माओं का मौज मनाने का युग हैं। आत्मा, परमात्मा के स्नेह का युग हैं। मिलन का युग हैं। तो दृढ संकल्प करो कि आज से मेहनत से मुक्त हो जायेंगे।

अभी भी कई बच्चे कहते हैं - समय सिखा देगा, समय बदला देगा। समय के अनुसार तो सारे विश्व की आत्मायें बदलेंगी लेकिन आप बच्चे समय का इन्तजार नहीं करो। समय को शिक्षक नहीं बनाओ। आप विश्व के शिक्षक के मास्टर विश्व शिक्षक हो, रचता हो, समय रचना हैं तो हे रचता आत्मायें रचना को शिक्षक नहीं बनाओ। ब्रह्मा बापने समय को शिक्षक नहीं बनाया, बेहद का वैराग्य आदि से अन्त तक रहा। आदि में देखा इतना तन लगाया, मन लगाया, धन लगाया, लेकिन जरा भी लगाव नहीं रहा। तन के लिए सदा नेचुरल बोल यही रहा - बाबा का रथ हैं। मेरा शरीर हैं, नहीं बाबा का रथ हैं। बाबा के रथ को खिलाता हुं, मैं खाता हुं, नहीं। तन से भी बेहद का वैराग्य। न तो मनमनाभव था ही। धन भी लगाया, लेकिन कभी यह संकल्प भी नहीं आया कि मेरा धन लग रहा हैं। कभी वर्णन नहीं किया कि मेरा धन लग रहा हैं या मैने धन लगाया हैं। बाबा का भण्डारा हैं, भोलेनाथ का भण्डारा हैं। धन को मेरा समझकर पर्सनल अपने प्रति एक रुपये की चीज भी युज नहीं की। कन्याओं, माताओं की जिम्मेवारी है, कन्याओं-माताओं को विल किया, मेरापन नहीं। समय, श्वांस अपने प्रति नहीं, उससे भी बेहद के वैरागी रहे। इतना सब कुछ प्रकृति दासी होते हुए भी कोई एक्स्ट्रा साधन यूज नहीं किया। सदा साधारण लाइफ में रहे। कोई स्पेशल चीज अपने कार्य में नहीं लगाई। वस्त्र तक, एक ही प्रकार के वस्त्र अन्त तक रहे। चेंज नहीं किया। बच्चों के लिए मकान बनाये लेकिन स्वयं युज नहीं किया, बच्चों के कहने पर भी सुनते हुए उपराम रहे। सदा बच्चों का स्नेह देखते हुए भी यही शब्द रहे - सब बच्चों के लिए हैं। तो इसको कहा जाता हैं बेहद की वैराग्य वृत्ति प्रत्यक्ष जीवन में रही। अन्त में देखो बच्चे सामने हैं, हाथ पकडा हुआ है लेकिन लगाव रहा ? बेहद की वैराग्य वृत्ति। स्नेही बच्चे, अनन्य बच्चे सामने होते हुए फिर भी बेहद का वैराग्य रहा। सेकण्ड में उपराम वृत्ति का, बेहद के वैराग्य का सबुत देखा। एक ही

करना हैं, उन्हों के संगम के इस अन्तिम समय में स्वभाव-संस्कार के सब हिसाब-किताब यहां ही चूक्तु होने हैं। धर्मराजपुरी में नहीं जाना हैं। आपके सामने यमदूत नहीं आयेंगे। यह बातें ही यमदूत हैं जो यहां ही खत्म होनी हैं इसीलिए बिमारी बाहर निकलकर खत्म होने की निशानी हैं।

18-1-98

कई बच्चे सोचते हैं कि ब्रह्मा बाप वतन में क्या करते हैं ? हम तो यहां सेवा करते रहते और ब्रह्मा बाप वहां वतन में क्या करते ? लेकिन बाप कहते हैं जैसे साकार रुप में सदा बच्चों के साथ रहे, ऐसे वतन में भी रहते हैं। बच्चों के साथ ही रहते हैं, अकेले नहीं रहते हैं। बच्चों के बिना बाप को भी मजा नहीं आता। जैसे बच्चों को बाप के बिना कुछ सुझता नहीं, ऐसे बाप को भी बच्चों के बिना और कुछ नहीं सूझता। अकेले नहीं रहते हैं, साथ में रहते हैं। साकार में तो साथ का अनुभव साकार रुप में थोडे बच्चे कर सकते थे, अब तो अव्यक्त रुप में, हर बच्चे के साथ जिस समय चाहे, जब चाहे साथ निभाते रहते हैं। जैसे चित्रों में दिखाते हैं ना - उन्होंने एक एक गोपी के साथ कृष्ण को दिखा दिया लेकिन यह इस समय का गायन हैं। अब अव्यक्त रुप में हर बच्चे के साथ जब चाहे, चाहे रात को दो बजे, अढाई बजे हैं, किसी भी टाइम साथ निभाते रहते हैं। साकार में तो सेन्टर्स पर चक्कर लगाना कभी कभी होता लेकिन अब अव्यक्त रुप में तो पवित्र प्रवृत्ति में भी चक्कर लगाते हैं। **बाप को काम ही क्या हैं, बच्चों को समान बना के साथ ले जाना, यही तो काम हैं ना और क्या हैं ? तो इसी में ही बिजी रहते हैं।**

तो आज के दिन बापदादा बच्चों को विशेष महेनत से मुक्त भव का वरदान देते हैं। कोई भी कार्य करो तो डबल लाइट बनके कार्य करो, तो मेहनत मनोरंजन अनुभव करेंगे क्योंकि बापदादा को बच्चों की मेहनत करना, युद्ध करना, हार और जीत का खेल करना - यह अच्छा नहीं लगता। तो मुक्ति वर्ष मना रहे हो ना ! मना रहे हो या मेहनत में लगे हुए हो ? आज के दिन विशेष यह वरदान याद रखना - मेहनत से मुक्त भव। यह संगमयुग मेहनत से मुक्त होने का युग हैं। मौज में रहने का हैं। अगर मेहनत है तो मौज

अपना अपना है। और हर एक का श्रेष्ठ भाग्य है। क्युंकी श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बाप के बच्चे बने न ? न बाप से कोई श्रेष्ठ बाप है, न इससे श्रेष्ठ कोई भाग्य है। इसलिये भाग्यविधाता मेरा बाप है - इससे बडा नशा और क्या हो सकता ? इसको भूला तो मेहनत करनी पडेगी। आधाकल्प मेहनत की। व्यवहार में भी मेहनत, भक्ति में भी मेहनत-धर्मक्षेत्र में भी मेहनत की। सब में मेहनत की न ? व्यवहार भी परमार्थ के आधार पर सहज हो जाती क्युंकि निमित्त मात्र कर रहे है।

3-1-83

<u>संगठन</u>

सर्व ब्राह्मणों का एक संकल्प, वही कार्य की सफलता का आधार है। इसलिये सब का सहयोग चाहिये किले की एक इंट भी कमजोर होती तो किले को हिला सकती है। इसलिये छोटे बडे सब किले की इंट हो। इसलिये सभी के एक ही संकल्प द्वारा कार्य को सफल करना है। सब के मन से ये आवाज निकले की ये मेरी जिम्मेवारी है।

6-1-83

यह लक्ष्य रखो की फर्स्ट आना ही है। फर्स्ट की निशानी सदा बाप के साथ रहना। प्रयत्न नहीं करना है लेकीन सदा साथ का अनुभव रहे। जब यह अनुभव हो जाता है कि 'मेरा बाबा' है तो जो मेरा होता है वह स्वत: ही याद रहता है। याद किया नहीं जाता। मेरा अर्थात अधिकार प्राप्त हो जाना। 'मेरा बाबा' और 'मैं बाबा का' कितने थोडे से यह शब्द है और सेकन्ड की बात है। इसको ही कहा जाता है सहज योग। बाप के साथ रहनेवाले के सामने माया आ नहीं सकती जैसे अपने शरीर के रहने का स्थान मालुम है, बना हुआ है तो जब भी फ्री होते हो तो सहज ही अपने घर में जा के रेस्ट करते हो इसी रीति से जब मालूम है की मुजे बाप के पास रहना है, यही ठीकाना है तो कार्य करते भी रह सकते हो। ऐसे बुध्धि द्वारा अनुभव हो।

नंबरवार होते हुए भी बाप दादा के लिये लास्ट नंबर भी अति प्रिय है। भले अपनी यथा शक्ति मायाजीत बनने में कमजोर है फिर भी बाप को पहचान दिल से एक बार भी "मेरा बाबा" कहा तो बाप दादा रहम के

सागर ऐसे बच्चे को भी एकबार के रीटर्न में पदम् गुणा रुहानी प्यार से देखते है कि मेरे बच्चे विशेष आत्मा है। बाप इसी नजर से देखते है - फिर भी बाप का तो बना न ! ऐसे बच्चे को भी रहम और स्नेह की दृष्टि द्वारा आगे बढाते रहते है। क्युंकी "मेरा है" यही रहानी "मेरे पन की" स्मृति ऐसे बच्चों के लिये समर्थी भरने के आशीर्वाद बन जाती है। बापदादा को मुख से आशिर्वाद देने की आवश्यक्ता नहीं पडती है। क्युंकि शब्द, वाणी सेकन्ड नंबर है स्नेह का संकल्प शक्तक्तिशाली भी और नंबरवन प्राप्ति का अनुभव करानेवाला है। बापदादा इसी सुक्ष्म स्नेह के संकल्प से माता-पिता दोनों रुप से हर बच्चे की पालना कर रहे है। जैसे लौकिक में सिकीलधे बच्चे की, मा-बाप गुप्त ही गुप्त बहोत शक्तिशाली चीजों से पालना-खात्री करते है। ऐसे बापदादा भी खात्री करते है।

9-1-83

वैसे तो आप, बाप के बच्चे "वी.वी.वी.आई.पी." हो। आप सबसे बडा तो कोई भी नहीं है फिर भी दुनिया के कहेलानेवाले वी.आई.पी. का भाग्य बनाने के लिये बडे प्रोग्राम रखने पडते है। बडे प्रोग्राम में बडो को बुलाने का चान्स रहेता है।

सदैव खुशी में नाचते रहो तो शरीर भी ठीक हो जायेगा। मन की खुशी से शरीर को भी चलाओ। तो तन-मन दोनों की एक्सरसाईझ हो जायेगी। खुशी है दुआ, और एक्सरसाईझ है दवाई ज्यादा **सोचने के अभ्यासी नहीं बनो। जो भी सोच आये उसको वहां ही खतम कर दो। एक सोच के पीछे अनेक सोच चलने से फिर स्थिति और शरीर दोनों पर असर आती है, इसलिये तन और मन दोनों को सदा खुश रखने के लिये सोचो कम**। अगर सोचना ही है तो व्यर्थ संकल्प की भेट में हर बात का समर्थ संकल्प होता है वह सोचो। मानो, अपनी स्थिति या योग के लिये व्यर्थ संकल्प चलता है कि मेरा पार्ट तो इतना दिखाई नहीं देता, योग लगता नहीं, अशरीरी होते नहीं आदि-आदि उनकी भेट में समर्थ संकल्प करो कि याद तो मेरा स्वधर्म है, बच्चे का धर्म ही है बाप को याद करना तो क्युं नहीं होगा, जरुर होगा, मैं योगी नहीं तो और कौन बनेगा ? मैं ही कल्प कल्प का

परमात्म प्यार आनंदमय झूला हैं जिस सुखदाई झूले में सदा झूलते रहते हैं। परमात्म प्यार अनेक जन्मों के दु:खों को एक सेकण्ड में समाप्त कर देता हैं। परमात्म प्यार सर्व शक्ति सम्पन्न हैं, जो निर्बल आत्माओं को शक्तिशाली बना देता हैं। ऐसे श्रेष्ठ परमात्म प्यार के आप कितनी थोडी सी आत्मायें पात्र हो। ऐसी श्रेष्ठ पात्र आत्माओं को बापदादा देख देख हर्षित होते हैं। जैसे बाप हर्षित होते है वैसे बच्चे भी हर्षित होते हैं लेकिन नम्बरवार। बापदादा तो यही हर बच्चे को दिल से वरदान देते हैं कि सदा परमात्म प्यार के झूले में झूलनेवाले अविनाशी रत्न भव। इस प्यार के झूले से मन रुपी पांव नीचे नहीं करो क्योंकि सारे विश्व की आत्माओं से परम आत्मा के लाडले हो, प्यारे हो। तो बापदादा यही बच्चों को दुआयें देते हैं। इसी परमात्म प्यार में लवलीन रहो। ऐसे लवलीन आत्माओं के पास कोई भी परिस्थिति वा माया की हलचल आ नहीं सकती।

इस वर्ष में विशेष जो बच्चों ने संकल्प किया है, वह प्रैक्टिकल में करनेवालों को बापदादा की एक्स्ट्रा मदद दृढ रहना, संकल्प रुपी पांव हिले नहीं, अचल रहे तो बापदादा द्वारा एक्स्ट्रा मदद की अनुभूति होगी। सिर्फ लेने की शक्ति चाहिए। एक बल, एक भरोसा.. कुछ भी हो जाए, बनना ही हैं। यह संकल्प रुपी पांव मजबूत रखना। तो बातें आयेंगी भी लेकिन ऐसे ही अनुभव करेंगे जैसे प्लेन में बादल नीचे रह जाते हैं और स्वयं बादलों के ऊपर रहते हैं। बादल एक मनोरंजन का दृश्य बन जाता हैं। ऐसे कितने भी काले बादलों जैसी बातें हों, जिसमें कुछ समस्या का हल या समाधान उस समय दिखाई न भी दे लेकिन यह दृढ निश्चय हो कि यह बादल आये हैं जाने के लिए। यह बादल बिखरने वाले ही हैं, रहनेवाले नहीं हैं। ऐसे उडती कला की स्टेज पर स्थित हो जाओ तो कितने भी गहरे काले बदल बिखर जायेंगे और आप दृढता के बल से सफल हुए ही पडे हैं। घबराओ नहीं, यह कैसे होगा ! अच्छा होगा, क्योंकि बापदादा जानते है जितना समय समीप आ रहा हैं उतना नई-नई बातें, संस्कार, हिसाब-किताब के काले बादल आयेंगे। यहां ही सब चूक्तु होना हैं। कई बच्चे कहते हैं कि दिन-प्रतिदिन और ही ऐसी बातें बढती क्यों हैं ? जिन बच्चों को धर्मराजपुरी में क्रास नहीं

आप सदा अविनाशी खजानों से भरपूर हो। वह खजाने आज हैं कल नहीं लेकिन आपका खजाना न कोई लूट सकता है, न कोई आत्मा खजाने को हिला सकती हैं। अखुट हैं, अखण्ड है। ऐसी पर्सनैलिटी वाले आप बच्चे हो। सबसे उंचे ते ऊंची पर्सनैलिटी वाले फिर भी आत्माओं द्वारा, विनाशी धन द्वारा, विनाशी आक्युपेशन द्वारा पर्सनैलिटीज बनती हैं वा कहलाई जाती हैं। लेकिन आपको उंचे ते ऊंचे परम आत्मा ने श्रेष्ठ पर्सनैलिटी वाले बना दिया।

आप सब में शक्तियां हैं। तो शक्ति का सहयोग दो, गुण का सहयोग दो। उन्हों में है ही नहीं, अपना दो। पहले भी कहा ना - दाता बनो। वह असमर्थ हैं, उन्हों को समर्थी दो। गुण और शक्ति का सहयोग देने से आपको दुआयें मिलेंगी और दुआयें लिफ्ट से भी तेज राकेट हैं। आपको पुरुषार्थ मेंसमय भी देना नहीं पडेगा, दुआओं के रॉकेट से उडते जायेंगे। पुरुषार्थ की मेहनत के बजाए संगम के प्रालब्ध का अनुभव करेंगे। दुआयें लेना - वह सीखो और सिखाओ। अपना नेचरल अटेन्शन और दुआयें, अटेन्शन भी टेन्शन मिक्स नहीं होना चाहिए, नेचरल हो। नोलेज का दर्पण सदा सामने है ही। उसमें स्वत: सहज अपना चित्र दिखाई देता ही रहेगा। इसीलिए कहा कि पर्सनैलिटी की निशानी है प्रसन्नचित्त। यह क्यों, क्या, कैसे। यह के के भी भाषा समाप्त। दुआयें लेना और देना सीखो। प्रसन्न रहना और प्रसन्न करना - यह है दुआयें देना और दुआयें लेना। कैसा भी हो आपकी दिल से हर आत्मा के प्रति हर समय दुआयें निकलती रहें - इसका भी कल्याण हो। इसकी भी बुद्धि शांत हो। यह ऐसा, यह वैसा - ऐसा नहीं। सब अच्छा।

ब्रह्मा बाप बार बार याद दिलाते रहे - जो कर्म मैं करुंगा, मुझे देख और करेंगे। जब दूसरे करेंगे तब मैं करुंगा... यह स्लोगन नहीं। जो मैं करुंगा मुझे देख और करेंगे। नहीं तो स्लोगन चेंज कर दो और जगदम्बा माँ का विशेष स्लोगन रहा - हुक्मी हुक्म चला रहा हैं। वह चला रहा है, हम निमित्त बन चल रहे हैं। तो दोनों स्लोगन सदा याद रखो।

14-12-97

आज बापदादा अपने परमात्म प्यार के पात्र आत्माओं को देख रहे हैं।

सहज योगी हुँ तो व्यर्थ के बजाय इस प्रकार का समर्थ संकल्प चलाओ। मेरा शरीर नहीं चल सकता है ये व्यर्थ संकल्प नहीं चलाओ। इस की जगह ये सोचो कि इस अंतिम जनम में बापने हमको अपना बनाया है कमाल है, बलिहारी है ये अंतिम शरीर की जो इस पुराने शरीर द्वारा जनम जनम का वर्सा ले लिया। **तो ऐसे दिल-शिकस्त के संकल्प की जगह खुशी के संकल्प करो** की वाह मेरा पुराना शरीर! जिसने बाप से मिलाने के निमित्त बनाया वाह वाह कर चलाओ जैसे घोडे को प्यार से, हाथ से चलाते है, तो घोडा बहोत अच्छा चलता है अगर घोडे को बार बार चाबुक लगायेंगे तो और ही तंग करेगा। ये शरीर भी आपका है इसको बार बार ऐसे नहीं कहो कि पुराना है, बेकार शरीर है। ये कहेना जैसे चाबुक लगाना है। खुशी खुशी से शरीर की बलिहारी गाते चलाते रहो, तो शरीर कभी डिस्टर्ब नहीं करेगा।

एक बात सभी को समजनी चाहिये कि ब्राह्मण आत्माओं द्वारा यहां ही हिसाब किताब चुक्तु होना है। धर्मराजपुरी से बचने के लिये ब्राह्मण कहाँ न कहाँ निमित्त बन जाते है। तो गभराओ नहीं कि ये ब्राह्मण परिवार में क्या होता है ? लेकिन ये चुक्तु हो रहा है इसी खुशी में रहो। हिसाब-किताब चुक्तु हुआ और तरक्की ही तरक्की हुई। अभी एक वायदा करो की छोटी छोटी बात में कन्फ्युझ नहीं होंगे, प्रोब्लेम नहीं बनेंगे लेकिन प्राब्लेम को हल करनेवाले बनेंगे।

बापदादा को यही खुशी है की ऐसा कोई बाप सारे वर्ल्ड में नहीं होगा जिस का हरेक बच्चा श्रेष्ठ हो। बापदादा एक एक बच्चे की विशेषता का अगर वर्णन करे तो कइ वर्ष बीत जाये और बडे बडे शास्त्र बन जाये। "विशेष आत्मा हो" ऐसा निश्चय हो तो सदा मायाजीत स्वत: हो जायेंगे।

13-1-83

ये तो नशा है कि हम विशेष आत्मायें सृष्टि के आदि-मध्य-अंत तक पार्ट बजानेवाले है। सृष्टि के आदि पिता ब्रह्मा और आदि माता जगतअंबा के साथ साथ सारे कल्प में भिन्न भिन्न पार्ट बजाते आये हो न ? ब्रह्मा बाप के साथ पुरे कल्प की प्रीत की रीति निभानेवाले हो न ? तो अपने जन्म अर्थात पहेले जन्म और अब लास्ट जन्म दोनों के महत्व को अच्छी तरह से

जान लिया है न ? दोनों की महिमा अपरम् अपार है।

मुलाकात

कितनी भी रुकावटें आये लेकिन सच्ची लगन अर्थात एक बल एक भरोसे के आधार पर विघ्न समाप्त हो सफलता मिलती रही है और मिलती रहेगी। ऐसा अनुभव होता रहता है न ? जहां सर्वशक्तिवान बाप साथ है वहां इन छोटी छोटी बातें ऐसे समाप्त हो जाती है जैसे कुछ भी थी ही नहीं। सर्वशक्तिवान के बच्चे होने के कारण असंभव भी संभव हो जाता है। इसलिये अपने को ऐसे मास्टर सर्व शक्तिवान, श्रेष्ठ आत्मा अनुभव करो।

26-1-83

जो जितना अपने को सर्व प्राप्तियों से संपन्न अनुभव करेंगे वह सदा संतुष्ट हों। अगर जरा सी भी कमी महेसुस हुई तो असंतुष्टता आयेगी। संकल्प की सिध्धि तो फिर भी हो रही है ना थोडी मेहनत तो जरुर करनी पडती है। क्युंकि अपना राज्य तो है नहीं। फिर भी जितने औरों के आगे प्रोब्लम आते है उतना यहां नहीं। यहां प्रोब्लेम तो खेल हो गई। क्युंकी जहां हिंमत है वहां सहयोग प्राप्त हो ही जाता है इसलिये अपने मन में कोई हलचल नहीं होनी चाहिये मन सदैव हलका रहने से सर्व के पास भी आपके लिये हलकापन रहेगा। थोडा बहोत हिसाब-किताब तो होता ही है। लेकिन उसको ऐसे ही पार करो जैसे कोई बडी बात नहीं है। छोटी बात को बडा नहीं करो छोटा या बडा करना ये अपनी बुध्धि के उपर है।

15-2-83

बापदादा को हर्ष है की हरेक बच्चा इसी विश्व परिवर्तन के कार्य में आधार मूरत और उध्धार मूरत है। बापदादा हर बच्चे को मस्तकमणी, संतुष्टमणी, हृदयमणी जैसे चमकते हुए स्वरुप में देखकर सदा यही गीत गाते रहेते है "वाह मेरे बच्चे वाह, वाह मीठे बच्चे वाह, वाह प्यारे से प्यारे बच्चे वाह, वाह श्रेष्ठ आत्मायें वाह" ऐसा ही निश्चय और नशा सदा रहेता है न ? सारे कल्प में ऐसा भाग्य प्राप्त नहीं हो सकता जो भगवान बच्चों के गीत गाये। भक्त भगवान के गीत बहोत गाते है लेकिन भगवान भी हमारे गीत गायेंगे ऐसा कभी सोचा था ? जो सोचा नहीं था वह साकार रुप में देख

अपने सेवाओं के ड्युटीझ में ज्यादा समय लगाते हो। महान दाता बन, बेहद के दाता बन वर्ल्ड के गोले पर खडे हो, बेहद की सेवा में वायब्रेशन फैलाओ। विश्व राजा बनना हैं सिर्फ जोन के वा अपने-अपने ड्युटीझ के सर्किल के राजा नहीं बनना हैं। विश्व कल्याणकारी हो। अभी बेहद में जाओ। बेहद में जाने से हदों की बातें स्वत: ही समाप्त हो जायेगी। मनोबल बहुत श्रेष्ठ बल हैं, उसको यूज नहीं करते हो। वाणी, संबंध, सम्पर्क उससे सेवा में बिजी रहते हो। अब मनोबल को बढाओ। बेहद की सेवा जो अभी आप वाणी या संबंध, सहयोग से करते हो, वह मनोबल से करो। तो मनोबल की बेहद की सेवा अगर आपने बेहद की वृत्ति से, मनोबल द्वारा विश्व के गोले के उपर ऊंचा स्थित हो, बाप के साथ परमधाम की स्थिति में स्थित हो थोडा समय भी यह सेवा की तो आपको उसकी प्रालब्ध कई गुणा ज्यादा मिलेगी।

आजकल के समय और सरकमस्टांश के प्रमाण अन्तिम सेवा यही मन्सा वा मनोबल की सेवा हैं।

28-11-97

आज बापदादा अपने बच्चों की रुहानी पर्सनैलिटी को देख रहे हैं। हर एक बच्चे की रुहानी पर्सनैलिटी कितनी श्रेष्ठ हैं। ऐसी रुहानी पर्सनैलिटी सारे कल्प में और किसी की भी नहीं हैं क्योंकि आप सबकी पर्सनैलिटी बनानेवाला ऊंचे ते ऊंचा बाप हैं। आप भी अपनी रुहानी पर्सनैलिटी को जानते हैं ना ? सबसे बडे ते बडी पर्सनैलिटी है - स्वप्न वा संकल्प में भी सम्पूर्ण प्युरिटी की पर्सनैलिटी। नम्बरवार है लेकिन फिर भी विश्व की सर्व आत्माओं से श्रेष्ठ हैं। तो बापदादा हर एक के मस्तक से पर्सनैलिटी की झलक देख रहे हैं। प्युरिटी के साथ-साथ सबके चेहरे और चलन में रुहानियत की भी पर्सनैलिटी हैं। और पर्सनेलिटी क्या होती है ? जो खजानों से सम्पन्न होते हैं, उसकी भी पर्सनैलिटी होती हैं लेकिन कितने भी बडे बडे सम्पन्न आत्मायें हों, आपके आगे वह सम्पन्न आत्मायें भी कुछ नहीं हैं क्योंकि वह भी अविनाशी सुख-शांति के खजाने से खाली हैं। आपके पास जो सम्पत्ति हैं उसके आगे अरब-खरब पति भी बाप से सुख-शांति मांगने वाले हैं और

आपकी भी आवश्यक हैं। जैसे बहुत चीजें मिला के अच्छी बन जाती हैं ना टेस्टी, तो ऐसे सभी की विशेषता मिलकर सेवा में टेस्ट आ जाती हैं।

सभी की विशेषता चाहिए। बहुत अच्छा। दादियों ने कहा और पाण्डवों ने माना – ये बहुत अच्छी बात हैं, जब भी बुलायें हां-जी, हां-जी। आपके संगठन के आधार पर सारा दैवी परिवार चलता हैं। इसलिए जैसे दादियां निमित्त हैं, वैसे आप भी निमित्त हो। जिम्मेवार हो। हैं या नहीं हैं ? सब बात में समझो हम सब सेवा के साथी हैं, यह १०-१२ नहीं हैं लेकिन एक हैं, इसमें यज्ञ का शान हैं। बाप-दादा सभी को एवररेडी देखकर बहुत खुश हैं, कार्य तो बढने ही हैं। कम तो होने नहीं हैं। संगठन की शक्ति बहुत वायुमण्डल को पावर देती हैं। राइट हैण्ड तो आप लोग हो ना ! विशेष राइटहैण्ड हो।

13-11-97

आज भाग्य विधाता बाप अपने श्रेष्ठ भाग्यवान बच्चोंको देख रहे हैं। हर एक बच्चेके भाग्य की रेखायें देख-देख भाग्य विधाता बाप भी हर्षित होते हैं क्योंकि सारे कल्प में चक्र लगाओ तो आप जैसा श्रेष्ठ भाग्य किसी धर्म आत्मा, महान आत्मा, राज्य अधिकारी आत्मा, किसी का भी इतना बडा भाग्य नहीं हैं, जितना आप संगमयुगी श्रेष्ठ आत्माओं का हैं। मस्तक से अपने भाग्य की रेखाओं को देखते हो ? बापदादा हर एक बच्चों के मस्तक में चमकती हुई ज्योति की श्रेष्ठ रेखा देख रहे हैं। आप सभी भी अपनी रेखायें देख रहे हो ? नयनों में देखो तो स्नेह और शक्ति की रेखायें स्पष्ट हैं। मुख में देखो मधुर श्रेष्ठ वाणी की रेखायें चमक रही हैं। होठों पर देखो रुहानी मुस्कान, रुहानी खुशी की झलक की रेखा दिखाई दे रही हैं। हृदय में देखो वा दिल में दोखो तो दिलाराम के लव में लवलीन रहने की रेखा स्पष्ट हैं। हाथों में देखो दोनों ही हाथ सर्व खजानों से सम्पन्न होने की रेखा देखो, पांवो में देखो हर कदम में पदम की प्राप्ति की रेखा स्पष्ट हैं। कितना बडा भाग्य हैं !

अगर दाता बनेंगे तो दाता की भावना से आपकी रोयल फैमिली और समीप वाली प्रजा बहुत जल्दी बनेंगी। वह लोग तो इन्तजार कर रहे हैं, सिर्फ सदा दाता बनने की देरी हैं। महान सहयोगी बनने की देरी हैं। ज्यादा खजाना स्वयं प्रति वा सिर्फ स्वयं की सेवाओं के प्रति लगाते हो। अपने-

रहे हो।

मुलाकात (रोबर्ट मुलर)

सदा अटल रहेना हिंमतवान बनकर आगे बढते जाना वह दिन भी इन आंखों से दिखाई देगा कि विश्व शांति का झंडा विश्व के चारों और लहेरायेगा। इसलिये आगे बढते चलो। दुनियावाले दिलशीकस्त बनायेंगे, आप मत बनना। एक बल एक भरोसा-इसी निश्चय से चलते रहेना। जीस समय कोई भी परिस्थिति आये तो बाप को साथी बना लेना। तो ऐसे अनुभव करेंगे कि मैं अकेला नहीं हुं मेरे साथ विशेष शक्ति है। स्वप्न पुरा हो जायेगा। जहाँ बाप है वहां कितने भी चाहे तुफान हो वह तोफा बन जायेंगे। निश्चय बुध्धि विजयंती का ये टाइटल याद रखना कि मैं निश्चयबुध्धि विजयी रतन हुँ।

18-2-83

कभी भी उमंग उत्साह को कम नहीं करना। मुझे बाप समान सर्व शक्तियाँ, सर्वगुण और सर्व ज्ञान के खजानों से संपन्न होना ही है – ये उमंग रखो। क्युंकी कल्प पहेले भी मैं श्रेष्ठ आत्मा बना था। एक कल्प की तकदीर नहीं लेकिन अनेक बार की तकदीर की लकीर भाग्य विधाता द्वारा खींची हुई है-इसी उमंग के आधार पर उत्साह स्वत: ही उत्पन्न होता है। उत्साह क्या है ? "वाह मेरा भाग्य" ये निश्चय ही उत्साह है जो भी बापदादा ने भिन्न भिन्न टाईटल दिये हैं। उसी स्मृति स्वरुप में रहने से उत्साह अर्थात खुशी स्वत: ही और सदा ही रहती है। सब से बडे से बडे उत्साह की बात यह है कि अनेक जन्म आपने बाप को ढुंढा लेकिन इस समय बापदादाने आप लोगों को ढुंढा। धर्म-कर्म-देश-रीति-रसम आदि भिन्न परदो के अंदर छीपे हुए थे उनमें से निकाल बापने पहेले अपना बनाया। तो ऐसे सदा उमंग और उत्साह में रहेनेवाली अर्थात एक बल एक भरोसा में रहेनेवाले बच्चो को, हिंमते बच्चे मददे बाप का सदा ही अनुभव होता रहेता है। "होना ही है" ये है हिंमत। इसी हिंमत से मदद के पात्र स्वत: बन जाते है और इसी हिंमत के संकल्प के आगे माया हिंमतहीन बन जाती है। "पता नहीं, होगा या नहीं होगा, मैं कर सकुंगा या नहीं" ये संकल्प करना माया का आवाहन करना है इसलिये

सदा उमंग उत्साह में रहेनेवाले हिंमतवान बनो। विधाता और वरदाता बाप के संबंध से बालक सो मालिक बन गये ऐसे सर्व खजानों के मालिक जिस के पास अप्राप्त कोई वस्तु नहीं, ऐसे मालिक उमंग उत्साह में नहीं रहेगा तो कौन रहेगा ? ये स्लोगन सदा मस्तक में स्मृति रुप में रहे "हम ही थे - हम ही है और हम ही रहेंगे"।

24-2-83

ब्रह्मा बाप ऐसे सिकीलधे बच्चों का विशेष एक गुणगान करते है कि आये भले पीछे है लेकिन आकार रुप द्वारा भी अनुभव साकार रुप का करते है। तो आकार रुप में साकार का अनुभव करना यह बुध्धि की लगन और स्नेह का प्रत्यक्ष स्वरुप है। ये दिलाराम बाप के समीप और दिलरुबा बच्चे है - ये सबूत है।

आप सोचो **5000** वर्ष के बाद बापदादा को ऐसे बीछडे हुए बच्चे मिले है तो **5000** वर्ष का इकठ्ठा प्यार हर बच्चे को मिलेगा न ? इतना प्यार का स्टोक हरेक बच्चे के लिये बाप के पास है। हरेक बच्चे से ज्यादा से ज्यादा सदा प्यार है और बच्चा सदा ही श्रेष्ठ है।

<u>मुलाकात</u>

बाप का बनना अर्थात विशेष आत्मा बनना। जब से बाप के बने उस घडी से विश्व के अंदर सर्व से श्रेष्ठ गायन योग्य और पूजन योग्य आत्मा बने।

<u>मुलाकात</u>

बापदादा के पास चाहे पीछे आनेवाले हो, चाहे किसी भी देश के हो, चाहे किसी भी धर्म के हो, किसी भी मान्यता के हो, लेकिन सर्व के लिये एक ही फुल अधिकार है। बाप एक है तो हक्क भी एक जैसा है। सिर्फ हिंमत और लगन की बात है। कभी भी हिंमतहीन नहीं बनना है। चाहे कोई कितना भी आपको दिल शीकस्त बनाये, कहे पता नहीं आपको क्या हुआ है, कहां चले गये ! लेकिन आप उनकी बातों में नहीं आना। हम बाप के, बाप हमारा है ! बाप हर बच्चे को अधिकारी आत्मा समझते है जितना ले उसके लिये रुकावट नहीं है। अभी कोई सीट्स बुक नहीं हुइ है। अभी सब सीट खाली है। सिटी बजी ही नहीं है। इसलिये हिंमत रखते रहेगे तो बाप

अगर देहभान में आते हैं तो देह क्या हैं ? मिट्टी है ना ! देह को क्या कहते हैं ? मिट्टी, अच्छी लगती हैं ? कई बच्चों को मिट्टी अच्छी लगती हैं, कई मिट्टी खाते भी हैं। लेकिन आप नहीं खाना, पांव भी नहीं रखो। संकल्प आना अर्थात पांव रखना। संकल्प में भी देह-भान नहीं आवे। सोचो, याद रखो कि हम कितने लाडले हैं, किसके लाडले हैं ! सतयुग में भी परमात्म लाडले नहीं होंगे। दिव्य आत्माओं के लाडले होंगे। लेकिन इस समय परमात्म बाप के लाडले हो। तो बच्चों ने हिम्मत के हाथ से गिफ्ट दी इसलिए बापदादा उसकी थैक्स करते हैं, शुक्रिया, धन्यवाद।

3-4-97

आज बापदादा अपने चारों ओर से विश्व के बाप के लव में लवलीन और लक्की बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चे के भाग्य पर बाप को भी नाज हैं कि मेरे बच्चे वर्तमान समय इतने महान हैं जो सारे कल्प में चाहे देवता स्वरुप में, चाहे धर्म नेताओं के रुप में, चाहे महात्माओं के रुप में, चाहे पद्मपति आत्माओं के रुप में किसी का भी इतना भाग्य नहीं है जितना आप ब्राह्मणों का भाग्य हैं।तो अपने ऐसे श्रेष्ठ भाग्य को सदा स्मृति में रखते हो ? सदा यह अनहद गीत मन में गाते रहते हो कि वाह भाग्य विधाता बाप और वाह मुझ श्रेष्ठ आत्मा का भाग्य।

ज्ञान, योग, धारणा और सेवा इन चारों सब्जेक्ट का सार दो शब्द हैं। एक बाप ही मेरा संसार हैं। दूसरा - हरगुण, हर शक्ति मेरा निजी सस्कार हैं। तो दो शब्द याद रखना - संसार और संस्कार। मुश्किल हैं क्या ? थोडा-थोडा मुश्किल हैं ? जब बात आ जाती हैं फिर तो मुश्किल हैं ? लेकिन बात आपके आगे क्या हैं ? बात बडी या बाप बडा ? कौन बडा हैं ?

<u>जगदीशभाई तथा अन्य मुख्य भाईयों से</u>

सेवा में पहला सेवा के निमित्त बनना और सेवा में सरेन्डर होना - ये आपका विशेष पार्ट हैं। अच्छा हैं चारों का अपना-अपना पार्ट है। सभी की विशेषता आपनी-अपनी हैं।

सभी की विशेषता आवश्यक है ना। इनकी विशेषता भी आवश्यक हैं,

मिल ही जाना हैं, यह बाप की गैरन्टी हैं। आप किनारा नहीं करना। माला के बीच में धागा खाली नहीं करना। एक दाना बीच से टूट जाए, निकल जाए तो माला अच्छी नहीं लगेगी। सिर्फ यह नहीं करना, बाकी बाबा की गैरन्टी है आप जरुर आयेंगे।

बापदादा को बच्चों से प्यार है ना। तो प्यार की निशानी हैं, प्यार वाले की मेहनत देख नहीं सकते। बापदादा तो उस समय यही सोचते कि बापदादा साकार में जाकर इनको कुछ बोले, लेकिन अब तो आकारी, निराकारी हैं। बिल्कुल सभी मेहनत से दूर मुहब्बत के झुले में झूलते रहो। जब मुहब्बत के झुले में झुलते रहेंगे तो महेनत समाप्त हो जायेगी। मेहनत को खत्म करें, खत्म करें नहीं सोचो। सिर्फ मुहब्बत के झुले में बैठ जाओ, मेहनत आपेही छूट जायेगी। छोडने की कोशिश नहीं करो, बैठने की, झूलने की कोशिश करो।

शिव जयन्ती अर्थात बच्चों के मेहनत समाप्त की जयन्ती। ठीक है ना? बाप को भी बच्चों पर फेथ हैं। पता नहीं कैसे कोई-कोई किनारा कर लेते हैं जो बाप को भी पता नहीं पडता। छत्रछाया के अन्दर बैठे रहो। ब्राह्मण जीवन का अर्थ ही है झूलना, माया में नहीं। माया भी झुलाती हैं। अमृतवेले देखो माया ऐसे झुलाती हैं जो सूक्ष्मवतन में आने के बजाए, निराकारी दुनिया में आने के बजाए निंद्रालोक में चले जाते हैं। कहते हैं योग डबल लाइट बनाता है लेकिन माथा भारी हो जाता हैं। तो माया भी झूला झुलाती हैं लेकिन माया के झूले में नहीं झुलना। आधाकल्प तो माया के झूले में खूब झूलकर देखा है ना। क्या मिला? मिला कुछ? थक गये ना! अभी अतिन्द्रिय सुख के झूले में झूलो, खुशी के झूले में झूलो। शक्तियों की अनुभूतियों के झूले में झूलो। इतने झूले आपको मिले हैं के झूले में झूलो, अभी आनंद के झूले में झूलो। अभी ज्ञान के झूले में झूलो। कितने झूले हैं! अनगिनत। तो झूले से उतरो नहीं। जो लाडले होते हैं ना तो मां-बाप यही चाहते है कि बच्चे का पांव मिट्टी में नहीं पडे या गोदी में हो या झूले में हो या गलीचों में हो। मिट्टी में पांव नहीं जाये। ऐसे होता है ना? तो आप कितने लाडले हो! आप जैसा लाडला कोई हैं? परमात्म लाडले बच्चे

भी पदमगुणा मदद देते रहेंगे।

27-2-83

कमाल तो बच्चों की है जो निर्बंधन बाप को भी बंधन में बांध देते है। बापदादा को भी हिसाब सिखा देते कि इस हिसाब से मिलो। तो ऐसा स्नेह का जादु बच्चे बाप को लगाते हैं जो बाप को सिवाय बच्चों के और कुछ सुझता ही नहीं। बाप निरंतर बच्चों को ही याद करते हैं। तुम सब खाते हो तो भी एक का आह्वान करते हो, तो कितने बच्चों के साथ खाना पडे? कितने बारी तो भोजन पर ही बुलाते हो। खाते है। चलते है, चलते हुए भी हाथ में हाथ लेकर चलते हैं, सोते भी साथ में है तो भी इतने अनेक बच्चों के साथ खाते, सोते और चलते तोऔर क्या फुरसत होगी? कोई कर्म करते तो भी यही कहेते की बाबा काम आपका है। हम निमित्त है, करो - कराओ आप, निमित्त हाथ हम चलाते है। तो वह भी करना पडे न! और फिर जिस समय थोडा बहोत तुफान आता तो भी बच्चे कहेते बाबा आप जानो। तुफानों को मीटाने का कार्य भी बाप को दे देते है, कर्म का बोज भी बाप को दे देते है, साथ भी सदा रखते है, तो बडे जादुगर बच्चे हुए न! तो ऐसी भुजाओं के सहयोग के बीना कुछ हो नहीं सकता। इसलिये ही तो बाप बच्चों की माला जपते है।

21-3-83

दुनियावाले जिन आत्माओ को महात्मा कहेते ऐसी महात्मायें भी आप महान आत्माओं के आगे क्या दिखाई देगी? जिन आत्माओं को हर बात में अयोग्य बना दिया इनको बापने आकर अधिकारी बना दिया, जिनको चरनों की जुती समझा उनको बापने नैनो का नूर बना दिया। तो आप महान आत्मायें बन गये न! जिन्होनें भी बापको जाना और जानकर अपना बनाया वह महान है। अपना बनाना अर्थात अपना अधिकार अनुभव होना। अर्थात सर्व प्रकार की अधिनता समाप्त करना। स्व की स्व प्रति अधिनता, ज्ञानी-अज्ञानी आत्माओं के संबंध संपर्क में आने की अधिनता, और प्रकृति और परिस्थितियों द्वारा प्राप्त हुइ अधिनता - सब समाप्त।

आजकल के अनेक प्रकार के दु:ख, चिंताए, समस्याए, ये भिन्न भिन्न

प्रकार की चोट जो आत्माओं को लगती है ये अग्नि जीते हुए को जलाने का काम करती है। न जींदा है न मरे हुए हैं। न छोड सकते है न बना सकते है – ऐसे जीवन से निकाल बापने श्रेष्ठ जीवन में ला दिया। जब से बापदादा ने माताओं पर नजर डाली तब से दुनियावालोने भी लेडीझ फर्स्ट का नारा जरुर लगाया है। ऐसे सभी सिकीलधे बच्चे सदा एक बाप दुसरा न कोई इसी अनुभव में सदा रहेनेवाले है। ऐसे बच्चे ही बाप समान श्रेष्ठ बनते हैं।

मुलाकात

एक होता है अपना पुरुषार्थ करना, एक होता है दूसरे के सहयोग का साधन बनना। ऐसे प्रवृत्ति संभालते सेवा की जिम्मेवारी संभाल रहे हो ये भी डबल लाभ हो गया। ये तो रास्ते चलते खुदा दोस्त द्वारा बादशाही मिल गई। है डबल जिम्मेवारी लेकिन डबल जिम्मेवारी होते भी डबल लाइट। डबल लाईट समजने से कभी लौकिक जिम्मेवारी भी थकायेगी नहीं। क्युंकी ट्रस्टी हो न ! अपनी गृहस्थी, अपनी प्रवृत्ति समजेंगे तो बोज है। अपना है ही नहीं तो बोज किस बात का ? बाप भी श्रेष्ठ, प्राप्ति भी श्रेष्ठ और स्वयं भी श्रेष्ठ। ऐसे जहां श्रेष्ठता है वहाँ साधारणता समाप्त और प्राप्ति ही प्राप्ति।

3-4-83

मुलाकात

महावीर बच्चे सदा ही तंदुरस्त हैं। क्युंकि मन तंदुरस्त है, तन तो एक खेल करता है। मन में कोई रोग होगा तो रोगी कहां जायेगा। लेकिन मन निरोगी है तो सदा तंदुरस्त है। सिर्फ शेष शैया पर विष्णु के समान ज्ञान का सीमीरण कर हर्षित होते हैं। यही खेल है। जैसे साकार बाप विष्णु समान टांग पर टांग चढाये खेल करते थे न ! ऐसे कुछ भी होता है तो वह भी निमित्त मात्र खेल होता है। ये भी सागर के तले में जाने का चान्स मिलता है।

सेवाधारी

कर्मभोग पर विजय प्राप्त कर कर्मयोगी की स्टेज पर रहेना इसको कहा जाता है विजयी रतन। सदा यही स्मृति रहती कि ये भोगना नहीं लेकिन नई

बाप की मदद मिलती हैं या नहीं। सभी को अनुभव भी हैं कि हिम्मत रखने से बाप की मदद समय पर मिलती हैं और मिलनी ही हैं, गैरन्टी हैं। हिम्मत आपकी मददद बाप की। तो संक्लप क्या हुआ ? चेहरे देख रहे हैं – हिम्मत हैं या नहीं हैं ! हिम्मत वाले तो हो, क्योंकि अगर हिम्मत नहीं होती तो बाप के बनते नहीं। बन गये – इससे सिद्ध होता है कि हिम्मत हैं। सिर्फ छोटी सी बात करते हो कि समय पर हिम्मत को थोडा सा भूल जाते हैं। जब कुछ हो जाता है ना तो पीछे हिम्मत वा मदद याद आती हैं। समय पर सब शक्तियां, समय प्रमाण युज करना इसको कहा जाता हैं ज्ञानी तू आत्मा, योगी तू आत्मा।

बापदादा खुश हो रहे थे कि कई बच्चों ने पत्र और चिटकी लिखी हैं कि हम **108** में आयेंगे, बहुत चिटकियां आई हैं। बापदादा ने सोचा जब इतने **108** में आयेंगे, तो **108** की माला पांच लडियों की बनानी पडेगी। तो **5-6-7-8** लडियों की माला बनायें ना ? जिन्होंने संकल्प किया हैं, लक्ष्य रखा है बहुत अच्छा हैं। लेकिन सिर्फ इस संकल्प को बीच-बीच में दृढ करते रहना ढीला नहीं करना। ऐसे तो नहीं कहेंगे माया आ गई – अब पता नहीं आयेंगे या नहीं ! पता नहीं, पता नहीं... नहीं करना। पता कर लिया, आना ही हैं। दृढता का ठप्पा लगाते रहना। हाँ मुझे आना ही हैं, कुछ भी हो जाए, मेरा निश्चय अटल हैं, अखण्ड हैं। ऐसा अटल-अखण्ड निश्चय हैं ? तो माया को हिलाने के लिए भेजें ? नहीं ? डरते हो ? माया आपसे डरती है और आप माया से डरते हो ? माया अपने दरवाजे देखती हैं, यहां खुला हुआ हैं, यहां खुला हुआ हैं। ढुंढती रहती हैं। आप घबराते क्यों हो ? माया कुछ नहीं हैं। कुछ नहीं कहो तो कुछ नहीं हो जायेगी। आ नहीं सकती, आ नहीं सकती, तो आ नहीं सकती।

यह नहीं सोचो कि **108** में कितने आयेंगे, हम कहां आयेंगे-यह नहीं सोचो। पहले गिनती करने लग जाते हैं – दादी आयेंगी, दीदी आयेंगी, फिर दादे भी आयेंगे, एडवांस पार्टी वाले भी आयेंगे। हमारा नम्बर आयेगा या नहीं, पता नहीं ! बापदादा ने कहा कि बापदादा **8-10** लडों की माला बना देंगे, इसलिए आप यह चिंता नहीं करो। औरों को नहीं देखो, आपको नम्बर

सेवा के बाद थोडी सी थकावट के चेहरे में दिखाई देती हैं। बाप कहते हैं बोझ उठाते क्यों हो ? क्या बोझ उठाना अच्छा लगता हैं या आदत पडी हुई हैं ? बोझ नहीं उठाओ। बोझ तब लगता है जब बाप साथ नहीं हैं। मैंने किया, मैं करती हुं, मैं करता हुँ तो बोझ हो जाता हैं। बाप साथ है, बाप का कार्य हैं, बापकरा रहा हैं तो बोझ नहीं होगा। हल्के हो नाचते रहेंगे।

6-3-97

चीज बडी नहीं है लेकिन जब चीज में स्नेह भर जाता हैं तो वह छोटी चीज भी बहुत महान बन जाती हैं। तो बापदादा चीज को नहीं देखते हैं, कागज के कार्ड को या पत्र को नहीं देखते हैं लेकिन उसमें समाये हुए दिल के स्नेह को देखते हैं। इसीलिए कहा कि बाप के पास स्नेह का म्युजियम हैं। ऐसा म्युजीयम आपके वर्ल्ड में नहीं हैं। है ऐसा म्युजियम ? नहीं है। जब बाप एक-एक प्यार की गिफ्ट को देखते हैं तो देखते ही बच्चे की सूरत उसमें दिखाई देती हैं।

बापदादा को संकल्प उठा यह गिफ्ट तो बाप के पास पहुंच गई लेकिन साथ में बापदादा को एक और भी गिफ्ट चाहिए।

तो बापदादा को संकल्प आया कि बच्चे जो कभी-कभी थोडा सा चलते चलते थक जाते हैं, मेहनत बहुत मससूस करते हैं या निरन्तर योग लगाना मुश्किल अनुभव करते हैं, सोचते हैं हो तो जायेगा... बाप को दिलासे देते हैं - आप फिकर नहीं करो, हो जायेगा। लेकिन बापदादा को बच्चों की थकावट वा अकेलापन या कभी-कभी,कोई-कोई थोडा सा दिलशिकस्त भी हो जाते हैं, पता नहीं हमारा भाग्य है या नहीं हैं... कभी-कभी ऐसा सोचते हैं तो यह बाप को अच्छा नहीं लगता। सबसे ज्यादा बाप को बच्चों की महेनत अच्छी नहीं लगती। मालिक और मेहनत ! बाप के भी बालक सो मालिक हैं। भगवान के भी मालिक और फिर मेहनत करें ! तो अच्छा लगेगा ? सुनना भी अच्छा नहीं लगता। तो बाप को संकल्प आया कि बच्चे बर्थ डे गिफ्ट तो जरुर देते ही हैं तो क्यों नहीं आज के दिन सभी बच्चे यह गिफ्ट के रुप में दें।

आपकी हिम्मत और बाप की मदद। हिम्मत कम नहीं करना फिर देखो

दुनिया के लिये योजना है।

माताओं

कल्प कल्प की भाग्यवान आत्मायें हो। ऐसा भाग्य है जो कोई छीन नहीं सकता। सदा अधिकारी आत्मायें हो। विश्व के मालिक हो। विश्व का राज्य ही आपका हो गया। राज्य अपना, भाग्य अपना, भगवान अपना, इसको कहा जाता है अधिकारी आत्मा। ऐसे अधिकारी हैं तो अधिनता समाप्त।

5-4-83

सभी को संकल्प होता है कि हमें बाप से कोई वरदान मिले। बापदादा बोले जब है ही वरदाता के बच्चे तो सर्व वरदान तो आपका जन्म सिध्ध अधिकार है। अभी तो क्या लेकिन जन्मते ही वरदाता ने वरदान दे दिया। विधाताने भाग्य की अविनाशी लकीर जन्मपत्री में नूंध दी। भाग्य विधाता बापने, वरदाता बापने, ब्रह्मा मा ने जन्मते ही ब्रह्माकुमार / कुमारी के नाम संस्कार के पहेले सर्व वरदानो और अविनाशी भाग्य की लकीर स्वयं खींच ली। जन्मपत्री बना दी। तो सदा के वरदानी तो हो ही। स्मृति स्वरुप बच्चों को सर्व वरदान प्राप्त ही है। प्राप्ति स्वरुप बच्चे हो। अप्राप्ति है ही नहीं जो प्राप्ति करनी पडे।

7-4-83

निमित्त बनी हुई लौकिक परिवार की आत्माओं को भी ट्रस्टीपन की भावना और शुभ कल्याण की भावना से चलाते रहो। हद में नहीं आओ - मेरा बच्चा, मेरे पति का कल्याण हो, इसके साथ सर्व का कल्याण हो - अगर ऐसे मेरापन है तो आत्मिक और कल्याण की दृष्टि दे नहीं सकेंगे। मेजोरीटी बापदादा के आगे यही आश रखते हैं कि बच्चा बदल जाय, पति साथ दे, घरवाले साथ दे। लेकिन सिर्फ उन आत्माओं को अपना समझ ये आश क्युं रखते हो ? इस हद की दिवार के कारण आपके शुभ और कल्याण की भावना उन आत्माओं तक पहुंचती नहीं हैं। इसलिये संकल्प भले अच्छा होते हुए भी यथार्थ नहीं है तो रिझल्ट कैसे नीकले ? तो सदा बेहद की आत्मिक दृष्टि, भाई-भाई के संबंध की वृत्ति, रखते रहेने से इसका फल

जरुर प्राप्त होता है। इसलिये "ये तो कभी बदलना ही नहीं है।" ऐसे दिलशीकस्त भी नहीं बनो। निश्चयबुध्धि हो मेरेपन के संबध से न्यारे हो चलते चलो। कोई कोई आत्माओं का ईश्वरीय वर्सा लेने के लिये भक्ति का हिसाब चुक्तु होने में थोडा समय लगता है। इसलिये धीरज धर साक्षीपन की स्थिति में स्थित हो, निराश न हो। शांति और शक्ति का सहयोग देते रहो। लौकिक में अलौकिक भावना रखनेवाले ऐसे डबल सेवाधारी ट्रस्टी बच्चों का महत्त्व बहोत बडा है।

सभी सोचते हो न की बाबा मेरे से पर्सनल कुछ कहे। सभा में होते भी बापदादा सभी प्रवृत्तिवालों से विशेष पर्सनल बोल रहे हैं ऐसा हरेक समजे। पब्लीक में भी प्राईवेट बोल रहे हैं। एक एक बच्चे को एक दो से ज्यादा प्यार दे रहे हैं। इसलिये ही तो आते हो न! प्यार मिले, सौगात मिले इससे ही रिफ्रेश होते हो न! प्यार के सागर हरेक स्नेही आत्मा को स्नेह की खान दे रहे हैं। जो कभी खतम नहीं हो।

मुलाकात

जिसका साथी सर्वशक्तिवान बाप है उसको सदा ही सर्व प्राप्तियां है। उनके सामने कभी भी किसी प्रकार की माया नहीं आ सकती। हर कदम बाप साथ है तो बधाई भी साथ हैं। सदा इसी स्मृति में रहो कि स्वयं भगवान हम आत्माओं को बधाई देते है। जो सोचा नहीं था वह पा लिया। बाप को पाया, सबको पाया। ऐसे बाप के स्नेह में सदा समाये हुए रहो तो दुनिया की किसी भी बात की सुध बुध नहीं रहेगी। बच्चे तो सदा प्रेम में डुबे हुए रहेते हैं। घर मेरा, बच्चे मेरे, ये चीज मेरी, ये मेरा-मेरा खतम। और मेरा "मैला" बना देता है। एक बाप मेरा तो मेरापन समाप्त हो जाता है।

मुलाकात

बाप को हरेक बच्चा अति प्यारा है। सब श्रेष्ठ है। चाहे गरीब हो चाहे शाहुकार, चाहे पढे लिखे हो, चाहे अनपढ-सब एक दो से अधिक प्यारे हो। सभी विशेष आत्मायें है। बाप को जान लिया ये सबसे बडी विशेषता है। जो बडे बडे ऋषि मुनि नहीं जान सके वह आपने जान लिया, पा लिया - वह बेचारे नेती नेती करके चले गए और आपने सबकुछ जान लिया।

लेकिन खुशी नहीं जाये। सदा खुशी में रहेनेवाले पास वीथ ओनर और कभी कभी खुशी में रहेनेवालों को धर्मराजपुरी पास करनी पडेगी। पास वीथ ओनर वाले एक सेकेन्ड में बाप के साथ जायेंगे। रुकेंगे नहीं।

23-2-97

अगर और कोई भी पुरुषार्थ नहीं करो सिर्फ एक लक्ष्य रखो - कुछ भी हो जाए, चाहे अपने मन के स्थिति द्वारा, चाहे कोई अन्य आत्माओं द्वारा, चाहे प्रकृति द्वारा, चाहे वायुमण्डल द्वारा कुछ भी हो जाए, मुझे खुशी नहीं छोडनी हैं। यह तो सहज पुरुषार्थ है ना या खुशी खिसक जाती हैं? सहज है या कभी-कभी मुश्किल हैं? दृढ संकल्प रखो और बातों को भूल जाओ। एक ही बात पक्की रखो - मुझे खुश रहना हैं। तो बातें क्या लगेंगी? खेल। और अपनी खेल देखने की साक्षीपन की सीट पर सदा स्थित रहो। चाहे कोई अपमान करने वाला हो, आपको परेशान कर अपने साक्षीपन की शान से नीचे उतारने वाले हों, लेकिन आप साक्षीपन की सीट से नीचे नहीं आओ। नीचे आ जाते हो तभी खुशी कम हो जाती हैं।

तो साक्षीपन का तख्त छोडो नहीं। **जो अलग-अलग पुरुषार्थ करते हो उसमें थक जाते हो। आज मन्सा का किया, कल वाचा का किया, सम्बन्ध-सम्पर्क का किया तो थक जाते हो। एक ही पुरुषार्थ करो कि साक्षी और खुशनुमः तख्तनशीन रहना हैं।** यह तख्त कभी नहीं छोडना है। कोई राजा ऐसे सीरियस होकर तख्त पर बैठे, बैठा तख्त पर हो लेकिन बहुत क्रोधी हो, आफीशियल हो तो अच्छा लगेगा? कहेंगे यह तो राजा नहीं हैं। तो आप सदा तख्तनशीन हैं ना! वह राजे तो कभी तख्त पर बैठते, कभी नहीं बैठते लेकिन साक्षीपन का तख्त ऐसा है जिसमें हर कार्य करते भी तख्तनसीन,उतरना नहीं पडता हैं। सोते भी तख्तनशीन, उठते-चलते, सम्बन्ध-सम्पर्क में आते तख्तनशीन। तख्त पर बैठना आता है कि बैठना नहीं आता हैं, खिसक जाते हो? साक्षीपन के तख्तनशीन आत्मा कभी भी कोई समस्या में परेशान नहीं हो सकती। समस्या तख्त के नीचे रह जायेगी और आप उपर तख्तनसीन होंगे। समस्या आपके लिए सिर नहीं उठा सकेगी, नीचे दबी रहेगी। आपको परेशान नहीं करेगी।

बाप को आप सभी को कर्मातीत बनाना ही है। और आप सभी को बनना ही है। ये है स्वीट ड्रामा। रीपीट होना है लेकिन बदल नहीं सकता है ड्रामा। लेकिन ड्रामा में आपके इस श्रेष्ठ अंतिम ब्राह्मण जन्म में बहोत ही पावर्स मीली हुई है। बापने वील किया है इसलिये वीलपावर हैं।

22-3-96

बापदादा द्वारा प्राप्तियां तो बहोत हुई है। अप्राप्त नहीं वस्तु कोई ब्राह्मण जीवन में ऐसी सर्व प्राप्तियों की निशानी है - जीवन में सदा चहेरे और चलन में प्रसन्नता की पर्सनालीटी प्रत्यक्ष रुप में दिखाई देगी। जीसको संतुष्टता भी कहेते है। प्रसन्नचित्त आत्मा को कभी भी किसी भी बात में क्या, क्युं, कैसे, कब का क्वेश्चन नहीं होगा। प्रसन्नता कम होने का कारण प्राप्ति की कमी है और कम प्राप्ति का कारण कोई न कोई इच्छा है। बहोत सुक्ष्म इच्छायें अप्राप्ति की तरफ खींच लेती है, फिर रोयल रुप में यही कहेते हैं कि मेरी इच्छा नहीं है लेकिन ये हो जाये तो अच्छा है। रोयल रुप की इच्छा का स्वरुप नाम, मान और शान है। अगर आधार सर्विस का लेते हैं, सर्विस में नाम हो। लेकिन जो नाम के पीछे सेवा करते है उनका नाम अल्पकाल के लीये तो हो जाता है कि बहोत अच्छा सर्विसेबल हैं, बहोत अच्छा आकर्षण करनेवाला हैं लेकिन नाम के आधार पर सेवा करनेवाले का उंच पदमें नाम पीछे हो जाता है। मान की इच्छा वास्तव में मान नहीं है लेकिन अभिमान है। जहां अभिमान है वहां प्रसन्नता रेह नहीं सकती। **आत्माओं के दिल में अगर आपको मान द्वारा शान मील भी गया तो आत्मा तो स्वयं ही लेनेवाली है, दाता नहीं है इसलिये अगर मान का, शान चाहिये तो सदा बापदादा के दिल में अपना शान प्राप्त करो।** विजय / सफलता मेरा बर्थ राईट हैं। ये बर्थ राईट परमात्मा बर्थ राईट है। इसको कोई छीन नहीं सकता-ऐसा निश्चय बुध्धी सदा प्रसन्न चित्त सहज और स्वत: रहेगा। महेनत करने की जरुरत नहीं।

3-4-96

ब्राह्मण जीवन का श्वास, खुशी है। अविनाशी खुशी नहीं तो ब्राह्मण जीवन नहीं। इसलिये बापदादा ने पहेले भी कहा है कि शरीर चला जाये

ऐसी आप विशेष आत्माओं को बापदादा रोज याद प्यार देते, मिलन मनाते, अमृतवेले के समय भक्तों की लाइन पीछे, बच्चों को पहेले रखते।

13-4-83

सर्व संबंधो से बाप को अपना बनाओ। कोई एक संबंध भी बाप से नहीं जुटाया तो नष्टोमोहा स्मृति स्वरुप नहीं बन सकेंगे। बैठेंगे बाप को याद करने, याद आयेगा धोत्रा-पोत्रा। जिस में भी मोह होगा वही याद आयेगा। किसको जेवर में, किसको पैसे में, तो किसको किसी संबंध में। जहां भी मोह होगा वहां बुध्धी जायेगी जीससे एकरस स्नेह नहीं रह सकता। आधा कल्प ऐसे भटकते भटकते तन भी गया, मन की सुख-शांति भी गई और धन भी गया। जिससे सोने के महेलो की जगह इंटो के मकान में, पत्थर के मकान में रहेते हो। तो अभी एक बाप दुसरा न कोई यही मन से गीत गाओ। कभी भी ऐसे नहीं कहेना की ये तो बदलता नहीं हैं, येतो चलता नहीं हैं कैसे चले, क्या करुं... इस बोज से भी हलके रहो। माताएं कहेगी मेरा पति ठीक हो जाये, बच्चा ज्ञान में चल जाये, धंधा ठीक हो जाये। लेकिन ये चाहना पूर्ण तब होगी जब स्वयं हल्के होकर बाप से शक्ति लेंगे। इसके लिये बुध्धि रुपी बर्तन खाली चाहिये। क्या होगा, कब होगा, अभी तो हुआ ही नहीं - इससे खाली हो जाओ। सभी का कल्याण चाहते हो तो स्वयं शक्तिरुप बन सर्व शक्तिवान के साथी बन शुभ भावना रख चलते चलो। चिंतन या चिंता मत करो। ऐसे बंधन में नहीं फसो। व्यर्थ संकल्प न चलाकर चिंता या बोज बाप को सौंपकर निश्चिंत बन बाप को याद करो, तो बंधन से छुट जायेंगे खाली कहेने से नहीं छुटेंगे।

<u>मुलाकात</u>

प्र. कौनसी स्मृति सदा रहे तो जीवन में कभी भी दिल शिकस्त नहीं बन सकते ?

उ. मैं साधारण आत्मा नहीं हुँ लेकिन शिवशक्ति हुँ, बाप मेरा और मैं बाप का हुँ इसी स्मृति में रहो तो कभी भी अकेलापन अनुभव नहीं होगा, या दिल शिकस्त नहीं होगे, सदा उमंग उत्साह रहेगा। जहां सर्व शक्तिवान, हजार भूजाओवाला बाप हैं वहां सदा ही उमंग उत्साह साथ हैं।

मुलाकात

हर कदम में सर्व शक्तिवान बाप का साथ है ऐसा अनुभव करने से सर्व प्राप्तियां स्वतः होती हैं । जैसे बीज में झाड समाया हुआ हैं ऐसे सर्व शक्तिवान बाप का साथ हैं तो सदा मालामाल, सदा तृप्त और सदा संपन्न होंगे, कभी किसी बात में कमजोर नहीं होंगे, कभी कोई कम्प्लेइन नहीं करेंगे कि क्या करे, कैसे करे... लेकिन सदा कम्प्लीट होंगे । साथ हैं तो सदा विजयी है । किनारा कर देते तो बहोत लंबी लाईन हैं । एक "क्यों" ही क्यु **(Q)** बना देती हैं । इसलिये इस में नहीं जाओ । सदा साथ रहनेवाले ही साथ चलेंगे । सदा साथ हैं, साथ रहेंगे और साथ चलेंगे यही पक्का वायदा है न ! क्युंकी जहां बाप की मदद हैं वहां कोई मुश्किल कार्य नहीं हैं । हुआ ही पडा हैं ।

17-4-83

किसी भी कार्य में चाहे स्वयं के पुरुषार्थ में, चाहे सेवा में दोनों में ना-उम्मीद का संस्कार समाप्त हो जाये । कोई भी संस्कार चाहे काम विकार का, चाहे लोभ का, चाहे अहंकार का बदलने में ना-उम्मीदी न आये । ऐसे नहीं मैं तो बदल ही नहीं सकता । ये तो बदलना बडा मुश्किल हैं । ऐसा संकल्प भी न आये । क्युंकी स्वयं बापने ना-उम्मीद आत्माओ को उम्मीदवार बनाया हैं । कभी उम्मीद भी नही थी कि इतना श्रेष्ठ भाग्य हमें प्राप्त हो सकता हैं । इसलिए ना-उम्मीद संस्कारों का दशहरा मनाओ । सतयुग में तो दीपमाला हो जायेगी ।

मुलाकात

मैं बाप का और बाप मेरा यही ज्ञान है न ! यही एक बात याद रखनी है । सदा मन में यही गीत चलता रहे "पाना था वह पा लिया" बाप का बनने से सबकुछ बन जाते है ।

मुलाकात

सदा अपने को डबल लाइट अर्थात सर्व बंधनो से मुक्त समझने से हल्के होकर उडते रहेंगे । बोज नीचे ले आता है । सदा स्वयं को बाप के हवाले करनेवाले सदा हल्के रहेंगे । अपनी जिम्मेवारी का बोज बाप को दे दो तो

इसको कहते है कर्मातीत बनना । मैं अलग हुं बिलकुल, और सिर्फ अलग नहीं लेकिन मालीक भी हुं । बाप को याद करने से मैं बालक हुं और मैं आत्मा कर्म इन्द्रियों से करानेवाली हुं तो मालिक हुं । अभी यह अभ्यास एटेन्शन में कम हैं । **सेवा में बहोत अच्छा लगे हुए हो लेकिन लक्ष्य सेवाधारी का नहीं लेकिन कर्मातीत बनने का है ।** आत्मा अलग मालीक और कर्मेन्द्रियां कर्मचारी अलग । यह अभ्यास जब चाहो तब होना चाहिये । पावरफुळ अभ्यास करो कि मैं हुं ही न्यारी आत्मा । यह कर्मेन्द्रियां हमारी कर्म करने के साथी है लेकिन मैं न्यारा और प्यार हुं । अभी एक सेकेन्ड में यह अभ्यास दोहराओ । सारे दिन में कर्मो के समय यह स्मृति इमर्ज करो । तो कर्मातीत स्थिती का अनुभव सहज करायेंगे ।

सेवा के अति में नहीं जाओ । बस मेरे को ही करनी है, मैं ही कर सकती हुं, नहीं । करानेवाला करा रहा हैं, मैं निमित्त करनहार हुं । ऐसा समझने से जिम्मेवारी होते भी थकावट कम होगी । कइ बच्चे कहेते हैं - बहोत सेवा की है न तो थक गये है, माथा भारी हो गया है । बाप को करावनहार समझने से माथा भारी नहीं होगा । करावनहार बाप और ही बहोत अच्छा मसाज करेगा, जीससे माथा और ही फ्रेश हो जायेगा । एक्स्ट्रा एनर्जी आ जायेगी । जब सायन्स की दवाईयां एक्स्ट्रा एनर्जी ला सकती है तो क्या बाप की याद से आत्मा में एनर्जी नहीं आ सकती ? आत्मा में एनर्जी आयेगी तो शरीर पर भी ओटोमेटेकली प्रभाव पडेगा ।

वैसे तो बाप ओलमाईटी ओथोरीटी है । इसलिये जब जादुगर विनाश का खेल सेकेन्ड में दिखा सकते है तो क्या ओलमाईटी ओथोरीटी जो चाहे वह नहीं कर सकता है ? अभी अभी विनाश को नहीं ला सकता है ? अकेला ला सकता है ? चाहे ओलमाईटी ओथोरीटी भी है लेकिन आप साथीयों के संबंध में बंधा हुवा होने से अकेला नहीं कर सकता । चाहे तो कर सकता है लेकिन बाप का आप से इतना प्यार होने के कारण नहीं कर सकता । चाहे तो जादु की लकडी घुमा सकता है लेकिन बाप कहेते है कि फिर राज्य अधिकारी कौन बनेगा ? बाप बनेगा कया ? स्थापना तो कर ले, विनाश भी कर ले लेकिन राज्य कौन करेगा ? बिना आपके, काम चलेगा ? इसलिये

तपस्वी महान आत्मायें, **16108** जगतगुरु, चाहे शास्त्रवादी, चाहे महामंडलेश्वर हो लेकिन बाप को नहीं जाना और बापके आप सभी बच्चों ने बाप को तो जान लिया न ? बाप को जानना ये कितनी बडी विशेषता हैं - दिल से मेरा बाबा कहेकर अधिकारी तो बन गये न ! जीसने बाप को परख लिया, पहेचान लीया तो ये भी बुद्धी की विशेषता हुई न ! तो आप सभी में ऐसी परखने की श्रेष्ठ शक्ति है।

पहेला पहेला त्याग "मैं" शब्द है। उसकी जगह पर "बाबा बाबा" शब्द आ जाये। भले हर बात में निमित्त करनहार मैं हुं लेकिन करावनहार बाप है वैसे जब "मैं" शब्द प्रयोग करते हो तो वास्तव में वह आत्मा से लगता है। लेकिन देहभान के कारण बोडी कोन्सीयस के रुप में युझ करते हो। इसलिये मैं शब्द अगर आत्मा अभिमानी बनकर करेंगे तो आत्मा को अपना बाप स्वत: याद आयेगा। मैं फलानी हुं ऐसे उल्टे भाव से "मैं" शब्द युझ करते हो तभी रिझल्ट में महेनत ज्यादा और प्राप्ति कम होती है।

दिल शिकस्त कभी नहीं बनो, चेन्ज करो। जब बाप साथ है तो चेन्ज करने में बाप को युझ करो न ! **युझ कम करते हो, सिर्फ कहेते हो बाबा साथ है, बाबा साथ है। इसलिये युझ करो। जब सर्व शक्तिवान साथ है तो सफलता तो आपके चरणों में दोडनी है।**

10-3-96

सेवा वा कर्म और स्व-पुरुषार्थ अर्थात योगयुक्त स्थिति दोनों को बेलेन्स रखने के लिये विशेष एक ही शब्द याद रखो - बाप करावनहार है और मैं आत्मा करनहार हुं। **स्व पुरुषार्थ का बेलेन्स या गति कभी भी कम होती है उसका कारण यह है कि अपने को करनहार के बजाय करावनहार समझ लेते हो।** माया का सबसे अच्छा सहज गैईट है - "मैं"। अगर अपने को करनहार हुं ऐसा समझेंगे तो करानेवाला अवश्य याद आयेगा। बिना करावनहार, आप करनहार नहीं बन सकते। अगर करावनहार समझना है तो डबल रुप से करावनहार की स्मृति चाहिये - एक तो बाप करावनहार है और दुसरा मैं आत्मा भी इन कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म करानेवाली हुं। **इस स्मृति से कर्म करते भी कर्म के अच्छे वा बुरे प्रभाव में नहीं आयेगी।**

स्वयं हल्के हो जायेंगे। बुध्धि से सरेन्डर हो जाओ। तो और कोई बात बुध्धि में नहीं आयेगी। बस सबकुछ बाप का है। सबकुछ बाप में है। तो और कुछ रहा ही नहीं। जब रहा ही नहीं तो बुध्धि कहाँ जायेगी ? कोई पुरानी गली, पुराने रास्ते रह तो नहीं गये हैं ? बस एक बाप, एक ही याद के रास्ते से एक ही मंजील पर पहोंचो।

19-5-83

अगर मन की खुशी है तो थोडा बहुत सहन करना होगा तो भी वह खुशी में परिवर्तन कर देती है। तन भी तेरा, मन भी तेरा। तो जिसको तेरा कहा वह जाने। आप तो न्यारे और प्यारे रहो। सिर्फ जिस समय तन का हिसाब किताब चूकत करने का पार्ट बजाते हो उस समय यह निरतर स्मृति रहे कि बाबा आप जानो आप का काम जाने। मैं बिमार हुँ, नहीं, मेरा शरीर बिमार है, नहीं। तेरी अमानत है तुम जानो। मैं साक्षी द्रष्टा बन आपकी अमानत की सेवा कर रही हुँ। इसको कहा है साक्षी द्रष्टा अर्थात ट्रस्टी, मन भी तेरा एसे ही मेरा है ही नहीं। **मेरा मन नहीं लगता है, मेरा योग नहीं लगता, मेरी बुध्धि एकाग्र नहीं रेहती, यह 'मेरा मेरा' शब्द हलचल पैदा करता है। मेरा है कहाँ ? मेरापन मीटाना ही सर्व बंधनमुक्त बनना है।** मेरा धन, मेरी पत्नी, मेरा पति, मेरा बच्चा, ज्ञान में नहीं चलता। उसकी बुध्धि का ताला खोल दो। सिर्फ उन्हों का क्यों सोचते हो ? मेरे के भाव से क्यों सोचते हो ? यह कभी भी कोई बच्चेने अभी तक नहीं कहाँ हैं कि मेरे गाँव की वा देश की आत्मा का ताला खोलो। कहते मेरी पत्नी वा बच्चो का ताला खोलो। ऐसा मेरेपन का भाव बेहद में हमे नहीं ले आता। इसलीए बेहद की शुभ भावना हर आत्मा के लिए रखते हुए सर्व के साथ उन आत्माओ को भी देखो। क्या समजा ?

तेरा तो तेरा हो गया। मेरा कोई बोज नहीं। चाहे बापदादा कहीं भी सेवा प्रति निमित्त बनावे। तन द्वारा सेवा करावे, मन द्वारा मन्सा सेवा करावे, जहां रख्खे जिस हाल में रख्खे, चाहे दाल रोटी खिलावे चाहे **36** प्रकार का भोजन खिलावे लेकिन जब मेरा कुछ नहीं तो तेरा तु जाने।

आप क्यों सोचते हो ? भगवान अपने बच्चों को सदा तन से, मन से

और धन से सहज रखेगा, यह बाप की गेरन्टी है। फिर आप लोग क्यों बोज उठाते हो ? उस दिन भी सुनाया था ना कि सबकुछ तेरा करनेवाले हो तो फिर जो बाप खिलावे वो खाओ, पीओ, मोज करो और याद करो। सिर्फ एक ड्युटी आपकी है, बाकी सब ड्युटी बाबा आपे ही निभा लेंगे। एक ड्युटी है "तेरा तेरा" करते तेरे में समा जाओ। सिर्फ एक ड्युटी तो कर सकते हो ना ? मेरा कहते हो तब मन चंचल होता है और यही सोचते हो ना कि यह मुश्किल बात है, मुश्किल है नहीं लेकिन कर देते हो।

25-5-83

<u>ब्रह्मा बाप की एक आशा</u>

ब्रह्मा बाप के साकार जीवन की आदि से लेकर क्या विशेषता देखी ? "कब नहीं लेकिन अभी करना है" अगर कोई बच्चा कहेता था कि, घंटे के बाद करेंगे, तो बाप ने घंटा लगाने दिया ? कोई कहेता था ट्रेन जाने में पांच-दश मिनट है, हम कैसे पहुँचेंगे ? तो रुकने दिया ? गार्ड रुक जायेगा लेकिन बच्चा पहुँच ही जायेगा। चलती हुई ट्रेन रुक जायेगी लेकिन बच्चेको पहुँचना ही है। ये प्रेक्टीकल में देखा न ! तो ऐसे ही बच्चे भी किसी भी स्व परिवर्तन या विश्व परिवर्तन के कार्य में "कब" शब्द को बदलकर "अब" के प्रेक्टीकल जीवन में आ जाये - यही ब्रह्मा बाप का उमंग सदा रहेता है, तो फोलो फादर।

3-12-83

दुनिया के हिसाब से तो बहोत भोले बच्चे है। लेकिन बच्चों ने चतुर-सुजान बाप को जाना तो भोले या चतुर हुए ! दुनियावाले जो अपने को अनेक बातो में चतुर समझते है। उसके अंतर में आप सबको भोले समझते है। लेकिन आप सब उनको भोले कहेते हो - क्युंकी चतुर-सुजान बाप को जानने की समझ, चतुराई उन्होमें नहीं है। आप लोगोने मूल को जान लिया और वह विस्तार में जा रहे है। आप सबने एक में पदम पा लिया और वह अरब-खरब गिनते ही रहे गये। पहेचानने की आंख, जिसको श्रेष्ठ नोलेज की आँख कहेते है वह कल्प कल्प किसको प्राप्त होती है ? आप भोली आत्माओं को। वे क्या और क्युं ऐसे और कैसे के विस्तार में ढुंढते ही रह

नीचे होता है तो आप लोग उसके आगे क्या हो ? वो तो होना ही है। लेकिन आपलोगों को निश्चय पक्का है कि जो बाप के साथी है, सच्चे है, तो कैसी भी हालत में बापदादा दाल-रोटी जरुर खीलायेगा। दो दो सब्जी नहीं खिलायेगा। दाल-रोटी खिलायेगा - लेकिन ऐसे नहीं करना की काम से थक कर के बैठ जाओ और कहो बाबा दाल-रोटी खीलाओ। ऐसे अलबेले या आलस्यवाले को नहीं मीलेगा। बाकी सच्ची दिल पर साहेब राजी है **और परिवार में भी खीट खीट तो होनी ही है। क्युंकी अति के बाद अंत तो होना है ना। इसलिये परिवार में खीट खीट न हो ये हो नहीं सकता। लेकिन आप क्या करो ? आप ट्रस्टी बन, साक्षी बन बाप से शक्ति लेकर परिस्थिति को हल करो। गृहस्थी बनकर सोचेंगे तो और गरबड होगी। पहेले बिलकुल न्यारे ट्रस्टी बन जाओ। मेरा नहीं। ये मेरापन - मेरा नाम खराब होगा, मेरी ग्लानी होगी, मेरा बच्चा और मुझे..., मेरी सांस मेरे को ऐसा करती है... ये मेरापन आता है तो सब बातें आती है। ऐसे मेरा जहां पे आया वहाँ बुध्धी का फेरा हो जाता है। इससे उलझन पैदा होती है।** और फिर दिलशिकस्त हो जाते हैं। भगवान के बच्चे हो ये तो पक्का वायदा है न ? अगर भगवान के बच्चे भी दिलशिकस्त हो जाये तो बडी दिल रखनेवाले कौन होंगे ?

4-2-96

जैसे लौकिक जनम में स्थुल संपत्ति बर्थ राईट होती है वैसे ब्राह्मण जनम में दिव्य गुण रुपी संपत्ति, इश्वरीय सुख और शक्ति बर्थराईट है। बर्थराईट का नशा नेचरल स्वरुप में रहे तो मेहनत करने की आवश्यक्ता नहीं। इस नशे में रहेने से लक्ष और लक्षण समान हो जायेंगे। स्वयं को जो हुँ, जैसा हुँ, जीस श्रेष्ठ बाप और परिवार का हुँ वैसा जानते और मानते हुए श्रेष्ठ तकदीरवान बनो।

16-2-96

चाहे संपूर्ण नहीं बने है, पुरुषार्थी है लेकिन ऐसा एक भी बाप का बच्चा नहीं है जीस में कोई विशेषता नहीं हो। सबसे पहेली विशेषता तो ये है - कोटो में कोई के लीस्ट में तो हैं न ? दुसरी विशेषता ये है की बडे बडे

पार्ट परिवर्तन किया तो लोग सोचने लगे की अभी तो ब्रह्माकुमारीयां का भगवान तो चला गया। इसलिये इनका कार्य आज नहीं तो कल समाप्त हो जायेगा। लेकिन आप जानते है कि इन्हों का करावनहार ब्रह्मा द्वारा भी परमात्मा था, है और अंत तक रहेगा। तो ये परमात्म कार्य है, व्यक्ति का कार्य नहीं है। साकार पार्ट के परिवर्तन के बाद अभी समझते है कि इन्हों को कोई शक्ति चला रही है, अभी भी बिचारे परमात्मा को नहीं जानते है। कौनसी शक्ति कार्य करा रही हैं। उसको भी देख और सोच रहे हैं। लेकिन आखीर तो समझना ही हैं।

माया आ गई... आ गई... ऐसे गभराओ नहीं। अभी माया में कुछ भी ताकात नहीं है। बाहर से शेर का रुप है। लेकिन बिल्ली भी नहीं। इसलिये बडा रुप देखकर सोचते है पता नहीं अब क्या होगा ? तो यह कभी नहीं कहो - क्या करुं, कैसे होगा, क्या होगा... । लेकिन बापदादाने पहेले भी यह पाठ पढाया है कि जो हो रहा है, वो अच्छा और जो होनेवाला है वो और भी अच्छा है। बाह्मण बनना अर्थात अच्छा ही अच्छा है। चाहे बातें कभी आपके स्वप्न में भी नहीं होती ऐसी आती है, अज्ञानकाल में न हुई हो ऐसी बातें ज्ञान के बाद आती है, अज्ञानकाल में कभी बीजनेस नीचे उपर नहीं हुआ होगा और ज्ञान में आने के बाद हो गया तो गभरा जाते है कि क्या ज्ञान छोड दे! **लेकिन परिस्थिति को शिक्षक समझो तो वह आपको दो शक्तियों की अनुभवी बनाती है। एक सहन शक्ति, न्यारापन, नष्टोमोहा और दूसरा सामना करने की शक्ति। इसलिये समझो जो हो रहा है अच्छे ते अच्छा ही है।**

कई समझते है पता नहीं बाबा महारीथीयों को ही मदद करता है, हमको तो करता नहीं। परंतु बाबा कहेते पहेले आप, महारथी पीछे। लेकिन मदद लेने के लीये कभी भी दिलशिकस्त नहीं बनो। अगर मन में कोई उलझन आ भी जाती है तो ऐसे समय पर निर्णय शक्ति चाहिये जो तब आ सकती है, जब आपका मन बाप के तरफ होगा, उलझन में नहीं। इसलिये उलझन में आकर मन से भी दिलशिकस्त नहीं बनो। धन भी अगर उपर नीचे होता है तो भी दिलशिकस्त नहीं बनो। क्युंकी जब करोडपतियों का धन उपर

जाते और आप सभीने वोही मेरा बाप है, मेरा बाबा कहकर रत्नागर से सौदा कर लिया ज्ञान सागर कहो, रत्नागर कहो, रत्नो की थालीयां भर-भरकर दे रहे है।

12-12-83

<u>एकाग्रता</u>

जहाँ एकाग्रता की शक्ति है वहां सर्व शक्तियां साथ है इसलिये एकाग्रता ही सहज सफलता की चाबी है। आध्यात्मिक इन्वेन्शन भी एकाग्रता से ही होती है। एकाग्रता अर्थात एक ही संकल्प में टीक जाना, एक ही लगन में मगन हो जाना। जीतना समय एकाग्रता की स्थिति में स्थित होंगे उतना समय देह और देह की दुनिया सहज भूली हुई होगी। एकाग्रता की शक्ति से किसी भी आत्मा का मेसेज उस आत्मा तक पहुँचा सकते हो। किसी भी आत्मा का आवाहन कर सकते हो और किसी भी आत्मा की आवाज को केच कर सकते हो। किसी भी आत्मा को दुर बैठे सहयोग दे सकते हो। वह एकाग्रता जानते हो ? सिवाय एक बाप के और कोई भी संकल्प में न हो। एकबाप में सारे संसार की सर्व प्राप्तियों की अनुभूति हो। बस एक ही एक हो। पुरुषार्थ द्वारा एकाग्र बनना वह अलग स्टेज है लेकिन एकाग्रता में स्थित हो जाना वह इतनी शक्तिशाली स्थिति है जो ऐसी श्रेष्ठ स्थिति का एक संकल्प भी बाप समान का बहोत अनुभव कराता है। अभी इस रुहानी शक्ति का प्रयोग करके देखो। इस में एकांत का साधन आवश्यक है। अभ्यास होने से लास्ट में चारो और हंगामा होते हुए भी आप सभी एक के अंत में खो गये तो हंगामे के बीच भी एकांत का अनुभव करेंगे। लेकिन ऐसा अभ्यास बहुत समय से चाहिये। तब ही चारो प्रकार के हंगामे होते हुए भी आप अपने को एकांतवासी अनुभव करेंगे। वर्तमान समय ऐसी गुप्त शक्तियों द्वारा अनुभवी मूरत बनना अति आवश्यक है। अभी तो फिर भी फ्री है। आगे चलकर बीझी हो उसके पहेले भिन्न भिन्न प्रकार के स्व-अभ्यास में समय सफल करते जाओ। जिससे स्व-अभ्यास के ओक्सिजन द्वारा होपलेस केसवाली दिलशिकस्त आत्माओं को साहसका श्वास दे सकेंगे। इसमें फुरसत नहीं है ये नहीं कहो। समय निकालना ही पडेगा।

स्थापना के आदिकाल से विशेष एक विधि "फुरी-फुरी तालाब (बुंद बुंद से तालाब)" की विधि चली आई है उस अनुसार जो समय मिले अभ्यास करते करते सर्व अभ्यास स्वरुप सागर बन जाओ। सेकेन्ड मिले वह भी अभ्यास के लिये जमा करते जाओ। चलते फिरते के अभ्यासी बनो। इकठ्ठा पांच मिनट भी नहीं निकल सकता लेकिन सेकन्ड सेकन्ड इकठ्ठा करो तो आधा घंटा भी बन जायेगा ऐसे स्व-अभ्यास के चात्रक एक एक सेकन्ड अभ्यास में लगाये तो अभ्यास स्वरुप बन ही जायेंगे। इसलिये इस में अलबेले मत बनो क्युंकी अंतमे प्रेक्टिकल पेपर्स द्वारा ही नंबर मिलने है। उसमें भी विशेष शक्तियों के अभ्यासी की आवश्यक्ता हैं। इसलिये फर्स्ट डिविझन लेने के लिए स्व-अभ्यास को फास्ट करो। उसमें एकाग्रता की शक्ति की विशेष प्रेक्टिस करते रहो। हंगामा हो और आप एकाग्र हो। चारों प्रकार की हलचल के बीच एक के अंत में खो जाओ अर्थात एकांतवासी हो एकाग्र स्थिति में स्थित हो जाओ - ये है महारथीयों का महान पुरुषार्थ।

14-12-83

कभी स्वप्न में भी ऐसे भाग्य को सोचा था कि साकार रुप से डायरेक्ट प्रभु परिवार में वारीस बन, वरसे के अधिकारी बनेंगे ? वारीस बनना सबसे श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ भाग्य है। कभी सोचा था कि, स्वयं बाप हम बच्चों के लिये हमारे समान साकारी रुपधारी बन, बाप और बच्चे का वा सर्व संबंधो का अनुभव करायेंगे ? साकार में प्रभुपालना लेंगे ?

23-12-83

यह सब सोचते है की नोकरी से तो नहीं छुडाया। लेकीन अभी कुछ भी करते हो, अपने लिए नहीं करते हो। ईश्वरीय सेवा के प्रति करते हो। अभी मेरा काम समजकर नहीं करते हो, ट्रस्टी बनकर के करते हो। इसलिए मेहनत मुहोब्बत में बदल गई। बाप की मुहोब्बत में, सेवा की मुहोब्बत में मिलन मनाने की मुहब्बत में मेहनत नहीं लगती।

करावनहार बाप है, निमित्त करनेवाले आप हो। सर्वशक्तिवान बाप की शक्ति से अर्थात स्मृति के कनेक्शन से अभी निमित्त मात्र कार्य करनेवाले हो। जैसे लाईट के कनेक्शन से बडी बडी मशीनरी चलती है तो आधार है

थी वो हाथ जोडकर देकर गये की आप ही युझ करो। तो दुनियावालों के लिये हंगामा था और ब्रह्माकुमारीयों के लीये पांच रुपियो में सब्जीयों की सारी बैलगाडी थी। आप कितने मजे से वो सब्जीयां खाते थे। दुनियावाले डरते थे और आप लोग नाचते थे। तो प्रेक्टिकल में देखा की ब्रह्मा बाप और दादा दोनों ही छत्र छाया बन कितनी सेफ्टी से स्थापना का कार्य किया। तो जब इन्हों को ऐसी अनुभव हैं तो क्या आप अनुभव नहीं कर सकते ? पहेले आप। जो चाहे जितना चाहे इस डायमंड वर्ष में ब्रह्मा बाप के प्यार का, छत्र छाया का प्रेक्टिकल अनुभव कर सकते हो। इस वर्ष को वरदान अथवा सहेज प्राप्ति हैं इसलिये ज्यादा पुरुषार्थ नहीं करना पडेगा।

जब तक बाप साथ है तो माया भी बाप का साथ देखकर दुरसे ही भाग जाती है। इसलिये अकेले नहीं हो जो माया को चान्स मीले। जब बाप स्वयं ओफर करता है कि मैं बच्चों का साथी हुं तो भगवान की ओफर जो सारे कल्प में फिर नहीं मिलनेवाली हैं उसको स्वीकार करते साथ रहो। कोई भी मुश्कील बात साथ से सहेज हो जाती है।

9-1-96

चेक करो सारे दिन में कितनी बारी "बाबा - बाबा" शब्द सेवा में कहेते रहेते हो ? लेकिन एक है दिल से "बाबा" कहेनेवाले और दुसरे है नोलेज की दिमाग से कहेनेवाले। जो दिल से बाबा कहेते है उनको बाबा द्वारा दिल में सहेज ही खुशी और शक्ति की प्राप्ति होती है। और जो सिर्फ दिमाग अच्छा होने के कारण नोलेज के प्रमाण "बाबा बाबा" शब्द कहेते है उन्हों को उस समय बोलने में अपने को और सुननेवालों को उस समय तक तो खुशी होती है, अच्छा भी लगता है लेकिन सदाकाल के लीये दिल में खुशी और शक्ति दोनों नहीं रहेती है, कभी रहेती, कभी नहीं। बाबा कहें, बालक है-ये निश्चय में मैजोरीटी ठीक है, लेकिन बालक के साथ मालिक भी हो।

18-1-96

मैजोरीटी लोग ब्रह्मा बाप को देककर यही सोचते समझते थे की ब्रह्माकुमारीयां ब्रह्मा को ही भगवान मानते है। और बह्माने जब साकार में

चाहिये। आजकल के हिसाब से दवाईयां खाना ये बडी बात नहीं समझो। क्युंकी कलीयुग के इस वर्तमान समय में सबसे शक्तिशाली फ्रुट ये दवाईयां हैं। कलीयुग के लास्ट फ्रुट को प्यार से खालो। खुशी से खालो। मजबुरी से नहीं। मजबुरी की दवाई बिमारी याद दिलाती है। इसलिये शरीर को चलाने के लिये ये फ्रुट खाकर हम शक्ति भर रहे हैं। उस स्मृति से खायेंगे तो खुशी दिलायेगी और दो-तीन दिन में ठीक हो जायेंगे। गभराकर दवाई कोन्शीयस होकर दवाई नहीं खाओ। तन की बिमारी तो होनी ही हैं। नई बात नहीं है। इसलिये बिमारी से कभी गभराना नहीं। अगर बिमारी आई तो थोडा फ्रुट खीलाकर विदाई दे दो।

सेन्टर कोई कोई तो बहोत अच्छे सजे सजाये और कोई सिम्पल। तो कोई बहोत रोयल तो कोई बीच के भी थे। कई समझते है कि सेन्टर रोयल लगे, कोई वी.आई.पी. आवे तो उसको लगे की सेन्टर अच्छा है। लेकिन ब्राह्मणों का आदि से अब तक का नियम है कि न बिलकुल सादा हो, न बहोत रोयल हो। बीच का होना चाहिये। ब्रह्माने तो बहोत साधारण देखा और रहा। लेकिन अभी साधन है, साधन देनेवाले भी हैं। फिर भी कोई भी कार्य करो तो बीच का करो। ऐसा भी कोई न कहे कि ये तो अभी राजाई ठाठ हो गया है।

31-12-95

आप लोगोने (**60** वर्ष वाले) **14** वर्ष योग तपस्या की तो विध्न कितने आये लेकिन आपको कुछ हुवा ? क्युंकी बापदादा छत्रछाया बना न ? कितनी बडी बडी बातें हुई-सारी दुनिया, मुखी, नेतायें, गुरु लोग सब एन्टी हो गये, ये ब्रह्माकुमारीया अटल रही, प्रेक्टीकल में बेगरी लाईफ भी देखी, तपस्या के समय ऐसे भिन्न भिन्न विध्न भी देखे। बंधुक भी आई तो तलवारे भी आई। सब आये लेकिन बाप की छत्र छाया रही न ? कोई नुकशान हुवा ? जब पाकिस्तान हुवा तो लोग हंगामे में डरकर सब छोडकर भाग गये और आपका टेनीस कोट सामान से भर गया। क्युंकी जो अच्छी चीज लगती थी, वो छोडे कैसे, उससे प्यार होता है न, तो जो सिंधी लोग उस समय एन्टी थे वो गाली भी देते थे और सामान भी दिया। जो बढीया बढीया चीजें

लाईट। आप सभी भी हर कर्म करते, कनेक्शन के आधार से स्वयं भी डबल लाईट बन चलते रहते हो ना ? जहाँ डबल लाईट की स्थिती है वहाँ मेहनत और मुश्किल शब्द समाप्त हो जाता है।

नोकरी से नहीं छुडाया लेकीन मेहनत से छुडाया ना ? भावना और भाव बदल गया ना ? ट्रस्टीपन का भाव और ईश्वरीय सेवा की भावना, तो बदल गया ना।

29-12-83

<u>संगमयुग सहज प्राप्ति का युग</u>

आप श्रेष्ठ आत्मायें ही जहाँन के आधार हो। आप सबकी चढती कला होती तो सर्व आत्माओं का कल्याण हो जाता अर्थात यथाशक्ति समय प्रमाण सर्व आत्मायें मुक्ति-जीवनमुक्ति पाती है। तीनों लोक में आप के राज्य समय में दु:ख अशांति का नाम निशान नहीं। आप सर्व आत्माओं को बाप द्वारा सुख शांति की ऐसी अंचली दिलाते जो उसी अंचली द्वारा बहुत समय की सर्व की मुक्ति की आशा पूर्ण हो जाती है। क्युंकी डायरेक्ट सर्व प्राप्तियों के दाता, सर्व शक्तियों के विधाता, सेकेन्ड में सर्व अधिकार देनेवाले वरदाता, श्रेष्ठ भाग्य विधाता अविनाशी बाप के बच्चे बने ऐसे अपने अधिकार को याद करते रुहानी श्रेष्ठ नशा और सदा की खुशी रहती है ? वर्तमान समय सीझन हैं श्रेष्ठ फल खाने की। एक शक्तिशाली संकल्प वा कर्म किया और एक बीज द्वारा पदम गुना फल पाया। तो सीझन का फल सहज प्राप्त करते या महेनत लगती है ?

योग लगाते, पढाई भी पढते, यथाशक्ति सेवा भी करते, फिर भी जैसा, प्राप्त होना चाहिये वैसा नहीं होता। वैसे होना चाहिये एक संकल्प का पदमगुना अर्थात अनगीनत। लेकिन जीतना चाहिये उतना न होने का कारण ? उसका कारण है संकल्प , कर्मरुपी बीज शक्तिशाली नहीं है। कभी फल नीकलता भी है लेकिन "मैने किया", इस हद के संकल्प द्वारा कच्चा फल खा लेते वा माया की भिन्न भिन्न समस्यायें, वातावरण, संगदोष, परमत वा मनमत वा व्यर्थ संकल्प रुपी पंछी फल को समाप्त कर देते हैं। जिस कारण प्राप्तियां होते हुए अनूभुतियों के खजाने से वंचित रह जाते है। ऐसी वंचित आत्माओं

के बोल यही होते कि पता नहीं क्युं ! ऐसे व्यर्थ में अनर्थ करनेवाले तो नहीं हो न ? सहज योगी हो न ? सहज प्राप्ति की सिझन पर महेनत क्युं करते हो ? वरसा है, वरदान है, सीझन है, बडे दिलवाला दाता है, फिराकदिल वाला भाग्य विधाता है फिर भी महेनत क्यु ? सदा दिल तख्त नशीन बच्चों को महेनत हो नहीं सकती। संकल्प किया और सफलता मिली। विधि का स्वीच ओन किया और सिद्धि प्राप्त हुई। अगर महेनत लगती तो समजो, स्मृति स्वरुप के किले के अंदर नहीं रहेते हो या किले में रहेते हुए कोई न कोई शक्ति की कमजोरी के दरवाजे वा खीडकी खोल लेते हो। संकल्प में भी दृढता (दृढ निश्चय) नहीं है तो समझो थोडा सा रास्ता खुला हुआ है। दृढता की निशानी है सफलता। जहाँ दृढता है वहां सफलता न हो ये हो नहीं सकता। संकल्प से भी ज्यादा प्राप्ति होंगी। तो वर्तमान समय सहेज सर्व प्राप्ति का युग है। इसलिये सदा सहज योगी भव के अधिकारी और वरदानी बनो। मा. सर्व शक्तिवान बन करके भी महेनत की तो मास्टर बनके क्या किया ? महेनत से छुडानेवाला, और मुश्किल को सहज करनेवाला बाप मिला। फिर भी महेनत, बोझ उठाते हो इसलिये महेनत करते बोझ छोडो, हल्के बनो तो फरिश्ता बन उडते रहेगे।

मुलाकात

अपने को सदा मास्टर सर्व शक्तिवान विघ्न विनाशक समझकर चलो, कमजोर समजकर नहीं। कमजोर संकल्प रचते हो की, 'पता नहीं-पता नहीं' जिस कारण ही फँस जाते हो इसलिये समर्थ संकल्प रच करके सदा खुशी में झुलनेवाले सर्व के विघ्न हर्ता और सर्व की मुश्किल को सहज करनेवाले बनो। इस लिये बस सिर्फ दृढ संकल्प और डबल लाईट। मेरा कुछ नहीं सब बाप का है। जब बोझ अपने उपर रखते हो तब सब प्रकार के विघ्न आते हैं। मेरा है तो विघ्नों का जाल हैं और मेरा नहीं तो निर्विघ्न।

मुलाकात

अपने को बाप के साथ सदा रहेनेवाले, और सदा का सहयोग लेनेवाली आत्मा समझते हो ? जहाँ सदा बाप का साथ है वहाँ सहज सर्व प्राप्ति हैं। क्युंकि बाप है सर्व प्राप्तियों का दाता। जहां दाता साथ हैं वहाँ प्राप्तियां भी

नशा क्युं नहीं रखते ?

सेवाकेन्द्र निर्विघ्न हो तो उसको ही मार्क्स मीलते है। बापदादा इसमें खुश नहीं होते कि इस झोन में हजार सेन्टर है, हजार गीता-पाठशाला हैं। लेकिन जीस झोन में कोई खीट खीट वा कम्प्लेईन नहीं हो तो बापदादा खुश होते हैं। टीचर भले महेनत करती हैं लेकिन और खीट खीट भी हो रही है तो क्या वो सेवा हैं ? वा झमेला है ? ब्रह्माकुमार वा कुमारी कीसलीये बने हो ? झमेले के लीये ? अगर झमेले ही चाहीये तो दुनिया में बहोत जगह है। बापदादा वहां का एड्रेस भी दे सकते हैं। ब्रह्माकुमार-कुमारी बनना माना मिलन मेला मनाना-न की झमेला। झमेला मुक्त होने की सबसे सहज विधी है की पहेले स्वयं को झमेले से मुक्त करो। दुसरे के पीछे नहीं पडो कि ये स्टुडन्ट ऐसा है, ये साथी ऐसा है, ये सरकमस्टान्सीस ऐसे है - उसको नहीं देखो लेकिन अपने को झमेला मुक्त करो। जहां झमला हो वहां से अपने मन बुध्धी को किनारे कर दो। आप सोचते हो कि ये झमेला पूरा होगा तो बहोत अच्छा हो जायेगा, हमारी सेवा और अवस्था भी अच्छी हो जायेगी । लेकिन झमेले पहाड के समान है। क्या पहाड से माथा टकराना है ? माथा टकराने से क्या पहाड डरेगा क्या ? तो ईसलिये स्वयं किनारा कर लो या उडती कला से झमेले के पहाड के भी उपर चले जाओ। बाकी तो है ही झमेलों की दुनिया। इसलिये झमेले तो आयेंगे ही। आपकी दुनिया ही आपका सेवाकेन्द्र हैं तो जब की आपकी दुनिया ही सेवाकेन्द्र है तो झमेले वहां ही तो आयेंगे न ? आप पेपर देने के लीये लंडन, अमेरिका जायेंगे क्या ? सेन्टर पर ही आप पेपर देंगे न ? इसलिये झमेला नहीं आवे ये नहीं सोचना। लेकिन झमेला मुक्त कैसे बने ये सोचो।

22-12-95

सिर्फ ये संगमयुग पर एक जन्म में ही परमात्मा प्यार प्राप्त हुवा जो हमें स्वीट होम और स्वीट राजधानी ले जाता है। अभी की डायरेक्ट परमात्मा, प्राप्ति के आगे भविष्य कुछ भी नहीं।

चाहे बिमारी बडी है लेकिन मैं कमजोर हुं, मैं बिमार हुं ऐसे सोच बिमारी को बढा देते है। इसलिये कभी भी मन में बिमारी के संकल्प नहीं लाने

कई फिर सोचते है कि हमें कम से कम आबु की वा बडी कोन्फरन्स में एकबार चान्स मीलना चाहिये। चलो और नहीं, योग-शिबिर तो करा ले, ये भी तो चान्स होना चाहिये न ? चलो भाषण नहीं करे, स्टेज पर तो आवे, आखीर विनाश हो जायेगा, क्या विनाश तक भी हमारा नंबर नहीं आयेगा ? लेकिन बापदादाने पहेले भी सुनाया कि अगर योग्य है और चान्स मिलता है तो खुशी से करो। लेकिन चान्स मांगो नहीं। ये हमें पहेचानते नहीं है, दादी-दीदीयां भी हम को पहेचानती नहीं है, जो आगे आते है उसको ही आगे कर लेते है - तो ये संकल्प आना भी सुक्ष्म मांगना है। लेकिन बापदादा ने सुनाया है कि आपकी कोई भी विशेषता के कारण मानो आप स्टेज पर आ गये, योग वा अवस्था इतनी अच्छी नहीं भी है, लेकिन बोल में केचींग पावर में विशेषता है और वाणी में मीठाश और स्पष्टता होती है तो स्टेज का चान्स मील जाता है। यहां वहां के मीसाल वगेरा केच करके अच्छी तरह सुनाते है इसलिये उन्हों का नाम भी हो जाता है और मांगनी भी आती है कि फलानी चाहिये। भले वह योग में कच्ची भी हो...। तो इस पर नंबर फाइनल नहीं होते है। कितने भाषण किये वा कितने स्टुडन्ट वा सेन्टर बनाये इस पर फाईनल नंबर नहीं मीलेंगे। लेकिन योग्य कितनों को बनाया ? उस पर मार्क्स मीलेंगे। सेन्टर बनाना बडी बात नहीं है। तीस सेन्टर की इन्चार्ज है और उस में सिर्फ पंद्रह हिल रहे है तो फायदा हुवा वा सिर्फ नाम हुआ ? नाम भले होगा कि फलाने के तीस सेवाकेन्द्र है लेकिन नंबर इससे नहीं मीलेगा। कितनों को सुख दिया और स्वयं कितना शक्तिशाली रहे उसी प्रमाण फाइनल नंबर मीलेंगे।

अपने निश्चय को और पक्का करना, नहीं तो फिर और क्या होता है - दो साल चलेंगे, तीन साल चलेंगे फीर पुरानी दुनिया में वापस चले जायेंगे। लेकिन वहां भी सेट नहीं हो सकते हैं। न इस दुनिया के रहेते न उस दुनिया के रहेते। **इसलीये अपना फाउन्डेशन बहोत पक्का करो। अनुभव करो की सर्व शक्तिवान बाप मेरे साथ है। बस ये एक बात भी अनुभव किया तो सब में पास हो जायेंगे।** रिवाजी प्राइम मीनीस्टर वा मीनीस्टर हैं। उसके साथ का भी नशा रहेता है तो ये तो सर्वशक्तिवान बाप है! उसका

साथ होंगी। सदा बाप का साथ अर्थात सर्व प्राप्तियों के अधिकारी। ऐसी सर्व प्राप्ति स्वरुप अर्थात भरपुर आत्मायें सदा अचल रहेगी। भरपूर नहीं तो हिलते रहेंगे। जब बाप साथ दे रहा है तो लेनेवाले को लेना चाहिये ना ? दाता दे रहा है तो पुरा लेना चाहिये, थोडा नहीं।

मुलाकात

सदा अपने को बाप के समीप रतन समझते हो ? भले देश से दुर हो लेकिन दिल से नजदीक हो ऐसा अनुभव होता है न ? याद ही समीप का अनुभव कराती है, जब बाबा कहा तो बाबा शब्द ही सहेज योगी बना देता हैं। बाबा शब्द जादु का शब्द है। जादु की चीज बीना महेनत के प्राप्त कराती है आप सभी को जो भी चाहिये, सुख-शांति या शक्ति जो भी चाहिये, 'बाबा' शब्द कहेंगे तो सब मिल जायेगा ऐसा अनुभव है।

12-1-84

जो भी हो जैसे भी हो लेकिन बापदादा को पसंद हो। इसलिये सदा अपने को समजो की हम बाप के हैं और सदा बाप के ही रहेंगे। ये द्रढ संकल्प ही सदा आगे बढाता रहेगा। ज्यादा कमजोरीयों को सोचो नहीं। कमजोरीयों को सोचते सोचते और भी कमजोर हो जाते हो। मैं बिमार हुं, बिमार हुं कहने से डबल बिमार हो जाते हैं। मैं इतनी शक्तिशाली नहीं हुं, मेरा योग इतना अच्छा नहीं हैं, मेरी सेवा इतनी अच्छी नहीं हैं, मैं बाबा की प्यारी हुं वा नहीं हुं, पता नहीं आगे चल सकुंगी या नहीं। यह सोच भी ज्यादा कमज़ोर बनाता हैं। पहेले माया हल्के रुप में (ऐसे ऐसे संकल्प लाकर) ट्रायल करती हैं। और आप उसको बडा रुप दे देते हो तो माया आपका साथी बनने का चान्स ले लेती हैं। लेकिन उसके ट्रायल को न जानकर आप समजते हो कि मैं हुं ही ऐसी। इसलिये वह भी साथी बन जाती हैं। ऐसे कमजोरो की साथी माया हैं। इसलिये कभी भी कमजोर संकल्पो को बार बार न वर्णन करो, न सोचो। बार बार सोचने से भी स्वरुप बन जाते हैं। सदा यह सोचो मैं बाबा का नहीं बनुंगा तो और कौन बनेंगा। मैं ही था, मैं ही हुँ और कल्प कल्प मैं ही बनुंगा ये संकल्प तंदुरस्त मायाजीत बना देंगे। कमजोरी पीछे आती हैं। पहले माया का मोहनी रुप व्यर्थ संकल्प

के आता हैं। आप उस मोहिनी रुप को न पहचान सत्य समज लेते हो। तो माया आपको अपना बना देती है। जैसे सीता का ड्रामा दिखाते हो न। भिखारी था नहीं, लेकिन भिखारी समज लिया तो ऐसा सत्य समज लेने से सीता के भोलेपन को देख रावण ने उसको अपना बना लिया। ऐसे व्यर्थ वा कमजोर संकल्प माया का रुप बन ट्रायल करने के लिये आते हैं। लेकिन आप उसको सच समज लेते हो अर्थात आप भोले बन जाते हो। तो माया आपको अपना बना लेती हैं। "मैं हुं ही ऐसी" ऐसे करते करते माया अपना स्थान बना लेती हैं। ऐसे आप कमजोर हो नहीं - समर्थ हो। मास्टर सर्व शक्तिवान हो। बापदादा के चुने हुए कोटो में से कोई हो। तो ऐसे कमजोर कैसे हो सकते हो ? ये सोचना ही माया को स्थान दे हैं। स्थान देकर फिर कहते हैं अब निकालो। तो स्थान देते ही क्युं हो ? कोई कमजोर नहीं, सब मास्टर्स हो, सदा बहादुर, सदा के महावीर हो। यही श्रेष्ठ संकल्प रखो कि सदा बाप के साथी हैं। जहां बाप के साथी है वहां माया अपना साथी बना नहीं सकती।

18-2-84

दुनिया बाप को ढुंढती और बापने हमें ढुंढा। दुनिया पुकार रही है कि आ जाओ और आप गीत गाते हो कि तुम्ही से बैठुं, तुम्ही से खाउं, तुम्ही से सदा साथ रहुं। कहाँ पुकार और कहाँ सदा साथ ? रात-दिन का अंतर हो गया न ! वे गायन करनेवाली आतमायें और आप सभी बाप की गोदी में बैठनेवाले। वे चिल्लाने वाली और आप हर कदम श्रीमत पर चलनेवाली आत्मायें। वे दर्शन की प्यासी और आप बाप द्वारा स्वयं दर्शनीय मूरत बन गये। थोडा सा दु:ख दर्द का अनुभव और बढने दो फिर देखना आपके सेकन्ड के दर्शन, सेकन्ड की दृष्टि के लिये कितना प्यासे बन आप के सामने आते हैं ! अभी आप निमंत्रण देकर बुलाते हो फिर आप से सेकन्ड के मीलने के लिये बहोत मेहनत करेंगे की हमें मीलने दो। ऐसा साक्षात्कार स्वरुप आप सभी का होगा। ऐसे समय पर अपने श्रेष्ठ जीवन और श्रेष्ठ प्राप्ति का महत्व आप बच्चों में से भी उस समय ज्यादा पहचानेंगे। अभी अलबेलापन और साधारण पन के कारण अपनी श्रेष्ठता और विशेषता को भूल भी जाते

प्रकार के आते है - अपनी बुध्धि का अभिमान, अपने श्रेष्ठ संस्कार का अभिमान, अपने अच्छे स्वभाव का अभिमान, अपनी विशेषताओ का अभिमान, अपनी कोई विशेष कला का अभिमान, अपनी सेवा की सफलता का अभिमान-ये है सुक्ष्म अभिमान, जो देहभान से भी बहोत महीन है। मैं पन, मेरापन - ये है अभिमान का दरवाजा। तो फरिश्ता अर्थात देहभान वा देह के आकर्षण से वा देह के स्थुल संबंध से परे होने के साथ साथ देह के सुक्ष्म अभिमान के संबंध से भी परे रहेना अर्थात न्यारे रहेना। ये अभिमान की निशानी-जहां अभिमान होता है वहां अपमान भी जल्दी फिल होता है। क्युंकी "मैं और मेरे के" दरवाजे खुले हुए होते है। इसलिये समजो आप में अगर कोई गुण वा शक्ति है, तो दाता को क्युं भुल जाते हो ? दुसरा देहभान और देह-अभिमान को निकालने का बहोत सहेज रास्ता एक शब्द में है। इस एक शब्द में इतनी ताकात है जो देह अभिमान और देहभान सदा के लिये समाप्त हो जातै है। वह शब्द है-करनकरावनहार बाप करा रहा है। "करन करावनहार" शब्द भान और अभिमान को मीटा देता है। तो यह एक शब्द याद करना तो सहेज है न ? और सारी पोईंट भूल भी जाओ, भूलना तो नहीं है लेकिन अगर भूल भी जाओ तो यह एक शब्द तो याद कर सकते हो न ? करन करावनहार बाबा है ऐसा हर सेकेन्ड समझकर चलो तो देखो, फरिश्ते जीवन का अनुभव कितना सहेज अनुभव होता है ! ब्रह्मा बाप भी सदा करन करावनहार की स्मृति से समर्थ बन फरिश्ते बने। तो ऐसे फोलो फादर करो।

4-12-95

टीचर सोचती है कपडे भल कैसे हो लेकिन सेन्टर थोडा रहेने लायक अच्छा हो। स्टुडन्ट भी अच्छे हो। बाबा की भंडारी भी अच्छी हो। अच्छा स्टुडन्ट बदली हो जाये तो समझते है क्या करे, ये मददगार था जो अभी चला गया। बाप कहेते मददगार वह जिज्ञासु था वा बाप है ? जिज्ञासु दिखाई पडना वो रोयल रुप की माया है जो निश्चय के फाउन्डेशन को गीराने की कोशिष करते है। अगर आपको निश्चय है - सर्व शक्तिवान साथ है तो बाप किस न किसी को निमित्त बना ही देता है।

प्यार से बाप को वा निमित्त आत्माओं को मनाते है कि बाबा, आपही ईसमें मेरे को मदद करना, क्या आप ये नहीं समझते हो कि यह मेरा काम है वा मेरी जीम्मेवारी नहीं हैं ? तो मेरा अधिकार मेरे को मिलना चाहिये। यह है "मेरेपन" का भाव, और निमित्त भाव है, जो मिला, जैसे मिला, जहाँ बीठायेंगे, जो खिलायेंगे, जो करायेंगे वही करेंगे। **मेरेपन के भाव का वैराग्य ही बेहद का वैराग्य है।** समय की समीपता का फाउन्डेशन है - बेहद की वैराग्य वृत्ति।

18-12-94

आपकी कमाई वा जमा का खाता बढने का सबसे सहेज साधन है - "बिंदी लगाते जाओ और बढाते जाओ। आप भी बिंदी, बाप भी बिंदी और ड्रामा में भी बिती को बिंदी लगाना। तो कमाई का आधार है बिंदी लगाना। क्यां, क्युं, कैसे - ये क्वेश्चनमार्क की मात्रा, आश्चर्य की मात्रा, किसीकी भी आवश्यक्ता नहीं है। संगम पर सारा खेल ही तीन बिंदीयों का है। बिंदी लगाने से एक सेकेन्ड में आपके कितने खजाने बच जाते है। बिंदी की बजाय अगर और कोई मात्रा लगाते हो तो सोचो, ज्ञान का खजाना गया, शक्तियों का खजाना गया, गुणों का, संकल्पो का खजाना गया, एनर्जी गई, श्वास असफल गया और समय भी गया। इसलिये ऐसे व्यर्थ में ऐसा नहीं सोचो कि एक-दो सेकेन्ड ही तो गया है। सेकेन्ड गया माना सब खजाने गंवाये। इसलिये हर सेकेन्ड हर सीन देखते हुए और मात्रा न लगाते अर्थात व्यर्थ न सोचते अपने अधिकार को सदा स्मृति में इमर्ज रुप में रखो।

23-12-94

फरिश्ता अर्थात डबल लाईट सिर्फ परिस्थिति के समय हलका नहीं लेकिन सारे दिन में स्वभाव, संस्कार और संबंध संपर्क में भी लाईट रहे। ऐसे लाईट रहेनेवाले की निशानी है, वह सभी को प्यारा लगेगा। बापदादा ने देखा की फरिश्ता बनने में रुकावट करनेवाली पहेली सीढी है - देहभान को छोडना। दूसरी सीढी सूक्ष्म है - वह है देह अभिमान को छोडना। देहभान फिर भी कोमन चीज है। लेकिन जितने ज्ञानी तु आत्मा, योगी तु आत्मा बनते है। उतना देह अभिमान रुकावट डालता है। अभिमान अनेक

हो। लेकिन जब अप्राप्तिवाली आत्मायें प्राप्ति की प्यास से आप के सामने आयेगी तब ज्यादा अनुभव करेंगे कि हम कौन, और यह कौन ! अभी बापदादा द्वारा सहज और बहोत खजाना मिलने के कारण कभी कभी स्वं की और खजाने की वेल्यु को साधारण समज लेते हो। लेकिन एक एक महावाक्य, एक एक सेकन्ड, एक एक ब्राह्मण जीवन का श्वास बहोत श्रेष्ठ है - वह आगे चल ज्यादा अनुभव करेंगे। ब्राह्मणजीवन का हर सेकन्ड, एक जन्म नहीं लेकिन जन्म जन्म की प्रालब्ध बनानेवाला है। ऐसी अमूल्य जीवनवाली श्रेष्ठ आत्मायें हो। ऐसी श्रेष्ठ तकदीरवान विशेष आत्मायें हो तो समझा कौन हो !

24-2-84

प्र. : कई ब्राह्मण आत्माओं पर भी इवील सोल्स का प्रभाव पड जाता है उस समय क्या करना चाहिये ?

उ. : इसके लिये सेवाकेन्द्र का वातावरण बहोत शक्तिशाली सदा रहना चाहिये और साथ साथ अपना भी वातावरण शक्तिशाली रहे। फिर यह इवील स्पीरीट कुछ नही कर सकती है। यह मन को पकडती है। मन की शक्ति कमजोर होने के कारण ही इसका प्रभाव पड जाता है। मानो कोई कमजोर है और उसके उपर प्रभाव पड भी जाता है तो शुरु से पहेले ही उसके प्रति ऐसे योगयुक्त आत्मायें विशेष योग भठ्ठी रखकर के उसको शक्ति दें, और वह जो योग युक्त ग्रुप है वह समझे की हम को यह विशेष कार्य एटेन्शन से करना है। तो फिर शुरु में उस आत्मा को ताकात मिलने से वह बच सकती है। भले वह आत्मा परवश होने के कारण योग में नहीं भी बैठ सके, क्युंकि उसके उपर दुसरे का प्रभाव होता है, तो भले ही वह न बैठे लेकिन आप अपना कार्य निश्चय बुध्धी होकर के करते रहो। तो धीरे धीरे उसकी चंचलता समाप्त अर्थात शांत होती जायेगी। वह इवील आत्मा पहेले आप लोगो के उपर भी वार करने की कोशिष करेगी लेकिन आप समझो यह कार्य करना ही है, डरो नहीं तो धीरे धीरे उसका प्रभाव हट जायेगा।

प्र : सेवाकेन्द्र पर अगर कोई ऐसी प्रवेशतावाली आत्मायें ज्ञान सुनने के लिये आती है तो क्या करना चाहिये ?

उ : अगर ज्ञान सुनने से थोडा सा भी अंतर आता है या सेकन्ड के लिये भी अनुभव करती है तो उसको उल्लास में लाना चाहिये। कई बार आत्मायें थोडा सा ठीकाना न मिलने के कारण आपके पास आती है। तो बदलने के लिये आया है या वैसे ही पागलपन में जहां रास्ता मिला, आ गया है - ये परखना चाहिये नहीं तो उस में टाइम वेस्ट हो जायेगा। बाकी कोई अच्छे लक्ष से आया है, परवश है तो उसको शक्ति देना अपना काम है। लेकिन ऐसी आत्माओं को कभी भी अकेले में एटेन्ड नहीं करना। क्युंकी जमाना बहोत गंदा है और बहोत बुरे संकल्पवाले लोग हैं इसलिये थोडा एटेन्शन रखना भी जरुरी है। इसमें बहुत क्लीयर बुध्धि चाहिये। क्लीयर बुध्धि होगी तो हरेक के वायब्रेशन से केच कर सकेंगे कि यह किस एईम से आया हैं।

प्र : आजकल किसी किसी स्थान पर चोरी और भय का वातावरण बहोत है - उनसे कैसे बचे ?

उ : इसमें योग की शक्ति बहोत चाहिये। मान लो, कोई आप को डराने के ख्याल से आता है तो उस समय योग की शक्ति दो। अगर थोडा कुछ बोलेंगे तो नुकशान हो जायेगा। इसलिये ऐसे समय पर शांति की शक्ति दो। उस समय अगर थोडा भी कुछ कहा तो उन्हों में जैसे अग्नि में तेल डाला। आप ऐसी रीति से रहो जैसे बेपरवाह हैं, हमको कोई परवा नहीं है। जो करता है उसको साक्षी होकर अंदर शांति की शक्ति दो। तो फिर उसके हाथ नहीं चलेंगे। डरो नहीं। भय भी उन्हों को हिम्मत दिलाता है। इसलिये ऐसे टाइम पर साक्षी द्रष्टा की स्थिति युझ करनी हैं। अभ्यास चाहिये ऐसे टाईम।

10-4-84

<u>प्रभु प्यार - ब्राह्मण जीवन का आधार</u>

आप सभी योगी तु आत्मायें अर्थात प्रभुप्रिय आत्मायें बैठी हो। जो प्रभु को प्रिय लगती है वह विश्व की प्रिय बनती है। सभी को यह रुहानी नशा, रुहानी रुहाब, रुहानी फकुर सदा रहताहै कि हम परमात्म प्यारे, भगवान के प्यारे, जगत के प्यारे बन गये। भक्त लोग सिर्फ एक आधी घडी की नजर पड जाये इसके प्यासे रहेते हैं और इसीको ही महानता समझते है, लेकिन

आत्मायें इस भाग्य के पात्र बनती हो ! सारे कल्प में यही थोडा सा समय परमात्म पालना मिलती है। तो ऐसे श्रेष्ठ भाग्य की श्रेष्ठ लकीर सदा अपने मस्तक में चमकती हुई देखो - अनुभव करो। सोचते तो बहोत है लेकिन भाग्य स्मृति में कम रखते हो। इसलिये सोचना स्वरुप नहीं लेकिन स्मृति स्वरुप बनो। इसको सहजयोगी जीवन कहते हैं। बाप के प्यार की पालना का प्रेक्टिकल स्वरुप ही है - सहजयोगी जीवन। स्मृति स्वरुप सो समर्थी स्वरुप। "सोचना" ये समर्थ स्वरुप नहीं है। जैसे की सोचते हो - हा, मैं आत्मा हुं, लेकिन साथ-साथ ये स्मृति में रखो कि हम परमात्म पालना की अधिकारी आत्मायें है।

दुसरा, जैसे की कोई गलती हो जाती है तो गलती होने के बाद भी उसी गलती को सोचते रहेते हो। क्युं, क्या, कैसे, ऐसे नहीं, वैसे... कई रुप से बात को छोडते नहीं हो। बात आपको छोडकर चली जाती है - लेकिन आप बात को नहीं छोडते हो। और ऐसे जीतना समय सोचना स्वरुप बनते हो, उतना समय यथार्थ स्मृति स्वरुप नहीं बन सकते हो और इसलिये दाग के उपर दाग लग जाते है। पेपर का टाईम कम होता है लेकिन व्यर्थ सोचने का संस्कार होने के कारण पेपर का टाईम बढा देते हो। इसलिये बात की सेकेन्ड पुरी हुई और निर्विकल्प स्थिति बन जाये। निर्विकल्प बनना आता है न ? अपने श्रेष्ठ भाग्य को स्मृति में लाकर सदा हर्षित रहो। अपनी परमात्म पालना को बार-बार स्मृति में लाओ।

5-12-94

यथार्थ वैराग्य वृत्ति का सहेज अर्थ है - चाहे आत्माओं के संपर्क में आये, चाहे साधनों के संबंध में आये, चाहे सेवा के चान्स का भाग्य मीले लेकिन सर्व में जीतना न्यारा उतना प्यारा इसका बेलेन्स रहे। प्यारापन का अर्थ है निमित्त भाव, निर्माण भाव। इस भाव के बदले मेरेपन का भाव आता है कि, ये मेरा ही काम है, मेरा ही स्थान है, मुजे ही सर्व साधन भाग्य अनुसार मिले हुए है, इतनी महेनत से मैने ये साधन स्थान वा सेवा, वा सेवासाथी बनाये हैं। ये मेरा है, क्या मेरी महेनत की कोई वेल्यु नहीं है ? ये सब हुवा "मैं और मेरेपन का भाव" जो रोयल रुप से बढ गया है। बहोत

अपने धारणा स्वरुप से प्रभाव डालते हो तो आपकी सेवा की मार्क्स भी जमा हो जायेगी।

एक होती है कल्याण की भावना की सेवा और दुसरी स्वार्थ से सेवा। मेरा नाम आ जायेगा, अखबार में मेरा फोटो आ जायेगा, मेरा टी.वी. में आ जायेगा, मेरा ब्राह्मणो में नाम हो जायेगा, ब्राह्मणी मुझे बहोत आगे रखेगी, पुछेगी... यह सब स्वार्थी सेवा के भाव हैं। तो जो सच्चा सेवाधारी हैं। उस सेवाधारी को, चलो, और कोई सेवा नहीं मीले लेकिन बापदादा कहते है अपने चेहरे और चलन से सेवा करो। आपका चहेरा बाप का साक्षात्कार करावे और चलन बाप की याद दिलावे। ये सेवा नंबरवन है। ऐसे नहीं मुझे ही चान्स मीले, मेरे को ही मीलना चाहिये। ऐसे संकल्पो को भी स्वार्थ कह जाता है। चाहे ब्राह्मण परिवार में आप नामीग्रामी नहीं है, आप सेवाधारी अच्छे हो फिर भी आपका नाम नहीं है। लेकिन बाप के पास तो नाम है न ? जब बापके दिल पर नाम है तो और क्या चाहिये ? इसलिये सिर्फ बाप के दिल पर नहीं लेकिन जब फाईनल में नंबर मिलेंगे तो आपका नंबर आगे होगा। बाप स्वयं हिसाब रखते है कि आप राईट होते हुए भी आपको चान्स नहीं मीला तो वो भी नोट होता है। अगर मांग कर चान्स लीया तो उसकी भी मार्क्स कट होती है। ये धर्मराज का खाता कोई कम नहीं है। बहोत सुक्ष्म हिसाब-किताब है। इसलिये नि:स्वार्थ सेवाधारी बनो। यदी आपको चान्स हैं और फिर भी दुसरा समझे कि वह चान्स हमको भी मिले तो बहोत अच्छा और योग्य भी है कि आप अपना चान्स उसको देते हो। उससे आपका अपना शेयर (हिस्सा) उसमें जमा हो जाता है। भले आपने नहीं किया लेकिन दुसरे को चान्स दिया इसलिये आपका शेयर जमा हो जाता है। सच्चा डायमन्ड बनने के लिये ये हिसाब-किताब भी समझ लो।

26-11-94

सर्व बच्चों का भाग्य सदा सर्व श्रेष्ठ है ही। क्युंकी परमात्म पालना के अंदर हर सेकन्ड पल रहे हो। परमात्मा उंचे ते उंचा है तो उनकी पालना भी श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ है। सारे विश्व की आत्मायें परमात्मा को बाप कहती है लेकिन पालना और पढाई के पात्र नहीं बनती है। और आप कितनी थोडी सी

आप इश्वरीय प्यार के पात्र बन गये, प्रभु के प्यारे बन गये तो ये कितना महान भाग्य हैं ? बेसमझ बच्चा भी पैसा पीछे चाहता लेकिन पहेले प्यार चाहता। प्यार नहीं तो जीवन निराश और बे-रश अनुभव करते हैं। प्यार है तो जहान हैं, जान हैं। दुनिया प्यार के एक बुंद की प्यासी है और आप बच्चे, ये प्रभु प्यार प्रोपर्टी है इसीसे पलते हो अर्थात ब्राह्मण जीवन में आगे बढते हो। तो ऐसे प्रभु प्यार की बातें सिर्फ सुनना और जानने तक नहीं, लेकिन प्रभु के प्यारे बनकर सागर में समा जाना है। सोचो ! किसने अपना बनाया ! किस के प्यारे बने ! किसकी पालना में पल रहे हैं ! ऐसा सोचेंगे तो क्या होगा ? सदा स्नेह में समाते जायेंगे, और समाये हुए होने के कारण समस्यायें वा किसी भी प्रकार की हलचल का प्रभाव पड नहीं सकता। सदा विघ्न विनाशक, समाधान स्वरुप, मायाजीत अनुभव करेंगे।

कइ बच्चे कहेते हैं - ज्ञान की गुह्य बातें याद नहीं रहती। लेकिन एक बात यह याद रहती है कि मैं परमात्मा का प्यारा हुं, परमातम प्यार का अधिकारी हुँ ? इसी एक स्मृति से भी सदा समर्थ बन जायेंगे। सिर्फ ये एक बात सर्व प्राप्ति के अधिकारी बनानेवाली हैं। सिर्फ अनुभव करो कि "मैं प्रभु का प्यारा सो जग का प्यारा हुँ"।

मुलाकात

सभी सहजयोगी आत्मायें हो ना ? सहजयोगी अर्थात सदा सर्व सबंधो से बाप का साथ। जहां सर्व शक्तिवान बाप साथ हैं, सर्व शक्तियां साथ है तो समस्या समाधान के रुप में बदल जायेगी। कोई भी समस्या आये तो संबंध के अधिकार से यह समझो की वह बाप जाने। तो समस्या समाप्त हो जायेगी। "मैं क्या करुं, नहीं, बाप जाने, समस्या जाने। मैं न्यारा और बाप का प्यारा। तो वह सब बोज बाप का हो जायेगा और आप हल्के हो जायेंगे। जरा भी सोच चलता तो भारी हो जाते हो, बातें भी भारी हो जाती हैं। यही विधी है। इसी विधि से सिध्धि प्राप्ति होगी। पिछला हिसाब - किताब चुक्तु होते हुए भी बोज अनुभव नहीं होगा। ऐसे साक्षी होकर देखते रहो तो जमा भी होगा और चुक्तु भी होगा।

17-4-84

मुलाकात : (पंजाब)

बाप बैठा है इसलिये सोचने की जरुरत नहीं हैं, जो होगा वह कल्याणकारी हैं। आप न हिन्दु हो न सीख हो लेकिन बाप के हो तो सबके हो। पाकिस्तान में भी यही कहेते थे न ! आप तो अल्लाह के बंदे हो। आपका किसी बात से कनेक्शन नहीं हैं। इसलिये आप ईश्वर के हो और किसी के नहीं। क्या भी हो लेकिन डरनेवाले नहीं। कितनी भी आग लगे, बिल्ली के पुंगरे तो सेइफ रहेंगे। लेकिन जो योगयुक्त होंगे वही सेइफ रहेंगे। अगर दुसरो को याद करेंगे तो मदद नहीं मिलेगी। डरो नहीं, गभराओ नहीं आगे बढो।

28-4-84

संकल्प को सफल बनाने का सहज साधन

बीज बोना सभी को आता है लेकिन पालना कर फल स्वरुप बनाने में अंतर हो जाता है। किसी भी संकल्परुपी बीज को फलीभूत बनाने का सहज साधन एक ही है - सदा बीजरुप बाप से हर समय सर्व शक्तियों का बल उस बीज में भरते रहना। बीजरुप बाप द्वारा आपके संकल्प रुपी बीज सहज ओर स्वत: वृध्धि को पाकर फलीभूत हो जायेगें। लेकिन बीजरुप बाप से निरंतर कनेक्शन न होने के कारण और आत्माओं को और साधनों को वृध्धि की विधि बना देते हैं इसलिये महेनत करने के बाद प्रत्यक्ष फल की प्राप्ति नहीं होती।

21-11-84

सभी बेफिकर बादशाह हो ना ! जो अभी बेफिकर बादशाह नहीं बनते वो भविष्य के भी बादशाह नहीं बनते। अभी की बादशाही, जन्म जन्मों की बादशाही के अधिकारी बना देती है। जब सब कुछ बाप के हवाले कर दिया तो फिकर किस बात की ? जब मेरापन होता है तब फिकर होती है। जब बाप के हवाले कर दिया तो बाप जाने और बाप का काम जाने। "स्वयं बेफिकर बादशाह" सदा यही टाईटल याद रखो कि हम बेफिकर बादशाह है तो पुरुषार्थ की रफ्तार तीव्र हो जाएगी। मौज करो, मौज में रहो-कोई बात में सोचो नहीं। बाप सोचनेवाला बैठा

25-11-94

बाप को भी खुशी होती है कि मेरा एक एक बच्चा विशेष आत्मा है। चाहे बुझुर्ग है, अनपढ है, छोटा बच्चा है, युवा है, प्रवृत्ति वाला है लेकिन सारे विश्व के आगे विशेष है। चाहे कितने भी बडे बडे वैज्ञानिक चमत्कार दिखानेवाले भी है, चंद्रमां तक पहुंचनेवाले भी है लेकिन बाप के विशेष बच्चों के आगे वो भी अनजान है। भल पांच तत्त्वो को जानकर उनपर विजय भी प्राप्त कर ली। लेकिन छोटी सी बिंदु आत्मा को नहीं जाना है ! तो हिस्ट्री के हिसाब से वा दुनिया के हिसाब से कोई कितना भी बडा वा विशेष हो लेकिन जीसने अपने को नहीं जाना है तो यहां का पांच वर्ष वाला बच्चा उसीसे विशेष हो गया। चाहे नेता वा अभिनेता हो लेकिन अपने आपको नहीं जाना तो क्या जाना ? तो आप ऐसी विशेष आत्मा हो। यहां की अनपढ बुझुर्ग माता है और दुसरी तरफ अच्छा महात्मा है लेकिन दोनो में से बुझुर्ग माता फलक से कहेगी कि हमने परमात्मा को पा लीया है। तो महात्मा भी आपके आगे कुछ नहीं है। महात्मायें तो कहेंगे आग-कपुरी इकठ्ठा रहेना असंभव है और यहां के प्रवृत्तिवाले फलक से कहेंगे कि हम डबल पलंग पर सोते, इकठ्ठे रहेते भी पवित्र है क्युंकि हमारे बीच में बाप है। इसलिये पवित्रता हमारा स्वधर्म है - परधर्म नहीं।

बापदादा तो सबके दिल की बात सुनते भी है देखते भी है। कोई कितना भी छीपाने की कोशीश करे सिर्फ बापदादा कहाँ कहाँ लोक संग्रह के अर्थ खुल्ला इशारा नहीं देते, बाकी जानते सब है, देखते सब है। कोई कितना भी कहे की नहीं, मैं तो कभी नहीं करता, लेकिन बापदादा के पास रजीस्टर हैं जीसमें कितनी बार किया, क्या-क्या किया, किस समय किया, कितनों से किया - ये सब नूंध है। सिर्फ कहां-कहां चूप रहेना पडता है।

जब फाइनल रीजल्ट होंगी, उस में पहेली मार्क्स प्रेक्टीकल धारणा स्वरुप वालों को मीलेगी। जो धारणा स्वरुप होगा वो नेचरली योगी तो होगा ही। अगर मार्क्स ज्यादा लेनी है तो पहेले जो दुसरों को सुनाते हो वो पहेले स्वयं में एक एक कर धारण करो। क्युंकी सेवा (सुनाने) की एक मार्क्स तो धारणा स्वरुप के दस मार्क्स हैं। अगर आप ज्ञान नहीं दे सकते हो लेकिन

आत्मायें ही पसंद है-क्यों ? क्युंकी बाप स्वयं भी साधारण तन में आते है। कोई राजा-रानी के तन में वा कोई धर्मात्मा-महात्मा के तन में नहीं आते है। तो साधारण तन में स्वयं भी आते है और बच्चे भी साधारण ही आते है। बाप को भावना चाहिये। देहभानवाले नहीं चाहिये। साधारण बच्चो में ही भावना है। तो बाप को भावना का फल देना है और भावना साधारण आत्माओं में ही होती है। नामी-ग्रामी आत्माओं के पास न भावना है न समय है। इसलिये ड्रामा अनुसार संगमयुग में साधारण बनना - ये भी भाग्य की निशानी है। क्युंकी संगम पर ही भाग्यविधाता भाग्य की श्रेष्ठ लकीर खींच रहे है और साथ साथ भाग्य की लकीर खींचने का कलम भी बच्चों को दे दिया है।

भाग्यविधाता को अपना बनाया अर्थात भाग्य के अधिकार को प्राप्त कर लिया। जीसको नशा है वो सदा यही अनुभव करते है की भाग्य मेरा नहीं होगा तो किस का होगा ? क्युंकी भाग्यविधाता ही मेरा है। ड्रामा में विशेष इस संगमयुग की ये विशेषता है कि कोई भी नया हो या पुराना हो, सबको नये को भी नंबर आगे लेने का गोल्डन चान्स है। जीतना आगे बढना चाहे बढ सकते हो। खुल्ली छुट्टी है। सिर्फ अभ्यास पर अटेन्शन हो। "आना ही है" - यह द्रढ निश्चय भाग्य को निश्चित कर देता है। पता नहीं... आयेंगे, नहीं आयेंगे... पता नहीं आगे चल कोई माया आ जाये.. ऐसा व्यर्थ संकल्प कभी भी नहीं करना। जब सर्व शक्तिवान साथ है तो माया तो उसके आगे पेपरटाईगर है। इसलिये गभराना नहीं। "पता नहीं" का संकल्प कभी नहीं करना। बाप के साथ का अनुभव सदा ही सहज और सेईफ रखता है। साथ भूल जाते हो तो मुश्कील हो जाता है। तो साथ का अनुभव बढाओ और समय पर साथ के अनुभव से चलो। **माया और कुछ नहीं है लेकिन आपकी कमजोरी ही माया है।** जैसे शरीर की कमजोरी बिमारी बनकर आती है, ऐसे आत्मा की कमजोरी माया बनकर के सामना करती है। इसलिये न कमजोर बनना है, न माया आनी है। इस रीति से मायाजीत, जगतजीत बनो। अनगीनतबार विजयी बने हो। इसलिये मायाजीत बनना नई बात नहीं है और बाप भी सदा साथ है। इसलिये गभराओ नहीं।

है आप असोच बन जाओ।

10-12-84

<u>पुराने खाते की समाप्ति की निशानी</u>

बच्चोंने पुछा की एक ही समय इकठ्ठा मृत्यु कैसे और क्युं होता हैं ? बाबाने कहा, सभी आत्माओं का द्वापर या कलीयुग से किये हुए विकर्मो का खाता जो भी रहा हुआ है वह अब वापस घर जाना हैं इसलिये पुरा हो। (इसी जन्म में) समाप्त होना हैं। अभी लास्ट समय हैं और पापों का हिसाब ज्यादा हैं। इसलिये अब जल्दी जल्दी जन्म और जल्दी जल्दी मृत्यु इस सजा द्वारा अनेक आत्माओं का पुराना खाता खतम हो रहा हैं। इसलिये वर्तमान समय मेजोरीटी आत्माओं की मृत्यु भी दर्दनाक और जन्म भी बहोत दु:ख से हो रहा हैं। यह जल्दी हिसाब-किताब चुक्तु करने का साधन हैं। जैसेइस पुरानी दुनिया में चिटीयां, चिटे, मच्छर, आदि किटाणुंओ को कई रिफाइन्ड साधन द्वारा इकठ्ठे ही विनाश कर देते हैं ऐसे आज के समय मानव भी मच्छरों और चिटीयों सदृश्य अकाले मृत्यु के वश हो रहे हैं। ये सब हिसाब किताब सदा के लिये समाप्त होने के कारण इकठ्ठा अकाले मृत्यु का तुफान समय प्रति समय आ रहा हैं।

वैसे धर्मराज पुरी में भी सजाओं का पार्ट अंत में नूंधा हुवा है लेकिन वह सजायें आत्मा सिर्फ अपने आप भोगती और हिसाब किताब चुक्तु करती हैं। लेकिन कर्मो के हिसाब अनेक प्रकार के चलते हैं, उसमें विशेष तीन प्रकार के हैं

(1) एक हैं आत्मा को अपने आप भोगनेवाले हिसाब-जैसे बिमारीयां, उसमें आत्मा अपने आप ही तन के रोग द्वारा हिसाब चुक्तु करती हैं। ऐसे दिमाग कमजोर होना, या किसी भी प्रकार की भूत प्रवेशता ऐसे ऐसे प्रकार की सजाओं द्वारा आत्मा स्वयं अपना हिसाब-किताब भोगती हैं।

(2) दुसरा हिसाब हैं संबंध - संपर्क द्वारा दु:ख की प्राप्ति।

(3) तीसरा हैं प्राकृतिक आपदाओं द्वारा हिसाब-किताब चुक्तु होना।

तीनों प्रकार के आधार से अभी हिसाब-किताब चुक्तु हो रहे हैं। धर्मराजपुरी में ऐसे हिसाब-किताब चुक्तु नहीं होगा। सभी के सारे पुराने खाते खतम

होने ही है इसलिये यह हिसाब-किताब चुक्तु करने की मशीनरी अब तीव्र गति से चलनी ही हैं। विश्व में यह सब होना ही हैं। तो अब अपने आपको चेक करो कि ब्राह्मण आत्मा का तीव्र गति के तीव पुरुषार्थ द्वारा सब पुराने हिसाब-किताब चुक्तु हुए हैं या अभी भी कुछ बोज रहा हुआ हैं ? इसकी विशेष निशानी जानते हो ?

श्रेष्ठ परिवर्तन वा श्रेष्ठ कर्म कोई में भी अपना स्वभाव संस्कार विघ्न डाले या जीतना चाहते, सोचते उतना नहीं कर पाते हैं। और मन में यही संकल्प चलते कि पता नहीं न चाहते भी क्युं हो जाता हैं ? या स्वयं की चाहना श्रेष्ठ होते, हिंमत उल्लास होते भी परवश अनुभव करते हैं। कहते हैं ऐसा करना तो नहीं था सोचा नहीं था लेकिन हो गया। इसको कहा जाता हैं (1) स्वयं के पुराने स्वभाव संस्कार के परवश या (2) किसी संगदोष के परवश वा (3) किसी वायुमंडल वा वाइब्रेशन के परवश। चाहते हुए भी सफलता को प्राप्त न करना ये निशानी हैंपिछले पुराने खाते के बोज की। ये हिसाब-किताब अगर चुक्तु तो हर प्राप्ति के अनुभव में उडती कला। दुनिया में तो दु:ख की घटनाओं के पहाड फटने ही हैं। ऐसे समय पर सेफ्टी का साधन हैं ही बापकी छत्रछाया। छत्रछाया तो है ही न !

12-12-84

मुलाकात

जो गायन है-कोटो में कोई, कोई में भी कोई बाप के बनते हैं-वह हम हैं। ये खुशी सदा रहेती हैं ? विश्व की अनेक आत्मायें बाप को पाने का प्रयत्न कर रही हैं और हमने पा लिया। दुनिया ढुंढ रही हैं और हम उनके बन गये। तो जो ख्याल ख्वाब में भी न था वह प्रेक्टिकल में पाने की स्मृति रख औरों को भी समर्थ बनाओ।

मुलाकात

अगर संकल्प में भी आता हैं - मेरा घर, मेरा परिवार, मेरा यह काम है तो यह स्मृति भी माया का आह्वान करती हैं। तो मेरे को तेरा बना दो। जहां तेरा है वहां दु:ख खतम। मेरा कहेना और मुँझना। तेरा कहेना और मौज में रहना। तो तेरा तेरा कहकर अभी मौज में नहीं रहेंगे तो कब रहेंगे ?

है। ऐसा भाग्य विधाता बाप शिक्षक बन राज्य पद दिलाते है और सतगुरु के रुप में वरदान भी दे रहे है। तो नशे से कहो कि नंबरवन हम नहीं होंगे तो कौन होगा ?

7-11-94

सभी आप बाप के इतने समीप हो जो हरेक बच्चा निश्चय और फलक से कहेता है कि मेरा बाबा मेरे साथ है। बाप भी मेरे बीना रहे नहीं सकता। आप भी एक सेकेन्ड बापके बीना रह नहीं सकते हो। ऐसे साथ रखनेवाले के पास माया आ नहीं सकती। लेकिन कभी कभी माया किसी भी ढंग से बच्चों को बाप से किनारा करा देती है और फिर अनेक प्रकार के व्यर्थ संकल्पो में बच्चे मुंझ जाते है। अभी तक पाँच ही विकारो के व्यर्थ संकल्प मेजोरीटी के चलते है। क्युं, क्या, कैसे के रुप में व्यर्थ संकल्प आते है। ज्ञानी आत्माओं में या तो अपने गुण का, अपनी विशेषता का अभिमान आता है वा जीतना आगे बढते है उतना अपनी किसी भी बात में कमी को देखकर के, कमी अपने पुरुषार्थ की नहीं लेकिन नाम, मान शान में, पुछने में, आगे आने में, सेन्टर इन्चार्ज बनाने में, सेवा में (मुजे क्युं सेवा न दि), विशेष पार्ट देने में... ये कमी है। वा ये व्यर्थ संकल्प विशेष ज्ञानी आत्माओं में आते है। जो उनके लीये बहोत नुकशानकारक है। एक दिन में चाहे अभिमान वा अपमान-मेरे को कम क्युं ? मेरा भी ये पद होना चाहिये, मेरे को भी आगे करना चाहिये, ऐसे संकल्प चलाकर अपना अपमान समझते हो। **तो आजतक अभिमान और अपमान-यही दो व्यर्थ संकल्पो का कारण हैं। बाप के प्यार के पीछे क्या इतना भी न्यौछावर नहीं कर सकते हो ? अगर इन दोनो को न्यौछावर कर दिया तो बाप समान बनना कोई मुश्कील नहीं है।**

17-11-94

दुनिया के हिसाब से आप आत्मायें कितनी साधारण हो लेकिन भाग्य कितना श्रेष्ठ है। सारे कल्प में चाहे कोई धर्मात्मा हो, महान आत्मा हो, लेकिन ऐसा श्रेष्ठ भाग्य न तो किसी को प्राप्त है, न हो सकता है। एक ओर अति साधारण और दुसरी और अति नामीग्रामी। बापदादा को ऐसी साधारण

25-3-94

ब्राह्मण जीवन में सबसे श्रेष्ठ खजाना संकल्प का खजाना है। श्रेष्ठ संकल्प ही ब्राह्मण जीवन का आधार है। संकल्प का खजाना बहोत शक्तिशाली है। ज्ञान, योग, सेवा और धारणा का आधार भी संकल्प ही हैं।

कई बच्चे कर्म करने में (भूल करने में) इतना टाईम नहीं लगाते है। लेकिन किये हुए कर्म के पश्चाताप में टाईम बहोत गंवाते है। फिर कहेते हैं तीन दिन से खुशी गुम हो गई हैं। क्युं खुशी गुम हुई, कहां गई कौन ले गया ??? पश्चाताप करना अच्छी चीज है क्युंकी पश्चाताप परिवर्तन कराता है लेकिन उसमें ज्यादा टाईम नहीं लगाओ। क्युंकी अगर पश्चाताप में रोते रहेंगे तो सारा सप्ताह चला जायेगा। इसलिये पश्चाताप किया वो बहोत अच्छा लेकिन आगे के लीये एक सेकेन्ड में निर्णय कर अपने को प्राप्ति की खुशी में ला दो। सच्ची दिल से बाप को भले केह दो और बाप को राजी कर दो। लेकिन उसको बार बार अपने अंदर में वर्णन नहीं करो - ये हो गया - ये हो गया... हो गया, फिनीश। आगे के लिये एटेन्शन।

31-3-94

आप सभी बेहद के मालीक सो बालक हो। आप सभी के मस्तक पर श्रेष्ठ भाग्य की लकीर चमक रही है। क्युंकी भाग्य विधाता द्वारा आप भाग्यवान आत्माओं का दिव्य ब्राह्मण जन्म हुआ है। ब्रह्मा बाप और शिव बाप दोनो को भाग्य विधाता कहेते हैं। ऐसे भाग्य विधाता बापदादा द्वारा आप सब का जनम हुआ है। तो जीनका बाप स्वयं भाग्य विधाता है उसका भाग्य कितना श्रेष्ठ होगा! भाग्य विधाता द्वारा जन्म होना ये सबसे नंबरवन भाग्य है। जन्म तो हुआ लेकिन अभी आप निश्चय और नशे से यह भी कहेते हो कि, हमारा पालनहार स्वयं परमात्मा है। स्वयं बाप भी पालनहार बनकर के पालना कर रहा है। तो इसका नशा रखो। भाग्य श्रेष्ठ है लेकिन चलते चलते उसको साधारण समज लेने के कारण नशा और खुशी की झलक सदा नहीं रहेती। इसलिये एक सेकेन्ड भी भूल नहीं सकते। लेकिन कोमन समझ लेते हो कि बाप मिल गया, हमारा हो गया..। जब हमारा कहेते हो तो नशा रहना चाहिये। ऐसे बापके बच्चे आप अभी भी स्वराज्य अधिकारी बनना ही

संगमयुग है ही मौजो का युग, इसलिये मौज में रहो, स्वप्न और संकल्प में भी व्यर्थ नहीं सोचो।

17-12-84

मुलाकात (पंजाब)

स्वयं योग युक्त स्थिति में स्थित हैं तो कैसी भी परिस्थिति में सेइफ जरुर हैं। बापकी छत्रछाया में रहेनेवाला सदा श्रेष्ठ। छत्रछाया से बहार नीकलो तो फिर भय हैं। छत्रछाया के अंदर निर्भय हैं। कितना भी कोई कुछ करे लेकिन बापकी याद एक किल्ला हैं जीसके अंदर कोई नहीं आ सकता। हलचल में भी अचल, गभरानेवाले नहीं। ये तो कुछ भी नहीं देखा यह तो रिहर्सल हैं। रियल तो ओर हैं। बापसे लगन है तो समस्याजीत बन गये। बस सिर्फ 'मेरा बाबा' यह महामंत्र याद रहे। यह भुला तो गये। यही याद रहा तो सदा सेइफ हैं।

16-1-85

वर्तमान भाग्यवान युग में भगवान भाग्य देता है। भाग्य की श्रेष्ठ लकीर खिंचने की विधी श्रेष्ठ कर्म रुपी कलम-आप बच्चों को दे देते है जिससे जितनी श्रेष्ठ स्पष्ट जन्म जन्मांतर के भाग्य की लकीर खिचने चाहो उतनी खींच सकते हो। इसी समय को यह वरदान है जो चाहो जितना चाहो उतना पा सकते हो, क्योंकि भगवान भाग्य का भंडारा बच्चों के लिए फराक दिल से, बिना महेनत दे रहा है। खुला भंडार है, ताला, चावी नहीं है। इसीलिए यथाशक्ति नहीं लो, बडी दिल से लो। बाप रुप से वर्सा, सतगुरु के रुप से वरदान मिलने का समय है तो सहज श्रेष्ठ भाग्य बना लो। अधिकार के रुप से ले लो। सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे यथाशक्ति नहीं हो सकते। **बाप के सहयोग और बाप के भाग्य के खुले भंडार मिलने का बाकी थोडा समय है। थोडे समय के बाद साथी के बजाय साक्षी हो देखने का पार्ट चलेगा।** इसलीए वर्सा, वरदान, सहयोग, सब प्राप्त कर लो।

21-1-85

जब बाप सदा साथ है तो बेफिकर बादशाह है। ठीक होगा या नहीं यह भी सोचने की जरुर नही रहेगी। जब बाप साथ है तो सब ठीक है। तो साथ

का अनुभव करते उडते चलो। सोचना भी बाप का काम है हमारा काम है याद में मग्न रहना।

6-3-85

सदा बाप और मैं साथ साथ हैं और संगमयुग सदा साथ रहेंगे। ऐसा उमंग उत्साह दिल में हैं न! कि मैं और बाबा! परदे के पीछे तीसरा कोई चुहा या बिल्ली तो नहीं हैं? सब समाप्त हो गये? एक बाप मिला तो सबकुछ मिला इसलिये न संबंधी रह जाता, न खजाना, न शक्ति, न गुण, न ज्ञान न कोई प्राप्ति रह जाती। इसको कहा जाता हैं होली मनाना।

आप लोग कितना मौज में रहते हो! बेफिकर बादशाह, बिन कोडी बादशाह, बेगमपुर के बादशाह! ऐसी मौज में कोई रह न सके। दुनिया के शाहुकार से शाहुकार या नामीग्रामी कोई व्यक्ति हो, बहोत ही शास्त्रवादी हो, वेदो के पाठ पढनेवाले हो, नौधा भक्त हो, नंबरवन सायन्सदान हो, कोई भी हो लेकिन आप जैसी मौज की जीवन नहीं हो सकती। बस कोई चिंता ही नहीं। महोबत ही महोबत हैं। सारे विश्व में चक्कर लगाओ, ऐसी मौज की जीवन अगर कोई की हो तो ले आओ। इसलिये गीत गाते हो - मधुवन में बाप के संसार में मौज ही मौज हैं। खाओ तो भी मौज, सोओ तो भी मौज। बाप के साथ सो जाओ तो गोली भी नहीं लेनी पडेगी। अकेले सोते हो तो, कहते हाई ब्लड प्रेसर के कारण गोली लेनी पडती। लेकिन बाप साथ हो और बाबा आपके साथ सो रहे है तो ये हैं गोली। ऐसा भी फिर समय आयेगा जैसे आदि में दवाईयां नहीं चलती थी, थोडा मलाई-मख्खन खा लिया, दवाई नहीं खाते थे। थे तो पुराने शरीर लेकिन जैसे आदि में प्रेक्टिस कराई वैसे अंत में फिर वह आदिवाले दिन रीपीट होंगे। साक्षात्कार भी बहोत विचित्र करते रहेंगे। बहुतो की इच्छा है न! कि एकबार साक्षात्कार हो जाये। **लास्ट तक जो पक्के होंगे उन्हों को साक्षात्कार होंगे, फिर वही संगठन की भट्ठी होगी और सेवा पुरी हो जायेगी। अभी सेवा के कारण जहां तहां बिखर गये हो। फिर नदियां सब सागर में समा जायेगी। लेकिन समय नाजुक होगा। साधन होते हुए भी काम नहीं करेंगे। इसलिये बुध्धि की लाईन बहोत क्लीयर चाहिये जो टच हो जाये कि अभी क्या**

संतुष्ट करेंगे? कारण कोई भी हो लेकिन उसका निवारण नहीं कर सकते तो विश्व के राज्य को क्या निवारण करेंगे? ब्रह्मा बापने कारण का निवारण किया इसलिये नंबरवन हुवा।

16-3-94

दुनियावाले तो हद के नाम के पीछाडी दौडते है। और आपका नाम विश्व में जीतना उंचा है उतना और किसी का भी नहीं है। आपके नाम की विशेषता ये है कि स्वयं भगवान आपका नाम जपता है। आपके नाम से अभी लास्ट जन्म में भी अनेक आत्मायें अपना शरीर निर्वाह चला रही है। आप ब्राह्मणों के नाम से आज भी नामधारी ब्राह्मण कितना कमा रहे है! अभी तक नामधारी ब्राह्मण भी उंचे गाये जाते है तो आपके नाम की कितनी महीमा है! तो इतना श्रेष्ठ नाम आपका हो गया फिर हद के नाम के पीछे नहीं जाओ। मेरा नाम तो कभी किसी में लेते ही नहीं है, मेरा नाम सदा पीछे ही रहेता है, सेवा में करती हुं नाम दुसरे का हो जाता है..., तो ऐसे हद के नाम के पीछे नहीं जाओ। बाप के दिल में आपका नाम सदा ही श्रेष्ठ है। जब बाप के दिल में नाम हो गया तो कोई सेवा या प्रोग्राम या कोई भी बातों में आपका नाम नहीं भी आया तो क्या हर्जा? क्युंकि बाप के पास तो है न! तो और नाम के पीछे क्युं पडते हो? क्युंकी यही नाम-मान-शान, गीराता भी है और नशा भी चढाता है। इसलिये अगर मानो कोई कारण से आपका नाम गुप्त है और आप समझते हो कि मेरा नाम होना चाहिये, यथार्थ है फिर भी अगर किसी आत्मा से आपके कोई हिसाब-किताब के कारण या उसके संस्कार के कारण आपका नाम नहीं होता है, भले आप राइट हो - वो रोंग हैं। फिर भी उसका नाम होता है, आपका नहीं, तो समझो विजयमाला में आपका नाम निश्चित हैं। इसलिये इसकी भी परवाह नहीं करो। गलती से नाम मिस भी हो गया तो भी कोई हर्जा नहीं लेकिन विजयमाला में आपका नाम मिस नहीं हो सकता। पहेले आपका नाम होगा। तो आपके नाम की महिमा याद रखकर के खुश रहो कि मेरा नाम बाप के दिल पर हैं, विजय माला में है, ऐसे अंत तक मेरा नाम सेवा कर रहा है।

जायेगी । साकार में साथ नहीं रहेना है । दिल से साथ निभाना है । अगर दिल से साथ नहीं निभाते तो मधुवन में होते भी दुर है । अगर दिल से समीप है तो भले विदेश और लास्ट देश में रहेते भी वो साथ है । इसलिये बापदादा को दिलाराम कहेते है - शरीर राम नहीं । बाप के दिल में आपका दिल है और आपके दिल में बाप का दिल है । तो दिल जाने इस रुहानी साथ को । **सदा साथ निभाना - यह कोई भी आत्मा, आत्मा से निभा नहीं सकती । एक ही परमात्मा ऐसा साथ आत्माओं से निभा सकता है और ऐसा परमात्मा साथ निभाने का भाग्य आप बच्चों को ही है ।** साकार शरीर में साकार रुप में तो सदा साथ नहीं दे सकते लेकिन अव्यक्त रुप में सभी को साथ दे सकते हैं । **जब चाहो, मिलन के दरवाजे खुले हैं ।**

अभी भी समय प्रमाण बहोत बहोत बहोत भाग्यवान हो । फिर भी बैठने की तो जगह मीली है ना । फिर तो खडे रहेने की भी जगह मुश्कील होगी । क्युंकी आप सभी को औरो को चान्स देना पडेगा ।

बाप के आज्ञाकारी बनने से सर्व की दुवाएं मिलती है । इसकी निशानी है - दिल/मन सदा संतुष्ट रहेगा । सदा स्वयं और सर्व डबल लाईट रहेंगे । अगर डबल लाईट नहीं है तो समजो बाप की वा परिवार की दुवा नहीं मिल रही है । **कई समझते है हमारा बाप से कनेक्शन है इसलिये बाप की दुवाएं है इसलिये परिवार से नहीं बनता तो कोई हर्जा नहीं । लेकिन ऐसी माला नहीं बनेगी । अगर माला में आना है तो पुरा ख्याल रखो कि हरेक आत्मा मुझे देखकर खुश रहे । और हल्का हो जाय और बोज खतम हो जाये । तो दिल की संतुष्टता वा आज्ञाकारी की दुवाएं स्वयं को भी लाईट और दुसरों को भी लाईट बनायेगी । जैसे ब्रह्मा बाप को देखा । हरेक छोटा बडा संतुष्ट होकर खुशी में नाचता रहेता । तो बोल ऐसे हो जो स्वयं भी अपने आपसे संतुष्ट हो और दुसरे भी संतुष्ट रहें । जीतना बाप और ब्राह्मण आत्माओं की दुवाओं के अभी पात्र बनेंगे उतना राज्य के पात्र बनेंगे । अभी ब्राह्मण परिवार को संतुष्ट नहीं कर सकते तो राज्य को क्या संतुष्ट करेंगे ? क्युंकी ब्राह्मण आत्मायें आपकी रोयल फेमीली बनेगी । और जो इस फेमीली को संतुष्ट नहीं कर सकते तो प्रजा को क्या**

करना हैं ? एक सेकन्ड भी देरी की तो गये । जैसे वह भी अगर बटन दबाने में एक सेकन्ड भी देरी करे तो क्या रिझल्ट होगी ? यह भी अगर एक सेकन्ड टचींग होने में देरी हुई तो फिर पहोंचना मुश्कील होगा । जैसे शुरुमें घर बैठे आवाज आया, बुलावा हुआ की आओ पहोंचो, अभी निकलो और फौरन नीकल पडे । ऐसे ही अंत में भी बाप का आवाज पहोचेगा । जैसे साकार में सभी बच्चों को बुलाया ऐसे आकार रुप में सभी बच्चों को आओ आओ का आवहान करेंगे । बस, आना और साथ जाना ऐसे सदा अपनी बुध्धि क्लियर हो । और कहां एटेन्शन गया तो बाप का आवाज बाप का आह्वान मिस हो जायेगा । यह सब होना ही हैं ।

टीचर सोच रही है हम तो पहोंच जायेंगे । यह भी हो सकता है कि आपको वहां ही कोई विशेष कार्य के लिए बाप डायरेक्शन दे । वहां कोई औरो को शक्ति देनी हो, साथ ले जाना हो ये भी होगा । लेकिन बापके डायरेक्शन प्रमाण वहां रहे । मनमत से या लगाव से नहीं । हाय मेरा सेन्टर, ये याद न आये फलाणा जिज्ञासु भी साथ ले जाउं, यह अनन्य हैं, मददगार है - ऐसा भी नहीं । किसी के लिये भी अगर रुके तो रह जायेंगे । ऐसी तैयारी हो इसको कहते है एवररेडी । सदा ही सबकुछ समेटा हुवाहो । उस समय समेटने का संकल्प नहीं आवे कि यह कर लु, यह कर लुं । साकार में याद है ना जो सर्विसेबुल बच्चे थे उन्हों की स्थुल बेग बेगेजीस तैयार होती थी । ट्रेन पहोंचने में पांच मिनट है और डायरेक्शन मिलता था कि जाओ । एक स्टेशन पहेले ट्रेन पहोंच गई है - और वह जा रहे हैं । ऐसे भी अनुभव किया न ! यह भी मन की स्थिति में बेग-बगेज तैयार हो । बापने बुलाया और बच्चे जी-हाजीर हो जाये इसको कहते हैं एवररेडी ।

25-11-85

निश्चय बुद्धि की निशानी विजय है । इसलिये गायन है निश्चय बुद्धि विजयंति तो निश्चय अर्थात विजय है ही । कभी विजय हो, कभी नहीं, यह हो नहीं सकता । सरकमस्टन्सीस भल कैसे भी हो लेकिन निश्चयबुद्धि बच्चे सरकमस्टन्सीस में अपनी स्वस्थिति की शक्ति द्वारा सदा विजयी अनुभव

करेंगे। जो विजयी रतन अर्थात विजयमाला का मणका बन गया, गले का हार बन गया, उसकी माया से हार कभी हो नहीं सकती। सारे दुनियावाले लोग वा ब्राह्मण परिवार के संबंध संपर्क में दुसरा समजें या कहे कि यह हार गया लेकिन वह हार नहीं है। जीत है। क्योंकि कहाँ-कहाँ देखने वा करनेवालो की मीस अन्डरस्टेन्डींग भी हो जाती है। **नम्र चित्त, निर्माण या हांजी का पाठ पढनेवाली आत्माओं के प्रति कभी मीसअन्डरस्टेन्डींग से उसकी हार समजते है। दुसरो को रुप हार का दिखाई देता है लेकिन वास्तविक विजय है।** सिर्फ उस समय दुसरो के कहने या वायुमंडल में स्वयं निश्चयबुद्धि से बदल, शक का रुप न बने। पता नहीं हार है या जीत है। यह शक न रख अपने निश्चय में पक्का रहे। तो जिसको आज दुसरें लोग हार कहते है कल वाहवाह के पुष्प चढायेंगे।

विजयी आत्मा को अपने मन में, अपने कर्म प्रति कभी दुविधा नहीं होगी। दुसरे कोई राईट कहेंगे रोंग कहेंगे लेकिन अपना मन निश्चयबुध्धि होगा कि मैं विजयी हुं। बाप में निश्चय के साथ साथ स्वयं का भी निश्चय चाहिअे।

निश्चयबुध्धि अर्थात विजयीका मन अर्थात संकल्पशकित सदा स्वच्छ होने कारण 'हाँ' और 'ना' का स्वयं प्रति निणर्य सहज और सत्य स्पष्ट होगा ईसलिये "पता नहीं" की दुविधा नहीं होगी ! निश्चयबुध्धि विजयी रत्न की निशानी सत्य निर्णय होने के कारण **मन में जरा भी मुँझ नहीं होगी।** सदैव मौज होंगी। खुशी की लहर होगी। चाहे सरकमस्टन्सीस आग के समान हो लेकिन उसके लिए वह अग्निपरीक्षा विजय की खुशी अनुभव करायेंगी। क्योंकि परीक्षा में विजयी हो जायेंगे ना !

निश्चयबुद्धि कभी भी किसी भी कार्य में अपने को अकेला अनुभव नहीं करेंगे। सभी एक तरफ है मैं अकेला दुसरी तरफ हुं, चाहे मैजोरीटी दुसरे तरफ हो और विजयी रतन सिर्फ एक हो फिर भी वह अपने को एक नहीं लेकिन "बाप मेरे साथ" है इसलिये बाप के आगे अक्षौणी भी कुछ नहीं है। जहां बाप है वहां सारा संसार बाप में है। बीज है तो झाड उस में है ही। विजयी निश्चयबुद्धि आत्मा सदा अपने को सहारे के नीचे समजेंगे।

वो प्यारा बनने के लिये करते है। और आपको तो परमात्म प्यार का अधिकार मीला है। तो जहां प्यार है वहां सबकुछ है और जहाँ प्यार नहीं है वहा सबकुछ होते भी कुछ नहीं है। तो आप कितने लक्की हो जो परमात्म प्यार के पात्र बन गये ! जब बाप मिला तो सफलता जन्म सिध्ध अधिकार है, नाम ही अधिकार है तो अधिकार कम मीले ये हो नहीं सकता। मास्टर सर्व शक्तिवान के आगे सफलता तो आगे-पीछे घुमती है।

10-01-94

<u>मुलाकात</u>

डबल लाईट का अर्थ ही है की आत्मा लाईट और फरिश्ता स्वरुप की लाईट इसके लिये सब बोज बाप के हवाले कर दो। पौत्र मेरा है, मकान मेरा है, बाकी मैं बाप का हुं - ऐसे तो नहीं कहेते हो ? सच्चे सच्चे बिनकौडी बादशाह हो। यह कितना अच्छा है जो संभालना भी नहीं पडे और हो भी बादशाह। लेकिन ऐसा समजते हो ? जब देह भी मेरा नहीं तो देह के साथी, देह के पदार्थ और देह के संबंध, तन, मन, धन सब तेरा। योग तो लगाते है लेकिन पैसा तो रखना पडेगा ऐसा मेरेपन का बोज तो नहीं है ? बोज फरिश्ता बनने नहीं देगा। कोई भी मेरापन चाहे मेरा स्वभाव, मेरा संस्कार, मेरी नेचर, कुछ भी मेरा है तो बोज है जो उडने नहीं देगा और वह आत्मा फरिश्ता नहीं बन सकती। इसलिये तेरा-तेरा कहेते फरिश्ता बन जाओ।

19-1-94

ये ब्राह्मण जीवन आदि से अंत तक बाप और बच्चों को अविनाशी साथ रहेने का जीवन हैं। चाहे बच्चे साकार में हैं और बापदादा आकार-निराकार में है लेकिन फिर भी अलग नहीं हैं। दिल की समीपता साकार में भी समीपता अनुभव कराती है। भल किसी भी देश में हो लेकिन दिल की समीपता सन्मुख साथ का अनुभव कराती हैं। अलग हो नहीं सकती, असंभव है। सदा साथ रहेने का परमात्मा वायदा भावी बन जाता है। जो कभी टाले नहीं टले। इसलिये सदा समीप है। सदा साथी है और साथी बन हाथ में हाथ, साथ लेते हुए मौज से चल रहे हैं। **अगर कोई बात आ जाती है तो भी बीच में बात को नहीं लाओ, बापको लाओ। तो बात किनारे हो**

के कारण कहीं न कहीं अल्पकाल का संबंध जुट जाता है। **स्थुल जीवन में भी स्थुल स्म का सहारा वा हर परिस्थिति में स्थुल स्म का सहयोग देनेवाला सहारा एक बाप है। तो यह अनुभव और बढाओ ऐसे नहीं की बाप तो है ही सुक्ष्म में सहयोग देनेवाला - निराकार है, आकार है, साकार तो है नहीं लेकिन हर संबंध को साकार स्म में अनुभव कर सकते हो। साकार स्वस्म में साथ का अनुभव कर सकते हो।** इस अनुभव के। गेहराई से समझो और स्वयं को इस में मजबुत करो। तो व्यक्ति, वैभव वा साधन अपने तरफ आकर्षित नहीं करेंगे। साधनों को सहारा नहीं बनाओ। निमित्त मात्र साक्षी हो सेवा प्रति कार्य में लगाओ।

मुलाकात

ये नशा रखो की हम दाता के बच्चे है। साधारण बाप के बच्चे नहीं। तो मास्टर दाता हो अर्थात सर्व प्राप्तियों से संपन्न आत्मा हो। जरा भी अप्राप्ति नहीं। कोई अप्राप्ति है ? कोई चीज चाहिये, नाम चाहिये, सेवा चाहिये, थोडा चान्स मील जाये, मेरा नाम हो जाये, मेरे को आगे रखा जाय, अच्छा मकान मील जाये, कार मील जाये आदि.. आदि... **जीतने साधन उतने बुध्धी भी विस्तार में जाती। इसलिये जैसे है, जहाँ है सदा राजी रहो। जो थोडे में संतुष्ट रहेता है। उसको सदा सर्व प्राप्तियों की अनुभूति होती है। इसलिये जीसके पास संतुष्टता का खजाना है उसके पास सबकुछ है। जीसके पास संतुष्टता नहीं है तो सबकुछ होते हुए भी कुछ नहीं है। क्युंकि असंतुष्ट आत्मा सदा इच्छाओं के वश होने के कारण एक इच्छा पुरी होंगी और दस इच्छाये उत्पन्न होगी। इसलिये हद की इच्छा मात्र अविद्या बनो। और सदा यह गीत गाते रहो पाना था सो पा लिया।**

23-12-93

मुलाकात

बाप को सबकुछ देकर डबल लाईट बनो। डबल लाईट का अर्थ ही है सबकुछ बाप के हवाले करना तन भी तेरा, मन भी तेरा, धन भी तेरा। ऐसे करने से कमल पूष्प समान न्यारे और प्यारे रहेंगे। जब परमात्मा के प्यारे हो गये तो और क्या चाहिये ? दुनिया में जो कुछ भी प्रयत्न वा महेनत करते है

सहारा देनेवाला दाता मेरे साथ है यह नेचरल अनुभव करता है।

निश्चयबुद्धि के मन में जरा भी बेसहारे या अकेलेपन का संकल्प मात्र भी अनुभव नहीं होगा।

निश्चयबुद्धि विजयी होने कारण सदा खुशी में नाचता रहेगा। कही उदासी या अल्पकाल का हद का वैराग्य इसी लहर में भी नहीं आयेंगे।

विजयी रतन सदा हार में भी जीत, जीत में भी जीत अनुभव करेंगे। **हद के वैराग्य को कहते है किनारा करना।**

निश्चयबुद्धि विजयी कभी अपने विजय का वर्णन नहीं करेंगे। दुसरों को उलहना नहीं देंगे। विजयी दुसरो की हिम्मत को बढायेगा। नीचा दिखाने की कोशिश नहीं करेगा। क्यांकि विजयी आत्मा बाप समान मास्टर सहारे दाता है।

निश्चयबुद्धि व्यर्थ से सदा दूर रहता है, व्यर्थ समाप्त, यही विजय की निशानी है।

30-12-85

बापदादा देख रहे है कि बाप द्वारा श्रेष्ठ प्राप्ति कनरेवाले ऐसे भोले साधारण आत्मायें विश्व के आगे निमित्त बनी हैं। क्योंकि सभी लोग राजविद्या, सायन्स की वद्या, अल्पकाल की राज्य अधिकार और धर्मनेता का अधिकार इसीको ही आज की दुनिया में विशेष आत्मायें मानते हैं। लेकिन बापदादा कौनसी विशेषता देखते हैं ? सबसे पहेले अपने आपको और बापको जानने की विशेषता जो आप ब्राह्मण बच्चो में हैं। वह किसी भी नामी ग्रामी आत्मामें नहीं हैं। इसलिये भोले, साधारण होते हुए वरदाता से वरदान ले जनम जनम के लिये विशेष पूज्य आत्मायें बन जाते है। जो आज की नामी ग्रामी आत्मायें है वह भी पूज्य आत्माओं के आगे नमन-वंदन करती हैं। ऐसी विशेष आत्मायें आप बन गये। तो ऐसा रुहानी नशा अनुभव करते हो ? ना उम्मीद आत्माओं को उम्मीदवार बनाना यही बाप की विशेषता हैं। बापको दिल के स्नेहवाली दिल की श्रेष्ठ भावनावाली आत्मायें प्रिय हैं। दिल का स्नेह ही श्रेष्ठ प्राप्ति कराने का मुल आधार हैं। दिलाराम बापको पसंद हैं। इसलिये जो भी हो, जैसे भी हो, लेकिन परमात्मा को पसंद हो।

इसलिये तो अपना बना लिया हैं। दुनियावाले अभी इन्तजार कर रहे हैं कि बाप आयेगा उस समय ऐसा होगा, वैसा होगा लेकिन आप सबके मुख से, दिल से निकलता हैं कि - "पा लिया"। आप संपन्न बन गये और वे बुद्धिवान अब तक परखने में ही समय समाप्त कर रहे हैं। इसलिये कहां गया हैं, भोलानाथ बाप हैं। सिर्फ पेहचानने की विशेषता ने आपको विशेष आत्मा बना लिया।

15-1-86

बाप अपने सौदागर बच्चों को देख रहे थे। दुनियावाले नामी ग्रामी लोगों की विशेष डिरेक्टरी बनाते हैं लेकिन बाप की डिरेक्टरी में किन्हों के नाम हैं ? जिन में दुनियावालों की आंख नहीं जाती उन्होने ही बाप से सौदा किया और परमातम नैनो के सितारे - नूरे रतन बन गये। तो आप परमात्म डिरेक्टरी के विशेष वी.आई.पी. हो। इसलिये गायन हैं भोलों का भगवान। है चतुर सुझान लेकिन पसंद भोले ही आते हैं। दुनिया की बाहरमुखी चतुराई बापको पसंद नहीं। आप सभी सदा के लिये बाप द्वारा पदमापदम पति बन जाते हो। न सिर्फ **21** जन्मों के लिये। लेकिन द्वापर में भी भक्त आत्मा होने के कारण कोई कमी नहीं होगा। इतना धन द्वापर में भी रहता हैं जो दान पुण्य अच्छी तरह कर सकते हैं। कलीयुग के अंत में इस अंतिम जन्म में भी भिखारी तो नहीं बने ना ! दालरोटी खानेवाले ही बने ना ! कालाधन नहीं है लेकिन दाल-रोटी तो है न ! इस समय की कमाई वा सौदा पुरा ही कल्प भिखारी तो नहीं बनायेगा। इतना इकठ्ठा किया है जो अंतिम जन्म में दाल रोटी खाते हो।

15-1-86

रत्नागर बाप अपने बडे ते बडे सौदा करनेवाले सौदागर बच्चों को देख रहे है। सौदा कितना बडा और करनेवाला सौदागर दुनिया के अंतर में कितने साधारण। भोलेभाले है। भगवान से सौदा करनेवाली कौन आत्मायें भाग्यवान बनी। यह देख मुस्करा रहे है। इतना बडा सौदा एक जन्म का जो 21 जन्म मालामाल हो जाते। देना क्या और लेना क्या है ! अनगिनत पदमों की कमाई वा पदमों का सौदा कितना सहज करते हो। सौदा करने में समय

गुप्त सेवाधारी सदा ही आगे है।

16-12-93

स्नेह की निशानी है - बिना कोई महेनत के स्नेही के तरफ स्नेह स्वत: हो जाता है। स्नेह करनेवाली आत्मा का हर समय, हर परिस्थिति में जीसको स्नेह करते है वह आधार अनुभव होता है। अगर साधनों से स्नेह है तो उस समय बाप से भी ज्यादा साधन का आधार अर्थात सहारा अनुभव होता है। उस समय उस आत्मा के संकल्प में बाप का स्नेह याद भी आता है, सोचते भी है बाप का स्नेह श्रेष्ठ है लेकिन यह साधन वा व्यक्ति का आधार भी आवश्यक समझते है। इसलिये दोनो तरफ स्नेह अधुरा हो जाता है। और बार बार स्नेह जोडना पडता है। एक बल एक भरोसा की बजाय दुसरा भी भरोसा आवश्यक लगता है। इसलिये बाप के स्नेह द्वारा जो सर्व प्राप्ति का अनुभव आकर्षित करने के बजाय दुसरे सहारे द्वारा अल्पकाल की प्राप्ति अपने तरफ इतना आकर्षित करती है जो इसीको ही आवश्यक समजने लगते है। होता है लगाव लेकिन समजते है सहारा। ऐसी आत्मा को कहते है स्नेह करनेवाली आत्मा।

लेकिन नंबरवन है स्नेह में समाई हुई आत्मा, जीनके नयनो में, मुख में, संकल्प में, हर कर्म में स्नेही बाप का साथ सदा, सहज और स्वत: ही अनुभव होता है। बाप उससे जुदा नही और वो बाप से जुदा नहीं। हर समय बाप के स्नेह के रीटर्न में प्राप्त हुई सर्व प्राप्तियों में संपन्न और संतुष्ट रहेते है, जीस कारण किसी भी प्रकार का सहारा उन्हों को आकर्षित नहीं कर सकता। लेकिन सहज ही "एक बाप दुसरा न कोई" इस अनुभूति में रहेते है। ऐसे स्नेह में समाई हुई आत्माओं का अनुभव यही होगा - बाप के स्नेह से दुर होना यह मुश्कील है। क्युंकी उनके लीये एक बाप ही संसार है। एक बाप द्वारा सर्व संबंधो के रस का अनुभव सदा ही होता है। ऐसे जीसका आधार स्वयं रचयिता है उसको रचना द्वारा अल्पकाल की प्राप्ति का संकल्प स्वप्न मात्र में भी नहीं हो सकता है।

ओर तरफ बुध्धी न जाये लेकिन सर्व संबंधो का सहारा सदा एक बाप ही रहे उसके लीये सर्व संबंधो का अनुभव बढाओ। यह अनुभव कम होने

बापको यही खुशी हैं कि मेरा हर बच्चा राजा हैं, प्रजा नहीं। तो नशे से कहो, स्वराज्य हमारा जन्म सिध्ध अधिकार हैं।

18-11-93

हरेक बच्चा दिलाराम के दुलार का पात्र है। ये दिव्य दुलार - परमातम दुलार कोटो में कोई भाग्यवान आत्माओं को ही प्राप्त होता है। अनेक जनम आत्माओं वा महान आत्माओं द्वारा दुलार अनुभव किया। अब इस एक अलौकिक जनम में परमातम् प्यार वा दुलार अनुभव कर रहे हो। इस दिव्य दुलार द्वारा राजदुलारी बन गये हो। इसलीये दिलाराम बाप को भी अलौकिक फकुर है कि मेरा हर एक बच्चा राजा बच्चा है।

मुलाकात (दादीजी)

करावनहार करा रहा है और निमित्त बन करनेवाले कर रहे हैं ऐसे अनुभव होता है न ? कैसे हो रहा है - ये जादु लगता है न ! दुनियावाले तो देखते और सोचते रह जाते है। और आप निमित्त आत्मायें सदा आगे बढते जायेंगे। क्युंकि करावनहार बाप के आधार पर आप बेफिकर बादशाह हो। सेवा का भी चिंतन भले करो लेकिन चिंता नहीं करो। चिंता से कभी सफलता नहीं होगी। चलानेवाला चला रहा हैं और करा रहा है इसलिये सब सहेज होना ही है। सिर्फ निमित्त बन संकल्प, तन, मन, धन सफल करते चलो।

मुलाकात

संगमयुग है ही संतुष्टता का युग। तो सभी संतुष्ट हो ? संपर्क में आने में संतुष्टता में थोडा फर्क पड जाता है। माला के मणके हो न ! तो माला कैसे बनती ? संबंध से। अगर दाने का दाने से संपर्क नहीं हो तो माला बनेगी ? तो माला के मणके है इसलिये संबंध संपर्क में भी सदा संतुष्ट रहेना और सदा संतुष्ट करना है। सिर्फ रहेना नहीं है। करना भी है। तब माला के मणके बनते हैं। क्युंकि सभी परिवार वाले हो। निवृत्तीवाले नहीं हो। परिवार का अर्थ ही है। संतुष्ट रहेना और संतुष्ट करना। बापके लीये सब आगे है। चाहे नये है, चाहे पुराने है लेकिन सब आगे है। **और अगर गुप्त है तो सबसे आगे है**। जैसे गुप्तदान महादान कहा जाता है ऐसे अगर गुप्त पुरुषार्थी है, नाम आउट नहीं होता है तो ऐसे नहीं समझो की पीछे है। लेकिन गुप्त पुरुषार्थ,

भी वास्तव में एक सेकेन्ड लगता है। और कितना सस्ता सौदा किया ? **एक सेकन्ड में और एक बोल में सौदा कर लिया। दिल से माना 'मेरा बाबा' इसी एक बोल से ईतना बडा अनगिनत सौदा कर लेते हो**। सस्ता सौदा है ना ? न महेनत है, न समय देना पडता है। और कोई भी हद के सौदे करते तो कितना समय देना पडता। दुनियावाले भी नामीग्रामी लोगों की डीरेक्टरी बनाते। तो बाप की डिरेक्टरी में किन्हों का नाम है ? जिन में दुनियावालों की आंख नहीं जाती उन्होने ही बाप से सौदा किया और परमात्म नयनों के सितारे बन गये। नूरे रतन बन गये। नाउमीद आत्माओं को विशेष आत्मा बना दिया। ऐसा नशा सदा रहता है ? **परमात्म डिरेक्टरी के विशेष वी.आई.पी. हम है। इसलिये ही गायन है भोलों का भगवान। है चतुर सुजान लेकिन पसंद भोले ही आते है। दुनिया की बाहरमुखी - चतुराई बाप को पसंद नहीं। उन्हों का कलियुग में राज्य है**। अभी अभी लखपति- अभी अभी कखपति। लेकिन आप सभी सदा के लिये पदमापति बन जाते हो। भय का राज्य नहीं। निर्भय हो।

आज दुनिया में धन भी है और भय भी है। जितना धन उतना भय में ही खाते, भय में ही सोते। और आप बेफिकर बादशाह बन जाते। निर्भय बन जाते है। जहां मेरापन होगा वहां भय जरुर होगा। **"मेरा बाबा" सिर्फ एक ही है जो निर्भय बनाता है**। उनके सिवाय कोई भी सोने का हिरण अगर मेरा है तो भय है।"

इतना जमा किया जो **21** पेढी सदा संपन्न रहे ? आपकी वंशावली भी मालामाल रहे। न सिर्फ **21** जन्म लेकिन द्वापर में भी भक्त आत्मा होने के कारण कोई भी कमी नहीं होंगी। इतना धन द्वापर में भी रहता है जो दान पुन्य अच्छी तरह से कर सकते हो। **कलियुग के अंत में भी देखो अंतिम जन्म में भिखारी तो नहीं बने ना ! दालरोटी खानेवाले बने ना, कालाधन नहीं है लेकिन दाल-रोटी तो है ना। इस समय की कमाई या सौदा पुरा ही कल्प भिखारी नही बनायेगा।**

18-1-86

बाप को पहचाना और बापने जो भी है, जैसे भी है पसंद कर लिया।

क्योंकि दिलाराम को पसंद है सच्चे दिलवाले। दुनियां का दिमाग न भी हो, लेकिन बाप को दुनियां के दिमागी पसंद नहीं। दिलवाले पसंद है। दिमाग तो बाप ईतना बडा दे देता है जिससे रचयिता को जानने से रचना के आदि - मध्य - अन्त की सब बातों को जान लेते हो। इसलिए बापदादा पसंद करते है दिल को। **नंबर भी बनते है सच्ची साफ दिल के आधार से - सेवा के आधार से नहीं।** सेवा में भी सच्ची दिल से सेवा की, वा सिर्फ दिमाग के आधार से सेवा की ? दिल का आवाज दिल तक पहोंचता है, दिमाग का आवाज दिमाग तक पहोंचता है। दिमागवाले नाम कमाते है, दिलवाले दुवाए कमाते है।

18-1-86

<u>विश्व किशोर भाउ</u>

उसका भी एक ही बोल में सारा अनुभव रहा कि किसी भी कार्य में सफलता का आधार "निश्चय अटल और नशा संपन्न"। अगर निश्चय अटल है तो नशा स्वत: ही औरों को भी अनुभव होता हैं। इसलिये निश्चय और नशा उसकी सफलता का आधार रहा। जैसे साकार बाप को सदा निश्चय और नशा रहा कि मैं भविष्य में विश्व महाराजन बना की बना, ऐसे विश्व किशोर को भी ये नशा रहा कि, मैं पहले विश्व महाराजन का पहला प्रिन्स हुं यह नशा वर्तमान और भविष्य का अटल रहा। तो समानता हो गई ना !

<u>बडी दीदी</u>

दीदी बहोत अच्छी रुह रुहान कर रही थी। बापदादा ने बच्चों को कहा अलौकिक संबंध से, देह से, संस्कार से नष्टोमोहा बनने की विधी ड्रामा में यही नूंथी हुई हैं। इसलिये अंत में सबसे नष्टोमोहा बन अपनी ड्युटी पर पहोंच गई। चाहे विश्वकिशोर को पहेले थोडा सा मालुम था लेकिन जिस समय जाने का समय रहा उस समय वह भी भुल गया था। ऐसे यह भी ड्रामा में नष्टोमोहा बनने की विधी नूंधी हुी थी जो रीपीट हो गई। क्योंकि कुछ अपनी महेनत और कुछ बाप ड्रामा अनुसार कर्मबंधन मुक्त बनाने में सहयोग भी देते हैं। जो बहोतकाल के सहयोगी बच्चे रहे हुए हैं, "एक बाप दुसरा न कोई"। इस मेईन सब्जेक्ट में पास रहे हैं, ऐसे एक अनुभव करनेवालों

चलते रहने की। वह भी बाप के साथ साथ है, अकेले नहीं। तो क्या फिकर है ? क्योंकि जानते हो - हमारे लिये जो भी होगा अच्छा होगा। निश्चय है ना ? पक्का निश्चय है या हिलता है कभी ? जहाँ निश्चय पक्का है वहां निश्चय के साथ विजय भी निश्चित है। ये भी निश्चय है ना कि विजय हुई पडी है। या कभी सोचते हो कि पता नहीं होगा या नहीं ? क्योंकि कल्प कल्प विजयी है और सदा रहेंगे ये अपना यादगार कल्प पहलेवाला अभी फिर से देख रहे हो। इतना निश्चय है ना कि कल्प कल्प के विजयी है ? ईतना निश्चय है ? कल्प पहेले भी आप ही थे या दुसरे थे ? तो सदा यही याद रखना कि हम निश्चयबद्धि विजयी रतन है। ऐसे रतन हों जीन रत्नो को बापदादा भी याद करते है ये खुशी है ना! बहुत मौज में रहते हो ना ! इस अलौकिक दिव्य जन्म की और अपने घर मधुवन पहुंचने की मुबारक।

26-3-93

<u>मुलाकात</u>

अगर एक बाप बिंदु को याद करो तो अन्य दोनों बिंदु सहज ही याद आ जायेगें। चाहे माया कितनी भी शक्तिशाली हो लेकिन सर्व शक्तिवान बाप से कोई शक्तिशाली हैं नहीं। तो भूल जाते हो कि हम मास्टर हैं। क्यां अपने शरीर के परिचय को भूलते हो कि मैं फलानी हुं ? तो आप मास्टर सर्वशक्तक्तिवान आत्मा हो ये क्युं भूल जाते हो ? भूलना चाहे तो भी नहीं भूल सकते। जब अनुभव कर लिया कि बाप ही संसार हैं तो संसार के सिवाय और कुछ है जो भूलते हो ? सोचो ! सारे कल्प में बाप अभी मिला हैं, फिर मिल नहीं सकता हैं। गोल्डन एज में भी बाप नहीं होगा। सिर्फ ब्रह्माबाप साथ होगा। फिर भूल कैसे जायेंगे ?

तो अपना मास्टर सर्वशक्तिवान का स्वरुप समय प्रति समय स्मृति में लाते जाओ और ऐसे युझ करते करते अभ्यासी हो जायेंगे।मालिक बनकर शक्तियों को ओर्डर करो तो शक्तियां मानेगी भी। अगर कमजोर होकर ओर्डर करेंगे तो नहीं मानेगी। इसलिये ओर्डर करते समय अपना मालिकपन नहीं भूलो। बापदादा सिर्फ बच्चों को मालिक बनाते हैं, कमजोर नहीं।

है बाप के साथ साथ चलते रहने की, अकेले नहीं, तो फिर फिकर क्यो ? कल क्या होगा यह फिकर है ? जोब का फिकर है ? दुनिया में क्या होगा यह फिकर है ? क्योंकि निश्चय है कि हमारे लिए जो भी, होगा अच्छा होगा। जहाँ निश्चय पक्का है वहां निश्चय के साथ विजय भी निश्चित है क्योंकि कल्प कल्प के विजयी है और सदा रहेंगे। तो सदा यही याद रखना कि हम निश्चय बुध्धि विजयी रतन है।

26-3-93

सभी अपने को सदा बाप और आप कम्बाईन्ड है ऐसा अनुभव करते हो? जो कम्बाईन्ड होता है उसे कभी भी, कोई भी अलग नहीं कर सकता। आप अनेकबार कम्बाईन्ड रहे हो, अभी भी हो और आगे सदा रहेंगे ये पक्का है ? तो ईतना पक्का कम्बाईन्ड रहना। सदैव स्मृति रखो कि "कम्बाईन्ड थे कम्बाईन्ड है, और कम्बाईन्ड रहेंगे। कोई की ताकात नहीं जो अनेक बार के कम्बाईन्ड स्वरुप को अलग कर सके। **तो प्यार की निशानी क्या होती है ? (कम्बाईन्ड रहेना) क्योंकि शरीर से तो मजबुरी में भी कहां अलग रहना पडता है। प्यार भी हो लेकिन मजबुरी से कहां भी रहना पडता है। लेकिन यहां तो शरीर की बात ही नहीं। एक सेकेन्ड में कहाँ से कहाँ पहुँच सकते हो। आत्मा और परमात्मा का साथ है। परमात्मा तो कहाँ भी साथ निभाता है और हर एक से कम्बाईन्ड रूप से प्रीत की रीत निभानेवाले है।** हर एक क्या कहेंगे - "मेरा बाबा" है या कहेंगे "तेरा बाबा" है ? हर एक कहेगा 'मेरा बाबा' है, तो मेरा क्यों कहते हो ? अधिकार है तब ही तो कहते हो। प्यार भी है और अधिकार भी है। जहां प्यार होता है वहां अधिकार भी होता है। अधिकार का नशा है ना ! कितना बडा अधिकार मिला है। ईतना बडा अधिकार सतयुग में भी नहीं मिलेगा। और किसी जन्म में परमात्मा अधिकार नहीं मिलता। प्राप्ति यहां है।

26-3-93

सदा अपने को बेफिकर बादशाह अनुभव करते हो ? या थोडा थोडा फिकर है ? क्योंकि जब बापने आपकी जिम्मेवारी ले ली तो जिम्मेदारी का फिकर क्यों ? अभी सिर्फ रिस्पोन्सिबीलीटी है बाप के साथ-साथ

को बाप विशेष एक ऐसे समय सहयोग जरुर देता हैं। कई सोचते है कि क्या यह सब कर्मातीत हो गये हैं ? यही कर्मातीत स्थिति हैं ? लेकिन ऐसे आदी से सहयोगी बच्चों को एक्स्ट्रा सहयोग मिलता हैं। इसलिये कुछ अपनी महेनत कम भी दिखाई दैती हो तो भी बाप की मदद उस अंत समय में एक्स्ट्रा सहयोग मिलता हैं। एक्स्ट्रा मार्क्स दे पास वीथ ओनर बना ही दैती हैं। वह गुप्त होता है इसलिये क्वेश्चन उठते है कि,क्या ऐसा हुवा ? लेकिन यह सहयोग का रीटर्न है। जैसे कहावत है ना - "आई वील में काम आता हैं" तो जो दिल से सहयोगी रहे हुए हैं। उन्हों को ऐसे समय पर एक्सट्रा मार्क्स रीटर्न के रुप में प्राप्त होती हैं। इसलिये नष्टोमोंहा की विधी से, एक्स्ट्रा मार्क्स की गीफ्ट से सफलता को प्राप्त कर लिया।

समझा ! पुछते रहे हो न कि आखिर क्या हैं ? सो सुना दिया। अपने अनुभव में दीदी यही बोल, बोल रही थी की सदा बाप और दादा की अंगुली पकडो या अंगुली दो।चाहे बच्चा बना के अंगुली पकडो, चाहे बाप बनाकर अंगुली दो। दोनों रुप से हर कदम में अंगुली पकड साथ का अनुभव कर चलना यही मेरी सफलता का आधार हैं।

हिंमत रख आदि में सहन करने का सबुत तो यही आदि रतन हैं। विघ्न विनाशक बन निमित्त बन, निमित्त बनाने के कार्य मे अमर रहे हैं। ऐसे स्थापना के आवश्यक्ता के समय के यह आदि रतन सहयोगी हैं। इसलिये ऐसे निमित् बननेवाली आत्माओं को, आई वेल पर सहयोगी बनानेवाली आत्माओं को ऐसी कोई भी मुश्किल की बेला आती है तो बापदादा भी उन्हे उसका रीटर्न देता हैं। इसलिये आप सभी जो भी ऐसे समय पर निमित्त बने हो उसीकी ये एक्स्ट्रा गीफ्ट ड्रामा में नुंधी हुई हैं। इसलिये एक्स्ट्रा गिफ्ट के अधिकारी हो।

4-3-86

<u>सर्व श्रेष्ठ नई रचना का फाउन्डेशन - "स्नेह"</u>

इस समय आप परमात्म प्रिय ब्राह्मण सो फरिश्ता आत्मायें हो। इस समय की श्रेष्ठता के आधार पर सारा कल्प श्रेष्ठ रहते हो। सतयुग, त्रेता में होंगे राज्य अधिकारी, परम श्रेष्ठ दैवी आत्मायें और द्वापर से अब कलियुग

तक बनते हो पूज्य आत्मायें। तो ऐसे इस समय आप बाप के बने अर्थात श्रेष्ठ बने तो उसका फाउन्डेशन क्या रहा ? उसका फाउन्डेशन है बाप का स्नेह, परिवार का स्नेह, दिल का स्नेह, निश्वार्थ स्नेह, जिसने आपको श्रेष्ठ आत्मा बनाया। सेवा की पहली सफलता का स्वरुप भी स्नेह ही रहा। जब स्नेह में बाप के बन जाते हो तो फिर कोई भी ज्ञान की पोईन्ट सहज स्पष्ट होती जाती हैं। जो स्नेह में नहीं आता तो वह सिर्फ ज्ञान को धारण कर आगे बढने में समय भी लेता, महेनत भी लेता। क्योंकि उनकी वृत्ति 'क्युं', 'क्या', 'ऐसा कैसे ?' इसमें ज्यादा चली जाती। और स्नेह में जब लवलीन हो जाते तो स्नेह के कारण बाप का हर बोल स्नेही लगता। कोइ क्वेश्चन नहीं उठता।

बाप भी बच्चों को सदैव स्नेह से याद करते हैं, स्नेह से बुलाते हैं, स्नेह से ही सर्व समस्याओं से पार कराते हैं। तो ईश्वरीय जन्म अर्थात ब्राह्मणजन्म का फाउन्डेशन है ही स्नेह, जिससे कभी भी कोई मुश्किल बात नहीं लगेगी। स्नेह के कारण श्रीमत पर चलने का उमंग उत्साह रहेगा। बापने मेरे प्रति कहा हैं और मुजे करना ही है यह है स्नेही आशिक आत्माओं की स्थिति।

मुलाकात

सदा अमरभव की वरदानी आत्मायें हो ऐसा अनुभव करते हो न ? जिनका बापसे अटुट स्नेह है वह अमरभव के वरदानी है और सदा बेफिकर बादशाह हैं। किसी भी कार्य के निमित्त बनते भी बेफिकर रहना यही विशेषता हैं। जैसे बाप निमित्त तो बनता हैं न ! लेकिन निमित्त बनते भी न्यारा है इसलिये बेफिकर हैं। स्नेह के आधार पर बाप सदा सेइफ कर सदा आगे उडाकर ले जा रहा हैं। यह भी अटल निश्चय है न ? बापदादा ने माताओं को एक शब्द की बहोत सहज बात बताई हैं, वह हैं "मेरा बाबा" मेरा बाबा कहा और सब खजाने मिले। यह "बाबा" शब्द ही सर्व खजानों की चाबी हैं। बस बाबा बाबा कहते रहो, तो अभी भी बालक सो मालिक और भविष्य में भी मालिक। सदा ईसी खुशी में नाचते रहो।

7-3-86

जैसे ब्रह्माबाप ने पहला पहला कदम क्या उठाया ? मैं और मेरापन का

तिलकधारी भी बनना पडे। फिर जैसे स्मृति का तिलक लगा और तख्तनशीन हुए और स्वयं भी नशे में रहेंगे। और दूसरो को भी नशे की स्मृति दिलायें। भविष्य राज्य तख्तनशीन का आधार भी वर्तमान पर हैं। अगर अभी सदा तख्तनशीन हैं तो वहां भी सदा राज्य अधिकारी बनेंगे। तो यह दिलतख्त भी बापका वर्सा हैं। वर्सा तो सदा साथ रखेंगे ना ! तो बापके दिलतख्तनशीन सो बेफिकर बादशाह - यह स्मृति को बार बार इमर्ज करते रहो। सदा यह नशा रहे कि हम साधारण आत्मायें नहीं हैं। लेकिन विशेष आत्मा हैं। आप जैसी विशेष आत्मायें सारे विश्व में बहोत थोडी हैं। तो इसी खुशी में सदा रहो।

मुलाकात

भाग्यविधाता बाप के बच्चे होने के कारण सभी के मस्तक पर श्रेष्ठ भाग्य की लकीर नुंधी हुई हैं। तो सदा अपने श्रेष्ठ भाग्य की लकीर को देख हर्षित रहते हो और सदा रहते रहेना।

यह श्रेष्ठ भाग्य अनेक जन्म साथ रहेगा इसकी गेरंटी हैं। दुनियावाले कहेते हैं - हाथ खाली आये, हाथ खाली जायेंगे। लेकिन आप कहेते हो भाग्य विधाता के बच्चे भरकर जायेंगे। यह निश्चय है न ? भाग्य के अनुभव को सदा आगे बढाते रहो। स्मृति रखना माना बढाना। बापदादा भी हरेक बच्चे के भाग्य को देख हर्षित हो रहे हैं। क्युंकि आप ब्राह्मण आत्माओं के श्रेष्ठ भाग्य से उंचा भाग्य किसका हैं ?

मुलाकात

संगम युग को विशेष वरदान हैं सहज प्राप्ति का, महेनत कम और सफलता ज्यादा। इसलिये नाम भी हैं सहज योगी। बिना महेनत के सदा काल के लीये सर्व प्राप्ति करने के अधिकारी बन गये। सबसे बडे ते बडी प्राप्ति - बाप मिला, सबकुछ मिला। जब बाप साथ हैं और बाप से प्यार हैं तो उसका साथ छोडा जाता हैं क्या ? क्युंकि बापदादा आते ही हैं सब सहज करने के लिये।

26-3-93

सदा अपने को बेफिकर बादशाह अनुभव करते हो ? जब बापने आपकी जिम्मेवारी ले ली तो जिम्मेवारी का फिकर क्यों ? अभी सिर्फ जिम्मेवारी

हो सकती ? जरुर कोई अलबेलापन वा आलस्य वा पुरानी पास्ट लाईफ के संस्कार ईमर्ज होते है तब मुश्किल अनुभव होता है। जब मरज़ीवा बन गये तो पुराने संस्कार को बिलकुल भुल जाओ। ये पुराने जन्म के है ब्राह्मण जन्म के नहीं है, नया जन्म नये संस्कार।

9-3-93

मुलाकात

सदा अपने को पदमापदम भाग्यवान आत्मायें हैं - यह स्मृति में रखो और खजानों को सदा सामने इमर्ज रुप में रखो। अगर खजानों को सदा सामने रखेंगे तो नशा वा बेहद की खुशी सदा रहेगी। और जीतना खजाना बाटेंगे उतनी खुशी और बढेगी। कितना भी बडा विघ्न आ जाये लेकिन विघ्न खुशी को कम न करे। बापदादाने पहेले भी कहा हैं कि शरीर चला जाये लेकिन खुशी न जाये। तो सदा यह निश्चय, द्रढता रखो कि खुशी कभी नहीं जायेगी। क्युंकि ब्राह्मण जीवन का आधार हैं खुशी। ब्राह्मण जीवन अर्थात खुश रहेना और दूसरों को भी खुशी बांटना। अर्थात दुवाएं देना और दुवाये लेना। दुवायें भी आपको सहज पुरुषार्थी बनने में सहयोगी बन जायेगी। सारे विश्व को अभी इसकी आवश्यक्ता हैं। तो मन बुध्धि को इसमें इतना बीझी रखो जो व्यर्थ संकल्प आवे ही नहीं।

मुलाकात

सदा अपने को बापके दिल तख्त नशीन आत्मायें हैं ऐसा अनुभव करो। क्युंकि ऐसा तख्त सारे कल्प में अब एक ही बार मिलता हैं। बापके दिल तख्त पर बैठने से अपने को बेफिकर बादशाह अनुभव करेंगे। चाहे अपना, चाहे सेवा का, चाहे दूसरों का कोई भी फिकर रहेगा नहीं। सदा दिलतख्त पर बैठनेवाली आत्मा नशे में भी रहती और नशा रहने के कारण स्वत: ही बेफिकर रहती हैं। बापके दिल तख्त की यह विशेषता हैं कि वह सब बातों में बेफिकर करेगा। दिल तख्त को यह भी वरदान मिला हुआ हैं कि कोई भी कार्य करते भी दिलतख्तनशीन बन सकते हैं। इसलिये कभी भी कोई भी बात सामने आये तो फौरन दिलतख्तनशीन बन जाओ। तो वह बात अपनी तरफ खींचेगी नहीं। तख्तनशीन बनने के लिये स्मृति के

समर्पण समारोह। माना किसीभी बातमें मैं के बजाय सदा नेचरल भाषा में, साधारण भाषा में भी बाप शब्द ही सुना, मैं शब्द नहीं। बाबा कह रहा है, मैं कह रहा हुँ-नहीं, बाबा चला रहा है "मैं कहता हुँ - नहीं, बाबा कहता है। हद की कोई भी व्यक्ति या वैभव से लगाव यह मेरापन है। तो मैं पन और मेरापन को समर्पण करना इसको ही कहा जाता है बली चढना।

13-3-86

बापदादा अपने सर्व आधारमूर्त और उद्धारमूर्त बच्चों को देख रहे है। हरेक बच्चा आज के विश्व को श्रेष्ठ, संपन्न बनाने के आधारमूर्त है। आज विश्व अपने आधारमूर्त श्रेष्ठ आत्माओ को भिन्न भिन्न रुप से, भिन्न भिन्न विधि से पुकार रहा है, याद कर रहा है। तो ऐसे सर्व दु:खी अशांत आत्माओ को सहारा देनेवाले, अंचली देनेवाले, सुख:शांति का रास्ता बतानेवाले, ज्ञान नेत्रहीन को दिव्य नेत्र देनेवाले, भटकती हुई आत्माओ को ठिकाना देनेवाले, अप्राप्त आत्माओ को प्राप्ति की अनुभूति करानेवाले, उद्धार करनेवाले आप श्रेष्ठ आत्माए हो। विश्व में चारो ओर किसी न किसी प्रकार की हलचल है। कहाँ धन के कारण हलचल है, कहाँ मन के अनेक टेन्शन का हलचल है, कहाँ कहाँ अपने जीवन से असंतुष्ट होने के कारण हलचल है, कहाँ प्रकृति के तमोप्रधान वायुमंडल के कारण हलचल है, चारो और हलचल की दुनिया है। ऐसे समय पर विश्व के कोने में आप अचल-अडोल आत्मायें हो। दुनिया भय के वश है - और आप निर्भय बन सदा खुशी में रहेते हो। अगर दुनिया अल्पकाल के लिए खुशी के साधन, नाचना, गाना, वा और भी अनेक साधन अपनाती है तो वह अल्पकाल के साधन और ही चिंता की चिता पर ले जा रहे है। ऐसी विश्व की आत्माओं को, अभी श्रेष्ठ अविनाशी प्राप्तियों की अनुभूति का आधार चाहिये। अल्पकाल के आधार से, अल्पकाल की प्राप्तियों से, विधियों से, सभी देख-देख थक गये है। अभी ऐसी आत्माओ को यथार्थ सहारा, वास्तविक सहारा, अविनाशी सहारा बतानेवाले कौन ? आप सभी हो ना ?

दुनिया के अंतर में आप सभी अल्प हो, बुहत थोडे हो लेकिन कल्प पहले के यादगार में भी अक्षेणी के सामने **5** पांडव ही दिखाते है। सब से

बडे ते बडी ओथोरीटी आपके साथ है। साईन्स की आथोरीटी, शास्त्रो की ओथोरीटी, राजनीति की ओथोरीटी, धर्मनीति की ओथोरीटी, अनेक ओथोरीटी वाले अपनी अपनी ओथोरीटी प्रमाण दुनिया को परिवर्तन करने की ट्रायल कर चुके। कितने प्रयत्न किये है। लेकिन आप सभी के पास कौन सी ओथोरीटी है ? सबसे बडी परमात्म अनुभूति की ओथोरीटी है। अनुभव की ओथोरीटी से श्रेष्ठ और सहज किसी को भी परिवर्तन कर सकते हो तो आप सब के पास यही विशेष अनुभव की ओथोरीटी है। इसलीये फलक से, निश्चय से, नशे से, निश्चित भाव से कहते है और कहेंगे कि सहज रास्ता, यथार्थ रास्ता एक है, एक द्वारा ही प्राप्त होता है। और सर्व को एक बनाता है। यही सभी को संदेश देते हो ना ? देखो बापदादा के साथ निमित्त कौन बने है ? है विश्व के आधार लेकिन बने कौन है ? साधारण। जो दुनिया के लोगो की नजरो में है वह बाप की नजरो में नहीं है और जो बाप की नजरो में है वह दुनियावालो की नजरो में नहीं है। आपको देखकर पहले तो मुस्कुरायेंगे कि यह है ? लेकिन दुनियावाले करते वह बाप नहीं करते। उन्हो को नामीग्रामी चाहिये और बाप को जिनका नाम-निशान खत्म कर दिया उनका ही नाम बाला करना है। असंभव को संभव करना है। साधारण को महान बनाना है। निर्बल को महान बलवान बनाना है, दुनिया के हिसाब से जो अनपढ है उन्हों को नोलेजफुल बनाना यही बाप का पार्ट है। इसलिये बापदादा बच्चों की सभा को देखकर के मुस्कराते भी है कि सब से श्रेष्ठ भाग्य प्राप्त करनेवाले यही सिकलधे बच्चे निमित्त बन गये। अब दुनियावालों की नजर धीरे धीरे और सब तरफ से हटकर एक तरफ आ रही है। अभी समजते है जो हम नही कर सकते वह बाप गुप्त रुप में कर रहे है।

10-3-86

बाप के उपर जिम्मेवारी दे दी तो बेफिकर हो गए। अपने उपर जिम्मेवारी समजने से फिकर होता है। जिम्मेवारी बाप की है और मैं निमित्त सेवा धारी हुँ, मैं निमित्त कर्मयोगी हुँ, करन करावनहार बाप है। निमित्त करनहार मैं हुँ। अगर यह स्मृति हर समय स्वत: रहती है तो सदा ही बेफीकर बादशाह है। अगर गलती से भी किसी के व्यर्थ भाव का अपने उपर बोज उठा लेते

किस का रंग लगा ? बाप का न ? तो बाप के संग का रंग जितना पक्का लगता है उतना ही होली बन जाते हो। संपूर्ण पवित्र बन जाते हो। संग का रंग तो सहज है ना ? संग में रहो रंग आपे ही लग जायेगा। महेनत करने की भी आवश्यक्ता नहीं। संग में रहना आता है कि अकेला रहना ? अकेलापन महेसुस करना जल्दी आता है ? कभी कभी कम्प्लेईन आती है ना कि मैं अपने को एलोन महेसुस करती हुं। क्यों अकेले रहेते हो? क्यों अकेलापन महेसुस करते हो ? आदत है इसलिये ? ब्राह्मण आत्मायें एक सेकन्ड भी अकेले नहीं हो सकती ? होना नहीं है लेकिन हो जाते हो ? बापदादा ने स्वयं अपना साथी बनाया फिर अकेले कैसे हो सकते हो? कई बच्चे कहते है कि बाप को कम्पेनीयन तो बनाया लेकिन सदा कंपनी नहीं रहती, क्यों ? कंपेनीयन बनाया है इसमें तो ठीक है सभी से पुछेंगे आपका कम्पेनियन कौन है ? तो "बाबा" ही कहेंगे ना ?

बापदादा ने देखा कि सिर्फ कम्पेनीयन बनाने से भी काम नहीं चलता, कभी कभी फिर भी अकेले हो जाते हो, अभी और क्या युक्ति अपनाये? कम्पेनियन बनाया है लेकिन कम्बाईन्ड नहीं बने हो। कम्बाईन्ड स्वरुप कभी अलग नहीं होता। कम्पेनीयन से कभी कभी फ्रेन्डली कवोरल (जगडा) भी हो जाता है तो अलग हो जाते हो। कभी कभी कोई ऐसी बात हो जाती है ना तो बाप से अकेले बन जाते हो। कम्पेनीयन तो बनाया है लेकिन कम्पेनीयन को कम्बाईन्ड रुप में अनुभव करो। अलग हो ही नहीं सकते। किसी की ताकत नहीं जो मुज कम्बाईन्ड रुप में अलग कर सके। ऐसा अनुभव बारबार स्मृति में लाते लाते स्मृति स्वरुप बन जाओ। **बारबार चेक करो कि कम्बाईन्ड स्म का अनुभव बढाते जायेंगे उतना ब्राह्मण जीवन बहुत प्यारी मनोरंजक अनुभव होगी। सदैव याद रखो - संग के रंग की होली से होलीएस्ट और हाईएस्ट सहज बनना है। मुश्किल नहीं सहज। परमात्म संग कभी मुश्किल अनुभव कराता ? बापदादा कभी बच्चों को महेनत या मुश्किल अनुभव नहीं कराता। बापदादा को भी बच्चों की महेनत या मुश्किल अनुभव करना अच्छा नहीं लगता।** मास्टर सर्वशक्तिमान या सर्वशक्तिवान के कम्बाईन्ड रुप और फिर मुश्किल कैसे

बेफिकर होते हैं। क्युंकि बाप दाता हैं तो दाता के बच्चों को क्या फिकर हैं ? सदा हर सेकन्ड दूसरों में उत्साह भरते रहो और सर्व की दुवाएं लेते रहो। आपकी दुवाओं से सदा सर्व आत्मायें सुखी हो जायेगी। वो दिन आया की आया-जब सभी आत्मायें बापके झंडे के नीचे, छत्रछाया के नीचे खडी होगी। तो चारों और के बच्चों को, दिल में रहेनेवाले बच्चों को मुबारक हो।

7-3-93

सदैव यह स्मृति में रहे कि हर समय एवररेडी रहना है। किसी भी समय कोई भी परिस्थति आ जाये लेकिन सदा एवररेडी रहेंगे। कल भी विनाश हो जाय तो तैयार हो ? संपन्न हुए हो ? नहीं। तो एवररेडी कैसे ? क्योंकि ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य है, संपूर्ण बनना। एवररेडी अर्थात संपूर्ण। तो कितना टाईम चाहिये ? एवररेडी तो हो ना ! अगर एवररेडी होंगे तो टाईम कोन्सियस नहीं होंगे। बाप के बन गये तो सिवाय बाप के और कोई है क्या ? तो क्या तैयार होना है ? "एक बाप, दुसरा न कोई" यही तो तैयारी है ना ? फिर क्यों कहते हो - एक साल चाहिये, दो साल चाहिये। जब एक ही है तो एक के तरफ मनमनाभव हो गये ना ? तो एवररेडी होना कोई महेनत नहीं।

अनेको को याद करना मुश्किल होता है, एक को याद करना तो सहज है। जब बाप के तरफ बुद्धि लग गई तो बाकी क्या करना है ? यही तो पुरुषार्थ है, फिर क्या मुश्किल है ? जब है ही बाप याद, तो बाप की याद में माया कुछ नहीं कर सकती। आ सकती है क्या माया ? एवररेडी होकर के सेवा करेंगे तो सेवा में भी और सहयोग मिलेगा। सहज होती जायेगी, सफलता मिलेगी। तो सदा ये स्मृति में रखो कि है ही एक बाप-दुसरा कुछ है ही नहीं। अगर वन बाप है तो विन जरुर है। ऐसे सहजयोगी हो ना ? जब सर्वशक्तिमान बाप साथ है तो सदा ही जहां बाप है वहां विजय है ही। कल्प कल्प के विजयी हुं अभी भी है और सदा रहेंगे ये स्मृति है ना ?

7-3-93

सबसे अच्छे ते अच्छा श्रेष्ठ रंग कौन सा है ? सबसे अविनाशी रंग है बाप के संग का रंग ? जैसा संग होता है ना वैसा रंग लगता है। आपको

हो तो ताज के बजाय फिकर के अनेक टोकरे सिर पर आ जाते है। नहीं तो सदा लाईट के ताजधारी बेफिकर बादशाह हो। "बस बाप और मैं तिसरा न कोई" यह अनुभुति सहज बेफिकर बादशाह बना देती है। जब तक ऐसे बादशाह नहीं बने है तब तक यह कर्मेन्द्रिया भी अपने वश में नहीं रह सकती है। ऐसे राजा बनते हो तब ही मायाजीत, कर्मेन्द्रियाँजीत, प्रकृतिजीत बनते हो।

19-3-86

डबल विदेशीयों का एक शब्द - थेंक्यु - थेंक्यु - थेंक्यु सुनकर के बापदादा मुस्कुराते रहते हैं। क्योंकि सबसे पहले शुक्रिया दिल से बाप का ही मानते हैं। ब्राह्मण जीवन में भी पहला शुक्रिया स्वत: ही बाप के प्रति नीकलता हैं। उठते बैठते अनेकबार थेंक्यु कहेते हो, ये भी एक विधी हैं बापको याद करने की।

बापदादा को कोई हीरे मोती तो चाहिये नहीं। बापको स्नेह की छोटी वस्तु ही हीरे रतन हैं। इसलिये सुदामा के कच्चे चावल गाये हुए हैं। इसका भावार्थ यही हैं कि स्नेह की छोटी सी सुई में भी मधुबन याद आता हैं तो वह भी बहोत बडा अमूल्य रतन हैं। क्यों ? स्नेह का दाम हैं। वेल्यु स्नेह की हैं, चीज की नहीं। अगर कोई वैसे ही भले कितना भी दे देवे लेकिन स्नेह नहीं तो उसका जमा नहीं होता। और स्नेह से थोडा भी जमा करे तो उनका पदम जमा हो जाता हैं। तो बापको स्नेह पसंद हैं।

27-6-86

आप रुहानी शक्ति-पांडव सेना सदा विजय के निश्चय और नशे में रहते हो ना ? और कोई भी सेना लडाई करती है तो विजय की गेरंटी नहीं होती हैं। उसको निश्चय नहीं होता कि विजय निश्चित ही हैं। लेकिन आप रुहानी शक्ति सेना सदा इस निश्चय के नशे में रहेते की न सिर्फ अब के विजयी हैं लेकिन कल्प कल्प के विजयी हैं। अपनी कल्प पहेले की पांडवो की विजय की यादगार कथा (महाभारत) अभी भी सुन रहे हो और अपने विजय के चित्र भी देख रहे हो। भक्त भी आपके विजय का गायन करते हैं कि प्रभु प्रीत बुद्धि विजयन्ती, विपरीत बुद्धि विनश्यंति। तो कल्प पहेले

का आपका गायन कितना प्रसिध्ध हैं। **विजय निश्चित होने के कारण निश्चय बुध्धि विजयी हो। इसलिये माला को भी विजयी माला कहेते हैं।** तो निश्चय और नशा दोनो है न ? कोई भी अगर पुछे तो निश्चय से कहेंगे की विजय तो हुई ही पडी हैं। स्वप्न में भी यह संकल्प नहीं उठ सकता कि पता नहीं विजय होंगी या नहीं। लेकिन हुई ही पडी हैं। पास्ट कल्प और भविष्य कल्प को भी जानते हो। अनेकबार देख चुके हो। कोई नई बात हो तो सोचे भी और देखे भी। यह तो अनेकबार की बात अब रीपीट कर रहे हैं। तो ऐसे निश्चयबुध्धि ज्ञानी तु आत्मायें, योगी तु आत्मायें हो ना ?

23-1-87

मुलाकात

वैराग अर्थात लगाव न हो। अगर लगाव होता है तो बुद्धि का झुकाव होता हैं। लगाव की तरफ बुद्धि जरुर जायेगी। इसलिये आप राजऋषि और राजे के साथ साथ बेहद के वैरागी भी हो। किसी भी प्रकार का लगाव ऋषि और तपस्वी बनने नहीं देगा। लगाव से ही तपस्या भंग हो जाती। इसलिये कोई भी संबंध में लगाव न हो। माताओं को पोत्रे धोत्रे अच्छे लगते हैं। इसलिये थोडा लगाव हो जाता हैं। तो फिर पांडवो का कमाने में, पैसा ईकठ्ठा करने में लगाव हो जाता हैं। समझते हैं जेब में पैसा तो होना चाहिए न! लेकिन जो बापकी लगन में रहते हैं वह लगाव में नहीं रहेते, उसको सब सहज प्राप्त होता हैं। ब्राह्मण जीवन में धन में इतनी वृद्धि हो जाती हैं जो दस रुपिया भी सो बन जाता हैं। प्रगति होने से दस, सो का काम करता हैं, जबकी वहां सो, दस का काम करेगा। क्योंकि अभी आप एक नामी के अवतार हो गये ना! तो व्यर्थ बच गया और समर्थ पैसा, ताकातवाला पैसा हैं। काला पैसा नहीं हैं, सफेद हैं इसलिये शक्ति हैं।

20-2-87

कई बच्चों को संपुर्ण पवित्रता की स्थिति में आगे बढने में महेनत लगती हैं। इसलिये बीच बीच में कोई को कम्पेनियन बनाने का और कम्पनी में रहेने की आवश्यक्ता का संकल्प आता हैं। फिर कहते सन्यासी तो नहीं बनना हैं ना! लेकिन आत्माओं की कम्पनी में रहेते बाप की कम्पनी को

कितना भी मुश्किल कार्य हो यह एक खेल लगता है। एक बल एक भरोसे की निशानी है खुश रहेंगे, महेनत नहीं लगेंगी। **'एक भरोसा-एक बल' द्वारा असंभव काम भी संभव दिखाई देगा। ब्राह्मण जीवन में कोई भी चाहे स्थुल काम, चाहे आत्मिक पुरुषार्थ का काम लेकिन कोई भी असंभव नहीं हो सकता।** ब्राह्मणो की डिक्शनेरी में असंभव मुश्किल, महेनत ये शब्द है नहीं। जब बाप का साथ छोड देते हो, अकेले करते हो तो बोज भी लगेगा, महेनत भी लगेगी, मुश्किल और असंभव लगेगा। बाप को साथ रखा तो पहाड भी राई बन जायेगा। उसको कहते है एक बल, एक भरोसावाले। ऐसी आत्मा कभी भी संकल्प मात्र में नहीं सोच सकती कि क्या होगा ? कैसे होगा ? लेकिन सदा विजयी होंगी क्योंकि सर्वशक्तिमान बाप साथ है।

18-2-93

उडती कला का क्या साधन है ? बिन्दु रुप में रहना। डबल लाईट। बिन्दु तो है लेकिन कर्म में भी लाईट। डबल लाईट हो तो जरुर उडेंगे। आधाकल्प बोज उठाने की आदत होने कारण बाप को बोज देते हुए भी कभी कभी उठा लेते है। तंग भी होते हो लेकिन आदत से मजबुर हो जाते हो। कहते हो तेरा लेकिन बना देते मेरा। स्व-उन्नति के लिये या विश्व सेवा के लिये कितना भी कार्य हो वह बोज नहीं लगेगा। लेकिन मेरा मानना अर्थात बोज होना। तो सदैव क्या याद रखो ? मेरा नहीं, तेरा। मन से, मुख से नहीं। मुख से तेरा तेरा भी कहते रहते है और मन से मेरा भी मानते रहते है। ऐसी गलती नहीं करना।

18-2-93

मुलाकात

अभी संगमयुग पर एक है स्वराज्य अधिकारी और दूसरा बनते हो बेफिकर बादशाह। बेफिकर बनने से भंडारे भरपूर हो गये तो सदैव चलते फिरते यह स्मृति सदा रखो कि मैं स्वराज्य अधिकारी बेफिकर बादशाह हुँ। बाप आया ही हैं सबकी फिकर लेने के लिये। तो सब फिकर बापको दे दो। मन वा बुध्धिरुपी पोकेट में छिपाकर नहीं रखो। जब है ही बापके बच्चे तो बच्चे

एक्टर समजते हो ? उंचे ते उंचे बाप के साथ पार्ट बजानेवाले उंचे ते उंचे एक्टर हो गये ना ? यह नशा रहे।

भारतवाले तैयार हो ? कल विनाश हो जाये। ईतने संपन्न बने हो ? एवररडी बनना ही सेफ्टी का साधन है। अगर समय मिलता है तो संगमयुग की मौज मनाओ। **लेकिन रहो एवररेडी क्योंकि फाईनल विनाश की डेट कभी भी पहले मालुम नहीं पडेगी। अचानक होना है। एवररेडी नहीं होंगे तो धोखा खा जायेंगे। इसलिये एवररेडी बनो। सदा ये याद रखो कि हम और बाप सदा साथ है। तो जैसे बाप संपन्न है वैसे साथ रहनेवाले संपन्न हो जायेंगे। जब साथ का अनुभव करेंगे तो निरंतर योगी सहज बन जायेंगे। सदा साथ है, साथ रहेंगे और स्वीट होम में साथ चलेंगे। जो कंपेनीयन होंगे वो साथ चलेंगे - बाराती होंगे, देखनेवाले होंगे तो पीछे पीछे चलेंगे।** तो समान बननेवाले ही साथ चलेंगें तो यह प्लान बनाओ कि समान बनना ही है और साथ चलना ही है। अच्छा।

18-1-93

कुछ भी करो लेकिन अपना ओक्युपेशन नहीं भुलो। जैसे आपके यादगारों में भी दिखाया है कि पांडवोने गुप्त वेश में नौकरी की। लेकिन नशा क्या था ? विजय का। तो आप भी गवर्मेन्ट सर्वन्ट बनते हो ना, नौकरी करते हो, लेकिन नशा रहे - विश्व कल्याणकारी हुँ। तो इस स्मृति से स्वत: ही समर्थ रहेंगे और सदा सेवाभाव होने के कारण सेवा का फल और बल मिलता रहेगा। **निमित्त भाव बोज को खतम कर देता है। मेरी जीम्मेवारी है, मेरे को संभालना है, मेरे को ही सोचना है तो बोज होता है। जीम्मेवारी बाप की है और बापने ट्रस्टी अर्थात निमित्त बनाया है। मेरा है तो बोज आपका है। तेरा है तो बोज बाप का है।** इस में कई चालाकी करते है, कहेंगे तेरा, लेकिन बनायेंगे मेरा, कभी भी किसी भी कार्य में अगर बोज महेसुस होता है तो यह निशानी है कि तेरे के बजाय मेरा कहते है तो यह गलती कभी नहीं करना.... अच्छा... ।

18-1-93

जितना एक बाप में भरोसा अर्थात निश्चय है तो बल भी मिलता है और

भूल नहीं जाओ। नहीं तो समय पर उस आत्मा की कम्पनी याद आयेगी, और समय पर धोखा मिलना संभव हैं। क्योंकि साकार शरीरधारी के सहारे की आदत होगी तो अव्यक्त बाप और निराकार बाप पीछे याद आयेगा, पहले शरीर धारी याद आयेगा। ऐसे अगर किसी भी समय पहले साकार का सहारा याद आया तो नंबरवन वह हो गया और दुसरा नंबर बाप हो गया। जो बापको दुसरे नंबर में रखते तो उसको पद क्या मिलेगा - नंबर वन या टु ? सिर्फ सहयोग लेना, स्नेह रहना वह अलग चीज हैं लेकिन सहारा बनाना अलग चीज हैं। यह बहोत गुह्य बात हैं। कर्मयोगी बनना हैं, कर्म सन्यासी नहीं। इसलिये संगठन में रहेना हैं, स्नेही बनना है लेकिन बुद्धि का सहारा एक बाप हो दुसरा न कोई। बुद्धि को कोई आत्मा का साथ या गुण या कोई विशेषता आकर्षित नहीं करे इसको कहते हैं पवित्रता। इसलिये बापदादाने ब्राह्मण जन्म होते ही कम्पेनियन का अनुभव करा लिया और सुहागीन बना लिया।

18-3-87

<u>सच्चे स्नानी आशिक की निशानीयाँ</u>

बापदादा अपने हरेक आशिक आत्माओं को देख हर्षित होते हैं कि कैसे रुहानी आकर्षण से आकर्षित हो अपने सच्चे माशुक को जान लिया, पा लिया हैं। खोये हुए आशिक को देख माशुक भी खुश होते हैं कि फिरसे अपने यथार्थ ठीकाने पर पहुँच गये। ऐसा सर्व प्राप्ति करानेवाला माशुक और कोई मिल नहीं सकता। ऐसा माशुक और कोई मिल नहीं सकता। ऐसे माशुक के सच्चे आशिक की पहली निशानी हैं - बाप से सर्व संबंधो की अनुभूति। अनुभूति समय पर हो और दिल की अनुभूति हो। **दिलाराम बापदादा सच्चि दिल पर राजी हैं। सिर्फ तीव्र दिमागवालों पर नहीं। ईसलिये दिल का अनुभव दिल जाने, दिलाराम जाने। नोलेज को समाने का स्थान दिमाग हैं, लेकिन माशुक को समाने का स्थान दिल हैं।** कोई कोई आशिक दिमाग ज्यादा चलाते हैं लेकिन दिल से दिमाग की महेनत आधी हो जाती हैं। जो दिल से सेवा या याद करते उन्हों की महेनत कम और संतुष्टता ज्यादा होती। चाहे कभी सफलता भी हो जाये तो भी दिल की

संतुष्टता कम होगी। यही सोचते रहेंगे की हुआ तो अच्छा लेकिन फिर भी फिर भी... करते रहेंगे। और दिलवाले सदा संतुष्टता के गीत गाते रहेंगे।

दुसरी निशानी सच्चे आशिक हर परिस्थिति मे, हर कर्म में सदा प्राप्ति की खुशी में रहेगा। सर्व संबंधो का अनुभव यह है प्राप्ति।

तीसरी निशानी सच्चा आशिक सदा तृप्त रहेगा। वैसे देखो तो तृप्त आत्मा बहोत थोडी रहती हैं। कोई न कोई बात में चाहे मान की, चाहे शान की भूख होती है, जो कभी तृप्त रहने नहीं देती हैं। मन की भूख हैं, शान, मान, सेल्वेशन, साधन। संतुष्टता हैं तृप्ति की निशानी। रोयल आत्माओं की निशानी सदा ही भरपुर होंगे। एक रोटी में भी तृप्त, तो छत्तीस प्रकार के भोजन में भी तृप्त। और जो अतृप्त होंगे वह छत्तीस प्रकार के भोजन मिलते भी तृप्त नहीं होंगे। क्योंकि मन की भूख हैं। इसलिये रुहानी माशुक के आशिक हो तो संतुष्टता कभी नहीं छोडो सेवा छोड दो लेकिन संतुष्टता नहीं छोडो। जो सेवा असंतुष्ट बनावे वह सेवा, सेवा नहीं। तो तीन निशानीयां हैं - अनुभूति, प्राप्ति और तृप्ति

18-3-87

संगम युग में जो खुशीयों की खाण मिलती हैं, वह और किसी युग में प्राप्त नहीं हो सकती। इस समय बाप और बच्चों का मिलन हैं जिस में बापके रुप में वर्सा, और सतगुरु के रुप में वरदान देते हैं। दोनों प्राप्तियों में महेनत नहीं हैं इसलिये टाईटल ही हैं सहजयोगी। क्योंकि ओलमाईटी ओथोरीटी बाप बन जाय, सतगुरु बन जाये... तो सहज नहीं होगा ? यही अंतर परम आत्मा और आत्माओं का हैं। कोई महान आत्मा भी हो, लेकिन प्राप्ति कराने के लिये कुछ न कुछ महेनत जरुर देंगी। इसलिये बापदादा बच्चों की महेनत देख नहीं सकते। जब बाप से थोडा भी, संकल्प में भी किनारा करते हो तब महेनत होती हैं। उसी सेकन्ड में मुश्किल सहज अनुभव हो जायेगी। क्योंकि बापदादा आये ही हैं बच्चों की थकावट उतारने। ६३ जन्म ढुंढा, भटके, अब बापदादा मन की और तन की थकावट और धन की उलझन के कारण भी, जो थकावट थी वह उतार रहे हैं। जो अति प्यारे बच्चे होते हैं उन्हों के लिए कहावत हैं - नैनों पर बीठाके ले जाते हैं। तो इतने

विजयी होते है वे ही माला में पिरोने के अधिकारी है। चाहे सेवा के क्षेत्र में भाषण नही कर सकते। **Plan** नही बना सकते लेकिन जो हरेक से संबंध संपर्क में शुभ भाव रख सकते है तो यह शुभ भाव सुक्ष्म सेवा भाव में जमा हो जायेगा। क्योंकि ऐसे ही शुभ भाव वाला सदा सभी को सुख देगा-सुख लेगा। तो यह भी सेवा है। तो सेवा भाव नंबर आगे लाने का अधिकारी बना देगा। इसलिए माला का मणका बन जायेंगे। तो इस वर्ष में विशेष शुभ भावना और श्रेष्ठ भाव धारण करने का विशेष **Attention** रखना। वर्तमान समय इसी पुरुषार्थ की विशेष आवश्यक्ता है। और यही सेवा माला के मणकों को समीप लाये माला को प्रसिध्ध करेगी।

9-1-93

ऐसे नहीं समजना की भविष्य में जीवनमुक्त होंगे। अभी जीवनमुक्त होना है। इस समय ही जीवनमुक्त और जीवनबंध का ज्ञान है। सतयुग में यह ज्ञान नहीं होगा। मजा है तो इस समय का है। जीवनबंध का भी अनुभव किया और जीवनमुक्त का भी अनुभव कर रहे हो। सदा जीवनमुक्त रहने का सहज साधन आता है ना ? दुनियावाले तो बहुत कठीन तप करते है मुक्ति प्राप्त करने के लिये। और आपको सहज मीला ना ! 'मेरा बाबा' कहा और बंधन खतम। जो सहज होता है उसको सदा अपनाया जाता है और जो मुश्किल होता है उसे सदा नहीं कर सकते है। तो यही याद रखना कि हम ब्राह्मण आत्मा जीवनमुक्त आत्मा है। पांडवो को फिकर रहता है ? कभी व्यापार ठीक होगा या नहीं। कल देश में शांति होगी या अशांति... यह फिकर रहता है ? कभी बच्चे अच्छी तरह से संभाल सकेंगे या नहीं - यह माताओ को फिकर रहता है ? दुनिया में कुछ भी हो लेकिन अशांति के वायुमंडल में आप शांत स्वरुप आत्मायें तो औरो को भी शांती देनेवाले हो। या अशांति होगी तो आप भी गभरा जायेंगे ? आपके घर के बाहर बहुत हंगामा हो रहा हो तो आप उस समय क्या करते हो ? याद में बैठ जाते हो ना ? बाप को याद करके शांति लेकर देना यह सेवा करो।

9-1-93

सदा अपने को इस सृष्टि ड्रामा कि बेहद स्टेज पर पार्ट बजानेवाले हिरो

सकता।

31-12-92

सदा अपने को बेफिकर बादशाह अनुभव करते हो ? क्योंकि फिकर तब होता है जब मेरापन है। जब सारा बाप के हवाले कर दिया तो बेफिकर हो गये ना ? सबकुछ बाप को देकर बेफिक र बादशाह बन गये। न अपनी देह है, न देह के संबध है - तो बेफिकर हो गये ना ? सब प्रकार का फिकर बाप को दे दिया। बेफिक र बनने के कारण फिकर खतम हुआ और फकुर यानी नशा आ गया। क्या होगा ? कैसे होगा ? कल क्या होगा ? परसो क्या होगा ? यह फिकर रहता है ? जब हालतें खराब होती है तब होता है! फिकर रखने से जो भी अच्छा कर सकते है वो भी नहीं कर सकते। जिसको फिकर होता है उसकी बुद्धि यथार्थ निर्णय नहीं करती है। निर्णय ठीक न होनेकारण और ही मुश्किलात बढती जाती है। इसलिये सदा बेफिकर होंगे तो बुद्धि निर्णय अच्छा करेंगी। इसलिये बेफिकर अर्थात मन-बुद्धि से फ्री हो।

9-1-93

जीवन में उडती कला वां गीरती कलाका आधार दो बातें ही है - **(1)** भावना और **(2)** भाव। अगर किसी भी कार्य में कार्य प्रति वा कार्य करने वाले व्यक्ति के प्रति भावना श्रेष्ठ है तो भावना का फल श्रेष्ठ स्वत: ही होता है। एक है सर्व प्रति कल्याण की भावना, दुसरी है कोई कैसा भी हो लेकिन सदा स्नेह और सहयोग देने की भावना, तीसरी है सदा हिंमत-उल्लास बढाने की भावना, चोथी हैं कोई कैसा वा कौन भी हो लेकिन सदा अपनेपन की भावना और पांचवी है इन सबका **foundation**-आत्मिक स्वरुप की भावना। तो अव्यक्त बनना अर्थात् ये सर्व सदभावनायें रखना। यह सब भावना मंसा सेवा का श्रेष्ठ साधन है और श्रेष्ठ भाव संबंध संपर्क में सर्व के प्यारे बनने का सहज साधन है। जो सदा हरएक से श्रेष्ठ भाव धारण करता, वो ही माला का समीप मणका बन सकता है, क्योंकि माला संबंध संपर्क में समीप और श्रेष्ठता कि निशानी है। कोई किसी भी भाव से बोले वा चले लेकिन आप सदा हरेक के प्रति शुभ भाव-श्रेष्ठ भाव धारण करो। जो इसमें

हल्के बनो जो बाप नैंनो पर बिठाकर ले जाये। जब बाप बोज उठाने के लिए तैयार है तो आप बोज क्युं उठाते हो ? बाप से स्नेह की निशानी हैं - सदा हल्के बन बाप की नजरों में समा जाओ। इस समय ऐसे लाईट बनो तो **21** जन्म की गेरंटी है कभी भी किसी भी प्रकार का बोज आ नहीं सकता।

20-3-87

मुलाकात

जहाँ बापकी याद होती हैं वहां बोडी कोन्शियस की उत्पत्ति नहीं हो सकती। जो बापके साथ या पास रहते वो दुनिया के विकारी वाईब्रेशन या आकर्षण से प्रभाव से दुर रहते। जब कहते ही हो "मेरा बाबा" और इतना प्राप्ति करानेवाला और कोई हो नहीं सकता तो फिर साथ कैसे छोड सकते हैं ? सदाबाप के साथ रहना अर्थात साथ रहते रहते बाप समान बन जायेंगे।

5-10-87

संगमयुग का वरदान - संतुष्टता

संगमयुग का विशेष वरदान संतुष्टता हैं जिसका बीज है सर्व प्राप्ति। वरदाता द्वारा एक ही जैसा, एक ही समय पर, एक ही विधी से अखुट खजाना सभी को प्राप्त हैं। वरदाताने वरदान देने में अंतर नहीं रखा। लेकिन प्राप्त हुए खजाने को हर समय, स्मृति में रखो तो सर्व प्राप्ति के फल स्वरुप संतुष्टता और प्रसन्नता का दिल से अनुभव करेंगे। प्राप्तिओं के खजानों को स्मृति स्वरुप बन कार्य में नहीं लगाने से मुख की और दिमाग की खुशी की प्राप्ति होती हैं। लेकिन दिल से खुश नहीं होते। कहाँ - कहाँ बेहद की ईस प्राप्ति को हद की प्राप्ति में परिवर्तन कर देने से, हद की प्राप्ति दिलों में हद डाल देती हैं, जिससे दिल की अविनाशी खुशी नहीं रहती हैं।

संतुष्टता की निशानी-वह मन से, दिलसे, सर्व से, बाप से, ड्रामा से, संतुष्ट होंगे। उनके मन में और तन में सदा प्रसन्नता की लहर दिखाई देगी।

चाहे कोई बात हिसाब-किताब चुक्तु करनेवाली, सामना करने भी आती रहे, चाहे शरीर का कर्म भोग सामना करने आता रहे या चाहे कोई भी परिस्थिति आ जाये लेकिन हद की कामना से मुक्त ऐसी संतुष्ट आत्मा सदा

प्रसन्नता की झलक में चमकता हुआ सितारा दिखाई देगा। प्रसन्न चित्त की निशानी - वह सदा नि:स्वार्थी और सभी को सदा निर्दोष अनुभव करेगा। कोई भी प्रश्न उत्पन्न करके किसी और के उपर दोष नहीं रखेगा। न भाग्य विधात के उपर दोष रखेगा कि ये मेरा भाग्य ऐसा क्युं बनाया, न ड्रामा पर कि मेरा ड्रामा में पार्ट ही ऐसा हैं, न व्यक्ति पर कि, इसका स्वभाव संस्कार ऐसा हैं, न प्रकृति का कि, वायुमंडल ऐसा हैं, न शरीर के हिसाब-किताब पर कि, मेरा शरीर ही ऐसा हैं। प्रसन्नचित्त अर्थात सदा नि:स्वार्थ, निर्दोष द्रष्टि वृत्ति वाले। संगमयुग कि विशेषता हैं संतुष्टता और संतुष्टता की निशानी हैं प्रसन्नता। ब्राह्मण जीवन का सुख ही हैं संतुष्टता और प्रसन्नता। ब्राह्मण जीवन का वर्सा, प्रोपर्टी संतुष्टता हैं और ब्राह्मण जीवन की पर्सनालीटी प्रसन्नता हैं। तो इस अनुभव से कभी वंचित नहीं रहना। अधिकारी हो, जब दाता वरदाता ने खुले दिल से प्राप्तिओं का खजाना दे दिया हैं और दे रहे हैं तो अपनी ईस प्रोपर्टी और पर्सनालिटी को खुब अनुभव में लाओ, और औरों को भी अनुभवी बनाओ।

9-10-87

जब सभी बच्चों का वायदा हैं - 'एक बाप ही संसार हैं' या 'एक बाप दुसरा न कोई' हैं तो स्वत: और सहजयोगी की स्थिति सदा रहेगी न, या महेनत करनी पडेगी ? अगर दुसरा कोई हैं तो वहां बुद्धि चली जाने के कारण महेनत करनी पडती। लेकिन एक बाप ही सबकुछ हैं तो बुद्धि कहीं जा नहीं सकती तो सहज स्वत: अभ्यासी बनो। ऐसे ही सभी राज्य अधिकारी बच्चों के चमकतें हुए चेहरे दिखाई दे। अभी चेहरे पर त्याग दिखाई देता हैं लेकिन साथ साथ भाग्य भी दिखाई दे। आगे जाने का सहज रास्ता हैं - सहज योगी स्वत: योगी बनो। बहोत सहज हैं। जब है ही एक बाप और प्राप्ति ही प्राप्ति हैं तो महेनत क्युं लगेगी ? तो प्राप्ति के समय का लाभ उठाओ।

17-10-87

<u>माला का स्पष्टीकरण</u>

बच्चोंने रुह रुहान में कहा की बाबा कहाँ तक ? बापदादाने कहा कि

कौन सी चावी लगाने से अनुभव होता है ? "मेरा बाबा" यही चावी है। "मेरा" और फिर "बाबा" तो जब मेरा हो गया, तो जो बाप का सो आपका हो गाया। और 'बाबा' कहा अर्थात वर्से के अधिकारी बने। खजाने सभी आत्माओं को प्राप्त है लेकिन खजानों का अनुभव तब कर सकते हो जब दिल से यह स्मृति में रहे की 'मेरा बाबा'। बाप कहते ही वर्सा याद आ जाता है। रायबहादुर भी बने और 'हाँ जी' करनेवाला भी। तो ऐसा करना आता है ? क्योंकि इस ईश्वरीय मार्ग में कभी भी कोई ऐसे कह नही सकता कि मेरी बुद्धि का प्लान बहुत अच्छा है, मेरी राय बहुत अच्छी है, मेरी राय क्यों नहीं मानी गई ? मेरी बुद्धि बहोत अच्छा काम करती है, मेरी बुद्धि को रीगार्ड नहीं दिया गया - तो मेरा है ? जो भी विशेषतायें है, वह मेरी है या बाप की देन है ? तो बाप की देन में मेरापन नहीं आ सकता।

31-12-92

सभी बाप के साथ और हाथ का अनुभव सदा करते हो ? सदा साथ और हाथ अर्थात हर कदम में बाप की मदद का सहज अनुभव होता रहे। जैसे बच्चे को बाप या माँ का साथ होता है तो वो कितना सहज आगे बढता रहता है ? तो ऐसे साथ का अनुभव होता है ? सदा होता है या कभी कभी ? बाप का साथ सहज बनाता है, और बाप का साथ नहीं है, बाप से किनारा है तो मुश्किल होता है। बाप बच्चों को इस समय साथ रहने की ओफर करते हैं। जब बाप ओफर करते है तो ओफर को प्रेक्टीकल में लाना चाहिये ना ? **63** जन्म भिन्न-भिन्न नामरूप में पुकारते रहे। अभी बाप मिला है तो सदा साथ का अनुभव करो। आप सब का ब्रह्मा बाप से कितना प्यार है ब्रह्मा बाप से प्यार है तो ब्राह्मण कल्चर से भी तो प्यार है। सबसे श्रेष्ठ दृष्टि है अनुभव की। अनुभव के नेत्र से जो देखते है वो कभी भी किसी के कहने से हलचल में नहीं आ सकते। देखा हुआ फिर भी सोचना पडेगा। पता नहीं ठीक देखा, नहीं देखा। लेकिन अनुभव की 'आँख' से देखने, अनुभव करनेवाली चीज सदा ही यथार्थ होती है। सभीने अनुभव किया है ना। अगर एक लाख आत्मायें आपको कहे कि ब्रह्मा बाप को देखा नहीं है आपने तो क्या कहेंगे ? कहेंगे, देखा है - इससे कोई आपको हटा नहीं

है ना ? निश्चित भावी को कोई हिला नहीं सकता । अगर नांव और खिवैया मजबूत है तो कोई भी तुफान आगे बढने का साधन बन जाता है। तुफान भी तोफा बन जाता है। इसलिये यह बीच बीच में बाईप्लोट्स होते रहते है। लेकिन अटल भावी निश्चित है। ईतना निश्चय है ? या थोडा नीचे उपर देखते हो तो गभरा जाते है ? ये तुफान ही तोफा बनेगा । समजा? इसको कहा जाता है निश्चयबुद्धि। सिर्फ फोलोफादर। अच्छा ।

31-12-92

ग्रुप - 2

चेक करो कि कौन सा लगाव नीचे ले आता है ? अपनी देह का लगाव खत्म किया तो संबंध और पदार्थ के लगाव आपे ही खतम हो जायेंगे । अपनी देह का लगाव अगर है तो संबंध और पदार्थ का लगाव भी अवश्य ही खींचेगा। इसलिये पहला पाठ पढाते हो कि देहभान को छोडो। तुम देह नहीं आत्मा हो। तो यह पाठ पहले अपने को पढाया है ? देहभान को छोडने का सहज से सहज तरीका क्या है ? चलो आत्मा 'बिन्दी' याद नहीं आती, खीसक जाती है, लेकीन यह तो वायदा है कि तन भी तेरा, मन भी तेरा, धन भी तेरा। जब देह मेरी है ही नही तो लगाव किससे ? जब मेरा है ही नहीं तो ममता कहां से आई ? मेरे में ममता होती है। जब मैने दे दिया तो लगाव खतम हुआ। इस एक बात से ही सब लगाव खतम हो जायेंगे। **अभी यह देह बाप की अमानत है - सेवा के लिए, तो सदा फरिश्ता बनने के लिए पहले यह प्रेक्टिकल अभ्यास करो कि सेवा अर्थ है - अमानत है - मैं ट्रस्टी हुं। ट्रस्टी अगर ट्रस्ट की चीज में ट्रस्ट नहीं करे तो उसको क्या कहा जायेगा ? इस बात को पक्का करो फिर देखो फरिश्ता बनना कितना सहज लगता है। "एक मेरा बाबा" और सबकुछ मेरा ईस एक मेरे में समा गया। सभी समेटने में होंशियार होना, वो मेरा मेरा है फसानेवाला और यह एक मेरा है छुडानेवाला। "एक मेरा" कहा तो सब छुटा ।**

31-12-92

बाप द्वारा जो सर्व खजाने मिले है उन सभी खजानों कि चावी क्या है ?

जब तक सारी माला तैयार नहीं हुई हैं तब तक। अभी नाम निकालने बैठते हो तो **108** में भी सोचते हो की यह नाम डाले या नहीं ? अभी **108** की माला में भी सभी वही **108** नाम बोलें। नहीं, फर्क हो जायेगा। बापदादा तो अब घडी ताली बजावे और ठकाठक शुरु हो जायेगी - एक तरफ प्रकृति, एक तरफ व्यक्तियाँ। क्या देरी लगती हैं ? लेकिन बापका सभी बच्चों में स्नेह हैं। थोडो को लेकर नहीं जाने चाहते लेकिन सभी को साथ ले जाने के लिये आये हैं। हाथ में हाथ मीलायेंगे, अर्थात समान बनेंगे तब तो साथ चलेंगे। लेकिन अभी तो समान अथवा नंबरवन बने नहीं। अच्छा बाप समान नहीं बने लेकिन नंबरवन दाना जो होगा वह समान होगा। तीसरा दो के समान बने, चौथा तीन के समान बने - ऐसे समान बने तो एक दो के समीप होते होते माला तैयार हो जायेगा। ऐसी स्टेज तक पहुँचना अर्थात समान बनना। **108** वा दाना **107** से तो मिलेगा न ? उस जैसी विशेषता भी आ जाये तो भी माला तैयार हो जायेगी। ईस तरह सब तैयार हैं ? ऐसी कोई गेरंटी दे तो बापदादा को तो सेकन्ड लगेगा। दृश्य दिखाते थे न - ताली बजाई और परियां आ गई।

मुलाकात

जिसका बाप ही भाग्य विधाता हैं उसके भाग्य से बडा भाग्य कोई हो सकता हैं ? तो सदा यह खुशी रहे की भाग्य तो हमारा जिन्म सिद्ध अधिकार हैं। इसलिये सदैव यह गीत गाते खुशी में उडते रहो कि "वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य और भाग्य विधाता बाप।" भाग्य में सबकुछ आ गया। भाग्यवान के पास तन-मन-धन-जन सबकुछ होता हैं। ऐसा श्रेष्ठ भाग्य अर्थात अप्राप्त कोई वस्तु नहीं, तो कोई अप्राप्ति हैं ? मकान अच्छा चाहिए, कार अच्छी चाहिए। नहीं। जिसको मन की खुशी मिल गई, उसे सर्व प्राप्तियां हो गई। कार तो क्या लेकिन कारों का खजाना मिल गया। ऐसे भाग्यवान हो। तो विनाशी ईच्छा क्या करेगे ? जो आज हैं, कल है ही नहीं इसकी इच्छा क्या रखेंगे ? इसलिए सदा अविनाशी खजाने जो अब भी हैं, और साथ में भी चलेंगे ईसकी खुशी में रहो। अविनाशी खजाना अनेक जन्म साथ रहेगा। कोई छीन या लुट नहीं सकता। स्वं भी अमर और खजाने भी अविनाशी।

इतना बडा और श्रेष्ठ भाग्य, भाग्य विधाता बाप द्वारा प्राप्त हो गया। फिर विनाशी ईच्छा क्या रखेंगे ?

17-10-87

मुलाकात

सदा अपने को बेफिकर बादशाह समझते हो ? प्रवृत्ति का या कोई भी कार्य का फिकर न रहे ऐसा कैसे बने ? सबकुछ तेरा करने से। जब सबकुछ तेरा हैं तो मेरे को फिकर किस बात का ? जिन्होंने सबकुछ तेरा किया वही बेफिकर बादशाह बनते हैं। जीवन में हरेक बेफिकर रहना चाहता हैं। और जहाँ फिकर नहीं वहां सदा खुशी होंगी। तो तेरा कहने से बेफिकर बन जाते जिससे खुशी के खजाने भरपूर हो जाते हैं। तो आप बेफिकर बादशाहों के पास अनगिनत अखुट अविनाशी खजाने हैं जो सतयुग में भी नहीं होंगे।जब 'तेरा' कह दिया तो बाप जाने, बापका काम जाने, आप निश्चिंत हो गये। तेरा कहना - सब प्राप्त होना। मेरा कहना - सब गँवाना। द्वापर से मेरा - मेरा कहा तो तंदुरस्ती भी चली गई, मन की शांति भी चली गई, और धन आदी सबकुछ चला गया। कहाँ विश्व के राजन और कहाँ छोटे मोटे दफ्तर के क्लार्क बन गये, बीझनेसमेन हो गये, जो विश्व के महाराजा के आगे कुछ भी नहीं हैं।

21-10-87

मुलाकात (स्थुल सेवा का महत्व)

जितनी जो सेवा करता उतना समीप संबंध में आता। यहाँ के सेवाधारी वहाँ के राज्य परिवार के अधिकारी बनेंगे। यहां जितनी हार्ड सेवा करते उतना वहाँ आराम से सिंहासन पर बैठेंगे और यहां जो आराम करते वहां काम करेंगे। एक-एक सेकन्ड का, एक एक काम का हिसाब किताब बापके पास हैं, इसलिए एक एक सेकन्ड का हिसाब कर बाप चुक्तु भी करता हैं। गिनती करके हिसाब देता हैं लेकिन पदमगुणा देता है। तो आज के सेवाधारी कलके राज्य अधिकारी और आज के राज्य करनेवाले कलके सेवा करनेवाले बनते हैं। सेवाभाव सदा उंचा उठाता हैं। नाम सेवा है लेकिन सेवावाला सदैव मेवा खाता हैं। जिस समय सच्ची दिल से, उमंग से सेवा

ना ? सभीने दृढ संकल्प कर लिया है कि में बाप की, और बाप मेरा ? संकल्प किया या दृढ संकल्प किया ? कोइ फिकर नहीं। कोई ऐसी खबर आ जायें तो फिकर होगा ? फ्लेट याद नहीं आयेगा ? अच्छा है-पक्के है। **जब ब्राह्मण बनना ही है तो पक्का बनना है। कच्चा बनने से क्या फायदा ?**

दोनो बाप का बच्चों से प्यार है। तो प्यार की निशानी क्या होती है। प्यार की निशानी है - जिससे प्यार होता है उस पर सब न्यौछावर कर देते है। तो बापने सब वर्सा आपको दे दिया ना ? कुछ अपने लिए रखा है ? और देखो, ऐसा कोई प्यार नहीं कर सकता जो रोज ईतना प्यार का पत्र लिखे, रोज याद-प्यार मिलता है ना। तो बच्चों का प्यार है तब बाप प्यार का रेसपोन्ड देते है ? प्यार की और निशानी है - जिससे प्यार होगा उससे कभी अलग नहीं होंगे। तो बाप बच्चों को कभी अलग नहीं करता, सदा साथ है, और सदा साथ रहेंगे। और कोई है ही नही, जिसका साथ पकडो।

20-12-92

सदा विजयी बनने का सहज साधन हैं "एक बल एक भरोसा"। एक में भरोसा रखने से ही एक बल मिल सकता हैं। निश्चय सदा ही निश्चिंत बनाता हैं। निश्चय की निशानी हैं निश्चिंत स्थिति, जिसमें बुद्धि यथार्थ जजमेन्ट करती हैं। चिंता और फिकरवाली बुद्धि यथार्थ निर्णय नहीं लेगी। तो यथार्थ निर्णय का आधार है निश्चय बुध्धी निश्चिंत।

31-12-92

जैसे सेवा में प्रत्यक्षता होती जा रही है, विधी बदलती जा रही है, ऐसे एक एक अपने में संपूर्णता और संपन्नता कि प्रत्यक्षता करो। अभी इसकी आवश्यक्ता है और अवश्य संपन्न होना ही है। कल्प कल्प की आपकी निशानी सिद्ध करती है कि सफलता हुई पडी है। यह विजयमाला क्या है ? विजयी बने है, सफलतामूर्त बने है, तब तो निशानी है ना ? इस भावी को टाल नहीं सकते। **कोई कितना भी सोचे कि अभी तो ईतने तैयार नहीं हुए है, अभी तो खीट-खीट हो रही है। इसमें गभराने की जरुरत नहीं है। कल्प कल्प के सफलता की गेरंटी यह यादगार है। क्या होगा, कैसे होगा, - यह क्वेश्चनमार्क की आवश्यक्ता नहीं है। होना ही है। निश्चिंत**

और सदा शक्तिशाली बुध्धी, तो स्थिती सदा शक्तिशाली होगी । ऐसी शक्तिशाली स्थितिवाले सदा ही अचल - अडोल रहेंगे। तो खुशी की खुराक खाते हो ? सबसे बडी खुशी की बात है - 'बापने अपना बना लिया' । दुनियावाले तडपते है कि भगवान की एक सेकेन्ड भी नजर पड जाये और आप सदा नयनों में समाए हुए हो। वो तो एक घडी की नजर कहते है और आप रहते ही हो बाप की नजरो में। इसलीये टाईटल है - नूरे रतन, आंखो के नूर। तो वो तडपते और आप समा गये। इसको कहा जाता है खुशनसीब। सोचा नहीं था लेकिन बन गये। अपना नसीब देखकर नशे में रहते हो ना - "वाह - वाह"? थोडा भी दु:ख की लहर अनुभव हुई अर्थात 'हाय हाय' हुई। 'हाय', ऐसे नहीं होना चाहिये। सुखदाता के बच्चों को दु:ख की लहर कहाँ से ? दु:ख की लहर समाप्त हुई ? कभी तन का, कभी धन का, बिमारी का दु:ख होता है ? कभी पौत्रे, धौत्रे , बिमार हो जाये - कभी खेती में नुकशान हो जाये तो दु:ख होगा ? सभी अपने को हर कदम में पदमों की कमाई जमा करनेवाले समजते हो ? कितना जमा किया है ? आजकल का कोम्प्युटर हिसाब कर सकता है, तो सारे कल्प में और सारे वर्ल्ड में ऐसा शाहुकार कोई होगा ? आप सभी हो ? सदैव यह नशा रहे कि हर कदम में पदमों की कमाई करनेवाली आत्मा हुं। लौकिक दुनिया में कहते है कि ईतना जमा कर ईकठ्ठा करे जो वंश के वंश खाते रहे। तो आपकी कितनी जनरेशन (पीढीयां) खाती रहेंगी ? एक जनम में अनेक जन्मों की कमाई जमा कर ली है। और अनेक जन्म आराम से खाते रहेंगे। सतयुग में अमृतवेले उठकर योग लगायेंगे कि योग की सिद्धी प्राप्त करेंगे ? जैसे पढाई तब तक पढी जाती है जबतक पास नहीं हो जाते । तो अनेक जन्मों जितना जमा किया है ? कभी भी विनाश हो जाय, आपका तो जमा रहेगा ना ? या कहेंगे कि थोडा समय मिले तो और कर ले ? अभी और टाईम चाहिये ? एवररेडी हो ? आप यहाँ आये हो और यहीं विनाश शुरु हो जाये तो सेन्टर या सेन्टर का सामान याद आयेगा ? कुछ भी याद नहीं आये - ईतने बेफिकर बादशाह बने हो ना जब देह भी अपनी नहीं तो और क्या अपना है ? तन, मन, धन सब दे दिया ना ? जब संकल्प किया कि सबकुछ तेरा तो एवररेडी हो गये

करते हैं तो कितनी खुशी (मेवा) होती हैं ! एक दो पदम लो। इस हिसाब से पांडवो के मजबुत दिल और मजबुत मन को मजबुत शरीर के रुप में दिखाया हैं। खुशी की खुराक बहोत खाते हैं, इसलिये मोटे दिखाते हैं।

25-10-87

प्रकृति के पेपर तो अभी और रफ्तार से आनेवाले है। इसलिये पहले से ही पदार्थो के विशेष आधार-खाना, पीना, पहनना, चलना, रहना और संपर्क में आना - इन सबकी चेकींग करो की कोई भी बात महीन रुप में विघ्नरुप बन स्थिति को डगमग तो नहीं करती हैं ? ऐसा न हो कि, उस चीज के बीना तो चल सकता लेकिन इसके बीना रह नहीं सकते, इसलिये स्थिति डगमग हो गई... इसको न्यारी स्टेज वा न्यारी जीवन नहीं कहेंगे। सहज योग की साधना अर्थात अप्राप्ति भी प्राप्ति का अनुभव करावे। जैसे स्थापना के आरंभ में आसक्ति है वा नहीं उसकी ट्रायल के लिये बीच-बीच में जान-बुझकर प्रोग्राम रखते रहे। जैसे पंद्रह दिन सिर्फ ढोढा और छास खिलाई। गेहुं होते भी यह ट्रायल कराई। कैसे भी बिमार, पंद्रह दिन इसी भोजन पर चले। कोई भी बिमार नहीं हुवा। दमा की तकलीफ वाले भी ठीक हो गये न ! क्युंकि नशा था की बापदादा ने प्रोग्राम दिया हैं ! जब भक्ति में कहते हैं कि 'विष भी अमृत हो गया', यह तो छास थी। निश्चय और नशा हर परिस्थिति में विजयी बना देता है। तो ऐसे पेपर भी आयेंगे - सूखी रोटी भी खानी पडेगी-अभी तो साधन है। कहेंगे, दांत नहीं चलते, हजम नहीं होता। लेकिन उस समय क्या करेंगे ? जब निश्चय, नशा, योग की सिद्धि की शक्ति होती है, तो सुखी रोटी भी नरम रोटी का काम करेगी, परेशान नहीं करेगी। आप सिद्धि स्वरुप की शान में स्थित हो तो कोई भी परेशान नहीं कर सकता है। जब हठयोगीयों के आगे शेर-बिल्ली बन जाता, साप खिलौना बन जाता, तो आप सहज राजयोगी, सिद्धि स्वरुप आत्माओं के लिये ये सब कोई बडी बात नहीं । साधन है तो आराम से युझ करो। लेकिन समय पर धोखा न दे ये ध्यान रखो। देह के संबंध से न्यारा होना सहज है लेकिन देह के पदार्थो से न्यारा होना-इसमें बहोत अच्छा अटेन्शन चाहीये।

25-10-87

मुलाकात

फर्स्ट नंबर तो सब नहीं बनेंगे लेकिन फर्स्ट डिवीझन में तो आ सकते हैं। फर्स्ट नंबर एक होगा लेकिन फर्स्ट डिविझन में तो बहुतो आयेंगे। राजगद्दी पर एक बैठेगा लेकिन रोयल फेमिलि में तो बहोत होंगे। तख्त पर एक बैठेगा, लेकिन और साथी भी तो होंगे ना! तो रोयल फेमीली में आना भी राज्य अधिकारी बनना हैं।तो फर्स्ट डिविझन अर्थात नंबर वन में आनेका पुरुषार्थ कर सकते हैं। अभी लेट हुए हैं लेकिन टु लेट नहीं हुए हैं। इसलिये सभी को आगे बढने का चान्स हैं। तो सदैव उमंग उत्साह में रहो। ऐसे नहीं कोईभी नंबरवन बने, मैं नंबर दो ही सही। इसको कहते हैं कमजोर पुरुषार्थ, इसलिये तीव्र पुरुषार्थी बनो।

27-11-87

वैराग्य - अर्थात लगाव नहीं। अर्थात सदा बाप के प्यारे। यह प्यारापन ही न्यारा बनाता हैं। तो बापका प्यारे बन, न्यारे बन कार्य में आना इसको कहते हैं - बेहद का वैरागी। बाप का प्यारा नहीं तो न्यारा भी नहीं बन सकते अर्थात लगाव में आ जायेगें। बापका प्यारा जो होगा, वह किसी व्यक्ति या वैभव का प्यारा नहीं हो सकता। वह सदा आकर्षण से परे अर्थात प्यारे होंगे। इसको कहते हैं निर्लेप स्थिति तो रचना या साधनों को निर्लेप होकर कार्य में लाओ।

10-12-87

परमात्मा से सौदा करनेवाली सुरतियां (मुखडा) कितनी भोली हैं और सौदा कितना बडा किया हैं। दुनियावालों की समझ में नहीं आ सकता की यह इतना बडा सौदा करनेवाली सौदागर आत्मायें हैं। दुनियावालोने जिन आत्माओं को ना-उम्मीद, अति गरीब समझ, असंभव समज किनारे कर दिया कि यह कन्यायें, मातायें परमात्मा प्राप्ति के क्या अधिकारी बनेंगे ? लेकिन बापने पहले माताओं कन्याओं को ही इतना बडे ते बडा सौदा करनेवाली श्रेष्ठ आसामी बना दिया। जो गरीब कुमारी कन्या थी उसको यज्ञ माता जगतअंबा सो धनदेवी लक्ष्मी बना दिया। जिसको आज दिन

किसी कोने में बैठे हो, किनारे बैठे हो, पीछे बैठे हो लेकिन मन की स्थिति में साथ रहेते हो ना ? साथ वो ही रहेंगे जो समान होंगे। स्थुल में चाहे सामने भी बैठे हो लेकिन समान नहीं तो सदा साथ नहीं रहते। किनारे में रहते है। इसलिये सदा ब्रह्माबाप समान पुरुषोत्तम स्थिति में स्थित रहो। तो समीप रहना चाहते हो या दुर ? **इस एक जन्म में संगम पर हर परिस्थिति में जो समीप रहता है वह परमधाम में भी समीप है और राजधानी में भी समीप है।** एक जन्म की समीपता अनेक जन्म समीप बना देंगी। यह निश्चय पक्का हो कि हम ही कल्प कल्प के विजयी है। और हम ही बार बार बनेंगे। आप नहीं बनें तो कौन बनेंगे ? आप ही विजयी बने थे, विजयी बने है और विजयी रहेंगे। 'विजयी' शब्द बोलने से ही कितनी खुशी होती है। चेहरा बदल जाता है ना। जो सदा विजयी रहते वो कितना खुश रहते है।

20-12-92

अब बाप कहते है - महेनत छोड - महोब्बत में रहो, लवलीन रहो, जो लव में लीन होता है, उसको महेनत नहीं करनी पडती। ब्राह्मण माना मौज। ब्राह्मण माना महेनत नहीं। बापने कहा और बच्चोने किया इस में महेनत की क्या बात है ? बच्चों का काम है करना, सोचना नहीं, सहजयोगी हो ना ? सदा विजयी रतन हो ना ? यह रुहानी निश्चय चाहिये कि हम नहीं बनेंगे तो कौन बनेंगे। ईतना अटल निश्चय हो। जब फोलोफाधर कर रहे हो तो कौन बनेंगे ? वही बनेंगे ना।

20-12-92

सभी अपने को खुशनशीब अनुभव करते हो ? जो खुशनसीब आत्मा है उनके मन में सदा खुशी के गीत बजते है - 'वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य' यही गीत बजते है ना ? यह खुशी का गीत गाना तो सभी को आता है ना ? और मन में है ही क्या जो चले ? यही खुशी के गीत बजेंगे ना ? और सब बातें खत्म हो गई बस बाप और मैं, तीसरा न कोई। जब ऐसी स्थिती बन जाती है तब खुशी के गीत बजते है - 'वाह बाबा वाह, वाह मेरा भाग्य वाह।' वैसे गाया हआ है खुशी सब से बडी खुराक है। खुशी जैसी कोई खुराक नहीं। खुशी है मन की खुराक। मन कभी कमजोर नहीं होगा। सदा शक्तिशाली मन

'मेरा बाबा' और कुछ भी भूल जाये लेकिन 'मेरा बाबा' नहीं भुले। अच्छा।

10-12-92

सबसे बडे भाग्य की निशानी यह है जो संगमयुग पर साधारण आत्मा बने हो। अगर शाहुकार होते तो बाप के नहीं बनते। सिर्फ कलियुग की शाहुकारी ही भाग्य में मिलती, तो साधारण बनना अच्छा है ना? स्थुल धन से साधारण हो लेकिन ज्ञान धन से शाहुकार हो, तो खुशी है ना कि बापने सारे विश्व में से हमें अपना बनाया? सारा दिन खुशी में रहते हो? **मुरली रोज सुनते हो? कभी मीस तो नहीं करते। मीस करते हो तो फोलो फाधर नहीं हुआ। ब्रह्मा बापने एक दिन भी मुरली मीस नहीं की। अच्छा।**

20-12-92

आपकी जीवन हिरे तुल्य है ना? कैसे भी वातावरण में हो, कैसे भी संगठन में हो लेकिन जैसे हीरा अपनी चमक छिपा नहीं सकता, ऐसे पुरुषोत्तम आत्माओं की श्रेष्ठ झलक सबको अनुभव होनी चाहिये। ऐसे है या दफतर में जाकर, काम पे जाकर आप भी वैसे ही साधारण हो जाते हो? अभी गुप्त में हो, काम भी साधारण है। इसलिये पांडवो को गुप्तरुप में दिखाया है। गुप्त रुप में राजाई नहीं की, सेवा की। तो दुसरो के राज्य में गवर्मेन्ट सर्वेन्ट कहलाते हो ना? चाहे कोई कितना भी बडा ओफिसर हो लेकिन सर्वेन्ट ही है ना? तो गुप्त रुप में आप सब सेवाधारी हो। लेकिन सेवाधारी होते भी पुरुषोत्तम हो। तो वह झलक और फलक दिखाई दे।

जैसे ब्रह्माबाप साधारण तन में होते भी पुरुषोत्तम अनुभव होता था! सभीने सुना है ना? देखा है या सुना है? अभी भी अव्यक्त रुप में देखते हो। साधारण में पुरुषोत्तम की झलक है, तो फोलो फाधर है ना। ऐसे नहीं साधारण काम कर रहे है, माताये खाना बना रही है, कपडे धुलाई कर रही है - काम साधारण हो लेकिन स्थिति साधारण नही, स्थिति महान हो। जैसे दुसरे है वैसे हम नहीं। चहेरे पर वो श्रेष्ठ जीवन का प्रभाव होना चाहिये। तो सदैव स्मृति और स्थिति श्रेष्ठ हो।

जो समान स्थितिवाले है वे सदा बाप के साथ रहते है। शरीर से चाहे

तक भी भले कितने भी करोडपति हो लेकिन लक्ष्मी से धन जरुर मांगेगे, और पुजा जरुर करेंगे। ऐसे ही बेहद का बाप धन के साथ मन, तन का और श्रेष्ठ संबंध का भी सौदा करते हैं। जिससे तन सदा तंदुरस्त रहेगा, मन सदा खुश, धन के भंडार भरपुर और संबंध में नि:स्वार्थ स्नेह होगा। ये भी अनेक जन्मों के लिए गेरंटी हैं। चाहे प्रजा भी बने लेकिन उनको भी लास्ट जनम तक अर्थात त्रेता के अंत तक भी यह चारों ही बातें प्राप्त होगी।

सौदा करनेवाले बच्चों ने अनेक संबंधो में और अनेक वस्तुओ में अपनी दिल लगाकर दिल के टुकडे-टुकडे कर दिये थे। बापने ये अनेक टुकडे वाले दिल को अपनी तरफ जोड लिया। बच्चों ने सौदा करने में टुकडेवाला दिल दिया और लिया पदमगुना। और सौदा करने की विधी भी कितनी सहेज हैं? सेकन्ड का सौदा हैं न! एक 'बाबा' शब्द ही विधी हैं। सिर्फ दिल से कहा 'बाबा' तो सेकन्ड में सौदा हो गया। इतना सस्ता सौदा संगमयुग के सिवाय और किसी भी युग में नही कर सकते। दुनिया की अंतर में कितने भोले भाले हैं, लेकिन कमाल तो इन भोले भालोंने किया हैं। सौदा करने में तो होंशियार नीकले ना। आज के बडे बडे नामी ग्रामी धनवान धन कमाने के बजाय, धन को संभालने की उलझन में पडे हुए हैं। उसी उलझन में बाप को पहचानने की फुरसत नहीं। अपने को बचाने में, धन को बचाने में ही समय चला जाता हैं। भले बादशाह भी हो लेकिन फिकरवाले बादशाह है क्योंकि फिर भी काला धन हैं और आप बहार से बिन कौडी हो लेकिन बेफिकर बादशाह हो, बेगर होते भी बादशाह। आजकल के नंबरवन धनवान आसामी हैं लेकिन उनके सामने आपकी त्रेता के अंतवाली प्रजा भी धनवान होगी। उसी हिसाब से देखो तो कितना धन होगा! प्रजा को भी अप्राप्त कोई वस्तु नहीं होगी। तो बादशाह हुए ना! बादशाह का अर्थ ये नहीं कि तख्त पर बैठना। बादशाह अर्थात भरपुर, कोई अप्राप्त वस्तु नहीं होगी। ऐसी सहज प्राप्ति को भक्तिमार्ग वालोंने इतना मुश्किल कर और चक्र में डाल दिया हैं जो आज भी बाप को उसी रुप से ढुंढते रहते हैं। छोटी बातको बडी बना दी हैं इसलिये उलझनमें पड जाते हैं। ऊंचे ते ऊंचे भगवान को मिलने की विधीयां लंबी चौडी बना दी हैं। उसी चक्र में भक्त आत्मायें

सोच में ही पडी हुई हैं। भगवान भक्ति का फल देने आ भी गये है लेकिन भक्त आत्मायें उसी उलझन के कारण पत्ते पत्ते को पानी देने में ही बीझी हैं। कितना भी आप संदेश देते हो तो भी कहते है की इतना ऊंचा भगवान, ऐसे सहेज आये यह हो ही नहीं सकता। इसलिये बाप मुस्कुरा रहे थे कि आजकल के चाहे भक्ति के, चाहे धन के, चाहे किसी भी ओक्युपेशन के नामीग्रामी अपने ही कार्य में बीझी हैं और आप साधारण आत्माओं ने बाप से सौदा कर लिया।

14-12-87

(1) साथ रहनेवाले अथार्त सहज स्वत: योगी आत्मायें **(2)** सदा सेवामें सहयोगी साथी बन चलनेवाले अथार्त ज्ञानी तू आत्मायें सच्चे सेवाधारी। **(3)** साथ चलनेवाले अथार्त समान और संपन्न कमार्तीत आत्मायें।

ऐसी संपूर्ण स्थिति को प्राप्त करने का यही वरदानी समय है। इस वरदानी समय पर एक कदम आपका कर्म और पदमगुणा बाप द्वारा मदद के रुप में सहज प्राप्त होता है। इस समय में बाप खुले दिल से सर्व प्राप्तियों के रुप में विशेष खुल्ले भंडार, भरपुर भंडार बच्चों के आगे रखते है। एक का पदमगुणा का हिसाब रखते है। सिर्फ अपना पुरुषार्थ किया और प्रारब्ध पाई ऐसा नहीं कहते, लेकिन रहमदील बन, दाता बन, विधाता बन, सर्व संबंधी बन, स्वयं हर सेकन्ड मददगार बनते है। एक सेकन्ड की हिंमत और अनेक वर्षो के समान महेनत की मदद सदा सहयोगी बना देते है। क्योंकी जानते है कि अनेक जन्मों की भटकी हुई निर्बल आत्माए है, थकी हुई है, इसलिये इतने तक सहयोग देते है, मददगार बनते है।

स्वयं ओफर करते है कि सर्व प्रकार का बोज बाप को दे दो। बोज उठाने की ओफर करते है, फिर भाग्य की लकीर जीतनी लम्बी खिंचना चाहो उतना खिंच लो, सर्व खुल्ले खजाने की चाबी आपके हाथ में दे दी। चाबी भी कितनी सहज है। अगर माया के तुफान आते भी है तो छत्रछाया बन सदा सेफ भी रखते है। जहां छत्रछाया है, वहां तुफान क्या करेगा ? सेवाधारी भी बनाते लेकिन साथ साथ बुध्धिवानों की बुध्धि बन आत्माओं को टच भी करते, जीससे नाम बच्चों का, काम बाप का सहज हो जाता है। इतना

लेकिन मांगना यह राईट नहीं है। मांगने की आवश्यक्ता ही नहीं है। अगर आपका बेहद की सेवा का संकल्प, बिना हद की ईच्छा के होगा, तो अवश्य पुरा होगा। ईच्छा रखनेवाले की ईच्छा पुरी नहीं होगी लेकिन अच्छा बननेवाले की ईच्छा पुरी होगी। स्वत: ही प्राप्ति हो जायेगी, इसलिये कुछमांगने की आवश्यक्ता नहीं है। शुभ ईच्छा स्वत: पूर्ण होती है। सोचेंगे भी नहीं कि क्या होगा ? कैसे होगा ? लेकिन स्वत: ही प्राप्ति हो जायेंगी। सोचा था कि हम ईतने उँचे ब्राह्मण बन जायेंगे ? नहीं सोचा था ना ? लेकिन सहज बन गये ना ?

10-12-92

सबसे सहज आगे बढने की विधी क्या है ? आगे तो सभी बढ रहे हो लेकिन सबसे सहज विधी कौन सी है ? योग भी सहज हो जाय, उसकी विधी क्या है ? सबसे सहज विधी है 'मेरा बाबा' और कुछ भी याद न हो हर समय एक ही बात याद हो 'मेरा बाबा' क्योंकि मन वा बुध्धि कहाँ जाती है ? जहाँ मेरापन होता है अगर शरीर भान में भी आते हो तो क्यों आते हो ? क्योंकि मेरापन है। अगर 'मेराबाबा' हो जाता तो स्वत: ही मेरे तरफ बुध्धि जायेंगी। सहज साधन है 'मेरा बाबा' मेरापन न चाहते हुए भी याद आता है ? मेरापन खींचता है ना। न चाहते भी खींचता है। जब यह सदा निश्चय और स्मृति में रहे 'मेरा बाबा' तो पुरुषार्थ की महेनत करने के बजाय स्वत: ही मेरापन खींचेगा। तो सहज साधन क्या हुआ ? इसलिये 'एक' को ही याद करो। 'एक' को ही याद करना सहज होता है।

जितना जितना गहरा संबंध जुटा हुआ होगा उतनी याद सहज होगी और सहज बात ही निरंतर होती है अगर सहज नहीं होगा तो निरंतर नहीं होगा। कोई भी महेनत का काम निरंतर नहीं कर सकते। सारा दिन-रात कोई को महेनत का काम दे दो तो मजबुरी से करेगा। लेकिन प्यार से नहीं करेगा। तो बापदादा सहज करके देता है। सहज के कारण निरंतर होना मुश्किल नहीं है। तो मेरा बाबा की स्मृति की प्रेक्टिकल निशानी 'खुशी' है। कोई भी बात हो जाय लेकिन खुशी नहीं जाये, सदा खुशी होती है ना, कम नहीं होनी चाहिये, बढनी चाहिये। इसका साधन बताया;

तो आपने क्या खर्च किया ? कोई कौडी लगाई ? 'बाबा' कहा और खजाना मिला। तो बिन कोडी बादशाह बन गये। लगाया कुछ नहीं और बन गये बादशाह।

सबसे बडे ते बडा बादशाह कौनसा है ? बेफिकर बादशाह। तो आप बेफिकर बादशाह हो ? आजकल के बादशाह है फिक्र के बादशाह और आप हो बेफिकर बादशाह। बच्चों को कोई फिक्र होता है क्या ? जब बाप बैठा है तो बच्चे बेफिकर होते है। वैसे भी कोई भी बात का फिक्र करो तो फिकर करनेवाले को कभी भी सफलता नहीं मिलती। फिकर करनेवाला समय भी गँवाता और स्वयं को भी गँवाता, क्योंकि एनर्जी वेस्ट होती है और कामको भी गँवा देता। जिस काम के लिये फिक्र करता वह काम भी बिगाड देता तो सफलता अगर चाहिये तो उसकी विधी है बेफिकर बनना।

30-11-92

सदा विजयी भव के वरदानी हो, वरदान आपको मांगने की आवश्यक्ता नहीं है, वरदान दे दो - मांगते हो ? मांगना क्या चाहिये यह भी आपको नहीं आता था। क्या मांगना चाहिये यह भी बाप ही आकर सुनाते है। मांगना है तो पुरा वर्सा मांगो। बाकी हद का वरदान, एक बच्चा दे दो, एक बच्ची दे दो, एक मकान दे दो, अच्छी वाली कार दे दो, अच्छा पति दे दो, यही मांगते रहे ना ? बेहद का मांगना क्या होता है वो भी नहीं आता था अभी स्वत: ही वरदान प्राप्ति हो ही गये जब दाता के बच्चे बन गये, वरदाता के बच्चे बन गये तो खजाना हमारा ही है तो मांगने की क्या आवश्यक्ता है ?

अभी खुशी में रहो कि मागने से बच गये, जो सोचमें भी नहीं था वह साकार रुप में मिल गया। हर बात में भरपूर हो गये। कोई कमी नहीं। वैसे भी बिना मांगे जो मिलता है उसको अच्छा माना जाता है, बापने वर्से के अधिकार के रुप में सब दे दिया। अधिकार में कमी नहीं छोडी, कोई चीज की कमी है क्या ? छोटा मकान है - बढिया और बडा मकान होना चाहिये - यह सोचते हो ? बडा मकान मिल जाय तो गीता पाठशाला खोल दे - यह सोचते हो - यह मांगते हो ? मांगना नहीं है, मांगने से मिलता नहीं है, क्योंकि मांगना अर्थात ईच्छा ! हद की ईच्छा हो गई ना ? चाहे सेवाभाव हो,

लाड और प्यार से लाडले बनाये पालना करते, जो अनेक झुलो में झुलाते रहते है। पांव नीचे रखने नहीं देते। कभी खुशी के कभी सुख के, कभी बाप की गोद के झुले में, तो कभी आनंद, शांति, प्रेम के झुले में झुलते है, झुलना अर्थात मौज मनाना। यह सर्व प्राप्तियां इस वरदानी समय की विशेषतायें है। इसी वरदानी समय पर बाप वरदाता-विधाता होने के कारण और सर्व संबंध निभाने के कारण रहमदिल है। एक का पद्मगुणा लेने की विधी इस समय की है। अंत में हिसाब-किताब चुकतु करनेवाले अपने साथी (धर्मराज) से काम लेंगे। फिर यह एक का पदमगुणा का हिसाब समाप्त होगा। अभी रहमदिल है फिर हिसाब-किताब शुरु होगा। इस समय तो माफ भी कर देते है। कडी भूल को भी माफ कर और ही मददगार बन आगे उडाते है। सिर्फ दिल से महेसुस करना अर्थात माफ होना। तो विधी एक कदम की हो और सिध्धी पदम जीतनी हो तो इस वरदानी समय पर भी वरदान नहीं लेंगे तो और किस समय लेंगे ? समय समाप्त हुआ और समय प्रमाण यह समय की विशेषतायें भी सब समाप्त हो जायेगी। इसलिये जो करना है, जो बनना है, वह अब वरदान के रुप में बाप की मदद के समय में कर लो, बना लो। फिर यह 'डाईमंड चान्स' मिल नहीं सकता। तो समय की विशेषताओं के आधार पर ब्राह्मण जीवन की जो तीन विशेषतायें बताई उसमें संपूर्ण बनो। जब साथ चलना ही है तो सदा साथ रहनेवाले ही साथ चलेंगे। जो साथ नहीं रहते वह साथ चलेंगे कैसे ? समय पर तैयार ही नही होंगे साथ चलने के लिये। क्योंकि बाप समान बनना अर्थात तैयार होना। बहुत काल का साथ रहना, साथी बन सहयोगी बनना-यह बहोत काल का संस्कार ही साथी बनायें साथ ले जायेगा। अभी भी साथ नहीं रहते इससे सिध्ध है कि दूर रहते है। अभी भी साथ नही रहते तो ऐसा दुर रहने का संस्कार साथ चलने के समय भी दूरी का अनुभव करायेगा इसलिए सदा साथ रहो। सदा बाप के साथी बन सेवा करो।

करावनहार बाप-निमित्त करनहार मैं हुं - ऐसा समझकर सेवा करे तो, सेवा कभी भी हलचल में नहीं लायेगी। अकेले होकर "मैं पन" में आते हो तब फिर माया बिल्ली म्याउं म्याउं करती है।

बाप चाहे तो क्या नहीं कर सकते ? सब की एक एक बात एनाउन्स कर सकते है। कई भोलानाथ समजते है इसलीए अभी भी बाप को भोला बनाते रहते है। **भोलानाथ तो है लेकिन महाकाल भी है।** अभी वह रुप बच्चों के आगे नहीं दिखाते है, नहीं तो सामने भी खडे नहीं हो सकेंगे। इसलिए जानते हुए भी भोलानाथ और अनजान भी बन जाते है। लेकिन किसलीए ? बच्चो को संपूर्ण बनाने के लिए, समजा ?

18-12-87

कर्मातित स्थिति की गुह्य परिभाषा

कर्मातित अर्थात कर्म के वश होनेवाला नहीं। लेकिन मालिक बन, ओथोरीटी बन कर्मेन्द्रियों के सबंध में आकर विनाशी कामना से न्यारा रह, कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म करावे। आत्मा मालिक, कर्म के अधिन न बन, अधिकारी बन, कर्म कराता रहे। कर्मातित अर्थात कर्म करते, कर्म इन्द्रियों के आकर्षण से अतित अर्थात न्यारा। जब कर्म करनेवाली आत्मा कर्मइन्द्रियों के वश हो जाती है तो इसको कर्मबंधन कहते है। लेकिन मालिक बन करानेवाले बन कर्म करावो तो इसको कहेंगे कर्म के संबंध में आना।

कर्मातित अर्थात देह, देह के लौकिक वा अलौकिक संबंध से और देह के पदार्थो के बंधन से अतित अर्थात न्यारा। कर्मातित अर्थात सदा भरपूर-सदा संतुष्ट। मन भी राजी - तन भी राजी और दूसरे भी राजी - इसको कहते है कर्मातीत। कर्मबंधनवाला कोई न कोई बात पर स्वयं से वा दूसरों से न चाहते भी नाराज होता रहेगा और सदा चाहीये-चाहीये की भूख में ही रहेगा। नाराज अर्थात अधिकारी बन कर्म इन्द्रियों से कर्म कराने के राझ को नहीं समझना। कर्मातित अर्थात अपने पीछले कर्मों के हिसाब-किताब के बंधन से भी मुक्त। जैसे की तन का रोग हो, मन के संस्कार, अन्य आत्माओं के संस्कारो से टक्कर भी खाते हो लेकिन कर्मातित आत्मा, उसके वश न होकर मालिक बन चुक्तु करायेगी। कर्मयोगी बन कर्मभोग चुक्तु करना ये है कर्मातित बनने की निशानी। कर्मातित अवस्थावाले अशरीरी बनने के अभ्यासी होने के कारण बीच बीच में ये रुहानी इन्जेक्शन लगाते रहते जिस कारण शुली से कांटा अनुभव करते है। और अशरीरी बनने के आज्ञा का

मेरा परिवार है, तो नष्टोमोहा नहीं हो सकेंगे। सेवास्थान है, घर मधुबन है तो सदा सेवास्थान समजेंगे तो नष्टोमोहा हो जायेंगे। **मेरी जिम्मेवारी है, मेरा काम है, मेरा विचार है, मेरी फर्ज अदाई है ये सब मोह उत्पन्न करता है। सेवा के निमित्त हुँ। सच्चा सेवाधारी अपने को सदा निमित्त समजेगा।**

30-11-92

सभी को सबसे ज्यादा कौनसी खुशी है ? सबसे ज्यादा खुशी की बात है कि जिनके उपर दुनिया के आत्माओं की कोई नजर नही उनके उपर परमात्मा की नजर गई। आजकल के जमाने में चुनाव होता है ना। तो आपको किसने चुना ? चुनाव में कोई गरबड हुई है क्या ? कोई खर्चा करना पडा क्या ? तो बापने हम आत्माओं को चुन लिया, अपना बना लिया, दुनिया की नजरो में अती साधारण आत्माएं थी लेकिन बाप की नजरो में महान आत्मायें विशेष आत्मायें हो। तो इसी खुशी में रहो। कल क्या थे और आज क्या बन गए, किसकी नजर में आ गए। दुनियावालों ने ठुकरा दिया और बापने अपना बना लिया। कितनी ठोकरों से बचा लिया ? **63** जन्म ठोकरे ही खाई ना ? चाहे भक्ति की तो भी ठोकर खाई, अपनी प्रवृत्ति की लाईफ में भी भिन्न भिन्न प्रकार की ठोकरें खाते रहे और बापने आकर ठिकाना दिया। तो ठिकाना मिल गया है ना ? तो क्या थे और क्या बन गये। स्वप्न में था कि ईतने महान बनेंगे ? लेकिन कितना सहज बन गये। कुछ भी मुश्किल नहीं देखनी पडी। कितना श्रेष्ठ भाग्य है तो कौनसा गीत गाते हो ? 'पाना था वो पा लिया' यह गीत ओटोमेटीक चलता रहता है मुख से गाने की आवश्यक्ता नहीं लेकिन दिल गाती रहती है।

माया का काम है खेल करना और आपका काम है खेल देखना। खेल में गभराना नहीं। कुछ भी हो जाये गभराना नहीं। विजय हुइ ही पडी है। इसको कहा जाता है संपूर्ण निश्चय बुद्धि। पता नहीं क्या होगा ? हार तो नहीं जाउँगा ! विजय होगी या नहीं ? ये नहीं। सदैव यह नशा रखो पांडव सेना की विजय नहीं होगी तो किसकी होगी ? कौरवो की होगीं क्या ?

बापने खुशी का खजाना दे दिया। इसलिये खुशी खुशी से याद करते रहो। चाहे कोई पदम भी खर्च करे लेकिन पदम खुशी मिल नहीं सकती।

जिम्मेवारीयां माथा भारी करती है। जब खुशी कम होती है तो कहते या सोचते हो कि क्या करें, यह भी संभालना पडता है ना ? करना पडता है ना, जिम्मेवारी है ना। उस समय सोचते हो ना ? लेकीन जिम्मेवार बाप है, में निमित्त हुँ - तो हल्के हो जायेंगे। थोडा भी संकल्प आया कि मुझे करना पडता है, मुझे ही करना है - तो भारीपन हुआ। तो डबललाईट हो ना - या थोडा थोडा बोझ है ? सदा उडते रहो - उडती कला अर्थात तीव्र गति।

आप लोग तो बहुत भाग्यवान हो जो कि उडती कला के समय पर आये हो। जैसे आजकल के बच्चे कहते है ना कि हम भाग्यवान है जो बैलगाडी के समय नहीं थे - मोटरगाडी के टाईम पर आये है - तो उन्हों को कितना नशा रहता है ? आप को भी यह नशा रहना चाहिये कि हम उडती कला के समय पर आये है। देखो समय भी आपका सहयोगी बन गया। **तो अच्छी तरह से उडो। अपने पास छोटे-मोटे बोज नहीं रखो - न पुरुषार्थ का बोज, न सेवा का बोज, न संबंध संपर्क का बोज - कोई बोज नहीं।**

30-11-92

भविष्य में क्या बननेवाले हो इसका यथार्थ परिचय किस आधार पर कर सकते हो ? कोई आधार है जिससे आपको पता पड जायें कि मैं भविष्य में क्या बननेवाला हुँ ? लक्ष्य अच्छा रखो। क्योंकि अभी रिजल्ट आउट नहीं हुई है। चेस (शतरंज) का गेईम होता है ना ? तो लास्ट में सिटी बजती है न ? उस लास्ट सिटी पर पता पडता है कि कौन विजयी होता है अभी कोई फिक्स नहीं हुआ है। सिवाय फर्स्ट दो नंबर के। दो तो फिक्स हो गये है। **अभी छ में मार्जीन । लेकिन सुनाया ना फर्स्ट डीवीझन में तो आयेंगे ना ? फर्स्ट नंबर में एक हाता है लेकिन फर्स्ट डीवीजन में बहुत होते है। वहाँ रोयल फेमीली का पद भी ईतना होता है जितना तख्तनशीन राजा-रानी का होता है। इसलिये फर्स्ट डीवीजन का लक्ष सदा रखना।**

बापदादा तो सभी को मधुबन निवासी देख रहे है। आपकी असली एड्रेस क्या है ? बोम्बे है बेंग्लोर है, राजस्थान है, गुजरात है, क्या है ? नष्टो मोहा बनने की यही सहज युक्ति है कि मेरा घर नहीं समजो ! मेरा घर है -

पालन करने के कारण प्रत्यक्ष फल रुप में बाप से विशेष दिल की दुवाएं प्राप्त होती है। एक अपना अशरीरी बनने का अभ्यास, दुसरा बाप की दवाओं का प्रत्यक्ष फल, कर्मभोग को शुली से कांटा बना देता है। इसलिये छोटी बात को बडी बनाना वा बडी को छोटी बनाना, अर्थात परेशान होना वा अधिकारीपन की शान में रहना वह अपनी स्थिति उपर आधार रखता है। क्या हो गया वा जो हुवा वह अच्छा हुवा..... ये अने उपर है। ये निश्चय, बुरे को भी अच्छे में बदल सकता है। क्युंकि हिसाब-किताब चुक्तु होने के कारण वा ड्रामानुसार समय प्रति समय प्रेक्टिकल पेपर होने के कारण कोई बातें अच्छे रुप में सामने आयेगी, और कई बातों का बहार का रुप नुकशान का भी होगा लेकिन नुकसान के परदे के अंदर फायदा छीपा हुवा होता है। अगर थोडा सा समय धैर्यवत अवस्था व सहनशील स्थिति से अंतरमुखी हो देखो, तो बहार के परदे के अंदर जो फायदा छीपा हुवा है वही आपको दिखाई देगा। इसलिये उपर अर्थात बाहर के रुप को देखते हुवे भी नहीं देखो। बहार के रुप को देख जल्दी गभरा जाते हो। जिस कारण अच्छा सोचा हुवा भी बदल जाता है और कर्मबंधन में फंसते हो। क्या हो गया, कैसे हो गया, ऐसा तो होना नहीं चाहीये, मेरे से ही क्युं होता है, मेरा ही भाग्य शायद ऐसा है.... ये रस्सीयां बांधते जाते हो। ऐसे व्यर्थ संकल्प ही कर्मबंधन की सुक्ष्म रस्सीयां है। कर्मातीत आत्मा तो सोचेगी कि जो होता है वह अच्छा है, मैं भी अच्छा, बाप भी अच्छा, ड्रामा भी अच्छा - ये बंधन को काटने की केंची का काम करती है। बंधन कट गये तो कर्मातीत हो गये न ! कल्याणकारी बाप के बच्चे होने के कारण संगमयुग का हर सेकन्ड कल्याणकारी है। हर सेकन्ड का आपका धंधा ही कल्याण करना है। सेवा ही कल्याण करना है, ऐसे निश्चयबुद्धि आत्मा के लिये हर घडी, निश्चित कल्याणकारी हैं।

6-1-88

परमात्मा स्नेह दिल का स्नेह है जो पतित आत्मा को परिवर्तन करने का चुंबक हैं। और अधिकारी बनाने का एवम् रुहानी नशे का अनुभव कराने का आधार हैं। एक बाप से स्नेह किया तो सर्व के सहयोगी स्वत: बन जाते

हैं। बाप बीज को पानी देने से हर पत्ते को पानी स्वतः मिल जाता हैं। इसलिये दिल के टुकडे टुकडे नहीं होते हैं। परमात्मा से स्नेह, महेनत छुडा देता हैं और याद स्वतः सहज आती ही हैं। **चाहे ज्ञान अर्थात समज कितनी भी बुध्धि में हो लेकिन स्नेह के बीना ज्ञान रुखा हैं।** स्नेह सर्व संबंधो का दिल से अनुभव कराता हैं। सिर्फ ज्ञानी जो है वह दिमाग से याद करते हैं और स्नेही दिल सेयाद करते हैं। दिमाग से याद करनेवालों को याद में, सेवा में, धारणा में महेनत करनी पडती हैं। जहां स्नेह संपन्न ज्ञान नहीं अर्थात दिमागी ज्ञान है तो ज्ञान की बातों में भी क्युं, क्या, कैसे... दिमाग लडता रहेगा और अपने आपसे लडाई लगती रहेगी। व्यर्थ संकल्प ज्यादा चलेंगे। जहां स्नेह हैं वहां ऐसे युध्ध नहीं लेकिन लवलीन हैं। जिससे दिल का स्नेह होता हैं तो स्नेह की बात में क्युं, क्या, कैसे नहीं उठता हैं। जैसे परवाना शमा के स्नेह में क्युं, क्या नहीं करता लेकिन न्यौछावर हो जाता हैं, ऐसे परमात्म स्नेही आत्मायें स्नेह में समाई हुई रहेती हैं। इसलिये स्नेह की निशानी दिखाते हैं दिल। ज्ञान बीज है लेकिन पानी स्नेह हैं। इसलिये ज्ञान बीज को दिल का स्नेहरुपी पानी नहीं मिलता तो प्राप्ति का फल भी नहीं मिलता। इसलिये महेनत लगती हैं।

करोड की लेन देन इतना सुख का अनुभव नहीं कराती लेकिन दिल के स्नेह की एक छोटी सी चीज भी कितने सुख का अनुभव कराती हैं! क्युंकी दिल के स्नेह में हिसाब-किताब नहीं होता। लेकिन दिल का स्नेह पीछले हिसाब-किताब को भी चुक्तु कर देता हैं। तो स्नेह ऐसी विशेष अनुभूती हैं। अब अपने आपसे पुछो, ज्ञान के साथ-साथ बाप से दिल का स्नेह हैं या कहीं लीकेज भी हैं? अगर एक बापके सिवाय और किसी से संकल्प मात्र भी स्नेह हैं, चाहे व्यक्ति से, चाहे वैभव से, व्यक्ति के भी चाहे शरीर से स्नेह हो, चाहे उनकी विशेषता से हो, चाहे हद की प्राप्ति के आधार से हो लेकिन विशेषता देनेवाला कौन, प्राप्ति करानेवाला कौन? ऐसा किसी से भी स्नेह हो अर्थात लगाव संकल्प, वाणी वा कर्म में हो इसको लीकेज कहा जायेगा। यह लीकेज लवलीन स्थिति का अनुभव नहीं करायेगी। लीकेजवाली आत्मा प्राप्ति होते भी सदैव असंतुष्टता का ही अनुभव करेगी।

अपनी अनुभूति होती है और बालकपन के नशे से अपनी प्राप्ति। यह है रुहानी नशा। **देहभान के कितने नशे है। मैं यह हुँ - मैं यह हुँ लेकिन सभी नुकशान देनेवाले, नीचे लानेवाले। यह स्हानी नशा उंचा ले जाता है।** इसलिये नुकशान नहीं है। है ही बाप के, तो बाप कहने से बचपन याद आता है ना! तो सारा दिन क्या याद रहता है? "मेरा बाबा" या और कुछ याद रहता है? 'बाबा' कहनेवाले कौन? बच्चा हुआ ना! तो सदा बच्चे है और सदा ही रहेंगे। तो सदा इस भाग्य को सामने रखो - कौन हुं, किसका हुँ और क्या मिला है।

30-11-92

सभी अपने पुरुषार्थ को सदा चेक करते हो? जहाँ प्राप्ति होती है, प्राप्तिवाला कभी थकता नहीं। बीजनेशमेन को अनुभव है ना! ग्राहक देरी से आये तो भी थकेंगे नहीं। आहवान करते है। आओ-आओ। क्यों नहीं थकते? क्योंकि प्राप्ति है। तो आपको कितनी प्राप्तियां है। हर कदम में पदमों की प्राप्ति है। सारे वर्ल्ड में ऐसा साहुकार कोई है जिसको कदम में पदमों की कमाई हो? कितने भी नामीग्रामी हो लेकिन ईतने साहकार कोई नहीं है। चक्कर लगाकर आओ - देखो विदेश में कोई मिल गए? कितना भी बडा हो लेकिन आपके आगे वह कुछ भी नहीं है। तो ईतनी बडी प्राप्तिवाले कभी थक नहीं सकते। **प्राप्ति को भुलना अर्थात थकना।** उस बीजनेशमें भी कितनी महेनत करनी पडती है। और महेनत के बाद भी मिलेगा क्या? चलो ज्यादा में ज्यादा करोड मिल जाय। मिलते तो नहीं है लेकिन मिल जाय। और यहां तो पदमों की बात है। तो सदा अपनी प्राप्तियों को सामने रखो। अगर मालुम होता है कि यह मिलना है तो पुरुषार्थ को भूल जाते हो। प्राप्ति को ही सामने रखते है। उसको पुरुषार्थ दिखाई नहीं देगा। प्राप्ति ही दिखाई देंगी। खेती का काम भी करते है तो क्या दिखाइ देता है? महेनत दिखाइ देती है? या फल दिखाई देता है? फल की खुशी होती है ना? तो यह स्मृति रखने से कभी थकेंगे नहीं, न थकेंगे, न गति तीव्र से धीमी होगी। सदा तीव्र गति होगी। गुजरातवाले कभी कभी मुंझ जाते हो? जब बाप को अपनी सब जिम्मेवारीयां दे दी तो आप मौज में ही रहेंगे ना?

जीतना स्व के प्रति या अन्य की सेवा के प्रति युझ करते हो उतना यह खजाना बढता हैं। और अनुभव की ओथोरीटि बन जाते हैं। दुवाएं देना और लेना यह बीज हैं, जीसमें झाड स्वत: ही समाया हुवा हैं। इसकी विधी हैं शिक्षा और क्षमा। शिक्षा देने की कोशिष तो बहोत करते हो लेकिन क्षमा करना नहीं आता। शिक्षा देते हो लेकिन क्षमा भूल जाते हो। क्षमा करेंगे तो शिक्षा स्वत: आ जायेगी। शिक्षक बनना बहोत सहज हैं लेकिन सिर्फ शिक्षक नहीं बनना हैं। अभी से ही क्षमा करने का संस्कार धारण करेंगे तब ही दुवाये दे सकेंगे और ऐसे अभी से दुवाएं देने का संस्कार पक्का करेंगे तभी आपके जड चित्रो से भी दुवाएं लेते रहेंगे। दुवाओं का अखूट खजाना बापदादा से हर कदम में मिल रहा हैं लेनेवाला लेवे। आप देखो, अगर श्रीमत प्रमाण कोई भी कदम उठाते हो तो क्या अनुभव होता हैं ? बाप की दुवायें मिलती हैं न ? दुवाओं का खजाना भरपूर करते चलो। कोई भले क्या भी देवे लेकिन आप उसको दुवाएं दो। चाहे कोई क्रोध भी करता हैं उसमें भी वो आपको याद दिलाता हैं कि मैं तो परवश हुं लेकिन आप मास्टर सर्वशक्तिवान हो। गुलाब का पूष्प बदबू से खुश्बु ले सकता और आप क्रोधी से दुवाएं नहीं ले सकते ? ये कभी नहीं सोचो कि यह ठीक हो तो मैं ठीक होऊं, यह सिस्टम ठीक हो तो मैं ठीक होउं। कभी सागर के आगे जाकर कहेंगे – "हे लेहर ! आप बडी नहीं, छोटी आओ, टेढी नहीं आओ, सीधी आओ ?" ये संसार भी सागर हैं। सभी लहेरे न छोटी होगी, न टेढी होगी, न सीधी होगी, न बडी होगी, तो ये आधार नहीं रखो की ये ठीक हो जाये तो मैं हो जाऊं। क्युंकि परिस्थिति से आप बडे हो।

30-11-92

सभी को डबल नशा रहता है कि मैं श्रेष्ठ आत्मा मालिक भी हुं और फिर बालक भी हुँ ? एक है मालिकपन का रुहानी नशा और दुसरा है बालकपन का रुहानी नशा। बालक सदा हो या कभी कभी ? बालक सदा बालक ही है ना ! तो ऐसा मालिकपन और बालकपन सारे कल्प में और कोई समय नहीं रह सकता। सतयुग में भी परमात्म बच्चे नहीं कहेंगे। देवात्मा के बच्चे हो जायेंगे। इस समय डबल नशे से डबल प्राप्त होगी। मालिकपन से

जिससे ईर्ष्या या धृणा होती हैं वहाँ भी झुकाव होने से बार-बार उसकी याद आती रहेगी और लीकेज का काम करेगी।

18-1-88

जैसे स्थान की सेवा का भी बहोत महत्त्व है ऐसे किसी को "हां जी" या "पहले आप" केहकर सेवा करने का भी महत्त्व हैं। सिर्फ भाषण करना सेवा नहीं हैं। लेकिन किसी भी सेवा की विधी से मन्सा-वाचा-कर्मणा बर्तन मांजना भी सेवा का महत्त्व हैं। जीतना भाषण करनेवाला पद पा लेता है उतना योगयुक्त, युक्ति युक्त स्थिति में स्थित रहकर बर्तन माजनेवाला भी श्रेष्ठ पद पा सकता हैं। वह मुख से करता, वह स्थिति से करता। तो सदा हर समय सेवा की विधी के महत्व को जान कर महान बनो। कोई भी सेवा का फल न मिले ये हो नहीं सकता। लेकिन सच्ची दिल पर साहेब राजी होता हैं। जब दाता वरदाता राजी हो जाये तो क्या कमी रहेगी ! वरदाता या भाग्य विधाता, ज्ञान दाता भोले बापको राजी करना बहोत सहेज हैं। तो ऐसे भगवान राजी, तो धर्मराज काजी से भी बच जायेंगे, माया से भी बच जायेंगे।

कोई भी सेवा के पुण्य का फल स्वत: ही प्राप्त होता हैं। पुण्य का फल जमा भी होता हैं और फिर अभी भी मिलता हैं। किसी भी सेवा का पुण्य एक्स्ट्रा खुशी और शक्ति की अनुभूति के रुप में होता हैं। चाहे मुख से सेवा करो, चाहे हाथो से करो लेकिन सेवा माना ही मेवा। सेवा का महत्व रखने से महानता प्राप्त कर लेते हो। तो ऐसे सेवा के महत्व को जान सदा कोई न कोई सेवा में बीझी रहो। ऐसे नहीं की कोई जिज्ञासु नहीं मिला तो सेवा क्या करुं ? कोई प्रदर्शनी नहीं हुई, कोई भाषण नहीं हुआ, क्या सेवा करुं ? नींद ? सेवा का फिल्ड बहोत बडा हैं। कोई कहे हम को सेवा मिलती नहीं हैं – कह नहीं सकते। वायुमंडल को बनाने की कितनी सेवा रही हुई हैं ? प्रकृति को भी परिवर्तन करनेवाले आप हो। तो प्रकृति का परिवर्तन कैसे होगा ? भाषण करेंगे क्या ? वृत्ति से वायुमंडल बनेगा। वायुमंडल बनाना अर्थात प्रकृति का परिवर्तन होना। तो यह कितनी सेवा हैं ! बिमार भी हो तो यह भी सेवा का चान्स हैं। चाहे अनपढ हो, चाहे पढा हुआ हो,किसी भी प्रकार

की आत्मा हो, सबके लिये सेवा का साधन बहोत बडा होता हैं। ओल राउन्डर सेवाधारी बनना हैं। कर्मणा सेवा की भी सो मार्क्स हैं। अगर वाचा, मनसा ठीक हैं लेकिन कर्मणा की तरफ रुची नहीं हैं तो **100** मार्क्स तो गई। इसलिये शुरु में जब बच्चों की भट्ठी बनाई तो कर्मणा का कितना पाठ पक्का कराया ! माली भी बनाया, तो जुते बनानेवाला भी बनाया, बर्तन मांजनेवाला भी बनाया तो भाषणकरनेवाला भी बनाया। इसलिये कोई न कोई कर्मणा सेवा भी जरुरी हैं।

मुलाकात

जो दिल से सेवा करते हैं उसका दिलाराम बापके पास जल्दी पहोंचता हैं क्युंकी दिल की बात दिल से होती हैं। दिल की सेवा सेकन्ड में पहुँचती हैं। वह पदमगुणा जमा हो जाती हैं। वैसे तो एक एक आत्मा इस ईश्वरीय मशीनरी के लिये आवश्यक हैं। पांच वर्ष का बच्चा भी आवश्यक हैं, वह भी शोभा हैं। जो भी हो सब वेल्युएबल हैं। कहने में तो कुछेक का नाम आता हैं लेकिन काम सभी का हैं।

22-1-88

सभी नंबरवन बनना चाहते हैं। दो-तीन नंबर बनना कोई पसंद नहीं करेंगे। यह भी लक्ष्य शक्तिशाली अच्छा है, लेकिन लक्ष्य और लक्षण समान होना यही समान बनना है। उसके लिए जैसे ब्रह्माबाप ने पहला कदम हिंमत का कौनसा उठाया, जिस कदम से ही पदमापदम भाग्यवान आदि से अनुभव किया ? पहला कदम हिंमत का "सब बातो में समर्पणता।" सब कुछ समर्पण किया, कुछ सोचा नहीं की क्या होगा कैसे होगा। एक सेकेन्ड में बाप की श्रेष्ठ मत प्रमाण बापने ईशारा दिया तो बाप का इशारा और ब्रह्मा का कर्म और कदम। इसको कहते है हिंमत का पहला कदम। तन को भी समर्पण किया मन को भी सदा मन्मनाभव की विधि से सिध्ध बनाया। इसलिए मन अर्थात हर संकल्प सिध्धि अर्थात सफलता स्वरुप बने। धन के बिना कोई भविष्य की चिंता के, निश्चिंत बन धन समर्पित किया। क्योंकि निश्चय था कि यह देना, देना नहीं है लेकिन पदमगुणा लेना है। ऐसे ही संबंधोको भी समर्पित किया अर्थात लौकिक को अलौकिक संबंध में

मुश्किल लगता है। कमजोरी मुश्किल बना देती है। है सहज। तो बाप क्या चाहते है ? सदा सहजयोगी बनकर चलो।

सदा सहजयोगी अर्थात सदा खुश रहनेवाले। सहजयोगी जीवन अर्थात सब से भाग्यवान आत्माये है। यह खुशी रहती है ! आप जैसा खुश और कोई संसार में होगा ? तो सदा क्या गीत गाते हो ? "वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य"।

21-11-92

कंई बच्चे कहते है बाबा से मिलना चाहते है लेकिन अनुभव नहीं होता है। रुहरीहान करते है, लेकिन जवाब नहीं मिलता है। कारण क्या है ? पहले न्यारे बने जो प्यार मिले। प्यार प्राप्त करने का फाउन्डेशन अगर पक्का है तो प्राप्ति की मंजील प्राप्त न हो, यह हो नहीं सकता। **क्योंकि बाप की गेरंटी है एक बात आप करो बाकी सब मैं करुं। एक बात - "मुजे दिल से याद करो, मतलब से नहीं। कोई विध्न आये तो 4 घंटा योग लगायेंगे और विध्न खत्म हुआ तो याद भी खत्म हो गई तो यह मतलब की याद हुई ना ! इच्छा पूर्ण करने के लिए याद नहीं अच्छा बनकर याद करना है।** परमात्म प्यार के आगे आत्माओं का प्यार क्या है ? कुछ भी नहीं। जब परमात्मा प्यार के अनुभवी बनते हो तो दिल से क्या निकलता है ? कौन सा गीत गाते हो ? पा लीया और कुछ नहीं रहा। ऐसे प्राप्ति के अधिकारी आत्मा बने। सदा मेरा बाबा है तो प्राप्ति भी सदा होगी ना !

30-11-92

दुवायें दो - दुवायें लो

ब्राह्मण परिवार के संबंध संपर्क में और सेवा के संबंध में आते हो तो सर्व की दुवाओं का खज़ाना मिलता हैं। ये बहोत बडा खजाना हैं जिससे जो आत्मा भरपूर हैं उसकोकभी भी पुरुषार्थ में महेनत नहीं करनी पडती हैं। इसमें भी पहेले मात-पिता की दुवाएं और साथ में सर्व के संबंध में आने से सर्व द्वारा दुवायें मिलती हैं। सबसे बडे ते बडा तीव्र गति से आगे उडने का तेज यंत्र वा रोकेट - "दुवायें" हैं। ऐसी दुवाओं से विध्नप्रुफ बन जाते हैं अर्थात युध्ध नहीं करनी पडती हैं। स्वत: सहज योग युक्त और युक्ति युक्त हर संकल्प, कर्म और बोल में बन जाते हैं। दुवाओं का खजाना

श्रेष्ठ हो ना ? इसलिये गायन है अतिन्द्रिय सुख पुछना हो तो-आपसे पुछो

देखो भगवान की पसंदगी क्या है ? जिसको कोई पसंद नहीं करते उसको बाप पसंद करते है। बाप की नजर किसके उपर गई ? आप लोगो के उपर ! ईतने-ईतने नामीग्रामी लोगों पर नजर नहीं गई। कहते है ना तुम्हारी गत-मत तुम्ही जानो और कोई नहीं जानता। तो नशा है कि परमात्माने हमको पसंद किया है।

21-11-92

सदा सहज पुरुषार्थ कि विधि क्या है ? सहज पुरुषार्थ का अनुभव है ? क्या विधी अपनाई जो सहज हो गया ? "एक" को याद करना। - यह है सहज विधी। क्योंकि अनेको को याद करना मुश्किल होता है। लेकिन एक को याद करना तो सहज है। सहजयोग का अर्थ ही है - 'एक' को याद करना। एक बाप दुसरा न कोई। ऐसा है ? या बाप के साथ और भी कोई है ? कभी कभी देह अभिमान में आ जाते हो ? जब 'मेरा शरीर' है तो याद आता है, मेरा है ही नहीं तो याद क्या आता ? देह भान में आना, बोडी कोन्सीयस में आना, अर्थात मेरा शरीर है लेकिन सदैव याद रखो कि मेरा नही, बाप का है। सेवा अर्थ बापने ट्रस्टी बनाया है। नहीं तो सेवा कैसे करेंगे ? शरीर तो चाहिये ना ? लेकिन मेरा नहीं, ट्रस्टी है। मेरापन है तो गृहस्थी और तेरापन है तो ट्रस्टी। ट्रस्टी अर्थात "डबल लाईट"। गृहस्थी को मेरे, मेरे का कितना बोज होता है, मेरा घर, मेरे बच्चे, मेरे पौत्रे.. लम्बी लीस्ट होती है। यह बोज है।

ट्रस्टी बन गये तो बोज खतम। ऐसे बने हो ? या बदलते रहते हो ? जब है ही कोई नहीं, एक बाप दुसरा न कोई तो क्या याद आयेगा ? तो सहज विधी क्या हुई ? एक को याद करना। इसलिये कहते हो ना बाप ही संसार है ? संसार में सब कुछ होता है ना ? जब संसार बाप हो गया तो एक की याद सहज हो गई ना ? महेनत का काम तो नहीं है ना ? आधाकल्प महेनत की। ढुंढना - भटकना यही किया ना तो महेनत करनी पडी ना ? अभी बापदादा महेनत से छुडाते है। अगर कभी किसी को भी महेनत करनी पडती है तो उसका कारण है अपनी कमजोरी। कमजोर को सहज काम भी

परिवर्तित किया, छोडा नहीं। कल्याण किया। परिवर्तन किया। मै-पन की बुध्धि, अभीमान की बुध्धि समर्पित की, इसीलिए सदा तन, मन, बुध्धि से निर्मल, शीतल, सुखदायी बन गए। कैसी भी, लौकिक परिवार से या दुनिया की अन्जान आत्माओ से, परिस्थितियां आई लेकिन संकल्प में भी, स्वप्न में भी कभी संशय के सुक्ष्म स्वरुप संकल्प मात्र भी हलचल में नहीं आए।

ब्रह्मा की विशेष इस बात की कमाल रही, जो आप सबके आगे ब्रह्माबाप एक्जाम्पल था। लेकिन ब्रह्मा के आगे कोई साकार एक्जाम्पल नहीं था। सिर्फ अटल निश्चय और बाप की श्रीमत का आधार रहा। आप लोगो के लिए तो बहुत सहज है और जितना जो पीछे आये है उनके लिए और सहज है। क्योंकि अनेक आत्माओ के श्रेष्ठ जीवन आपके आगे एक्झाम्पल है। यह करना है, यह बनना है, क्लियर है। इसलीए आप लोगो को क्युं - क्या का कवेश्चन उठने की मार्जीन नहीं है। सब देख रहे हो। लेकिन ब्रह्मा के आगे कवेश्चन उठने की मार्जीन थी। क्या करना है-आगे क्या होना है, राईट कर रहा हुं या रोंग कर रहा हुँ, यह संकल्प उठना संभव था। लेकिन संभव को भी असंभव बनाया।

"एक बल एक भरोसा" ईसी आधार से निश्चय बुध्धि नंबरवन विजयी बन गए। ईसी समर्पणता के कारण बुध्धि सदा हल्की रही। बुद्धि पर बोज नहीं रहा। मन निश्चिंत रहा। चहेरे पर सदा ही बेफिकर बादशाह के चिहन स्पष्ट देखे। **350** बच्चे और खाने के लिए आटा नहीं और टाईम पर बच्चो को खाना मिलना है, तो सोचो ऐसी हालत में कोई बेफिकर रह सकता है ? एक बजे बेल बजना है और **11** बजे तक आटा नहीं कौन बेफिकर रह सकता है। ऐसी हालत में भी हर्षित, अचल रहा। यह बाप की जिम्मेवारी है, मेरी नहीं। मैं भी बाप का तो बच्चे भी बाप के है, मैं निमित्त हुं। ऐसा निश्चिय और निश्चिंत कौन रह सकते है ? जो मन बुध्धि से समर्पित आत्मा है। अगर अपनी बुध्धि चलाते क्या होगा ? सब भुखे तो नहीं रह जायेंगे ? यह तो नहीं होगा, वह तो नहीं होंगा ? ऐसे व्यर्थ संकल्प वा संशय के मार्जीन होते हुए भी समर्थ संकल्प चले की सदा बाप रक्षक है, कल्याणकारी

है। यह विशेषता है समर्पणता की तो जैसे ब्रह्माबाप ने समर्पण होने का पहला कदम हिम्मत का उठाया ऐसे फोलो फादर करो। निश्चय की विजय अवश्य होती है। अटल निश्चय था तो टाईम पर आटा भी आ गया, बेल भी बज गया और पास भी हो गए। इसको कहते है कवेश्चन मार्क अर्थात टेढा रास्ता न ले, सदा कल्याण की बिन्दी लगाओ। **Full Stop** ईस विधि से ही सहज भी होगा और सिध्धी भी प्राप्त होगी, तो यह है ब्रह्मा की कमाल। फिकर के बोज से बेफिकर बन जाओ। इसको ही कहा जाता है स्नेहका रीटर्न करना।

30-1-88

ब्रह्माबाप समर्पण हुए तो बाप से सर्व श्रेष्ठ वर्सा तो मिला लेकिन दुनिया के लोगो से अपशब्द और अत्याचार ही मिले। लौकिक जीवन में कभी अपशब्द नहीं सुने लेकिन सर्व के स्नेही जीवन व्यतीत किया। जब की अलौकिक जीवन में उतना ही सर्व के दुश्मन रुप बने। लेकिन सहनशीलता के गुण से ब्रह्माबाप सदा मुस्कुराते रहे, कभी मुरझाये नहीं।

कोई दुश्मन बन क्रोधित हो अपशब्दों की वर्षा करते, ऐसे समय पर भी संकल्प मात्र भी मुरझाने के चिन्ह चहेरे पर न हो, परंतु सदा मुस्कराहट ही हो इसको कहते है सहनशीलता। दुश्मन आत्मा को भी रहमदिल भाव से देखना, बोलना और संपर्क में आना इसको कहते है सहनशीलता।

ब्रह्मा बाप के सामने स्थापना के कार्य में वा सेवा के कार्य में कितनी भी ऐसी पहाड समान समस्याएँ आई लेकिन पहाड को भी राई बनाकर स्वयं भी हल्के रहे और दुसरे को भी हल्का बनाया। विस्तार में न जाये **nothing new** की, **full stop** की बिंदी लगाकर बिंदी बन आगे बढे। जिस कारण वो कभी गभराये नहीं लेकिन सदा संपन्न रहे और ज्ञान की, याद की गहराई में ही रहे। सार में रहने के कारण सदा भरपूर रहे। विस्तार वाले यह क्यों ? यह क्या ? ऐसा नहीं वैसा, ऐसा होना चाहिए-ऐसे संकल्पो में और वाणी में सबके आगे उछलता रहेगा, जिस कारण स्वयं ही हांफतां और स्वयं ही थकता रहेगा। सहनशील सदा मौज में रहता और उडता रहता है। ऐसा सहनशील सदा अटल-अचल और सहज रुप से मौज में रहता,

दिया और क्या क्या दे दिया। दोनो ही बाते याद रहती है ना ? तो अखबार में निकालेंगे ना 'रिचेस्ट ईन ध वर्ल्ड ?' और देखो खजाना भी ऐसा है जिसको न चोर लुंट सकता है, न आग जला सकती है, न पानी डुबो सकता है। ऐसा खजाना बापने दे दिया। अविनाशी खजाना है ना ? अविनाशी खजाना कोई विनाश कर नहीं सकता और कितना सहज मिल गया। जितना खजाना है उसके अंतर में महेनत की है कुछ ? त्याग किया था या भाग्य मिला ? त्याग भी किया तो बुराईयों का किया ना ? बुराई छोडना भी कोई छोडना हुआ क्या ? दुनिया कहती है - त्याग किया और आप कहते हो भाग्य मिला है। शाहुकार को शाहुकार बनाना बडी बात नहीं हुइ ना ? गरीब को शाहुकार बनाना - यह है कमाल। जो आजकल के विनाशी धन के शाहुकार है उनको बाप शाहुकार नहीं बनाता। उनका भाग्य ही नहीं है। भाग्य है ही गरीबों का। कभी आपका नाम आया है 'हु ईझ हुं में' ? औरो का आता है ना ? और बाप की डिक्शनरी में 'हु ईझ हुं' में आपका नाम है। भगवान का बुक ही न्यारा है। तो ईतनी खुशी है ? धरती और आकाश को माप लो - उस से भी ज्यादा खुशी है ना ? बेअंत है ना ? आकाश और धरती तो हद हो जायेगी ना ? आपकी उससे भी बेहद है। मालिक बन गये हो ना ? जब बाप भी बेहद का बाप है तो प्राप्ति भी बेहद की करायेगा ना ? तो क्या याद रहता है ? बेहद का बाप मिला, बेहद का राज्यभाग्य मिला, बेहद का खजाना मिला, है नशा ? हर कर्म में यह रुहानी नशा अनुभव होना चाहिये - स्वयं को भी और औरो को भी। चाहे वे समजे - नहीं समजे, इतना तो कहेंगे ना कि ये खुशी मौज में रहते है। यह तो अनुभव करा सकते हो ना ? जैसे मधुबन में आते तो अंजान भी है लेकिन क्या अनुभव करते है ? यहाँ का वातावरण और यहां की आत्मायें खुश रहनेवाली है। वायुमंडल में खुशी है - यह तो अनुभव करते है ना ? तो आप सब के संबंध-संपर्क में अनुभव करे कि ये अलौकिक आत्मायें है, भरपुर आत्मायें है। ऐसा अनुभव करते है ? चाहे देह अभिमान के कारण कहे नहीं, लेकिन अंदर तो जानते है ना ? क्योंकि बाहर से आपको कहें तो खुद को भी बनना पडे ना ? इसलिये कहेंगे नहीं, लेकिन अंदर में महेसुस जरुर होगा। तो ऐसे

करना ये है सहज विधी। अगर खुशी कम है तो उसका भी कारण यही है कि मेरे के अधिकार से बाप को याद नहीं किया। क्योंकि याद में जो विघ्न डालता है वो भी मेरापन। मेरा शरीर, मेरा संबंध - यही मेरापन विघ्न डालता है। इसलिये इस अनेक मेरे मेरे को-'एक मेरा बाबा' में बदल दो। यही सहज विधी है। क्योंकि जीवन में सबसे बडे ते बडी प्राप्ति है खुशी। अगर खुशी नहीं तो ब्राह्मण नहीं। ब्राह्मण जीवन का श्वास है खुशी। इसलिये सदा खुश रहो। बाप मिला अर्थात सबकुछ मिला। खुशी गायब तब होती है जब कोई अप्राप्ति होती है। तो ब्राह्मण अर्थात सबकुछ मिला।

12-11-92

बापने हर ब्राह्मण बच्चों को तख्तनशीन राजा बना दिया है। सारे सृष्टिचक्र के अंदर ऐसा कोई बाप होगा जिसके सब राजा बच्चें हो ? लक्ष्मी-नारायण भी ऐसा नहीं बन सकते। यह परमात्मा बाप ही कहते है कि मेरे सभी बच्चे 'राजा बच्चे' है। वैसे दुनिया मेंकह देते है - यह राजा बच्चा है लेकिन बने कुछ भी - सर्वेन्ट या कुछ भी बने लेकिन कहने में आता है राजा बेटा ! इस समय आप प्रेक्टिकल में राजयोगी अर्थात राजा बच्चे बनते हो तो बाप को भी नशा है और बच्चों को भी नशा है।

12-11-92

सब से शाहुकार से शाहुकार कौन है ? बहुत खजाने मिले है। एक दिन में कितनी कमाई करते हो, मालुम है ? पदमो की कमाई करते हो। रहते गाँव में और पदमों की कमाई कर रहे हो। देखो यही परमात्मा पिता का कमाल है, जो देखने में साधारण है लेकिन है सब से शाहुकार में शाहुकार। तो अखबार में निकालेंगे - यहां सब से शाहुकार में शाहुकार बैठे है - तो फिर सब आपके पीछे पड जायेंगे। आजकल आतंकवादी शाहुकारो के पीछे पडते है ना। फिर आपके पीछे पड जायेंगे। तो क्या करेंगे ? उन्हो को भी शाहुकार बना देंगे ना ? है देखो कितने साधारण रुप में ! कोई आप को देखकर समजेंगे कि ये सारे विश्व में शाहुकार है या पदमो की कमाई करनेवाले है ? लेकिन साधारणता में महानता समाई हुई है। जितने ही साधारण हो उतने ही अंदर महान हो। तो यह नशा रहता है ? बापने क्या से क्या बना

महेनत से नहीं। इसी कारण **14** वर्ष तक भट्ठी में नाज से पलनेवाले बच्चो के पास गोबर के गोले भी बनवाये, मीकेनीक भी बनाया, चंपल भी सिलवाई, माली भी बनाया आदि सबकुछ पार किया लेकिन सदा मौज की जीवन का अनुभव रहा। **जो मुंझे वह भागे गये**। बाकी रहे वह खुद मौज में रहकर दुसरो को भी मौज की जीवन अनुभव करा रहे है। तो चाहे स्थुल साधारण काम हो, चाहे हजारों की सभा के बीच स्टेज पर स्पीच करनी हो - दोनो मौज से करे, इसको कहते है सरेन्डर जीवन। ऐसे ही सहनशीलता का तीसरा पेपर भी ब्राह्मण बच्चो द्वारा ट्रेटर होकर छोटी मोटी बातो में विघ्न खडा करने का हुआ, लेकिन इस में भी बाबाने मधुरता, शुभ भावना, शुभ कामना से सामना करनेवाले को भी संतुष्ट कीया और सहनशीलता का पाठ पढाया। जिस कारण ऐसे लोग आज क्षमा मांगते और उनके मुखसे यही बोल निकलते 'बाबा तो बाबा है', तो ऐसे **follow father** करो।

3-2-88

<u>ब्रह्मा बाप की शुभ आशायें</u>

(**1**) ब्रह्मा बाप को तो बच्चों को साथ भी ले जाना हैं और सारे कल्प में बच्चों के साथ रहेना भी हैं। शिवबाप तो साथ ले जानेवाला हैं लेकिन सारे कल्प में साथ नहीं रहेगा। तो ब्रह्मा बाप सदा रहनेवाला और शिवबाबा साक्षी होकर देखनेवाला हैं। इसलिये ब्रह्मा बाप की बच्चों प्रति पहेली शुभ आशा हैं - बापदादा समान साक्षी और साथी दोनों बनना हैं।

(**2**) दुसरी आशा हैं - हर ब्राह्मण आत्मा प्रति सदा शुभ भावना - शुभ कामना सिर्फ संकल्प वा चाहना तक नहीं लेकिन वाणी और कर्म में भी रहे। जैसे बाप प्रति कोई कितना भी आपको गलतफेहमी करे वा कैसी भी बातें करे वा कभी साकार में स्वयं बाप भी कोई बच्चों को आगे बढने के लिये इशारा वा शिक्षा दे दे लेकिन जहां स्नेह है वहां शिक्षा वा कोई भी परिवर्तन का ईशारा गलतफेहमी पैदा नहीं करेगा। सदैव यही भावना रहती है की बाबा जो कहेता हैं उसमें कल्याण हैं। कभी स्नेह की कमी नहीं हुई, और ही अपने को बापके दिल के समीप समझते रहे। इसको कहते हैं,

दिल का जीगरी स्नेह, जो भावना को परिवर्तन कर देता हैं। तो ऐसा बापके प्रति स्नेह तो हैं लेकिन ब्राह्मण परिवार में भी आपस में ऐसे ही दिल का स्नेह हो। तब बाप और परिवार में स्नेह का बेलेन्स और याद और सेवा का बेलेन्स स्वत: ही प्रेक्टिकल में दिखाई देगा। तो बापके स्नेह का पलडा भारी हैं लेकिन सर्व ब्राह्मण परिवार में स्नेह का पलडा कभी भारी कभी हलका होता रहता हैं। इसमें भी कभी किसके प्रति भारी, तो कभी किसके प्रति हलका। तो यह बाप और बच्चों के स्नेह का बेलेन्स रहे यही ब्रह्मा बाप की दुसरी शुभ आशा हैं। तो इसमें बाप समान बनो।

जैसे बापदादा स्थापना के कार्य अर्थ निमित्त बने लेकिन जब बच्चों को सेवा में साथी बनाया तो सेवा में बच्चों को सदा आगे बढते देख बापदादा स्नेह के कारण सदा खुश रहे। दिल के स्नेह के कारण ये संकल्प कभी नहीं उत्पन्न हुआ की बच्चे क्युं सेवा में आगे जायें। निमित्त तो मैं हुं, मैंने ही इनको निमित्त बनाया कभी स्वप्न मात्र भी यह भावना उत्पन्न नहीं हुई। इसको कहा जाता हैं सच्चा स्नेह, नि:स्वार्थ स्नेह, रुहानी स्नेह। सदा बच्चों को आगे निमित्त बनाने में हर्षित रहे। बच्चोंने किया या बापने किया, मैपन नहीं रहा। मेरा काम हैं, मेरी ड्युटी हैं, मेरा अधिकार हैं, मेरी बुद्धि हैं, मेरा प्लान हैं - नहीं। स्नेह, यह मेरापन मिटा देता हैं। आपने किया सो मैंने किया, मैने किया सो आपने किया-ये शुभ भावना या शुभ कामना, इसको कहा जाता हैं दिलका स्नेह। स्नेह में कभी अपना या पराया नहीं लगता। स्नेह में कभी स्नेह का बोल कैसा भी साधारण, हुज्जत का बोल हो लेकिन ऐसी फिलींग नहीं आयेगी की इसने ये क्युं कहाँ ? स्नेही, स्नेही आत्मा के प्रति कभी अनुमान पैदा नहीं करेगा लेकिन उसके प्रति फेइथ होने के कारण उसके हल्के बोल में भी ऐसा समझेगा कि इसने अवश्य कोई मतलब से कहा हैं। तो जैसे बापके प्रति स्नेह के कारण बापदादा ने सर्टिफिकेट दिया ऐसे ब्राह्मण परिवार से भी स्नेह का सर्टिफिकेट लेना हैं। ये बेलेन्स करने में सेवा में आगे बढते जो माया आने की कम्पलेईन है वह सदा समाप्त हो जायेगी। सेवा में माया आने का मूल कारण ब्राह्मण परिवार प्रति दिल का स्नेह नहीं हैं। दिल का स्नेह त्याग की भावना उत्पन्न करता हैं। ऐसा त्याग न

ऐसा कहना नहीं। मन से 'बाबा' कहा और सेफ। तो ऐसे सेफ हो। क्योंकि आजकल की दुनिया में सभी सेफ्टीका रास्ता ढुंढते है। कोई भी बात कहेंगे तो पहले सेफ्टी सोचेंगे, फिर करेंगे। तो आजकल सेफ्टी सब चाहते है। चाहे स्थुल, चाहे सुक्ष्म, तो बापने सदा ब्राह्मण जीवन की सेफ्टी का साधन दे दिया है। चाहे कैसी भी परिस्थिति आ जाये लेकिन आप सदा सेफ रह सकते हो। कितना सहज साधन दिया है। महेनत नहीं करनी पडती।

मार्ग महेनत का नहीं है लेकिन अपनी कमजोरी महेनत का अनुभव कराती है। जब कमजोर हो जाते हो तब महेनत लगता है। है सहज लेकिन स्वयं ही महेनत का अनुभव करने के निमित्त बनते हो। महेनत में थकावट होती है और सहज में खुशी होती है। अगर कोई भी कार्य सहज सफल होता रहता तो खुशी होगी ना ! महेनत करनी पडी तो थकावट होगी। तो खुशी अच्छी वा थकावट अच्छी ! बापदादा सदैव बच्चों को यही कहते है कि आधाकल्प महेनत की, अभी महेनत नहीं करो। अभी मौज मनाओ। मौज के समय भी महेनत करे तो मौज कब मनायेंगे ? अभी नहीं तो कभी नहीं मनायेंगे। इसलिये सदा सहज अर्थात मौज में रहनेवाले ! तो सदा छत्रछाया में रहते हो ? या बाहर निकल देखने में मजा आता है ? **छत्रछाया के अंदर रहने की मौज अनुभव करो। यह क्या है ? यह क्यों है ? यह कैसा है ? ये छत्रछाया के अंदेर से निकल चक्कर नहीं लगाना है।** यह छत्रछाया सदा श्रेष्ठ सेफ रहने की लकिर है। लकिर से बाहर जाने से 'शोकवाटीका' मीलती है और लकिर के अंदर रहेने से 'अशोकवाटीका' ! कोई शोक है क्या ? संगमयुग में बाप 'अशोक वाटीका' में रहने का साधन बताते है और इस अभ्यास से अनेक जन्म अशोक रहेंगे। शोक का नाम निशान नहीं होगा। तो सदा सेफ रहनेवाली श्रेष्ठ आत्माये है - यह अनुभव करते चलो। समर्थ बाप, समर्थ बच्चे, तो छत्रछाया पसंद है ना ?

12-11-92

सभी सदा खुश रहते हो ? सदा खुश रहने का सहज पुरुषार्थ कौन सा है ? (याद) याद में भी क्यां याद रखना सहज है ? मेरापन सहज कर देता है। मेरापन होता है तो मेरा सहज याद आता है। तो मेरे के अधिक रसे याद

3-11-92

जब भी कोई ऐसी परिस्थिति आवे तो पहले सोचो - मेरा साथी कौन ? पांडवोने कितना कुछ सहन किया लेकिन बाप का साथ होने कारण विजयी बने। तो विजय की गेरंटी है। साथ में बाप है तो विजयी बनने की गेरंटी है।

3-11-92

फिर भी बाप को प्रिय, आजकल के हिसाब से, साधारण आत्मायें ही है। यही कमाल है जो साधारण आत्मायें अति श्रेष्ठ बन गई। जिन्हों के लिए कोई सोच भी नहीं सकता कि यें आत्मायें ईतने वर्से के अधिकारी बनेगी। दुनिया सोचती रहती और आप बन गये। वो तो ढुंढते रहते - किस वेश में आयेंगे ? और आप क्या कहते ? पा लिया। तो पा लिया की खुशी है ना ?

पांडव रोते है ? आंखो से नहीं रोते। मन से रोते हो ? उदास होते हो? कभी धंधादारी में नुकशान हो जाय तो उदास होते है ना ! तो यह उदास होना भी मन का रोना है। अभी उदास भी नहीं हो सकते। क्योंकि ये थोडा बहुत नुकशान भी अखुट प्राप्तियों के आगे क्या बडी बात है ? पहले भी सुनाया था ना कि शरीर चला जाये लेकिन खुशी नहीं जाये।

3-11-92

अपने को हर समय, हर कर्म करते बाप की छत्रछाया के अंदर रहनेवाले अनुभव करते हो ? छत्रछाया सेफ्टी का साधन बन जाये। जैसे स्थुल दुनिया में धुप से वा बारीस से बचने के लिए छत्रछाया का आधार लेते है, तो वह तो है स्थुल छत्रछाया, यह है बाप की छत्रछाया जो आत्मा को हर समय सेफ रखती है। आत्मा कोई भी अल्पकाल के आकर्षण से आकर्षीत नहीं होती, सेफ रहती है। तो ऐसे सदा अपने को छत्रछाया में रहनेवाली सेफ आत्मा समजते हो ? सेफ हो या थोडा थोडा सेक आ जाता है ? जरा भी इस साकारी दुनिया का, माया के प्रभाव का सेक मात्र भी नहीं आये। क्योंकि बापने ऐसा साधन दिया है जो सेकसे बच सकते हो। वह सबसे सहज साधन है - 'छत्रछाया'। सेकेन्ड भी नहीं लगता। 'बाबा' कहा और सेफ, मुखसे नहीं ! मुख से 'बाबा' - 'बाबा' कहे और प्रभाव में खिचता जाये।

होने के कारण सेवा मायारुप बन जाती हैं। ऐसी सेवा से चाहे कोई पचास - साठ सेन्टर्स खोलने के भी निमित् बन जाये लेकिन सेवा के खाते में या बापदादा की दिल में सेवा का जमा खाता जितना जमा होना चाहिये उतना नहीं होता। इसलिये भले कोई दो सेन्टर की इन्चार्ज हैं और कोइ पचास सेन्टर की इन्चार्ज है लेकिन अगर दो सेवाकेन्द्र भी निर्विघ्न हैं, माया से, हलचल से, स्वभाव संस्कार के टक्कर से मुक्त हैं तो दो सेन्टर वाले का भी पचास सेवा केन्द्रवाले से ज्यादा सेवा का खाता जमा हैं। इसमें खुस नहीं हो जाओ की मेरे **30** सेन्टर्स है, **40** हैं, लेकिन माया से मुक्त कितने सेन्टर्स हैं ? सेन्टर भी बढाते जाओ, माया भी बढाते जाओ - ऐसी सेवा बापके रजिस्टर में जमा नहीं होती हैं।आप सोचेंगे - हम तो बहोत सेवा कर रहे हैं, दिन-रात निंद भी नहीं करते, खाना भी एक बार बनाके रात को खा लेते - इतना बीझी रहेते लेकिन सेवा के साथ साथ माया में भी बीझी तो नहीं रहते ? ये क्यों हुआ, ये कैसे हुआ, इसने ये क्यों किया, मैंने क्युं नहीं किया, मेरा हक्क, तेरा हक्क लेकिन बाप का हक्क कहां गया ? समझा ? सेवा अर्थात जिसमें स्व के और सर्व के सहयोग या संतुष्टता का फल प्रत्यक्ष दिखाई दे। अगर सर्व की शुभ भावना - शुभ कामना का सहयोग या संतुष्टता प्रत्यक्ष रुप में नहीं प्राप्त होती हैं तो चेक करो - क्या कारण हैं, फल क्युं नहीं मिला ? और विधि को चेक करके चेन्ज करो। ऐसी सच्ची सेवा बढाना ही सेवा बढाना हैं। सिर्फ अपनी दिल खुश नहीं करो कि मैं बहोत अच्छी सेवा कर रही हुं। लेकिन बापका दिल खुश करो और ब्राह्मण परिवार के दिल की दुवायें लो। इसको कहा जाता हैं सच्ची सेवा। दिखावे की सेवा तो बहोत बडी हैं, लेकिन जहाँ दिल की सेवा होगी वहां दिल के स्नेह की सेवा जरुर होगी। इसको कहेते हैं परिवार के प्रति ब्रह्मा बाप की आशा पुर्ण करना।

<u>मुलाकात</u>

सदा अपने को कल्प पहेलेवाले विजयी पांडव समझते हो ? पांडव अर्थात सदा मजबुत रहेनेवाले। पांडवो कि विजय प्रसिध्ध हैं। कौरव अक्षौणी होते भी हार गये और पांडव पांच होते भी जीत गये। क्यों विजयी बने ?

क्युंकी पांडवो के साथ बाप हैं, पांडव शक्तिशाली हैं, आध्यात्मिक शक्ति हैं। इसलिये अक्षौणी कौरवो की शक्ति उनके आगे कुछ भी नहीं है। ऐसे हो न ? कोई भी सामने आये, माया किस भी रुप में आये तो भी वह हार खा कर जाये, जीत न सके। इसको कहेते हैं विजयी पांडव।

प्रश्न : सहज योगी सदा रहे, उसकी सहज विधी कौनसी हैं ?

उत्तर : बाप ही संसार हैं– इस स्मृति में रहो तो सहजयोगी बन जायेंगे। क्युंकि सारा दिन संसार में ही बुद्धि जाती हैं। जब बाप ही संसार हैं तो बुद्धि कहां जायेगी ? संसार में ही जायेगी ना, जंगल में तो नहीं जायेगी ? तो जब बाप ही संसार हो गया तो सहज योगी बन जायेंगे। नहीं तो महेनत करनी पडेगी। यहाँ से बुद्धि हटाओ, वहां से जुडाओ। सदा बापके स्नेह में समाये रहो तो वह भूल नहीं सकता। अच्छा –

20-2-88

ये तो जानते हो न कि सेवा के जिम्मेवार बापदादा हैं। वा आप हैं ? इस जिम्मेवारी से तो आप हल्के हो न ? इतना बडा प्रोग्राम करना हैं, यह करना हैं... इसको बोज तो नहीं समझते हो ? करावनहार करा रहा हैं। करावनहार एक ही बाप हैं, किसी की भी बुद्धि को टच कर विश्व सेवा का कार्य करते रहे हैं और कराते रहेंगे। सिर्फ निमित् बच्चों को इसलिये बनाते हैं कि जो करेगा सो पायेगा। पानेवाले बच्चे हैं, बापको पाना नहीं हैं। इसलिये बच्चों को निमित्त बनाते हैं। साकार रुप में भी सेवा कराने का कार्य देखा और अभी अव्यक्त रुप में भी करावनहार बाप अव्यक्त ब्रह्मा द्वारा भी कैसे सेवा करा रहा हैं, यह भी देख रहे हो। अव्यक्त रुप की सेवा की गति और ही तीव्र हैं। करानेवाला करा रहा हैं और आप कठपुतली के समान नाच रहे हो, जिसमें, आपका एक कदम पदमगुणा प्रालब्ध बना रहा हैं। तो बोज करानेवाले पर हुवा या करनेवाले पर ? बापके लीये तो बोज शब्द बोज नहीं हैं, लेकिन सब हुवा ही पडा हैं। तो ऐसे बापदादा सेवा कराते हैं जो लकीर खींचने की तरह सहेज हैं।

हर एक बच्चे की याद और सेवा का रेकर्ड बापदादा के पास हर समय का रहता हैं। याद के चार्ट पर थकावट का असर नहीं होना चाहिये। सेवा में

13-10-92

"पाना था सो पा लिया ? सदा खुशी में नाचते रहेंगे – पा लिया – दुनियावाले पाने के लिये भटक रहे है और आप कहेंगे पा लिया, ठिकाना मिल गया, भटकना समाप्त हो गया। जब भी मन या बुद्धि भटकती है तो यह गीत गाओ।" पाना था सो पा लिया – "बाप मिला सबकुछ मिला" इसी नशे में रहो। समजा ? जब संकल्प कर लिया कि में बाप की और बाबा मेरा, तो जो संकल्प है वही साकार रुप में लाना है। सिर्फ संकल्प नहीं लेकिन साकार स्वरुप में हर कर्म में "मेरा बाबा" मान करके चलना। मेरा बाबा है बीज। बीज में सारा वृक्ष समाया हुआ है।

3-11-92

<u>मुलाकात</u>

बापको तो क्वोन्टीटी भी चाहिये तो क्वोलिटी भी चाहिये। क्युंकि एक क्वोलिटीवाला अनेक क्वोन्टीटी को लायेगा। फिर भी बाप को प्रिय तो आजकल के हिसाब से साधारण आत्मायें ही हैं। वैसे तो विशेष हो लेकिन आजकल के जमाने के हिसाब से साधारण गीने जाते हैं। यही कमाल हैं जो साधारण आत्मायें जीनके लिये कोई सोच भी नहीं सकता की ये इतने वरसे की अधिकारी बनेगी ? लेकिन ऐसी श्रेष्ठ बन गई। दुनिया सोचती रहती और आप बन गइ। वो तो ढुंढते रहते की किस वेश में और कब आयेंगे। और आप तो कहेते हैं पा लिया। पा लीया कि खुशी हैं न ? सबसे बडा खजाना है ही खुशी। अगर खुशी है तो सबकुछ हैं। तो ऐसी खुशी सदा रहती है वा कभी कभी मन से भी रोते हो ? कभी कभी धंधे धोरी में नुकशान हो जाये तो उदास होते हो न ? उदास होना भी मन का रोना हैं। उदास हो जाओ तो हंसी नहीं आयेगी अर्थात खुशी गायब हो जायेगी। लेकिन अभी उदास भी नहीं हो सकते क्युंकि अखूट प्राप्तियों के आगे थोडा बहोत नुकशान भी क्या बडी बात हैं ? इसलिये कुछ भी हो जाये लेकिन कभी भी बापका खजाना – "खुशी" नहीं गंवाना। शरीर भी चला जाय लेकिन खुशी नहीं जाये। इतना पक्का बनना ही ब्राह्मण जीवन हैं।

आपके आगे कुछ नहीं हैं। यह तो एक जन्म का पद हैं। आपको एक जन्म में, जन्म-जन्म के लिये श्रेष्ठ पद प्राप्त होनेकी गेरंटी हैं।

(3) सतगुरु ने जन्म होते ही महामंत्र दिया - पवित्र बनो - योगी बनो। यही सर्व प्राप्तियों का आधार हैं, सर्व खजानों की चाबी हैं। साथ साथ सतगुरु द्वारा अनेक वरादन प्राप्त हुए हैं। वरदानों से ही सारी ब्राह्मण जीवन बीता रहे हो। बहोत काल से भाग्य की ऐसी अनुभूति करनेवाले अंत में भी पदमापदम् भाग्यवान प्रत्यक्ष होंगे। लेकिन अब नहीं तो अंत में भी नहीं। ऐसे कभी नहीं सोचना की संपूर्ण तो अंत में बनना हैं। संपूर्णता की जीवन का अनुभव अभी से आरंभ होगा तब अंत में प्रत्यक्षरुप में आयेंगे।

13-10-92

सदा माायाजीत अर्थात सदा बाप के समीप संगमें रहनेवाले। कोई की ताकत नहीं जो बाप के संग से अलग कर सके। ऐसे चेलेन्ज करनेवाले होना ? ईतना दिल से आवाज निकले की हम विजयी नहीं बनेंगे तो और कौन बनेंगे ! कल्प पहले बने थे। सदा यह स्मृति अनुभव हो - हम ही थे हम ही है और हम ही रहेंगे - अच्छा।

13-10-92

सबसे बडे ते बडा खजाना खुशी का अभी मिलता है। संभालना आता है ना ! संभाल करने की विधी है "सदा बाप को साथ रखना। अगर बाप सदा साथ है तो बाप का साथ ही बडे ते बडा सेफ्टी का साधन है। माया भी चतुर है लेकिन बाप का साथ माया को भगानेवाला है। तो आप कौनसी आत्मायें हो ? निश्चय बुद्धि विजयी आत्माये हो। सदा विजय का तिलक मस्तक पर लगा हुआ है।

सब चाहते हो ना यही रह जाये। वो भी दिन आ जायेंगे। खटीयां नहीं मिलेंगी, तकीया नहीं मिलेगा - फिर नींद कैसे आयेंगी ? तैयार हो सोने के लीये ? अपनी बाहो को ही तकीया बनाना पडेगा, पथ्थर पर सोना पडेगा। अभ्यास सब होना चाहिये। अगर साधन मिलता है तो भल सोओ। लेकिन नहीं मिले तो नींद नहीं आवे ऐसा अभ्यास नहीं हो। क्या भी मिले - खाना मिले, नहीं मिले - तैयार हो ? वो भी पेपर आयेगा।

भले कितना भी बीझी रहो लेकिन थकावट मीटाने का विशेष साधन हर घंटे या दो घंटे में एक मिनिट भी शक्तिशाली याद का अवश्य निकालो। जो बीच बीच में एक मिनिट भी अगर शक्तिशाली याद रहेगी तो उससे ए-बी-सी-सब विटामीन आ जायेंगे। लेकिन ऐसी शक्तिशाली याद। लेकिन ऐसी शक्तिशाली याद सदा क्युं नहीं रहती ? उसका कारण अपनी याद का लींक नहीं रखते। लींक तुटने से फिर जोडने में समय भी लगता, महेनत भी लगती और शक्तिशाली के बजाय कमजोर हो जाते हैं। तो सदा शक्तिशाली याद स्वत: रहे उसके लिये यह लींक तुटना नहीं चाहिये। हर समय बुद्धि में याद का लींक जुटा रहे।

किसी भी बात में चाहे तन कमजोर भी हो या कार्य का ज्यादा बोज भी हो, लेकिन मन से कभी भी थकना नहीं हैं। तन की थकावट मनकी खुशी से समाप्त हो जाती हैं। लेकिन मनकी थकावट शरीर की थकावट को भी बढा देती है। अगर मनको थकने की आदत होगी तो ब्राह्म जीवन के उमंग उत्साह का जो अनुभव होना चाहिये वह नहीं होगा। चल तो रहे हैं लेकिन चलानेवाला चला रहा हैं - ऐसे अनुभव नहीं होगा। तो महेनत और थकावट से बचने के लिये अर्थात मनको सदा हल्का और खुश रखने के लिये हमेशा समजो "करावनहार करा रहा हैं, चलानेवाला चला रहा हैं"।

24-2-88

कई बच्चें पुरुषार्थ तो बहोत अच्छा करते लेकिन पुरुषार्थ का बोज अनुभव होता - यह यथार्थ पुरुषार्थ नहीं हैं। एटेन्शन रखना यह ब्राह्मणजीवन की विधी हैं, लेकिन एटेन्शन टेन्शन में न बदलना चाहिये। नेचरल एटेन्शन न रहे इसको यथार्थ एटेनशन नहीं कहेंगे। जैसे नेचरल एटेन्शन रहता हैं कि यह खाना हैं यह नहीं खाना हैं, यह करना हैं, यह नहीं करना हैं।ऐसे यथार्थ पुरुषार्थ का हर कदम हर कर्म में नेचरल एटेन्शन रहता हैं कि यह खाना हैं यह नहीं खाना हैं, यह करना हैं, यह नहीं करना हैं। ऐसे यथार्थ पुरुषार्थ का हर कदम हर कर्म में नेचरल एटेन्शन रहेता हैं। तो पुरुषार्थ भले करो। लेकिन टेन्शन के रुप में नहीं। कई बच्चे पुरुषार्थ को ज्यादा भारी कर देते हैं और फिर बिल्कुल अलबेले हो जाते हैं - जो होना हैं हो जायेगा, देखा

जायेगा, कौन देखता हैं, कौन सुनता हैं... तो न यह अच्छा हैं, न वह अच्छा हैं। इसलिये बेलेन्स रख बापकी ब्लेसींग या वरदानों का अनुभव करो। सदा बापका हाथ मेरे उपर हैं इस अनुभव को सदा स्मृति में रखो। **बहोत पुरुषार्थ किया, अब वरदानों से पलते, उडते चलो। बापका, ज्ञानदाता और विधाता का अनुभव किया, अब वरदाता का अनुभव करो।**

7-3-88

हरेक ब्राह्मण बच्चों का भाग्य दुनिया के साधारण आत्माओ में से अति श्रेष्ठ हैं। क्युंकि हरेक ब्राह्मण आत्मा कोटो में से कोई और कोई में भी कोई हैं। कहां साडे पांचसो करोड आत्मायें और कहां आप ब्राह्मणों का छोटा सा संसार! उन्हों के अंतर में बहोत थोडे हो इसलिये अज्ञानी, अनजान आत्माओं की भेट में आप सभी ब्राह्मण श्रेष्ठ भाग्यवान हो। हरेक ब्राह्मण के मस्तक पर भाग्य की रेखा बहोत स्पष्ट तिलक के समान चमक रही हैं। मुख पर सदा ईश्वरीय मुस्कुराहट चमक रही हैं।

भक्ति में देवताओं को भगवान समझ भक्त घंटी बजाके उठाते हैं और आपको स्वयं भगवान अमृतवेले से उठाते हैं। और सारा दिन सेवा करते फिर आहवान करते - "आओ, बाप समान स्थिति का अनुभव करो, मेरे साथ बैठ जाओ।" तो बाप उंचे स्थान और स्थिति में बैठा हैं ऐसे बापके साथ बैठ जायेंगे तो संग का रंग स्वत: ही लगेगा। इसलिये महेनत क्युं करते हो ? लोग तो भगवान के पास जाने का प्रयत्न करते और भगवान स्वयं आपके पास शिक्षक बन पढाने आते हैं। ऐसा बाप सिकीलधे बच्चों को कहेते हैं की चाहे लौकिक, अलौकिक, चाहे परिवार में, चाहे सेवाकेन्द्रो पर, कोई भी सेवा करो, कोई भी फरज बजाओ लेकिन सदा यह अनुभव करो कि मुझे निमित्त बनाकर करावनहार ही करा रहा हैं। अकेले नहीं हो, कर्म करते समय भी करावनहार के रुप में बाप सदा साथ हैं। आप तो सिर्फ निमित्त हो। अकेले मैं कर सकता हुँ यह भान रहेता हैं तो यह "मैं पन" ही माया का दरवाजा हैं। तो यह दरवाजा खोलो ही नहीं। बाप मालिक करावनहार हैं तो बोज मालिक पर होता हैं। मैं बालक हुं और बाप मालिक हैं, मालिक बालक से करा रहा हैं तो ये कितना बडा भाग्य हुआ ! तो ऐसे हर कर्म में

हुँ। निमित्त समजने से पेपर में पास हो जायेंगे - अच्छा चाहे किस भी रुप में माया आये लेकिन खुशी नहीं जाये।

3-10-92

भाग्य विधाता बाप द्वारा इतना सहज और श्रेष्ठ भाग्य जो आप बच्चों को मिल रहा हैं वह आप ब्राह्मणों के सिवाय किसी को भी मिल नहीं रहा हैं, ये ब्राह्मण जन्म मिला ही हैं कल्प पहेले के श्रेष्ठ भाग्य के अनुसार। क्युंकि ब्राह्मण जनम स्वयं भगवान द्वारा होता है। अनादि बाप और आदि ब्रह्मा द्वारा अर्थात भाग्य विधाता द्वारा यह अलौकिक जन्म प्राप्त हुआ तो यह जन्म कितना भाग्यवान हुआ ! तो ऐसे श्रेष्ठ भाग्य की स्मृती सदा प्रत्यक्ष स्वरुप में हो, सदा मन में इमर्ज करो तो सदा हर्षित रहेंगे। सिर्फ दिमाग में समाई हुई नहीं रखो। मन में इमर्ज रुप में रखेंगे तो चलन में और चहेरे में भी श्रेष्ठ भाग्य की लकीर स्पष्ट दिखाई देगी। कितने प्रकार के भाग्य प्राप्त हैं उसकी लीस्ट सदा मस्तक पर प्रत्यक्ष रुप में स्पष्ट हो। सिर्फ डायरी में नहीं।

भाग्य का लीस्ट

(1) जन्म ही भाग्य विधाता द्वारा हुआ हैं।

(2) ऐसा किसी भी धर्मात्मा, महान आत्मा का भाग्य नहीं जो स्वयं भगवान एक ही, बाप भी हो, शिक्षक भी हो, सतगुरु भी हो। बाप द्वारा वरसा और श्रेष्ठ पालना मिल रही हैं। तो यह कितनी उंची बात हैं। भक्ति में गाते हैं-परमात्मा पालनहार हैं। लेकिन आप भाग्यवान आत्मायें हर कदम परमात्मा पालना में पल रहे हो। ऐसी पालना सिर्फ अभी प्राप्त हैं। सतयुग में नहीं मिलेगी। चाहे देश में हो चाहे विदेश में हो लेकिन आप हर ब्राह्मण आत्मा प्रत्यक्ष अनुभव से कह सकते हो कि हमारा पालनहार स्वयं भगवान हैं। सत् शिक्षकने तीनों कालों की पढाई कितनी सहज विधि से पढाई। जिन्हों में दुनिया की ना-उम्मीद हैं उन्हों को उम्मीदवार बनाया और ऐसी पढाई से जो श्रेष्ठ पद प्राप्त कर रहे हो ऐसा पद सारे वर्ल्ड के उंचे ते उंचे पद के आगे कितना श्रेष्ठ हैं। आजकल का श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ पद प्रेसिडेन्ट, पाईम मिनिस्टर का हैं। बडे ते बडी पढाई द्वारा फिलोसोफर बनेंगे, चेरमेन वा डायरेक्टर आदि बन जायेंगे, बडे ते बडे ओफिसर बन जायेंगे लेकिन यह सभी पद

सब सहज है। तो बाप भी बीज है जिस में सर्व संबंधो का, सर्व प्राप्तियों का सार समाया हुआ है। एक बाप को याद करना अर्थात सार स्वरुप बनना। तो एक बाप दुसरा न कोई यह एक की याद एकरस स्थिति बनाती है। ऐसे अनुभव करते हो ? मेरा बच्चा, मेरा परिवार, यह याद नहीं रहता है ? मेरा परिवार है या तेरा परिवार है ? ट्रस्टी बनकर संभालते हो या गृहस्थी बनकर संभालते हो ? ट्रस्टी अर्थात तेरा, गृहस्थी अर्थात मेरा। तो आप कौन हो ? मेरा मेरा मानते क्या मीला ? मेरा ये... मेरा ये... मेरे मेरे के विस्तार से मिला क्या ? कुछ मिला या गवायां। जितना मेरा मेरा कहा उतना मेरा कोई नहीं रहा। तो ट्रस्टी जीवन कितनी प्यारी है ! संभालते हुए कोई बोज नहीं, सदा हल्के। सुखदाता के बच्चे हो तो सुखदाता के बच्चे को दु:ख की लहर आ सकती है ? स्वप्न भी बदल गये। सुख के स्वप्न आये, खुशी के स्वप्न आये, सेवा के स्वप्न आये, मिलन मनाने के स्वप्न आये। संस्कार भी बदल गयें तो स्वप्न भी बदल गये।

3-10-92

अभी अपने बहन-भाईओ को भिखारी देख रहम तो आता है ना। जब परमात्म-प्राप्तियों के अधिकारी बन गये तो सदा दिल में यही गीत गाते हो - "पाना था सो पा लिया" संपन्न बन गये। कब भी विनाश हो जाये तो तैयार हो ? एवररेडी ? एवररेडी का अर्थ ही है नष्टोमोहा-स्मृतिस्वरुप। या उस समय याद आयेगा कि बच्चे क्या कर रहे होंगे, कहां होंगे, छोटे छोटे पौत्रो का क्या होगा ? यहां विनाश हो जाय तो याद आयेंगे ? पति का भी कल्याण हो जाये, पौत्रो का भी कल्याण हो जाये, उन्होकों भी यहां ले आये - याद आयेगा ? बीजनेस का क्या होगा ? पैसे कहाँ जायेंगे ? रास्ते तूट जाय फिर क्या करेंगे ? देखना अचानक पेपर होगा । सदा न्यारे और प्यारे रहना यही बाप समान बनना है। जहाँ है जैसे है लेकिन न्यारे है। यह न्यारेपन बाप के प्यार का अनुभव कराता है। जरा भी अपने में या किसी में लगाव, न्यारे बनने नहीं देगा। न्यारे और प्यारेपन का, अभ्यास नंबर आगे बढायेगा। इसका सहज पुरुषार्थ है निमित्त भाव। निमित्त समजने से निमित्त बनानेवाला याद आता है। मेरा परिवार है - मेरा काम है - नही। में निमित्त

बाप जिम्मेवार बन हल्का बनाये उडा रहे हैं। होता क्या हैं, जब कोई समस्या आती हैं तो कहते हो - बाबा अभी आप जानो। लेकिन समस्या समाप्त हो जाने के बाद मस्त हो जाते हो। लेकिन ऐसा करो ही क्युं जो समस्या आवे ? निमित्त बन हर कर्म करते चलो तो कर्म भी श्रेष्ठ और सदा खुशी, सदा हल्कापन, फरिश्ता जीवन का अनुभव करते रहेंगे।

ब्राह्मण बच्चों को तो बाप ही खिलाता हैं। चाहे लौकिक कमाई भी करके पैसे जमा करते, उसीसे भोजन बनाते हो, लेकिन पहेले अपनी कमाई भी बापकी भंडारी में डालते हो। बापकी भंडारी भोलनाथ का भंडारा बन जाता हैं। तो कभी भी इस विधि को भूलना नहीं। नहीं तो सोचेंगे की हम खुद कमाते, खुद खाते हैं। वैसे आप ट्रस्टी हो ट्रस्टी का अपना कुछ नहीं होता हैं। इसलिये बाप का ही खाते हैं। भगवान खीला रहा हैं, ब्रह्माभोजन मिल रहा हैं - यह नशा ब्राह्मण आत्माओं को स्वत: ही रहता हैं और बापकी गेरंटी हैं - **21** जन्म ब्राह्मण आत्मा कभी भूखी नहीं रह सकती। बडे प्यार से दाल-रोटी-सब्जी खीलायेंगे। यह जन्म भी दाल रोटी प्यार की खायेंगे, महेनत की नहीं।

12-3-88

<u>मुलाकात</u>

सदा बेफिकर बादशाह हो न ! जब बापको जिम्मेवारी दे दी अर्थात बापके हवाले कर दिया तो फिकर किसको होना चाहिये ? बापको या आपको ? जब अपने उपर जिम्मेवारी रखते हो तो फिकर होता हैं - क्या होगा ? कैसे होगा ?... बाप तो साथ हैं उसमें फिकर रहेगा ही नहीं। तो जो कर्म करो, कर्म करने के पहेले यह सोचो कि मैं ट्रस्टी हुं अर्थात सबकुछ बापका हैं। ट्रस्टी समझने से प्राप्ति भी ज्यादा और हल्के रहेंगे और काम भी अच्छा होगा। इस युक्ति से सदा बेफिकर रहो और दुसरों को बेफिकर बनाने की विधि अनुभव से बताओ।

23-3-88

दिलाराम बापके हर एक दिलरुबा अर्थात जिसकी दिल मे सदा दिलाराम की याद के मधुर साज स्वत: ही बजते रहेते हैं। ऐसे दिलरुबा बच्चे दिलाराम

बापकी दिल को अपने स्नेह के साज से जीतनेवाले हैं। दिलाराम बाप भी ऐसे बच्चों के गुण गाते हैं। तो बापके दिलजीत सो स्वत: मायाजीत, जगतजीत हैं ही। जैसे कोई हद के राज्य के तख्त को जीतते हैं तो जीतना अर्थात तख्तनशीन बनना। ऐसे जो बापके दिलतख्त को जीत लेते हैं, वह स्वत: ही सदा तख्तनशीन रहेते हैं। उनकी दिल में सदा बाप हैं और बापकी दिल में सदा ऐसा विजयी बच्चा हैं। ऐसे दिलजीत बच्चे श्वासो श्वास अर्थात हर सेकन्ड सिवाय बाप और सेवा के और कोई गीत नहीं गाते हैं। सदा एक ही गीत बजता की "बाप मेरा और मैं बापका"। इसकोकहेते हैं दिलाराम बापके दिलतख्त जीत दिलरुबा।

तो जीसकी दिल में सदा दिलाराम हैं, उनके मुख द्वारा भी दिल का आवाझ दिलाराम को स्वत: ही प्रत्यक्ष करेगा। तो यह चेक करो कि हर कदम में, बोल में मेरे द्वारा बापकी प्रत्यक्षता होती हैं, मेरा बोल बापसे संबंध जोडनेवाला बोल हैं? क्युंकि अभी लास्ट सेवा का पार्ट ही हैं प्रत्यक्षता का झंडा लेहराना। जीसकी दिल में सदा बाप हैं वह स्वत: ही "सन शोझ फाधर" करनेवाला समीप अर्थात समान बच्चा हैं।

चारों ओर अभी ये आवाझ गुंजे की "हमारा बाबा"। ब्रह्माकुमारीयों का बाबा नहीं, हमारा बाबा। जब ये आवाझ गुजेंगा तभी स्वीट होम का गेईट खुलेगा। क्युंकि जब हमारा बाबा कहे तब मुक्ति का वर्सा मिले और बापके साथ साथ चाहे बाराती बनके चलें लेकिन सबको वापीस जाना ही हैं, ले ही जाना हैं। "हमारा बाबा आ गया" कम से कम ये आवाज कानों से सुनने, बुद्धि से जानने के अधिकारी तो बनें। कोई भी वंचित न रह जाये। विश्व का बाप हैं तो विश्व की आत्माओं को इतनी अंजली तो देनी ही हैं न! आपने सागर को हप किया लेकिन वह एक बुंद के प्यासे, उन्हों को बुंद तो प्राप्त करायेंगे ना। इसके लिये हर कदम, हर बोल बापको प्रत्यक्ष करनेवाले हो, तब येआवाज गुंजेगा। अभी सेवा बहोत रही हुई हैं। अभी किया ही क्या हैं? सोचो, साढे पांचसो करोड आत्मायें हैं, कम से कम एक बुंद ही दो लेकिन देना तो हैं। चाहे आपके भक्त बनें, चाहे आपकी प्रजा बनें। देवता बनेंगे तो भी देना ही हैं। ये नहीं समझो कि विदेश में अथवा

3-10-92

सब से सहज और सदा शक्तिशाली रहने की विधि क्या है, जिस विधि से सहज और सदा निर्विघ्न भी रह सकते है? सबसे सहज विधि है - और कुछ भी भूल जाये लेकिन एक बात कभी नहीं भूले - "मेरा बाबा"! मेरा बाबा दिल से मानना यही सबसे सहज विधि है आगे बढने की। मेरा मेरा मानने का संस्कार तो बहुत समय का है ही। उसी संस्कार को सिर्फ परिवर्तन करना है। अनेक 'मेरे' को एक 'मेरा बाबा' में समाना है। एक को याद करना सहज है ना? इस एक मेरे में सबकुछ आ जाता है। तो सब से सहज विधी है "मेरा बाबा" मेरा शब्द ऐसा है जो न चाहते भी याद आता है। मेरे को याद नहीं करना पडता लेकिन स्वत: याद आती है। भूलने की कोशिश करते भी मेरा नहीं भुलेगा! **योग अगर कमजोर होता है तो भी कारण 'मेरा' है। और योग शक्तिशाली होता है तो उसका भी कारण 'मेरा' ही है। "मेरा बाबा" है तो योग शक्तिशाली हो जाता है और मेरा संबंध, मेरा पदार्थ यह अनेक मेरा याद करना अर्थात कमजोर होना। तो क्यों नहीं सहज विधि से पुरुषार्थ में वृद्धि करो।** अगर "मेरा बाबा" याद आता है तो बाप सर्वशक्तिमान है ना? तो जैसे बाप वैसे बच्चे। "मेरा बाबा" याद आने से अपना मास्टर सर्वशक्तिमान का स्वरुप याद आता है। "मेरा बाबा" कहने से ही "बाप कौन है" वह स्मृति में आता है। तो मास्टर सर्व शक्तिवान बनने से न कमजोर बनेंगे, न मुश्किल अनुभव करेंगे, सदा सहज। जितना आगे बढते जायेंगे उतना सहज अनुभव करते जायेंगे। एक ही बात को स्मृति में रखना "मेरा बाबा"। 'मेरा बाबा' स्मृति में आना और सर्व प्राप्तियों के भंडार अनुभव होना। तो भंडारे भरपुर हैं ना? अच्छा।

3-10-92

सदा एकरस स्थिति में रहने की सहज विधि क्या है? 'एक' की याद एकरस स्थिति बनाती है। "एक बाबा दुसरा न कोई" क्योंकि एक मेरे में सब समाये हुए है। जैसे बीज में सब समाया हुआ होता है ना! वृक्ष की एक एक चीज को याद करना मुश्किल है। लेकिन एक बीज को याद करो तो

दुसरा न कोई - यह पक्का है ना ! या बाबा भी है तो बच्चे भी है, संबंध भी है ? जब बच्चे है, पति है, सास ससूर है- ईतने सारे है तो एक कैसे हुआ ? सामने है, देख रहे है, सेवा कर रहे है, फिर एक कैसे हुआ ?" **ये मेरे नहीं है लेकिन बापने सेवा के लिए दिये है - ऐसी द्रष्टि, वृत्ति रखनेसे एक ही याद रहेगा । चाहे कितने भी हो, कौन भी हो, लेकिन सभी बाप के बच्चे है और हमको सेवा के लिये ये आत्माए मिली है, बापने सेवा अर्थ निमित्त बनाया है,** घर में नहीं रहे हुए हो लेकिन सेवास्थान पर रहे हुए हो । मेरा सब तेरा हो गया । मेरा कुछ नहीं, शरीर भी मेरा नहीं । जब मेरा है ही नही, फिर बोडीकोन्सियस कैसे हो सकता है ? मेरे में ही आकर्षण हो । अगर मेरा पन नहीं होगा, तेरा ही है, तो डबल लाईट होंगे । अगर थोडा भी बोज अनुभव करते हो तो समजो मेरापन मिक्स हो गया है ।, तो तेरा कहना माना बोज देना और मेरा कहना माना बोझ लेना । तो अभी एक बल एक भरोसा । बस एक ही एक । एक लिखना सहज है ना ? तो यह तेरा तेरा कहनेवाला गृप है । "**देखो, अच्छे हो तब तो बापदादा ने पसंद करके अपना बनाया है । अच्छे है और सदा रहेंगे, अच्छा अच्छा समजने से अच्छे हो ही जाते है ।**"

3-10-92

सबसे सहज और सदा शक्तिशाली रहने की विधी जिससे सदा निर्विघ्न रह सकते है और उडती कला का अनुभव भी कर सकते हो - वह विधी है और कुछ भी भूल जाये लेकिन एक बात कभी नहीं भूलो - **'मेरा बाबा', 'मेरा बाबा' दिल से मानना यही विधी है आगे बढनेकी ।**

नष्टोमोहा - स्मृतिस्वरुप में पास हो ? उस समय यह तो याद नहीं आयेगा कि पता नहीं क्या होगा ? बच्चे क्या कर रहे होंगे ? यही विनाश हो जाये तो याद आयेगा ? अचानक पेपर होगा । सदा न्यारा और बाप का प्यारा रहना यही बाप समान बनना है । जहां है, जैसे है लेकिन न्यारे है । यह न्यारापन बाप के प्यार का अनुभव कराता है और यह अभ्यास नंबर आगे बढायेगा । इसका सहज पुरुषार्थ है निमित्त भाव अर्थात मेरा परिवार मेरा काम है, नहीं । मैं निमित्त हुं ऐसा समजने से पेपर में पास हो जायेंगे।

देश में इतने सेन्टर्स खुल गये, बहोत हो गया । लेकिन रहेमदिल बापके बच्चे हो न ! सभी अपने प्यासे, भटकते हुए भाई बहेनो के उपर रहेम करना हैं, किसीका उल्हना नहीं रहना चाहिये ।

7-11-89

बाप के रुहानी स्नेह ने दिव्य जन्म दिया, जिस में आपने कुछ महेनत नहीं की । जन्म के बाद अब वरदाता बापदादा वरदानों से दिव्य पालना कर रहे है, जिस में भी कोई महेनत नहीं । समय प्रति समय वरदानो की सहज स्मृति जीवन सहज बना देती है । लेकिन कई बच्चों के महेनत करने के संस्कार वा आदत सहज अनुभव करने से खुद को ही मजबुर कर देती है । और ऐसी धारणा की कमजोरी से परवश हो जाते है ।

रुहानी पालना से सहज चलनेवाली आत्मायें सदा केयरफुल रहती है। **Attention** का **Tension** भी नहीं होता । ऐसी आत्माओ को समय, साधन और संजोग प्रमाण ब्राह्मण परिवार और बाप की विशेष मदद मिलती है, जिससे उनको सब सहज अनुभव होता है, नहीं तो छोटा सा संजोग, साधन, समय, साथी आदि भले होते है चिंटी समान लेकिन महारथी को भी मुर्छित कर देते है । मुर्छित अर्थात वरदानों की श्रेष्ठ पालना की श्रेष्ठ स्थिति से नीचे गिरना ।

15-11-89

दिमाग स्थुल है - दिल सूक्ष्म है। विशाल दिमाग ये विशेषता जरुर है, जिससे ज्ञान की पोईन्ट्स को अच्छी तरह धारण कर सकते है, लेकिन दिल से याद करनेवाले पोईन्ट अर्थात बिंदुरुप बन सकते है । वह कभी सहज कभी महेनत से बिन्दु रुप में स्थित हो सकेगा । लेकिन सच्चे दिलवाला सेकेन्ड में बिंदु बन बिंदु स्वरुप बाप को याद कर सकता है।

सच्ची दिलवाले सच्चे साहेब को राजी करने के कारण बाप की विशेष दुआए प्राप्त कर सकता है, जिस कारण स्थुल रुप में उसका दिमाग कईयों की भेट में ईतना विशाल न होते हुए भी सच्चाई की शक्ति से समय प्रमाण उसका दिमाग युक्ति युक्त यथार्थ कार्य स्वत: ही करेगा। क्योंकि बाप की दुआओं के कारण ड्रामा अनुसार समय प्रमाण यथार्थ कर्म बोल, वा संकल्प

की वही टचींग उनके दिमाग में आयेगी। ऐसे जिसने भगवान को राजी किया वह स्वत: ही राजयुक्त युक्तियुक्त होता है।

यज्ञ का पहला पुर ऐसे ही दिलवाला था। कोई भाषा वा भाषण की विशेषता नहीं थी, लेकिन गुलाबी भाषा होते हुए भी नयनों की रुहानी और सच्चे दिल की भाषा थी जिस कारण पहले पुर की सेवा की सफलता और वर्तमान पुर की सेवा की सफलता में अंतर है। वैसे ब्राह्मण जीवन में विशाल दिमाग और सच्ची दिल दोनो ही चाहिए। लेकिन सच्ची दिलवाले को दिमाग की गीफ्ट मिल जाती है। इसलिये सिर्फ अपने मन को या सिर्फ कुछ आत्माओं को राजी करने का पुरुषार्थ न करके सच्चे दिल से सच्चे साहब को राजी करो तो सब मुरादे हांसिल हो जायेगी।

19-11-89

हर बात में बाप की श्रीमत प्रमाण 'जी हजुर जी हजुर' करते रहो। बच्चों का 'जी हजुर' करना और बाप का बच्चों के आगे 'हजुर हाजीर' होना। जब हजुर हाजीर हो गया तो किसी भी बात की कमी नहीं रहेगी। सदा संपन्न हो जायेंगे। दाता (बाप) और भाग्य विधाता (टीचर) दोनों की प्राप्तियों के तन, मन, धन और जन का भाग्य का सितारा मस्तक पर चमकने लगेगा।

23-11-89

वरदाता के पास अखूट वरदान है। जो जीतना लेना चाहे ले सकते है। सबसे ज्यादा झोली भरकर देने में बाप का वरदाता का रुप ही भोलानाथ का रुप है। दाता, भाग्यविधाता और वरदाता तीनो में से वरदाता रुप में ही भोले भगवान कहा गया है, क्योंकि वरदाता बहुत जल्दी राजी हो जाता है, सिर्फ उसको राजी करने की सहज विधी अपनाओ। वह सहज विधी है एकव्रता की। एकव्रता अर्थात सिर्फ पतिव्रता नहीं। सर्व संबंध से एकव्रता। संकल्प में भी, स्वप्न में भी दुजा व्रता न हो। अर्थात सदा वृत्ति में एक हो, दुसरा सदा मेरा तो एक दुसरा न कोई, यह पक्का व्रत लिया हुआ हों।

एकव्रता अर्थात एक बल-एक भरोसा। एक का भरोसा दुजे का बल ऐसा नहीं कहा जाता। एक बल एक भरोसा ही गाया हुआ है। ऐसे ही एकमत अर्थात न मनमत, न परमत-एकरस न और कोई व्यक्ति, न वैभव

करने के लिये कहा है तो वह करता हैं वा नहीं करता हैं ? बापने कहा है तो बाप पर हैं, बाप करे या न करे। यह ऐसी चेलेन्ज करनी हैं की कहा है तो करना ही हैं ? बापको जो करना है वह न किसके कहेने से करेंगे वा किसके ना कहेने से नहीं करेंगे। कल्याणकारी बाप हर कार्य में जो भी करेगा वह कल्याणकारी ही होता हैं।यह भूल जाते है और फिर डायरेक्शन के पत्र लिखते है कि आप जरुर करना। ऐसे बापके भी शिक्षक बहोत बन गये न ? बाप ऐसे बच्चों को भी मुबारक देते हैं। लेकिन सदा संयम में स्वयं को आगे बढाते चलो। सभ्यता पूर्वक के बोल और सभ्यता पूर्वक चलने में ही सफलता होती हैं। इसलिये अगर कोई बात देखते वा सुनते भी हो तो असत्य वायुमंडल नहीं फैलाओ। व्यर्थ बातों का फैलाव करना यह भी पाप का अंश हैं। ऐसासमाचार सुननेवालों के उपर भी पाप और सुनानेवालों के उपर और ज्यादा पाप चढता हैं। तो ऐसे रोयल गलतीयां नहीं करो। इसलिये जो कायदे में चलते है उनको स्वयं ही अंदर ही अंदर फायदा होता हैं। बहार से कोई फायदा देवे न देवे लेकिन जो अंदर का हल्कापन वा खुशी होती हैं वह सबसे ज्यादा फायदा हैं और इससे अच्छा बनने की शक्ति आ जाती हैं।

24-9-92

बाप जानते है कि बच्चों के लिए सिवाय बाप के और कोई याद करनेवाला है नहीं और बाप को भी सिवाय बच्चों के और कोई है नही। सदा इस स्मृती में रहते है कि "मैं बाबा का और बाबा मेरा।" यही स्मृति सहज भी है और समर्थ बनानेवाली है। ऐसा स्मृति स्वरुप स्नेही बच्चा साकार में तो क्या लेकिन स्वप्न में भी कभी असमर्थ हो नहीं सकता। असमर्थ होना अर्थात 'मेरा बाबा' के बजाए और कोई मेरापन आता है। एक मेरा बाबा यह है मिलन मनाना। बाप के प्यार का प्रत्यक्ष सबुत बापने दे दिया। "जो हो, जैसे हो मेरे हो।" लेकिन अभी बच्चों को सबुत दैना है - क्या सबुत देना है ? "जो है वह सब आप हो।"

24-9-92

सभी अपने को एक बल एक भरोसा ऐसे अनुभव करते हो ? एक बाबा

क्युं हो ? जब कोई बात होती है तो क्युं कहेते हो हमारा तो बाबा हैं, बहेने क्या करेगी ? भाई क्या करेंगे ? कहेंगे हमने भाई बहिने से वायदा नहीं किया हैं। लेकिन ये ब्राह्मण जीवन शुद्ध संबंध का जीवन हैं, माला की जीवन हैं। माला का अर्थ ही है संगठन। ब्राह्मण परिवार के निश्चय में अगर कोई संशय आ जाता हैं, व्यर्थ संकल्प आ जाता हैं तो वह निश्चय को डगमग कर देता हैं। बाबा अच्छा, ज्ञान अच्छा, लेकिन यह दादीयां अच्छी नहीं, टीचर्स अच्छी नहीं, परिवार अच्छा नहीं। यह निश्चय बुद्धि के बोल हैं ? ऐसे व्यर्थ संकल्प प्रसन्नचित्त बुद्धि रहने नहीं देंगे। ब्राह्मण परिवार में संतुष्ट रहना और संतुष्ट करना यही निश्चय की विशेषता हैं। तो प्यार का सबूत हैं (1) बाप समान बनना (2) अपने चारों और के फाउन्डेशन को पक्का करना। एक भी बात में कमजोरी नहीं हो। तभी माला के मणके बन पूज्य आत्मा वा राज्य अधिकारी आत्मा बनेंगे। इसलिये ब्राह्मणों से निभाना अर्थात दैवी राज्य के अधिकारी बनना। तो परिवार से निभाने के लीये हलचल को समाप्त करना पडेगा। तब निश्चय और विजय दोनों की समानता हो जायेगी।

आजकल एक विशेष भाषा बहोत युझ करते हैं कि हम से असत्य, देखा वा सुना नहीं जाता। इसलिये असत्य को देख अंदर में जोश आ जाता हैं। लेकिन जोश भी तो असत्य हैं न ? असत्य को खतम करना ये लक्ष्य तो बहोत अच्छा हैं लेकिन उसके लिये अपने में भी सत्यता की शक्ति चाहिये और सत्यता की निशानी हैं, सभ्यता। अगर आप सच्चे हो, सत्यता की शक्ति आपमें हैं तो सभ्यता को कभी नहीं छोडेंगे। सत्यता को सिध्ध करेंगे लेकीन सभ्यतापूर्ण। अगर असभ्यता में आकर के सत्य को सिध्ध करना चाहते हो तो वह सत्य सिध्ध नहीं होगा। लेकिन वह जीद हो जायेगी। असभ्यता की निशानी हैं जीद और सभ्यता की निशानी हैं निर्माण। सत्यता को सिध्ध करनेवाला सदैव स्वयं निर्माण हो कर सभ्यतापूर्वक वहेवार करेगा। तो असभ्यता की होंशियारी छोडकर निर्माण बनो। जो सत्य होता हैं उसको जीद से सिध्ध करने की आवश्यक्ता नहीं हैं, सत्य ऐसा सुर्य हैं जो कितनी भी दिवारों के आगे छीप नहीं सकता।

कई बच्चे बापको भी चेलेंज कर रहे हैं कि बापदादा ने टीचर्स को चेंज

का रस। ऐसे ही एकता, एकान्त प्रिय। तो बाप इतना भोला है जो ऐसे एक में ही राजी करना मुश्किल अर्थात महेनत नहीं है। सिर्फ 'एक का' पाठ पक्का करो।

पांच सात में जाने की जरुरत नहीं है। लेकिन जब कोई परिस्थिति आती है तो चतुर बच्चों की नजर, व्यक्ति वैभव आदि आदि में चली जाती है, जिस कारण बाप का साथ छुट जानेसे महेनत और मुंझ अनुभव होती है। अन्यथा एकव्रता में रहनेवाले बच्चों की हर समय की सर्व जीम्मेवारीयां वरदाता बाप स्वयं अपने उपर उठाते है। जिस कारण वरदानी आत्मायें हर समय, हर परिस्थिति में वरदानो से प्राप्त संपन्न स्थिती अनुभव करती है हर परिस्थिति को सदा सहज पार करके 'पास वीथ ओनर' बनते है। अपनी जीम्मेवारी समजते हो तब परिस्थिति में पास वीथ ओनर नहीं बनते लेकिन धक्के से पास होते है। वरदाता को राजी करनेवाले बच्चे, अमृतवेले से रात तक हर दिनचर्या के कर्म में वरदानो से ही पलते है, चलते है और उडते है। वे चाहे मन से, चाहे संबंध संपर्क से कभी कोई मुश्किलात अनुभव नहीं करते। हर संकल्प, हर सेकेन्ड, हर कर्म और हर कदम में वरदाता और वरदान सदा समीप और साकार रुप में सन्मुख अनुभव करते है। वो ऐसा अनुभव करेगा जैसे कोई साकार में बात कर रहे है। कोई महेनत अनुभव नहीं होगी। लेकिन वह निराकार आकार को जैसे साकार अनुभव कर सकता है। ऐसें वरदानीयों के आगे इस तरह हजुर सदा हाजीर रहता है। सिर्फ सेकन्ड की विधी अपनाओ। एक में दो नही मिलाओ बस।

1-12-89

स्वराज्य सत्ता अर्थात कर्म ईन्द्रियाँजीत। कर्मेन्द्रियाँजीत ही विश्व की राज्य सत्ता प्राप्त कर सकता हैं। इसलिये आप ब्राह्मणों का स्लोगन हैं "स्वराज्य हमारा जन्म सिध्ध अधिकार हैं"।

स्वराज्य अधिकारी सदा धर्म अर्थात धारणा मूरत भी होगा और राज्य अर्थात शक्तिशाली भी होगा। और ऐसे दोनों ही सत्तावाले सदा ही बेपरवाह बादशाह रहेंगे, कोई विघ्न आ नहीं सकता। तो ऐसे बेपरवाह को परवाह रहेती हैं ? चलानेवाला चला रहा हैं, करानेवाला करा रहा हैं - ऐसे निमित्त

बन करनेवाले बेपरवाह बादशाह होते हैं। मैं कर रहा हुं ये भान आया तो बेपरवाह नहीं रह सकते लेकिन बाप द्वारा निमित्त बना हुआ तो चिंता नहीं। पता नहीं विनाश कब होगा, क्या होगा ? बच्चों का क्या होगा ? पोत्रो-धोत्रो का क्या होगा ? ये चिंता रहती हैं ? **बेपरवाह बादशाह को सदा ही यह निश्चय रहता है कि जो हो रहा हैं वह अच्छा हो रहा हैं और जो होनेवाला हैं वह और भी बहोत अच्छा होगा। क्युंकि करानेवाला अच्छे ते अच्छा है न !** इसको कहेते हैं निश्चयबुद्धि विजयी। ऐसे बने हो या सोच रहे हो ? इतनी बडी राजाई मिल जाये तो सोचने की क्या बात हैं ? अपना अधिकार कोई छोडता हैं ? थोडी सी मिल्कतवाले, झोंपडीवाले भी नहीं छोडेंगे। यह तो कितनी बडी प्राप्ति हैं ? तो मेरा अधिकार हैं इस स्मृति से सदा अधिकारी बन उडते चलो। यही वरदान याद रखना की स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार हैं। महेनत करके पानेवाले नहीं, लेकिन अधिकार हैं।

5-12-89

प्रसन्न रहने के लिए सदा एक बात बुध्धि में रखो कि ड्रामा के नियम प्रमाण संगमयुग पर हरेक ब्राह्मण आत्मा को कोई न कोई विशेषता मिली हुई है। चाहे माला का लास्ट **16000** का दाना हो। उसको भी कोई न कोई विशेषता मिली है। सतयुग के शुरु के नव लाख जो गाये हुए है उन्हो को भी कोई न कोई विशेषता मिली हुई है। अभी तो नवलाख तक पहुंचे ही नही है। **तो ब्राह्मण जन्म के भाग्य की अपनी विशेषता को पहचानो तो प्रसन्न रहेंगे और प्रसन्नता की वृद्धि के लिए अपनी विशेषता कार्य में लगाओ।** जैसे देखो बापदादा सदा भोली भंडारी (भोलीदादी) का मिसाल देते है। महारथियों का नाम कभी आयेगा लेकिन इनका नाम आता है। क्योंकि वह भल भंडारा ही संभालती है, लेकिन विशेष आत्माओ के मिसल गाई जाती है। भोली दादी- भाषण तो नहीं करती लेकिन विशेषता को कार्य में लगाने से स्वयं भी विशेष बन गई। **तो प्रसन्न रहने के लिए विशेषता को कार्य में लगाओ, जिससे विशेषताओं की वृद्धि हो जायेगी और आप संपन्न हो जायेंगे।** और सदा प्रसन्नता का आधार है - "संपन्नता"।

एटेन्शन रखो, तो एटेन्शन को भी टेन्शन में बदली कर देते है। **तो सदा यही स्मृति में रखो कि बापदादा की सदा मदद अर्थात सहयोग का हाथ मेरे सिरपरहै। यह चित्र सदा ईमर्ज रुप में रखो। तो जिसके सिर पर बाप का हाथ है उसके मस्तक पर विजय का तिलक है ही है।** जैसे बाप अविनाशी है, आप आत्मायें भी अविनाशी है - तो यह विजय का तिलक भी अविनाशी लगा हुआ है।

1-3-92

पहले से ही ये नही सोचो कि प्रतिज्ञा करते तो हैं लेकिन पता नहीं चल सके या नहीं, नीभा सके या नहीं ! यह सोचना अर्थात कमजोरी का आह्वान करना। ऐसा सोचते हो तो माया तो पहेले से ही तैयार रहती हैं आने के लिये इसलिये कोई भी संकल्प वा कर्म करो तो समर्थ स्थिति में रहकर करो। कमजोर संकल्प मिक्स नहीं करो। ये संकल्प रखो की एटेन्शन रुपी हिंमत हमारी और मदद बाप की है ही हैं। इस विधी से प्रतिज्ञा प्रेक्टिकल में लाने में बहोत सहज अनुभव करेंगे। सदैव यह सोचो अनेक कल्प की विजयी आत्मा मैं हुं। ऐसे विजय की खुशी, विजय का नशा शक्तिशाली बना देगा। विजय आप ब्राह्मण आत्माओं के साथ साथी बन सदा बंधी हुई हैं। इसलिये विजय कहीं भी नहीं जायेगी। पांडवो के सिवाय विजय ने किसको साथ दिया ? वही पांडव आप हो न ! जब बाप साथी हैं तो विजय भी आपका साथी हैं। सदा अपने मस्तक पर विजय का तिलक लगा हुआ ही हैं, उसको देखते रहो। जो प्रभु के गले का हार बन गये उनकी हार कभी हो नहीं सकती। विजयमाला आपके संपुर्ण विजयी रुप का यादगार देख रहे हो न ! तो यह गायन ऐसा नहीं है विजयमाला और हारमाला हैं, नहीं, विजयाला हैं। तो ऐसे आप विजयी मणके हो।

15-4-92

आप धर्म और राज्य दोनो की स्थापना कर रहे हो। तो हमें राजधानी में आना हैं यह याद रखो। राजधानी में आना अर्थात ब्राह्मण परिवार में संतुष्ट करना, श्रेष्ठ संबंध में आना।अभी बापदादा पुछेंगे सभी को कि आप माला में आना चाहते हो ? तो कहेंगे हां जी। फिर अभी ब्राह्मण परिवार से गभराते

जीससे काम सफल होगा। तो बाप हाथों से काम नहीं करते लेकिन यह मदद देने का काम करते हैं। तो कर्मयोगी जीवन अर्थात डबल फोर्स से कार्य करने की जीवन। आप और बाप का प्यार अर्थात सबकुछ भूल जाना। कैसे होगा, क्या होगा, ठीक होगा वा नहीं होगा ये सब भूल जाना। हुआ ही पडा हैं। जहां परमात्मा हिम्मत है वहां निमित्त बनी आत्मामें भी हिंमत आ जाती हैं। ऐसे साथ का अनुभव करनेवाले आत्माका संकल्प होगा-नथींग न्यु, विजय हुई पडी हैं, सफलता है ही हैं। यह है सच्चे प्रेमी की अनुभूति जब हद के आशिक यह अनुभव करते हैं कि जहां है वहां तु ही तु हैं। वह तो सर्वशक्तिवान नहीं लेकिन बाप तो सर्वशक्तिवान हैं। इसलिये जब चाहे जहां चाहे सेकन्ड में पहुंच सकते हैं। ऐसे नहीं समझो कि कर्मयोगी जीवन में लवलीन अवस्था नहीं हो सकती हैं, ऐसा साथ का अनुभव अर्थात लव का प्रेक्टिकल सबुत। लवर अर्थात सदा सहज योगी।

मुलाकात

सब से सहज और निरंतर याद का साधन हैं - सदा बाप का साथ अनुभव हो। सदा साथ की अनुभूति याद करने की महेनत से छुडा देती हैं। जब साथ है तो याद तो रहेगी न! और साथ सिर्फ ऐसे नहीं है कि साथ में कोई बैठा हैं। लेकिन साथी अर्थात मददगार हैं। साथवाला अपने काममें बीझी होने से भूल भी सकता है लेकिन साथी नहीं भूल सकता। तो हर कर्म में बाप का साथ साथी रुप में हैं। साथ है, साथी हैं और ऐसा साथी हैं जो कर्म को सहज कर्म करानेवाला हैं। ऐसा साथी भला कैसे भूल सकता हैं? साधारण रीति से भी अगर कोई सहयोग देता हैं तो उसके लीये बार बार दिल में शुक्रिया गाया जाता हैं। और ये बाप तो साथी बन मुश्किल को सहज करनेवाले हैं तो ऐसा साथी कैसे भूल सकता हैं?

18-2-92

कभी कभी एक बात मिस कर देते हो - एटेन्शन कि **key** को उडा देते हो। तो क्या हो जाता है? टेन्शन। तो जहां टेन्शन होता है ना, वहां मुश्किल हो जाता है। एटेन्शन का भी टेन्शन कर देते हो। बापदादा कहते है ना -

जो स्व से प्रसन्न रहते है वह औरो से और सेवा से प्रसन्न रहेंगे। जो भी सेवा मिलेगी उसमें औरो को प्रसन्न कर सेवा में नंबर आगे ले लेंगे। सबसे बडे ते बडी सेवा आपकी प्रसन्नमूर्ति करेगी।

5-12-89

(1) जो अपने को अकाल तख्तनशीन समजकर चलते है उनके लिए बाप का भी दिलतख्त है, फिर न देह है - न देह के संबंध है, न पदार्थ है, एक बाप ही संसार है। इसलिए अकाल तख्तनशीन बाप के दिल तख्तनशीन भी बनते है। बापकी दिल में ऐसे बच्चे ही रहते है जो 'एक बाप दुसरा न कोई' है। तो डबलतख्त हो गया। जो ऐसे सिकिलधे बच्चे होते है, प्यारे होते है उन्हें बाप सदा गोदी में बिठायेंगे, उपर बिठायेंगे नीचे नहीं। इसलिए बाप कहते बच्चे सदा तख्त पर बैठो नीचे नहीं आओ।

(2) बापने बडे सिक-व-प्रेम से आपको ढुंढा है इसलिए आप सिकीलधे हो। आपने ढुंढा लेकिन परिचय न होने से बाप मिला नहीं। तो जिसको बाप ढुंढे वो कितना भाग्यवान होगा। दुनियावाले ढुंढ रहे है, आप मिलन मना रहे हो। कितने थोडे हो, बहुतो का पार्ट है ही नहीं इसलिए गाया हुआ है 'कोटो में कोई'।

(3) बेपरवाह बादशाह - यह कितनी अच्छी स्थिती है। जब सबकुछ बाप के हवाले कर दिया तो परवाह किसको होगी? बाप को या आपको? बाप जाने। जब अपने जीवन की जिम्मेवारी बाप के हवाले की है तो बाप जाने। ऐसे तो नहीं थोडा थोडा कहीं अपनी ओथोरीटी को छिपाकर रखा हो, मनमत को छीपाकर रखा हो। सच्चे दिल से बाप के हवाले सबकुछ कर दिया तो उसकी निशानी सदा डबललाइट होंगी, कोई बोज नहीं होगा। अगर किसीभी प्रकार का बोज है तो इस से सिध्ध है की बाप के हवाले नहीं किया। जब बाप ओफर करते है कि सब बोज मेरे को दे दो और तुम हल्के हो जाओ तो क्या करना चाहिए? ऐसा सर्वेन्ट फीर नहीं मिलेगा। अनेक जन्म बोज रखकर देख लिया, बोज से क्या हुआ? नीचे ही आते गए। अब डबललाईट बन उडते रहो। तन, मन, धन सब बाप के हवाले कर दो। अगर कोई कहते, और कुछ नहीं लेकिन थोडा थोडा संबंध का

बोज है। इसका मतलब सर्व संबंध एक बाप से नहीं जोडा है, किये हुए वायदे अनुसार अगर सर्व संबंध एक बाप से निभाओ तो कोई बोज नहीं। आराम से दाल रोटी खाओ और उडती कला में उडो। ब्रह्माभोजन खाओ, खूब नाचो और मौज मनाओ। अभी मौज में नहीं रहेंगे तो कब रहेंगे।

(4) पुरुषार्थ में तीव्र गति का आधार क्या है? डबल लाईट बनना। बिना डबल लाईट बने तीव्र गति नहीं हो सकती और डबल लाईट बनने के लिए एक शब्द याद करो – 'मेरा बाबा'। बस कोइ भी बात आ जाये, हिमालय पहाड से भी बडी हो लेकिन बाबा कहा और पहाड राइ नहीं लेकिन रुइ बन जायेगा। राइ भी नहीं रुई। राई भी थोडी मजबुत, कडक होती है और रुइ बहुत नर्म और हल्की होती है। तो पहाड जैसी परिस्थिति भी रुई बन जायेगी। दुनिया वाले कहेंगे यह कैसे हुआ होगा? और आप कहेंगे यह ऐसे हुआ होगा। बुध्धि में बाबा कहा और टच होगा कि यह ऐसे होगा। हर बात सहज लगेंगी क्योंकि सहजयोगी जीवन है। जिसकी जीवन ही सहज है उसके सामने कैसी भी बात आयेगी तो सहज हो जायेगी। मुश्किल के दिन खतम हो गये ब्राह्मण जीवन में।

13-12-89

(1) जो सदा बाप के दिल तख्तनशीन रहते है वो सदा ही सेफ रहते है। ऐसे सेफ्टीकेस्थान – दिलतख्तनशीन रहनेवाली आत्मा को माया वार नहीं कर सकती। ऐसा स्थान सारे कल्प में नहीं मिलता है, जहां आराम से खाओ-पीओ-मौज करो और सेफ रहो। कितनी भी गवर्मेन्ट की ओथोरीटी हो लेकिन ऐसी गेरन्टी बाप के सिवा और कोई नहीं दे सकता। वह गवर्मेन्ट सेफ्टी के लिए बंदुक वाले ब्लेक केट दे देंगे, जिससे और ही जेल में है ऐसा लगेगा। लेकिन बाप तो माया के बंधन से छुडा देता है। निर्भय बन जाते है। जो सदा दिल तख्तनशीन है वह निश्चिंत है। जैसे कहते है न – भावि टाली नहीं जाती, अटल भावि है – ऐसे दिल तख्तनशीन आत्मा निर्भय और निश्चिंत रहती है। यह निश्चित है अटल है। दिलतख्त पर माया आ नही सकती। थोडा आकर्षण करके बाहर निकालने की कोशिश जरुर करेगी **लेकिन संकल्प से भी बाहर न निकलो, नहीं तो माया आ जायेगी।**

समीप संग-संबंध बाप और बच्चे का हैं जो सहज भी हैं और प्राप्ति करानेवाला भी हैं।

31-12-91

मुलाकात

नंबरवन जानेवाली आत्मायें व्यर्थ को देखते हुए भी नहीं देखेगी, व्यर्थ बातें सुनते हुए भी नहीं सुनेगी। नंबरवन आत्मायें इस विधी से फास्ट और फर्स्ट और सिध्धी को प्राप्त कर लेती हैं।

कितनी भी जिम्मेवारी हो लेकिन ब्रह्मा बाप जीतनी जिम्मेवारी और कोई के उपर नहीं हैं। इसलिये कोई कितना भी बीझी या जिम्मेवारी वाला हो लेकिन ब्रह्मा बाप जीतना नहीं। तो इतना जिम्मेदार बीझी होते हुए भी कर्मयोगी कैसे बने? ब्रह्मा बापने अपने को करनहार समझकर कर्म किया करावनहार नहीं समझा। करावनहार बापको समझने से जिम्मेदारी बापकी हो जाती हैं और स्वयं सदा कितने भी कार्य करे, कैसा भी कार्य करे-हल्के रहेंगे। तो आप सबने अपनी बुद्धि की तार बाप दादा को दे दी हैं या कभी कभी अपने हाथ में ले लेते हो? चलानेवाला चला रहा हैं, करानेवाला करा रहा हैं। और आप निमित्त कर्म करते हो। कर्म तो क्या डान्स करते हो। कितना भी बडा कार्य हो लेकिन ऐसे समझो जैसे नचानेवाला नचा रहा हैं और हम नाच रहे हैं, तो थकेंगे नहीं, कन्फ्युझ नहीं होंगे, एवर हेप्पी रहेंगे। इसलिये बापदादा सदा कहेते है कि बच्चे सदा नाचो और गाओ। क्युंकि ब्राह्मण जीवन में कोई बोझ नहीं हैं। ब्राह्मण जीवन अति श्रेष्ठ है। लौकिक जोब भी करते हो तो भी डायरेक्शन प्रमाण करते हो इसलिये बोझ नहीं है। क्युंकि डायरेक्शन के साथ साथ बाप एक्स्ट्रा मदद भी देते हैं।

13-2-92

एक काम कोई एक करे और दुसरा साथी बन जाय तो वह काम सहज होगा न? ईसी तरह कर्मयोगी जीवन में हाथ आपके हैं और काम बापका हैं। बाप तो अपने हाथ-पांव नहीं चलायेंगे न! लेकिन मदद बापकी होने से डबल फोर्स से काम अच्छा होगा। काम भल कितना भी मुश्किल हो लेकिन बापकी मदद है ही सदा उमंग-उत्साह, हिंमत, अथकपन की शक्ति देनेवाली

तेरा, तो कितना श्रेष्ठ भाग्य हो गया। तपस्या अर्थात प्रत्यक्ष फल हैं खुशी। तपस्या अर्थात खुशी में नाचना और बापके और अपने आदि-अनादि स्वरुप के गुण गाना। तो ये कितना सहज हैं। इसलिये ब्राह्मण जीवन में कभी किसी का माथा भारी हो नहीं सकता। होस्पिटल बनानेवालों का माथा भारी हुआ ? (ट्रस्टी सामने बैठे हैं) जब करनकरावनहार बाप हैं तो आपको क्या बोज हैं ? यह तो निमित्त बनकर भाग्य बनाने का साधन बना रहे हो। बाकी आपकी जिम्मेवारी नहीं हैं। बापके बजाय अपनी जिम्मेवारी समझते हैं तो माथा भारी होता है। बाप सर्व शक्तिवान मेरा साथी हैं तो क्या भारीपन होगा ? मेरी जिम्मेवारी हैं ऐसा समझने की छोटी सी गलती कर देते हो तो माथा भारी होता हैं। तो ब्राह्मण जीवन हैं ही नाचो, गाओ और मौज करो।

4-12-91

मुलाकात

तपस्या अर्थात एक बाप दुसरा न कोई। सिवाय बाप और सेवा के और कहाँ मन-बुद्धि जाती हैं तो वह लगाव हैं। अगर व्यवहार भी करते हो, जो भी करते हो वो भी ट्रस्टी बनकर, मेरा नहीं तेरा। मेरा काम हैं, मुजे ही देखना पडता हैं, मेरी जिम्मेवारी हैं, क्या करे। मेरी जिम्मेवारी हैं तो निभाना पडता है न ! करना पडता हैं न ! ऐसा कहेते हो कभी ? या तेरा-तेरे को अर्पण, मेरा कहाँ से आया ? मेरा कहा और बोज हुवा। बापका हैं, बाप करेगा, मैं निमित्त हुं ऐसा समझेंगे तो हल्के रहेंगे। बोज उठाने की आदत तो नहीं हैं ? मेरा मानना, माना बोज उठाना जहाँ मेरापन होगा न, वहाँ विकारो का मैलापन जरुर होगा। तेरा हैं तो तैरते रहेंगे डूबेंगे नहीं। तो तैरने में मजा आती हैं न ! तो तपस्या अर्थात तेरा-मेरा नहीं।

मुलाकात

मार्ग कभी मुश्किल, कभी सहज हैं ऐसे नहीं कहेंगे। मार्ग सदा सहज हैं। लेकिन आप कमजोर हो जाने से मुश्किल लगता हैं। कमजोर के लिये कोई छोटा सा कार्य भी मुश्किल लगता हैं। कमजोरी आने का कारण कोई न कोई विकारों का संगदोष हैं। सत का संग किनारे हो जाता हैं और दुसरा संगदोष लग जाता हैं। सतसंग अर्थात सिर्फ बाप के संग में रहना सबसे

अगर दिलतख्त है तो माया कुछ कर नहीं सकती। तो सिर्फ दिलतख्त पर बैठ जाओ। इस में कोई महेनत नहीं, लेकिन किसी को भी उठने बैठने, घुमने की आदत होती है तो बैठ नहीं सकते। लेकिन आपका वायदा क्या है ? जहां बीठाओ जो खिलाओ, जो पहनाओ, जो कराओ, वह करेंगे। इसलिये अपना वायदा पक्का रखो, थोडा भी अपनी मरजी से कुछ न करो। अगर ऐसा करेंगे तो बाप को तो कोई हर्जा नहीं लेकिन महेनत आपको ही करनी पडेगी। बाप को बच्चों की महेनत अच्छी नहीं लगती है। महेनत करके तो थक गये। इसलिये अभी भी महेनत करो यह अच्छा नहीं लगता इसलिये सदा दिल तख्तनशीन बनो।

(2) ज्ञानीयोगी आत्मा की निशानी है संतुष्टता। जहां संतुष्टता है वहां सर्वगुण और सर्वशक्तियां है। संतुष्ट आत्मा ड्रामा के हर द्रश्य को देख 'वाह ड्रामा वाह' कहेंगे। तो संतुष्टता एक खान है। मरजीवा बने ही हो संतुष्ट रहने के लिए। 'इच्छा मात्रम अविधा' से ही सदा संतुष्ट रह सकते हो और इसको ही ब्राह्मण जीवन कहा जाता है। जब रचयिता अपना हो गया वा अपना बना लिया तो रचना कहां जायेगी ? तो बाप को अच्छी तरह अपना बना लो, ढिला-ढाला नहीं। जहां बाप है वहां स्नेह से सबकुछ है। इसलिये तो गाते हो - 'बाप मिला सबकुछ मिला', इतना मिला है जो सर्व इच्छायें इकठ्ठी करो, उन से भी पद्मगुणा ज्यादा है। इच्छा तो उसके आगे कुछ नहीं। जैसे सूर्य के आगे दिपक। ऐसी सर्वप्राप्तियों के आगे कितनी भी अच्छी इच्छा हो वह दिपक के समान है। इसलिये सदा संतुष्ट रहो। इच्छा उठने की बात तो छोडो लेकिन इच्छा होती है यह क्वेश्चन भी नहीं उठ सकता। कई कहते इच्छा नहीं लेकिन अच्छा लगता है तो अच्छा लगा माना बुध्धिका जुकाव हुआ। अच्छा लगे तो सब अच्छा लगना जाहिये। एक चीज वा एक व्यक्ति वा एक का काम क्यों अच्छा लगे ? कई कहते इस आत्मा का योग अच्छा लगता है, इस आत्मा का भाषण अच्छा लगता है, लेकिन वह भी ठीक नहीं है। क्युंकि अच्छा लगता भी है तो बाप का है ना ! बाप अच्छा लगे ना ! **अगर कोई भी व्यक्ति अच्छी लगी तो इच्छाओं की क्युं लग जायेगी। बाप अच्छा लगता तो अंश मात्र में भी माया आ नहीं सकती।**

अगर किसी में गुण अच्छे है तो वह भी बाप की देन है। इसलिए बाप ही अच्छा लगे तो सदा संतुष्ट रहेंगे। तो हद की बातों के लिए चाहिए चाहिए छोडो लेकिन बेहद के लिए जीतना जाहिए उतना सोचो, तो संतुष्टमणी अर्थात सदा रुहानीयत से चमकनेवाले बन जायेंगे।

21-12-89

बाप को बच्चों की कमी सदा कमाल के रुप में परिवर्तन करने का शुभसंकल्प रहता है। 'प्यार में बाप को बच्चों की महेनत देखी नहीं जाती। कोई महेनत आवश्यक हो तो करो लेकिन ब्राह्मण जीवन में महेनत करने की आवश्यकता ही नही है।'' क्योंकि बाप के दाता विधाता और वरदाता तीनो संबंध से ईतने संपन्न बन जाते हो जो बीना महेनत रुहानी मौज में रह सकते हो। क्योंकि वर्सा भी है, पढाई भी है और वरदान भी है। ऐसे तीनो रुपो से प्राप्ति करनेवाली आत्मा को महेनत करने की क्या आवश्यक्ता है ? वर्तमान और भविष्य सदा गति-सदगति है ही है। लेकिन वर्तमान पर तो है झटपटका सौदा। अभी अभी कर्म करो अभी अभी प्राप्ति के अधिकारी, तुरन्त दान महापुण्य ऐसी प्राप्ति है। इसलिये बाप को बच्चों की महेनत पर रहम आता है। वरदानी, सदा वर्से के अधिकारी कभी महेनत नहीं कर सकते। भाग्यविधाता शिक्षक के भाग्यवान बच्चे सदा 'पास वीथ ओनर' होते है।

स्वयं सदा ऐसा अनुभव करेंगे कि हम वरदानो से पल रहे है। वरदानो से आगे उड रहे है। वरदानों सें सेवा में सफलता पा रहे है।

कोई कोई को महेनत बिगर और कोई काम अच्छा नहीं लगता है। उसको खुरसी पर आराम से बिठायेंगे तो भी कहेंगे हमको महेनत का काम दो। **63** जन्म बाप को ढुंढने में ऐसी महेनत करके थक तो गये ही हो तो जब की पहले से ही **63** जन्म महेनत कर थके हुए हो तो अब एक जन्म तो मौज में रहो। मजा तो अभी है। दुसरे महेनत कर रहे है, आप मौज में हो।

25-12-89

बापदादाने आप को ऐसी गीफ्ट दी है जिस से २१ जन्म भरपूर रहेंगे। ऐसी गीफ्ट कोई दे न सके। फोरेन के देश के कोई राजा व रानी चाहे पूरा

देन, परमात्मा देन को मेरा मानना यह महापाप है। कई बार कई बच्चे, साधारण भाषा में सोचते भी है और बोलते भी है कि मेरे इस गुण को युझ नहीं किया जाता। मेरे में यह शक्ति है, मेरी बुद्धि बहोत अच्छी है इसको युझ नहीं किया जाता है-यह मेरी कहां से आई ? मेरी कहा और मैली हुई। भक्ति में भी यह शिक्षा **63** जन्मों से देते रहते है कि मेरा नहीं मानो, तेरा मानो लेकिन फिर भी माना नहीं। तो ज्ञान मार्ग में भी कहना तेरा और मानना मेरा, यह ठगी यहां नहीं चलती। इसलिये प्रभुप्रसाद को अपना मानना यह अभिमान और अपमान करना है। 'बाबा' शब्द कहां भी भूलो नहीं। बाबा ने शक्ति दी, बुद्धि दी है, बाबा का कार्य है, बाबा का सेन्टर है, बाबा की यह सब चीजे है। ऐसे नहीं समजो मेरा सेन्टर है।

16-5-91 (संदेश)

बच्ची तुम्हारी दुनिया का क्या हाल चाल है ? मैने कहा - बाबा, एक तरफ तो तपस्या चल रही है, दुसरे तरफ ईलेक्शन का हंगामा चल रहा है। तो बाबा ने कहा 'तुम बच्चे तो कितने निश्चिंत हो। उन्हें तो ईलेक्शन और सिलेक्शन का फिक्र है। **लेकिन तुम्हें तो स्वयं भगवानने सिलेक्ट कर लिया।** तुम्हे इस सिलेक्शन के लिए कुछ करना पडा ? तुमने तो सिर्फ दिल से कहा 'मेरा बाबा' तो इस एक ही दिल के शब्द से बाबा ने सेकेन्ड में आप बच्चो को चुन लिया अर्थात सिलेक्ट कर लिया। तो तुम्हारी सिलेक्शन कितना बढीया है। भावी बन गई। कहते भी है भावी टाली नहीं जाती। तो यह भगवान की सिलेक्शन की भावी बन गई जो हर कल्प रीपीट होती रहेगी। आपके दिल की भावनाने ड्रामा की भावी बना दी। तो कितना सरल हुआ। हमने कहा कि बाबा हम तो ऐसा कर भी नहीं सकते जैसे यह लोग ईलेक्शन में करते है। तो बाबा ने कहा कि तुम्हारी हिंमत ऐसा नेता बनने की नहीं है। इसलिये जिन में वो हिंमत नहीं है, रुची नहीं है, उन्हें ही बाबा ने सहज सिलेक्ट कर लिया।'

26-10-91

तपस्या अर्थात आत्मा कहती हैं मैं तेरी, तु मेरा। इसी तपस्या के बल से भाग्य विधाता को अपना बना लिया। भाग्य विधाता बाप भी कहेता हैं मैं

कर सकते हो तो क्षमा करो। आप की क्षमा उस आत्मा के लिये शिक्षा हो जायेगी। आजकल शिक्षा देने से कोई समझता, कोई नहीं समझता, इसलिये क्षमा करो तो वह शिक्षा का काम करेगी। क्षमा अर्थात शुभ भावना की दुवायें देना, सहयोग देना। **शिक्षा देने का समय अभी चला गया।** अभी स्नेह दो, सम्मान दो, क्षमा करो, शुभ भावना रखो, शुभ कामना रखो - यही शिक्षा की विधी हैं। सुनाया था न की दाने कुछ तैयार हो भी गये हैं लेकिन माला अभी तैयार नहीं हुई हैं। धागा भी हैं, दाने भी हैं लेकिन दाना दाने के समीप नहीं है इसलिये माला तैयार नहीं हैं। अपनी रीति से दाना तैयार हैं लेकिन संगठन में, समीपता में तैयार नहीं हैं। इसलिये ड्रामा के हर सीन को प्यारा देखते हुए चलो। हर सीन प्यारी हैं। दुनिया के लिये जो अप्यारी सीन हैं वह आपके लीये प्यारी हैं। जो भी होता हैं उसमें कोई राझ भरा हुआ होता हैं। राज को जानने से कभी किसी बात में, किसी द्रश्य में नाराज नहीं होंगे।

3-4-91

'मेरा बाबा' जान लिया, मान लिया तो जो जान लिया, मान लिया, अनुभव कर लिया, अधिकार प्राप्त हो गया फिर मुश्किल क्या है ? फिर एक ही 'मेरा बाबा' यह अनुभव होता रहे। यही फुल नोलेज है। एक 'बाबा' शब्द में सारा आदि - मध्य - अंत का ज्ञान समाया हुआ है क्योंकी बीज है ना। बीज मैं तो सारा झाड समाया हुआ होता है ना ? विस्तार भुल सकता है लेकिन सार एक 'बाबा' शब्द यह याद रहना मुश्किल नहीं है। सदा सहज है ना ? कभी सहज, कभी मुश्किल नहीं। सदा बाबा मेरा है कि कभी कभी मेरा है ? जब 'बाबा' सदा मेरा है तो याद भी सदा सहज है, कोई मुश्किल बात नहीं। भगवानने कहा आप मेरे और आपने कहा 'बाबा' आप मेरे, फिर क्या मुश्किल है ? इसलिये विशेष नये बच्चे और आगे बढो। **अभी भी और आगे बढने का चान्स है। अभी फाईनल समाप्ति का ब्युगल नहीं बजा है। इसलिये उठो और औरो को भी उठाते चलो।**

जो सारे खजाने सुनाये-गुण भी है, बापकी देन। मेरा यह गुण है, मेरी शक्ति है, यह स्वप्न में भी गलती नहीं करना। यह बाप की देन है, तो प्रभु

तख्त दे देवे या ओफर करें कि ये तख्त ले लो तो आप लेंगे ? बाप के दिलतख्त के आगे यह तख्त कुछ नहीं है। इसलिये सभी रुहानी फकुर (नशा) में रहो। ऐसे नशे में रहेनेवाले को कोई फिकर नहीं। बेफिकर बादशाह बन जाते है। इसलिये सब से बडी और सबसे अच्छी यह बेफिकर बादशाही है। **विश्व की राजाई तो 20 जन्म होगी लेकिन यह बेफिकर बादशाही और दिलतख्त इस युग में एक जन्म के लिये ही मिलता है। ब्रह्माबाप इस विधी से ही बेफिकर बने तो क्या गीत गाया 'पाना था सो पा लिया-काम क्या बाकी रहा।' आप भी ऐसे बेफिक र बनो।** बाकी रही सेवा की बात। तो सेवा की भी फिकर न करो। वह भी करावनहर बाप करा रहे है और कराते रहेंगे। हमको करना है इससे बोज हो जाता है। बाप हमारे द्वारा करा रहे है तो बेफिकर हो जायेंगे। निश्चय है इसलिये निश्चयबुद्धि निश्चिंत, बेफिकर रहेते है। यह तो सिर्फ बच्चो को निमित्त बनाये वर्तमान और भविष्य सेवा के फलका अधिकारी बना रहे है। काम बाप का नाम बच्चों का। फल बच्चों को खिलाते खुद नहीं खाते तो बेफिकर हुए ना ? **सेवा में सफलता का सहज साधन ही यह है 'करानेवाला करा रहा है।' अगर 'मैं' कर रहा हुं तो आत्मा की शक्ति प्रमाण सेवा का फल मिलता है। बाप करा रहा है तो वह सर्वशक्तिवान होने से कर्म का फल भी ईतना ही श्रेष्ठ मिलता है।** तो सदा बाप द्वारा प्राप्त हुई बेफिकर बादशाही या हथेली पर स्वर्ग के भाग्य की गोडली गीफ्ट सदा अपने साथ रखो अर्थात स्मृति में रखो तो हर दिन तो क्या हर घडी बडे ते बडी घडी है - बडा दिन है - ऐसी अनुभूति करेंगे।

बेफिकर बादशाह अर्थात सदा बाप के निश्चय में स्थित रहनेवाले, क्योंकि निश्चय विजयी बनाता है और नशा खुशी में सदा उंचा उडाता है - जिससे बेफिकर बादशाह होंगे न! कोई फिकर है क्या ? संख्या कैसे बढेंगी ? अच्छे अच्छे जिज्ञासु पता नहीं कब आयेंगे ? कब तक सेवा करनी पडेगी यह सोचते तो नहीं हो ? असोच बनने से ही सेवा बढेगी। सोचने से नहीं बढेगी। असोच बन बुद्धि को फ्री रखेंगे तब बाप की शक्ति मदद के रुप में अनुभव करेंगे। सोचने में ही बुद्धि बीजी रखेंगे तो बाप की टचींग, बाप की

शक्ति ग्रहण नहीं कर सकेंगे। बाबा और हम कम्बाईन्ड है – करावनहार बाबा और करने के निमित्त मैं आत्मा – इसको कहते है असोच अर्थात एक की याद। ऐसे शुभ चिंतन में रहेनेवालो को कभी कोई चिंता नही होती।

आप बडे ते बडे आदमी हो। सारे कल्प में ढुंढ के आओ, आप ब्राह्मणों से बडा कोई नहीं। तो अपने को इतना बडा खुश नशीब अनुभव करते हो ? जीसका इतना श्रेष्ठ भाग्य है उसकी निशानी होगी–वह सदा खुश रहेंगे। तो सदा खुशी के गीत स्वत: बजते रहेते हैं ? यह अविनाशी और अनहद गीत हैं। जो बजता ही रहते हैं, और काम ही क्या है! गाओ और नाचो। **योग लगाना भी क्या हैं! खुशी में नाचना ही तो है न! बापकी महिमा गाते हो। खुशी में नाचते हो औरक्या करते हो! इसमें ही सेवा हैं, ईसीमें ही योग हैं, ईसीमें ही ज्ञान या धारणा हैं। नाचो, गाओ, और ब्रह्माभोजन खाओ। भोग लगाकर खायेंगे तो ताकात आयेंगी। बिना भोग लगाये खाया तो सिर्फ पेट भरेगा लेकिन आत्मा में शक्ति नहीं आयेगी।**

31-12-89

'आपके लिए हर सेकेन्ड हर कर्म नया है। क्योंकि हर कर्म, हर सेकन्ड हमें बाबा और ड्रामा चलाता है' जिससे बेफिकर डबल लाईट बन उडते रहते।' करावनहार ही मन द्वारा करावे और इस कारण मन द्वारा मनसा सेवा खुशी से और आपे ही होती रहे।

2-1-90

कमलपुष्प के समान न्यारे बने हो ? न्यारे बनने की निशानी है – जितना न्यारे उतना बाप के प्यारे बनेंगे। स्वत: ही बाप का प्यार अनुभव होगा। और यह परमात्मा प्यार छत्रछाया बन जायेगा। जिसके उपर परमात्मा की छत्रछाया होती है वह कितना सेफ रहता है। उसको कोई क्या कर सकते है ? इसलिये फकुर में रहो कि हम परमात्मा छत्रछाया में रहनेवाले है। यह अभिमान नहीं लेकिन रुहानी फखुर है अर्थात आत्मभिमानी स्थिती है। जहां ऐसा रुहानी फकुर होता है वहां विध्न नहीं हो सकता। या तो है फिकर या तो है फकुर, दोनो साथ नहीं होते। 'दालरोटी अच्छे ते अच्छी देने के लिए बापदादा बंधा हुआ है।' रोज **36** प्रकार के भोजन नहीं देंगे लेकिन

भले वह जिगर में कभी रखते है या नहीं रखते है लेकिन बाबा के जिगर में तो सभी बच्चे है ही।

18-1-91

निश्चयबुद्धि विजयी आत्मायें हैं, ऐसा अनुभव करते हो ? निश्चय बुद्धि आत्मा चाहे व्यवहार, चाहे परमार्थ के हर कार्य में विजय का अनुभव करेगा। कैसा भी साधारण कर्म हो लेकिन विजय जन्म सिद्ध अधिकार के रुप में उसको अवश्य प्राप्त होगा। इसलिये वह कभी भी कोई कार्य में स्वयं से दिल शिकस्त नहीं होगा। तो अधिकार का इतना नशा रखो। जीसका भगवान मददगार हैं उसकी विजय नहीं होगी तो किसकी होगी ? कल्प पहेले का यादगार भी दिखाते हैं कि भले पांच थे लेकिन भगवान साथ हैं इसलिये पांडवो की विजय हुई। इसलिये कभी भी कोई कार्य में संकल्प नहीं उठना चाहिये कि ये कार्य होगा, नहीं होगा, विजय होगी या नहीं होगी... कभी भी बापके साथ वाले की हार हो नहीं सकती – यह कल्प कल्प की नुंध निश्चित हैं इस भावि को कोई टाल नहीं सकता। लेकिन सिर्फ द्रढ निश्चय रखो तो वह निश्चय सदा आगे उडाता रहेगा।

मुलाकात

बापदादा सदा सहयोगी सेवाधारी बच्चों के साथ हैं। बच्चा बापके साथ है तो गभराने की कोई बात नहीं। बाप बैठा हैं तो बच्चों को क्या फिकर ? बाप तो है ही मालामाल, किसी भी युक्ति से बच्चों की पालना करनी ही हैं इसलिये बेफिकर रहो। दु:खधाम में सुखधाम स्थापन कर रहे हो तो दु:ख धाम में हलचल तो होंगी ही। गरमी की सीझन में गरमी तो होगी ही न! लेकिन बापके बच्चे सदा ही सेइफ हैं क्युंकि बापका साथ हैं। इस ब्राह्मण जीवन में गभराने का तो स्वपन में भी संकल्प उठ नहीं सकता। इसलिये जहां जीस परिस्थिति में रहो, दिलखुश मीठाई खाते रहो। खुशहाल रहो, फरिश्तो की चाल में उडो।

13-2-91

अच्छे के साथ अच्छे चले ये तो सभी जानते है लेकिन अकल्याण की वृत्तिवाले को अपने कल्याण की वृत्ति से परिवर्तन करो। परिवर्तन न भी

मुलाकात

भाग्यविधाता भाग्य की लकीर खींचने के लिये भारत में ही आता हैं। इसलिए फिर भी बापको मिलने के लिये सभी को भारत में ही आना पडता हैं। अमेरिका में तो बाप नहीं मिलेगा न ? तो भारतवासी कितने महान हो। स्वयं महान बन गये हो इसलिये सब देशवाले आपके महेमान होकर आते हैं। विश्व में जाकर सेवा करने के बजाय आपके पास विश्व की आत्मायें आ जाये तो कितना अच्छा चान्स हैं ? तो सदैव भाग्य विधाता बाप और भाग्यवान मैं, ये रुहानी नशा रहेता हैं ? अर्थात बापदादा सभी को पुछते हैं कि सदा संतुष्ट रहेते हो ? संतुष्टता सब गुणों को स्वत: ही लाता हैं। जिसके पास संतुष्टता हैं उसके पास और सब गुणों की खान हो जाती हैं। इसलिये कोई भी बात हो जाये, संतुष्टता नहीं जाये। बात आयेगी भी और चली जायेगी लेकिन संतुष्टता को नहीं जाने दो। कोई भी समस्या आ जाये लेकिन संतुष्टता ही बापका वर्सा हैं। ये संतुष्टता का वर्सा या खजाना हर समय आपको भरपूरता का अनुभव करायेगा।

20-8-90

संदेश

बाबा ने कहा, 'बाबा बच्चों की हिंमत पर खुश है। यह हिंमत तो बहोत अच्छी रखी है लेकिन हिम्मत का रिटर्न है बाबा की मदद। बाबा बच्चों की हिंमत देखकर जो मदद देता है वह लेने में थोडी सी कमी कर देते है। बाबा जितनी मदद देता है वह मदद अगर बच्चे लेते जायें और चलते जाये तो पहाड जैसी परिस्थिति भी स्व-स्थिती में बदल जाय।

बाबा ने कहाँ आप बच्चे मुझे बहुत अच्छे लगते हो। बहुत सहज उड भी सकते हो लेकिन महेनत क्यों करते ? उसका कारण यह है कि बाप जो महेनत से बचाने की मदद देता है वह कैच नहीं करते। फिर महेनत की लाईफ हो जाती है। इसलीये सभी बच्चों को कहो कि बाबा बच्चों के बहुत बहुत स्नेही है और मददगार है। तुम बच्चों को कुछ भी सोचने की, महेनत करने की जरुरत ही नहीं है। जैसे बाबा चला रहा है ऐसे चलते चलो। बाबा को बच्चों पर रहम भी आता है। बाबा का आप बच्चों से जिगरी प्यार है -

दालरोटी प्यार की जरुर मिलेगी, यह निश्चित है। इसको कोई टाल नहीं सकता। तो फिकर किस बात की ! दुनिया में फिकर रहता है कि हम भी खाये और पिछेवाले भी खाये। तो आप भी भुखे नहीं रहेंगे और आपके पीछेवाले भी भुखे नहीं रहेंगे। बाकी क्या चाहिए ? डनलोप के तकिये चाहिए क्या ? अगर डनलोप के तकिये या बिस्तर में भी फिकर की नींद हो तो नींद आयेगी ? बेफिकर होंगे तो धरती पर सोते भी निंद आ जायेगी। जहाँ प्यार है वहां सबकुछ है और जहाँ प्यार नहीं वहाँ हीरे मोती भी कुछ नहीं। जहां प्यार है वहाँ सुखी रोटी भी **36** प्रकार का भोजन लगेगा। इसलिये बेफिकर बादशाह हो। ये बेफिकर रहने की बादशाही सब बादशाहीओं से श्रेष्ठ है। अगर ताज पहनकर तख्त पर बैठ गए और फिकर करते रहे तो तख्त हुआ या चिता हुई ? तो भाग्यविधाता भगवानने आपके मस्तक पर श्रेष्ठ भाग्य की लकीर खिंच दी है। बेफिकर बादशाह हो गये हो। टोपी या खुरशीवाले बादशाह नहीं। कोई फिकर है ? पोत्रो-घोत्रो का फिकर है ? आपका कल्याण हो गया तो उन लोगो का भी जरुर होगा। तो मस्तक पर श्रेष्ठ भाग्य की लकीर देखते रहो। वाह मेरा श्रेष्ठ ईश्वरीय भाग्य। धन दोलत का भाग्य नहीं। ईश्वरीय भाग्य। इस भाग्य के आगे धन तो कुछ नहीं है। वो तो पीछे पीछे आयेगा। जैसे परछाई होती है, वह आपकी पीछे पीछे आती है। लेकिन भाग्य है, ईश्वरीय भाग्य। सदा इसी नशे में रहों की अगर पाना है तो सदा का पाना है। जब बाप और आत्मा अविनाशी है तो प्राप्ति भी अविनाशी चाहिए।

10-1-90

सदा एक बात याद रखो, सबके लिये केह रहे हैं - कभी भी कोई ऐसाव्यर्थ या साधारण कर्म करते हो और अपने आपको पहेचान नहीं सकते हो की य राईट हैं या रोंग हैं, तो ऐसी आपकी परिस्थिति के वशीभूत स्थिति में सिद्धि को प्राप्त करने की श्रेष्ठ विधि क्या हैं ? उस समय आप तो राँग को राँग नहीं समझते लेकिन राईट को भी राँग समझते हो। ऐसे समय पर बापदादा की एक श्रेष्ठ मत सदैव याद रखो की जिन्हों को बापने निमित्त बनाया हैं वह निमित्त आत्मायें जो डायरेक्शन देती हैं उसको महत्व देना चाहीये। उस

समय यह नहीं सोचो कि निमित्त बने हुए शायद कोई के कहेने से केह रहे हैं। इसमें धोखा नहीं खाओ लेकिन उस समय उनके डायरेक्शन को महत्त्व देने से अगर कोई बुरी बात भी होगी तो आप जिम्मेवार नहीं। जैसे ब्रह्मा बाप के लिये सदा कहेते हैं कि अगर उनकी कोई गलती भी होगी तो भी वह बदल आपके प्रति सही हो जायेगी। ऐसे मानो, निमित्त कोई ऐसे फैंसला भी दे देते जो आपको ठीक नहीं लगता है लेकिन आप उसमें जिम्मेवार नहीं हो। आपका पाप नहीं बनेगा। आपका काम ठीक हो जायेगा क्युंकि बाप बैठा हैं। बाप पापको बदल देगा यह गुप्त रहस्य हैं, गुप्त मशीनरी हैं। इसलिये निमित्त बनी हुई श्रेष्ठ आत्माओं के श्रेष्ठ डायरेक्शन को महत्व दे कार्य में लगाओ। इसमें आपका फायदा हैं, नुकशान भी बदलकर फायदा हो जायेगा। ये बापकी गेरंटी है, समझा। इसलिये सुनाया की कर्मों की लीला बडी विचित्र हैं। बाप जिम्मदार हैं। ऐसे ही निमित्त नहीं बनाया हैं। सोच, समझ के ड्रामा के लो मुजीब निमित्त बनाया गया हैं। इसलिये निमित्त के श्रेष्ठ डायरेक्शन को सिर्फ कहेने मात्र नहीं लेकिन समझने मात्र, स्नेह मात्र, स्वमान मात्र महत्व दो। इन गुह्य बातों को बाप जाने और जो समझदार बच्चे हैं वह जाने। निमित्त बनी हुई आत्माओं के लीये कुछ भी कहेना अर्थात बापके लीये कहेना। क्युंकि निमित्त बापने बनाया हैं! बापसे ज्यादा आपको परखने शक्ति है क्या ?

मुलाकात

शिव शक्तियां हो या घर की मातायें हो ! किन माताओं को बापने शिव शक्तियां बना दिया ! अगर कोई शकल आकर देखे तो क्या कहेंगे ? ऐसी शक्तियां होती हैं क्या ? लेकिन बापने पहचान लिया की ये आत्मायें शक्तक्तिशाली हैं। बाप तो आत्माओं को देखता हैं, न बुढा देखता है, न जवान देखता, न बच्चा देखता। आत्मा तो बुढी या छोटी तो है नहीं। तो ये खुसी है न कि हमको बाबा ने शिव शक्ति बना दिया ? दुनिया में कितनी पढी-लीखी मातायें हैं, लेकिन बापको गाँव वाली मातायें ही पसंद है, क्युं ? क्युंकि सच्ची दिल पर साहब राजी हैं। बापको सच्ची दिल प्यारी हैं। जो भोले होंगे उन्हें जुठ कपट करने नहीं आयेगा। जो चालाक चतुर होते हैं उनमें

एक बाप के स्नेह, सहयोग, और साथ के सिवाय और कुछ उसको दिखाई नहीं देगा, कुछ भी बुद्धि में आयेगा ही नहीं। तुम्हीं से उठुं, तुम्हीं से सोउं, तुम्हीं से खाउं, तुम्हीं से सेवा करुं, तुम्हीं के साथ कर्मयोगी बनुं - यही स्मृति सदा उस आत्मा को रहती हैं। भले कोई श्रेष्ठ आत्मा द्वारा सहयोग मिलता भी हैं लेकिन उसका भी दाता कौन ? ऐसा सोचेंगे तो एक बाप की तरफ ही बुद्धि जायेगी न ! सहयोग लो लेकिन दाता कौन यह भूलना नहीं चाहीये।

माला का रहस्य

माला का हर एक मणका हर एक मणके के साथ समीप हो, स्नेही हो, प्रगति के लीये सहयोगी हैं लेकीन ऐसा नहीं है इसलिये माला रुकी हुई हैं। क्युंकि माला तैयार होना अर्थात युगल दाने के समान एक दो के भी समीप, स्नेही बनना। पहेले **108** की माला बने तब दूसरी बने। बापदादा बहोत बार माला तैयार करने के लिये बैठते है लेकिन अभी पुरी नहीं हुइ हैं। क्युंकि बाप मणकों को तभी पिरोते हैं जब मणका मणके के समीप रह सके। अर्थात मणके को तीन सर्टीफिकेट मीले हुए हो **(1) बाप पसंद (2)** ब्राह्मण परिवार पसंद **(3)** अपने यथार्थ पुरुषार्थ पसंद। बाप यह तीनों बातें चेक करते हैं तो मणका हाथ में ही रह जाता हैं। अर्थात माला में नहीं आता हैं। इसलिये अभी क्या करेंगे ? माला का समीप मणका बनना ही है, सभी को चान्स हैं। अभी माला में मणके फिक्स नहीं हए हैं तो तीन सर्टीफीकेट लो और पिरोये जाओ।

सदैव ईसी स्मृति में रहो कि हम इतने भाग्यवान हैं जो हम परमात्मा की छत्रछाया में हैं। बाप तो है ही सदा बच्चों के लिये। बच्चे कहे न कहे लेकिन बाप बच्चों को साथ देने के लिये बंधे हुए हैं। थोडा भी नीचे उपर होते हो तो देखो बाप किसी न किसी रीति से और तरफ जाने से पकड लेते हैं। एक एक अति प्यारा हैं। जीससे प्यार होता हैं उसको छोडा नहींजाता। साथ रखा जाता हैं। कभी कभी कोई बच्चे नट खट करते हैं। लेकिन बापका प्यार स्मृति दिला देता हैं तो फिर नोलेजफुल बन जाते हैं। तो सदा यही याद रखना की छत्रछाया में रहेनेवाले हैं।

बापको दे दी तो फीर किसके पास रही ? जब बापके पास रही तो फिर यह क्युं सोचते ? – मैं ऐसा हुँ – वैसा हु – जो कमी आपने दे दी तो बापदादा उसी जगह पर आपको शक्ति, खुशी, उमंग उत्साह भर देता हैं। तो जो बापदादा यह दैते हैं वह लेते नहीं हो, सिर्फ सोचते हो कि जवाब तो मीला नहीं। इसलिये जो बाप देता हैं उसे लेने का प्रयत्न करो अर्थात जवाब के इन्तजार के बजाय खुशी, शक्ति लेते जाओ। फिर देखो कितना अच्छा उमंग उत्साह रहेता हैं। जीस घडी अपनी कमजोरी लीखते हो वा निमित्त बनी हई आत्मा को सुनाते हो तो दे दी, माना समझो खतम हुई। फिर कमजोरीयों को सोचो नहीं। लेकिन देने के बाद मिल क्यारहा हैं वह सोचो।

कई बच्चे सोचते हैं सेवा तो कर रहे हैं

लेकिन बापके वायदे अनुसार इस सेवा में बापने मदद तो की नहीं। सफलता कम मिलने से फिर ये भी सोचते हैं शायद मैं योग्य नहीं हुं, मैं सेवा कर नहीं सकती हुं, मैं कमजोर हुँ। ऐसा व्यर्थ सोचने की बजाय कोई बच्चा अगर सेवा की मदद के लिये बापके आगे संकल्प करते भी है तो खुली दिल से करो। इसके लिये सिर्फ एक विधी अपनाओ। कैसी भी मुश्किल सेवा हो लेकिन बुद्धि से उस सेवा को बापके आगे अर्पण कर दो। मैंने किया, सफलता नहीं हुई तो यह "मैं" कहां से आया ? बाप करनकरावनहार की जिम्मेवारी भूल करके अपने उपर क्युं उठाई ? ये राँग हो जाता हैं। बापकी सेवा हैं, बाप अवश्य करेगा। बापको आगे रखो, अपने को आगे नहीं रखो। मैंने यह किया, ये "मैं" शब्द सफलता को दुर करता हैं। बीज कमजोर और फल शक्तिशाली नीकले यह हो नहीं सकता। फाउन्डेशन कमजोर डालते हो बाकी बापदादा, ब्राह्मण परिवार, ड्रामा, संगमयुग का समय सब आपकी सफलता में मददगार हैं, आपके चारो तरफ शक्तिशाली दिवारे हैं।

31-3-90

ज्ञान सहित रहमदिल आत्मा कभी किसी के उपर चाहे गुणों के उपर चाहे सेवा के उपर, चाहे किसी भी प्रकार के सहयोग प्राप्त होने के कारण आत्मा पर प्रभावित नहीं हो सकती। क्युंकि बेहद के वैरागी होने के कारण

सब बातें होती हैं। तो जीसकी दिल भोली हैं अर्थात दुनिया की मायावी चतुराई से परे हैं, वह बापको अति प्रिय हैं। बाप सच्ची दिल को देखता हैं। बाकी पढाई को, शकल को, गांव को, पैसे को नहीं देखता हैं। इसलिये बापका नाम दिलवाला हैं।

22-1-90

संस्कार सदा बाप समान स्नेह, रहेम और उदार दिल का हो जिसको बडी दिल कहेते हैं। छोटी दिल अर्थात हद का अपनापन देखना–चाहे अपने प्रति, चाहे अपनी सेवा स्थान प्रति चाहे सेवा साथीयों प्रति। और बडी दिल अर्थात सर्व में अपनापन अनुभव हो। बडी दिल में चाहे तन के, चाहे संबंध में हर प्रकार के कार्य में बडी दिलवालों को सफलता की बरकत होती हैं। छोटी दिलवालों के भंडारे और भंडारा सदा बरकत के नहीं रहेते हैं। सेवा साथी दिल से बहोत देंगे की आप यह करो, हम करेंगे। लेकिन समय पर सरकमस्टान्सीस सुनाने शुरु कर देंगे। इसलिये बडे दिलवाले बनो। क्युंकि आप बेहद के बडे ते बडे कार्य अर्थ ही निमित्त हो। विश्व कल्याणकारी हो न ! तो इतने बडे कार्य के लिये दिल भी बडी और बेहद की चाहिये न ! हदे भी क्युं बनाई जाती हैं ? छोटी दिल के कारण कितना भी एरिया बनाकर दे लेकिन आप अपना सदा बेहद का भाव रखो, स्थान की भले हद हो लेकिन दिल में हद नहीं रखो। स्थान के हद का प्रभाव दिल पर नहीं होना चाहिये। अगर दिल में हद का प्रभाव हैं तो बेहद का बाप हद की दिल में नहीं रह सकता, बडा बाबा हैं तो बडी दिल भी चाहिये न !

सभी टीचर्स फोलो फाधर करनेवाली हो या मेरा सेन्टर, मेरे जिज्ञासु, मेरी मदोगरी (भंडारी) और स्टुडन्ट भी समझे मेरी टीचर हैं यह। फोलो फाधर अर्थात मेरे को तेरे में समाना, हद को बेहद में समाना। तो स्व परिवर्तन के लिये हद को सर्व वंश सहित समाप्त करो। जीसको भी देखो, या जो भी आपको देखे–बेहद के बादशाह का नशा अनुभव हो। हद की दिलवाले बेहद के बादशाह बन नहीं सकते। ऐसे नहीं समझना की जीतने ज्यादा सेन्टर्स खोलते या जीतनी ज्यादा सेवा करते तो इतना बडा राजा बनेंगे। इस पर स्वर्ग की राजाई नहीं मिलनी हैं। सेवा भी हो, सेन्टर्स भी हो लेकिन हद

का नाम निशान न हो। उसको नंबरवार विश्व के राज्य का तख्त प्राप्त होगा। इसलिये अभी अभी थोडे थोडे समय के लिये अपनी दिल खुश करके नहीं बेठना। बेहद की खुश्बुवाला अब भी बाप समान और समीप हैं और 21 जन्म भी ब्रह्माबाप के समीप होगा। बहोत सेन्टर्स हैं, बहोत जिज्ञासु हैं.. इस बहोत बहोत में नहीं जाना लेकिन बडी दिल को अपनाओ।

सेवा भले कम करो लेकिन स्थिति को कम नहीं करो। जो सेवा, स्थिति को नीचे ले आये उसको सेवा कैसे कहेंगे। इसलिये बापदादा सभी को दिल से यह कहेते की स्व सेवा और औरों की सेवा सदा साथ-साथ करो। स्व सेवा को छोड, पर सेवा करते रहनेसे सफलता नहीं प्राप्त होती हैं। सर्व शक्तिवान बाप मददगार हैं इसलिये हिम्मत से दोनो का बेलेन्स रख आगे बढो। कमजोर नहीं हो लेकिन अनेक बार के निमित्त बनी हुई विजयी आत्माओं के लीये न कोई मुश्किल हैं, न महेनत। एटेन्शन और अभ्यास - यह भी सहेज और स्वत: अनुभव करेंगे। ब्राह्मण आत्माओं के नीजी संस्कार "एटेन्शन" और "अभ्यास" हैं।

19-2-90

आप करनेवाले निमित्त हो। मैं योग्य नहीं हुं - यह संकल्प कैसे करते हो ? यह कमजोर संकल्प - यह बीज ही कमजोर डालते हो और फिर सोचते हो फल अच्छा क्यों नहीं निकला ? बीज कमजोर और फल शक्तिशाली निकले यह हो सकता है क्या ? फाउन्डेशन कमजोर डालते हो। बाकि बापदादा, ब्राह्मण परिवार, ड्रामा, संगमयुग का समय, सब आपकी सफलता में मददगार है। आपके चारों तरफ शक्तिशाली है, बापदादा, ब्राह्मण परिवार, समय और स्वयं चारों तरफ मजबुत है तो हिलेगा क्यों ? समजा ? बापदादा के प्यारे हो। बापदादा ने हर बच्चे की जिम्मेवारी सदा के लिए ली हुई है। सिर्फ अपने उपर जिम्मेवारी गलती से नहीं ले लो। फिर देखो, सफलता आपके चरणो में, स्वयं सफलता आपके गले की माला बनेंगी, चरण छुएगी। सिवाय ब्राह्मणो के और कहीं सफलता जा नहीं सकती। यह संगमयुग का वरदान है। सिर्फ बाप की जिम्मेवारी को अपने उपर नहीं उठाओ। समजा ?

करके याद किया जाता है क्या ? जहां सर्वशक्तिवान बाप साथ है तो शक्तियाँ साथ होगी ना ! जहां सर्वशक्तियां है वहाँ महेनत करने की जरुरत नहीं। इसलिये बापदादा सदा कहते सदा अपने को लाडला समजो। ऐसे ही जब वरदाता साथ है तो वरदान ही देगा न ! जब हर कर्म में वरदाता का वरदान मिला हुआ है तो वहाँ फिर महेनत नहीं होती। वरदानो से जन्म हुआ, पालना हुई, वरदानो से सदैव उड रहे हो। किसको कम, किसको ज्यादा नहीं मिला। सब को फुल मिला है। इसलिये सदा अपने को मास्टर सर्वशक्तिवान समजो।

सदैव विजय का झंडा लहराता हुआ अपने मस्तक पर अनुभव करते हो ? सदा विजय का झंडा लहरानेवाले विजयीरत्न हो ना ! ऐसे विजयीरत्नो का यादगार 'बाप के गले का हार' आजतक पूजा जाता है। हरेक को यह नशा रहना ही चाहिए कि मैं बाप के गले का हार हुँ। विजयी की निशानी सदा हर्षित होंगे और किसी भी प्रकार के आकर्षण से परे होंगे। क्या भी हो जाये लेकिन बाप जैसा आकर्षण स्वरुप कोई है क्या ? सबसे सुंदर शिवबाबा है ना ! तो सदैव बाप की याद रहे। उसी आकर्षण में आकर्षित रहो तो फिर कोई आकर्षण आकर्षित नहीं कर सकता। अगर कोई भी आपको अपना राज्यभाग्य देने आये तो लेंगे ? नहीं, क्यों ? क्योंकि आजकल के प्रेजिडेन्ट की कुर्सी भी कांटो की कुर्सी है। ताजतख्त छोडकर कांटो की कुर्सी कौन लेगा ? वो आज है कल नहीं। सदा इस नशे में रहो कि हमको जो मिला है वो किसी को मिल नहीं सकता। अभी यह प्रेसिडन्ट चाहे तो स्वर्ग में आयेगा ? जब तक बाप का न बने तब तक स्वर्ग में नहीं आ सकते। यही रह जायेंगे। हम स्वर्ग में जायेंगे। ऐसा नशा और खुशी रहे कि हम विश्व के मालिक के बालक है।

19-3-90

कोई कोई ऐसे हैं जो अपनी कमजोरी वर्णन करते हैं लेकिन वीमझीकल बन जाते हैं। बार बार वही स्मृति में लाते रहते हैं - मैं कमजोर हुं - ऐसे नाजुक नहीं बनो। विशेषताओ को भूल जाओ और कमजोरीयों को ही सोचते रहो यह नहीं करना। कमजोरी बापको सुनाओ जरुर लेकिन जब

सदा यह खुशी रहती है कि बाप मेरे लिए आये है ? अनुभव होता है, इसलिये तो सभी खुशी और नशे से कहते हो, 'मेरा बाबा' । मेरा अर्थात अधिकार। जहां अधिकार होता है वहां मेरा कहा जाता है। तो कितने समय का अधिकार फिर फिर प्राप्त करते हो । अनगिनत बार यह अधिकार प्राप्त किया है। जब यह सोचते हो तो कितनी खुशी होती है !

22-2-90

उत्साह ऐसी चीज हैं जो उसके आगे परिस्थिति कुछ भी नहीं हैं। उत्साह है तो परिस्थिति वार करने के बजाय आपके उपर बलीहार जायेगी। भले ताकत न भी हो, मानो शरीर में शक्ति नहीं हैं या धन की शक्ति की कमी के कारण मन में फील होता हैं कि यह नहीं हो सकता लेकिन उत्साह ऐसी चीज हैं जो आपके उत्साह को देखकर दुसरे भी उत्साह में आगे बढकर के आप के सहयोगी बन जायेंगे। धन की कमी भी होगी तो भी उत्साह कहां न कहाँ से धन को भी खींचकर लायेगा। उत्साह ऐसा चुंबक हैं जो धन तो क्या लेकिन साथीयों को और सफलता को भी खींचकर लायेगा। इसलिये भक्ति में कहेते हैं-हिम्मत, उत्साह धूल को भी धन बना देता हैं। उत्साह ऐसी अनुभूति हैं जो किसी भी आत्मा की कमजोरी के संस्कार का प्रभाव हमारे पर पडने नहीं देता। हमारा प्रभाव उस पर पडेगा लेकिन उसका प्रभाव हमारे पर नहीं पडेगा। खुद न भी कर सको लेकिन दुसरों को उत्साह दिलाओ तो वह आपको भी उत्साह में लायेगा। निमित्त बने हुए बडे यही काम करते हैं न ? दुसरों को उत्साह दिलाना अर्थात स्वयं को उत्साह में लाना। कभी बाय चान्स चौदह आना उत्साह हो तो दुसरो को सोलह आना दिलाओ, तो आपका भी दो आना उत्साह बढ जायेगा। ब्रह्मा बाप की यही विशेषता थी जो कोयले उठाने होंगे तो भी उत्साह से उठायेंगे, मनोरंजन करेंगे।

मुलाकात

बाप और बच्चों का दिल का इतना सुक्ष्म कनेक्शन हैं जो कोई की ताकत नहीं उसको अलग कर सके। सबसे बडे ते बडा नशा बच्चों को सदा यही रहेता है कि दुनिया बाप को याद करती लेकिन बाप आप आत्माओं को याद करते। तो ये कितना बडा नशा हैं। फिर भी बच्चे कभी उडते,

आदत को उन्नति नहीं गिनी जायेगी। तो जैसे बापने हर बच्चे में शुभ उम्मीदे रखी, कैसा भी हैं, लास्ट नंबर से भी बाप कभी दिल शिकस्त नहीं बने। तो आप भी न अपने से, न दुसरे से, न सेवा से, ना उम्मीद वा दिल शिकस्त नहीं बनो। लेकिन दिलशाह बनो।

13-3-90

आप ब्राह्मण आत्माओ में भी कोई दिल के स्नेह और संबंध से याद करते हैं तो कोई दिमाग द्वारा नोलेज के आधार पर संबंध को अनुभव करने का बार-बार प्रयत्न करते हैं। जहां दिल का स्नेह और संबंध अति प्यारा और अति समीप हैं वहां याद भूलना मुश्किल हैं। लेकिन जहां नोलेज के आधार पर सिर्फ संबंध जोडा हैं परंतु दिल का अतूट स्नेह नहीं हैं, वहां याद कभी सहेज, कभी मुश्किल होती हैं। जैसे शरीर के अंदर नस नस में ब्लड समाया हुआ हैं ऐसे आत्मा में हर पल याद समाई हुई हो। तब उसको कहेते हैं दिल के स्नेह संपन्न निरंतर याद। जैसे भक्त आत्मायें बाप के लिये कहेती हैं - जहां देखु तु ही तुं, ऐसे बाप के स्नेही और समान आत्माओं को जो भी देखे तो उन्हों की द्रष्टि में, बोल में, कर्म में परमात्मा बाप ही अनुभव होता हैं। इसको कहते हैं स्नेही सो समान बाप।

13-3-90

बापदादा सर्व संबंध से प्राप्ति कराते लेकिन फिर भी मुख्य तीन संबंधो से तीन विशेषतायें बच्चों को देते है। इसको कहते है दिल का प्यार। बाप के रुप में वर्सा, शिक्षक के रुप में पढाई द्वारा श्रेष्ठ पद की प्राप्ति कराते और सदगुरु के रुप में सदा वरदान देते रहते। तो ऐसा बाप सारे कल्प में मिला ? सारे वर्ल्ड घुम के आओ और देखो तो भी नहीं मिलेगा। क्योंकि बाप बच्चों की महेनत देख नहीं सकते। कोई कोई बच्चे बहुत पुरुषार्थ करने में भी महेनत करते है। बापदादा को यह अच्छा नहीं लगता। क्योंकि महेनत क्युं करते है ? बच्चो को सदैव बालक सो मालिक कहा जाता है। मालिक कभी महेनत नहीं करते। तो मालिक हो या लेबर हो ? जब अभी से मालिक पन के संस्कार डालेंगे तभी विश्व के मालिक बनेंगे। जब सर्वशक्तिवान बाप सदा साथ है तो महेनत क्यों करेंगे ? साथ में रहनेवाले को महेनत

कभी चढते, कभी चलते ऐसे स्पीड कम-ज्यादा होती रहेती हैं। लेकिन ऐसी कोई न कोई बात ड्रामाअनुसार होती हैं जो बच्चों को फिरसे उडती कला की और ले जाती हैं। क्युंकि जो ड्रामानुसार पक्के निश्चियबुद्धि हैं, दिल में संकल्प कर लिया हैं कि बाप मेरा, मैं बापका तो ऐसी आत्माओं को सेकेन्ड में मदद स्वत: मिल जाती हैं। इसलिये कुछ भी हो जाये लेकिन बाप और सेवा से कभी किनारा नहीं करना हैं। याद करने में वा पढाई पढने में मन नहीं भी लगे तो भी जबरजस्ती सुनते रहो, योग लगाते रहो ठीक हो जायेंगे क्युंकि माया ट्रायल करती हैं कि यह थोडा सा किनारा करले तो मैं इसके पास आ जाउं। इसलिये कभी किनारा नहीं करना हैं। अपनी पढाई, अमृतवेला, सेवा - जो भी दिनचर्या बनी हई हैं, उसमें मन नहीं भी लगे लेकिन उसमें से कुछ भी मिस नहीं करो। क्यूंकि कायदे में ही फायदा हैं।

बाप से प्यार अतूट हैं तो भले कोई भी बात होती तो भी उडते रहेते हैं। ऐसे बापके प्यार में सभी फुल पास हो लेकिन पढाई में नंबरवार हो तो जैसे बापसे नंबरवन प्यार हैं ऐसे मुरली से भी प्यार हैं ? जबसे आये हो तबसे कितनी मुरली मिस हुई होगी ? कभी कोई ऐसे बहाने से क्लास मिस किया हैं ? बापकी याद के साथ पढाई भी कभी मिस न हो।

7-3-90

कैसे भी संस्कार हो, चलन हो, लेकिन ब्राह्मण आत्माओं का सारे कल्प में अतूट संबंध हैं।

ईश्वरीय परिवार हैं। **बापने हर आत्मा को विशेष चुनकर ईश्वरीय परिवार में लाया हैं। अपने आप नहीं आये बापने लाया हैं।** तो बापको सामने रखने से हर आत्मासे भी आत्मिक अतूट प्यार हो जाता हैं। किसी भी आत्मा की कोई बात आपको पसंद नहीं आती तब ही प्यार में अंतर आता हैं। उस समय बुद्धि में यही रखो कि इस आत्मा को बापने पसंद किया हैं। अवश्य कोई विशेषता हैं तब बापने पसंद किया हैं। भले छत्तीस गुण में से एक गुण भी विशेष हैं तब बापने उनको पसंद किया हैं। सबसे बडे ते बडा गुण वा विशेषता बापको पहेचानने की बुद्धि, बापके बनने की हिंमत बापसे प्यार करने की विधी जो सारे कल्प में धर्म पिताओं में भी नहीं थी, राजनेताओ

में भी नहीं थी, धनवानों में भी नहीं थी लेकिन उस आत्मा में हैं। बाप आप सबसे पुछते है कि आप जब बाप के पास आये तो क्या गुण संपन्न होकर आये थे ? बापने आप की कमजोरीयों को देखा क्या ? बापने तो हिंमत बढाई की आप ही मेर थे, हैं और सदा बनेंगे। तो फोलोफाधर करो ! जब विशेष आत्मा समझ किसी को देखेंगे, संबंध-संपर्क में आयेंगे, तो बापको सामने रखने से आत्मा में स्वत: ही आत्मिक प्यार इमर्ज हो जाता हैं। और ऐसे बापके स्नेह के साथ सर्व के स्नेही बन जायेंगे और आत्मिक स्नेह से, सदा सभी द्वारा सदभावना, सहयोग की भावना स्वत: ही आपके प्रति दुवाओं के रुप में प्राप्त होगी। इसको ही कहेते हैं रुहानी यथार्थ श्रेष्ठ हेन्डलींग।

वाह बाबा, वाह मैं और वाह ड्रामा। सिर्फ यह तीन वाह बोलो तो क्या, क्युं और कैसे ये तीन शब्द भी खतम हो जायेंगे। ये तीन शब्द ही बेलेन्स को खतम कर देते हैं और बुद्धि को नचाने लगते हैं। जीस कारण बाप और परिवार की दुवाओं से वंचित हो जाते हैं। जैसे बाप से संबंध रखना आवश्यक हैं क्युंकि सारे कल्प में नंबरवन आत्मा ब्रह्मा बाप और ईश्वरीय परिवार के संबंध सपर्क में आना हैं। ऐसे नहीं समझना - अच्छा, बाप तो हमारा हैं हम बापके हैं। यह भी पास वीथ ओनर की निशानी नहीं हैं। क्युंकि आप सन्यासी आत्मायें, ऋषीमुनी की आत्मायें नहीं हो। किनारा करनेवाले नहीं लेकिन विश्व का सहारा बननेवाले विश्व कल्याणकारी आत्मायें हो। ब्राह्मण आत्माओं की बात तो छोडो लेकिन प्रकृति को भी परिवर्तन करने के सहारे आप हो। परिवार के अविनाशी प्यार के धागे के बीच से निकल नहीं सकते हो। विजयी रतन प्यार के धागे के बीच से निकल नहीं सकता। इसलिये कभी भी किसी भी बात में किसी स्थान से, किसी सेवा से, किसी साथी से किनारा करके अपनी अवस्था को अच्छा बनाकर दिखाउं - यह संकल्प नहीं करना। कहेते है न, हम इसके साथ नहीं चल सकते हैं, उसके साथ चलेंगे, इस स्थान पर उन्नति नहीं होगी, दुसरे स्थान पर होगी, इस सेवा में विघ्न हैं, दुसरी सेवा में अच्छा होगा। यह सब किनारा करने की बातें हैं। अगर एक बार यह आदत अपने में डाली तो यह आदत आपको कहां भी टीकने नहीं देगी, बुद्धि को भी एकाग्र रहेने नहीं देगी। तो ऐसी